द्विभाषी राष्ट्रसेवक

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal

❖ वर्ष : 73 ❖ अंक : 02 ❖ मई, 2023

महादेवी वर्मा

(26 मार्च, 1907 – 11 सितंबर, 1987)

मैं नीर भरी दुख की बदली!

मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली!

मेरा पग-पग संगीत भरा,
श्वासों में स्वप्न पराग झरा,
नभ के नव रंग बुनते दुकूल,
छाया में मलय बयार पली!

मैं क्षितिज भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नव जीवन अंकुर बन निकली!

पथ को न मलिन करता आना,
पद चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन बन अंत खिली!

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

'सांध्यगीत' से

RNI NO. ASSBIL/2009/31008 ISSN : 2321-4945

एक हृदय हो भारत जननी

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

(भाषा, साहित्य, समाज, कला व संस्कृति विषयक शोध-पत्रिका)

UGC CARE Listed Journal

वर्ष : 73 अंक : 02 मई, 2023

परामर्श मंडल

श्री भारतभूषण महंत
कार्याध्यक्ष, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी (असम)

प्रो. आर.एस. सर्राजु
सम कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय
तेलंगाना-500046

प्रो. प्रदीप के शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय
काजी रोड, गंगटोक, सिक्किम - 737101

डॉ. दीपक प्रकाश त्यागी
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)

डॉ. दिलीप कुमार मेधि
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अमूल्य चंद्र बर्मन
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

डॉ. अच्युत शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)

प्रधान संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

संपादक

प्रो. मोहन
हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली-1

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद
प्रभारी साहित्य सचिव
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

DWIBHASHI RASTRASEWAK : A Bilingual (Hindi & Assamese) Monthly Research Journal, Focused on Language, Literature Society, Art and Culture, Partially funded by Central Hindi Directorate, Govt. of India and Published by Asom Rastrabhasha Prachar Samiti, Rupnagar, Guwahati-781032.

प्रकाशक :

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

गुवाहाटी-32

संपादकीय कार्यालय :

प्रधान संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

सेवा मंदिर पथ, रूपनगर, गुवाहाटी-32

फोन : 9101541395, 9101541380

ई-मेल : rastrasewak51@gmail.com

सहयोग राशि : ₹100/- (प्रति अंक)

शब्द संयोजन : रतिकांत कलिता

आवरण पृष्ठ : इंटरनेट से साभार

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से मंत्री डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया द्वारा सराइघाट फोटो टाइप्स प्रा.लि., इंडस्टियल इस्टेट, गुवाहाटी-781021 में मुद्रित, प्रकाशित एवं प्रसारित।

सर्वाधिकार : **असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी-32**

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। सभी कानूनी विवादों का निपटारा गुवाहाटी न्यायालय के अधीनस्थ होगा।

विषय सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ

हिंदी विभाग

	संपादकीय		4
1.	हिंदी पत्रकारिता में राष्ट्रीयता की अवधारणा	✍ सुधांशु बाजपेयी	5
2.	सूफी संत साहित्य का उद्भव और विकास	✍ डॉ. सुरेश मुंढे	10
3.	कवि बेचैन कण्डियाल कृत कविता संग्रह 'राग जिंदगी का' में वर्णित सामाजिक यथार्थ	✍ डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र	14
4.	असमिया लोकगीतों में रामकथा का वर्णन	✍ डॉ. अर्चना हजारिका	18
5.	शोध : अर्थ, परिधि एवं प्रकार	✍ डॉ. जाकिर हुसैन	24
6.	नारी प्रेरणास्रोत : तुलसीदास खंडकाव्य	✍ तैयबुन नेशा	30
7.	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में नारी मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति	✍ खुराइजम बेबीरोशिनी	35
8.	कार्बी लोकसाहित्य में प्रकृति	✍ नफीसा अहमद	40
9.	हिंदी आलोचना में अभिव्यक्त दलित समाज का प्रतिबिंब	✍ अजीत कुमार	48
10.	आदिवासी साहित्यकार पीटर पॉल एक्का के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-संघर्ष	✍ पूजा पॉल	52

অসমীয়া বিভাগ

11.	মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ আত্মকথা 'আধালেখা দস্তাবেজ'ৰ ভাষিক বিচাৰ	✍ বনশ্রী নাথ/ ড° উপেন ৰাভা হাকাচাম	57
12.	বৈদ্যুতিন মাধ্যমত অসমীয়া ভাষা ঃ এক ভাষাতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ	✍ ফেঞ্চী চুতীয়া/ ড° স্বপ্নালী দাস	71
13.	লঘুত্রয়ীত প্রকৃতি ঃ এক অধ্যয়ন	✍ অৰুণ শর্মা	75
14.	কাঞ্চন বৰুৱাৰ উর্মিলাৰ চকুলো উপন্যাসৰ কলা-কৌশল ঃ এটি বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন	✍ অজিৎ কলিতা/ ড° কল্পনা শর্মা কলিতা	82
15.	ভাষিক আৰু সামাজিক-সাংস্কৃতিক প্রেক্ষাপটত মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা প্রয়োগত সৃষ্ট প্রতিবন্ধকতা	✍ ইন্দেশ্বৰ পেগু/ ড° ভাস্কৰজ্যোতি শর্মা	89
16.	মাজুলী সংস্কৃতিত থলুৱা লোকসকলৰ বাবে বাণিজ্যিক সম্ভাৱনা ঃ নমুনা ভিত্তিক এক চমু অধ্যয়ন	✍ সবিতা ভাগৱতী/ মাম্পি দাস	97
17.	গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্রতি নিম্ন-প্রাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ ওপৰত এক অধ্যয়ন	✍ মুকেশ শর্মা/ ড° প্রণৱ শইকীয়া	102

संपादकीय

हमारी भाषा सशक्त और व्यापक हो

मानव को अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए जिस सहज, सरल माध्यम की आवश्यकता होती है, उसे भाषा की संज्ञा प्रदान की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने भावों को व्यक्त करने हेतु किसी न किसी भाषा का सहारा लेता है। भाषा के न रहने पर न तो किसी सामाजिक परिवेश की कल्पना की जा सकती है और न सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास की। साहित्य, विज्ञान, कला, दर्शन आदि सभी का मूलभूत आधार भाषा ही है।

आज की तेज रफ्तार पकड़ती दुनिया में आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा संसार के भिन्न-भिन्न भू-भागों में रह रहे व्यक्तियों के मध्य की दूरियाँ दिन-प्रतिदिन घटती जा रही हैं। परस्पर संवादों में वैविध्यपूर्ण प्रयोग, बहुलता की आवृत्तियां बढ़ी हैं। प्राय: कंप्यूटर चैपिंग अथवा मोबाइल पर एसएमएस करते समय प्रयोक्ता संकेताक्षरों के प्रयोग में सजग नहीं रहते हैं। शैक्षिक कार्यों में भी विद्यार्थियों के मध्य ऐसे मनमाने प्रयोगों का प्रचलन बढ़ा है। ऐसे उच्छृंखल प्रयोगों से भाषा के मानक रूप को ठेस पहुंचती है। इस प्रवृत्ति से हमें बचना होगा। इस समस्या से हिंदी ही नहीं, संसार की अनेक भाषाएं जूझ रही हैं। अनेक देशों की सरकारों ने इस समस्या से निपटने के प्रयास प्रारंभ कर दिए हैं। हमें भी हमारी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, मातृभाषा हिंदी के मानक स्वरूप पर ध्यान देना चाहिए और उसके सुधार के प्रयास करने चाहिए।

आज मीडिया, मोबाइल, टी.वी. जिस प्रकार भाषा का स्वरूप बिगाड़ रहे हैं, यह एक विचारणीय समस्या है, जिस पर गंभीरता से विचार करना जरूरी है। कुछ लोगों का कहना है कि हिंदी का मानक रूप बहुत क्लिष्ट है, यह विचार पूर्णत: निरर्थक है, क्योंकि हिंदी भाषा को कठिन महसूस करने की समस्या मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक अधिक, वास्तविक कम है। हिंदी ध्वन्यात्मक भाषा है। हिंदी की वर्णमाला स्वर, व्यंजन तथा बारहखड़ी को याद करने के बाद हिंदी के कठिन से कठिन शब्द को भी आसानी से लिखा-पढ़ा जा सकता है। हिंदी में हम जैसा बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं।

हिंदी का आधुनिक स्वरूप भी, जिसे उसका मानकरूप कहा जाता है, लगभग एक हजार वर्षों की प्रक्रिया का परिणाम है। डॉ. विश्वनाथ प्रसाद का कहना है - 'विकास के साथ-साथ भाषा में व्यापकता एवं एकरूपता बनी रहती है।'

मानक हिंदी को सर्वमान्य रूप से शिक्षित, शिष्ट-समुदाय द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। यही साहित्य, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, कला और संस्कृति की विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्ति, आदान-प्रदान तथा संप्रेषण का माध्यम है। इसी के उत्थान और प्रचार-प्रसार के लिए असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति सुदूर पूर्वोत्तर में दशकों से समर्पित है। हमारी भाषा सशक्त और व्यापक हो - इसी भावना के साथ यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है, यह अंक भी सुधी पाठकों को पसंद आएगा। ❑

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

हिंदी पत्रकारिता में राष्ट्रीयता की अवधारणा

सुधांशु बाजपेयी

शोध छात्र, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
पता : 538क/1030, त्रिवेनी नगर-2
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मो. 9795227433
ई-मेल : sudhanshu.sud9@gmail.com

यद्यपि 'राष्ट्र' शब्द और विशेष भूभाग के रूप में भारतीय राष्ट्र का संदर्भ अति पुरातन वैदिक काल तक जाता है, परंतु हमारे संविधान में वर्णित राष्ट्र और राष्ट्रीयता की आधुनिक जड़ें भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में निहित हैं। हमारी राष्ट्रीयता बिल्कुल वैसी भी नहीं है जैसी यूरोप में है, क्योंकि यूरोपीय राष्ट्रीयता राजशाही/सामंतशाही के विरोध तक ही सीमित थी, परंतु भारतीय राष्ट्रीयता का मुख्य स्वर उपनिवेशवाद विरोधी है, जिसमें सामंतशाही का नकार करते हुए स्वतंत्र धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक राष्ट्र की अभिलाषा है। यह अवधारणा भी सतत विकसित हो रही होती है। 1857 तक राष्ट्र के केंद्र में दिल्ली सल्तनत के बादशाह बहादुर शाह जफर हैं, हम अपना राष्ट्र उसी रूप में बचा लेना चाहते हैं। लेकिन 1857 के बाद हम अंग्रेजों के दिखावे के ही सही समान कानूनों और विकासात्मक कार्यों से तो प्रभावित हैं, लेकिन दूसरों द्वारा शासित-दमित होने का दंश भी है, इसलिए यह दौर राजभक्ति बनाम राष्ट्रभक्ति के अंतर्द्वंद्व का है।

1905 के बंगभंग के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन से 'स्वराज्य' के रूप में राष्ट्रीयता मुखर हो चुकी होती है और 1929 के लाहौर अधिवेशन में स्वराज मतलब पूर्ण स्वाधीनता से कम कुछ भी नहीं, राष्ट्रीयता का अभीष्ट स्पष्ट हो जाता है। 1942-46 तक हम इस अभीष्ट के लिए गांधी के आह्वान 'करो या मरो' के साथ सब कुछ झोंक देते हैं। राष्ट्रीयता का लक्ष्य स्पष्ट और भावना उद्दाम होती है। ब्रिटिश साम्राज्य समझ चुका होता है कि अब भारत को और पराधीन बनाए रखना संभव नहीं। 1946 में कैबिनेट मिशन के साथ अंतरिम सरकार और 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत की सरकार के रूप में राष्ट्रीयता का लक्ष्य साकार होता है तो राष्ट्रीय आंदोलन के साथ विकसित होती राष्ट्रीयता की अवधारणा की अभिव्यक्ति 26 जनवरी, 1950 को संविधान के रूप में होती है।

भारत में हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीयता का अन्योन्याश्रित संबंध रहा है। राष्ट्रीय भावनाओं के चलते ही तमाम पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ और इन्हीं पत्र-पत्रिकाओं ने राष्ट्रीयता को जन-जन तक प्रवाहमान करने का कार्य

भी किया। पत्र-पत्रिकाएँ केवल समाचार और सूचना का माध्यम भर न थे, बल्कि वह राष्ट्रीयता और जनजागरण के संवाहक थे। पत्रकारिता, अपने देश-राष्ट्र को मुक्त-समृद्ध बनाने का मिशन थी, जिसके लिए हमारे क्रांतिकारी पूर्वज सब कुछ न्येछावर करते रहे, ब्रिटिश साम्राज्य के तमाम दमन-उत्पीड़न के बावजूद नए-नए रूपों में पत्रकारिता अहर्निश जारी रही।

भारत में पत्रकारिता के विकास के साथ ही राष्ट्रीयता की अवधारणा का भी विकास हो रहा था, जैसे-जैसे मुद्रण पद्धति आधुनिक हो रही थी, शिक्षा का विकास हो रहा था, राष्ट्रीय आंदोलन आगे बढ़ रहा था, वैसे-वैसे राष्ट्रीयता की हमारी समझ और अवधारणा भी और आधुनिक, सुस्पष्ट और विकसित हो रही थी।

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव (1826-1867) :

देश की जिन परिस्थितियों के बीच हिंदी पत्रकारिता का निर्माण हुआ, उन पर विचार करते हुए के.एस. सेल्वेंकर कहते हैं, 'भारत पहले भी पराजित हुआ था, किंतु उन विजेताओं से जो इसी भूमि में आकर बसे और अपने को यहाँ के जीवन का अंग बना लिया (इंग्लैंड के नार्मन्स या चीन की मंचू जाति की तरह) जिससे भारत कभी भी अपनी स्वतंत्रता से वंचित नहीं हुआ, कभी गुलाम नहीं बना। मतलब यह कि वह कभी भी ऐसी राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था का दास नहीं बना, जिसका केंद्र कहीं अन्यत्र हो।' [1]

चूँकि अंग्रेजों के मन में भारतीय भूमि और भारतीयता के प्रति किसी प्रकार की आत्मीयता न थी, इसलिए उन्होंने पूरी निर्ममता से भारतीय भूमि-संसाधनों को लूटा। [2]

हिंदी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' :

नवंबर, 1931 से पहले यह आम धारणा थी कि हिंदी प्रदेश वाराणसी से निकलने वाला राजा शिवप्रसाद सिंह का पत्र 'बनारस अखबार' (1845 ई.) ही हिंदी का प्रथम पत्र है। लेकिन 1931 में बंगला के प्राचीन पत्रों के अन्वेषी और उद्धारक ब्रजेन्द्रनाथ उपाध्याय जी ने 'विशाल भारत' में 'हिंदी समाचार पत्रों की आरंभिक कथा' लिखकर 'उदन्त मार्तण्ड' को प्रथम समाचारपत्र के रूप में प्रतिस्थापित किया।

साप्ताहिक 'उदन्त मार्तण्ड' की स्थापना 30 मई, 1826 में श्री युगल किशोर शुक्ल जी ने कलकत्ता में की थी, परंतु ग्राहकों की कमी तथा अन्य संकटों के चलते यह अल्प समय में ही 1827 ई. में बंद भी हो गया। इसी पत्र की याद में 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।

बर्तानिया सरकार की अनुदारता तथा अत्याचार से भारतीय पीड़ित थे। ऐसे समय में राजा राममोहन रॉय ने देश में सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक सुधार आंदोलन के लिए स्वतंत्र पत्रों की आवश्यकता महसूस की। 10 मई, 1829 को कलकत्ता से चार भाषाओं अंग्रेजी, बंगला, फारसी और हिंदी में यह बंगदूत का प्रकाशन किया।

हिंदी का प्रथम दैनिक समाचार सुधावर्षण :

देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम से तीन वर्ष पहले 8 जून, 1854 ई. में कलकत्ता से ही श्यामसुंदर सेन ने पहले दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' की नींव रखी। यद्यपि यह हिंदी-बांग्ला दोनों में प्रकाशित होता। इसके आरंभ के दो पृष्ठ हिंदी में बाकी बांग्ला में निकलते थे। यह अखबार रविवार छोड़कर पूरा सप्ताह निकलता। इसकी विषय-वस्तु समृद्ध तथा भाषा अपेक्षाकृत परिमार्जित थी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में दिल्ली के अंतिम मुगल बादशाह ने जब 25 मई, 1857 को एक फरमान निकाला तो समाचार सुधावर्षण में उस फरमान को ज्यों का त्यों छाप दिया गया-

''खुदा ने जितनी बरकतें इंसान को अता की हैं, उसमें सबसे कीमती बरकत आजादी है। क्या वह जालिम फिरंगी जिसने धोखा देकर यह बरकत छीन ली है, हमेशा के लिए हमें उससे महरूम रखेगा? नहीं, कभी नहीं, फिरंगियों ने इतने जुल्म किये हैं कि उनके गुनाहों का प्याला लबरेज हो चुका है। अब खुदा ने हिंदुओं-मुसलमानों के दिलों में इन्हें मुल्क से बाहर निकालने की ख्वाहिश पैदा कर दी है, जल्द ही अंग्रेजों को इतनी कामिल शिकस्त मिलेगी कि हमारे इस मुल्क हिन्दोस्तान में उनका जरा भी नामोनिशान नहीं रह जायेगा।'' [3]

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में जब भी पत्रों की भूमिका की बात की जाएगी 'समाचार सुधापर्षण' का उल्लेख अनिवर्चनीय हो जाता है। 26 मई, 1857 को उन्होनें लिखा- ऐसा आभास मिलता है कि ब्रिटिश साम्राज्य का अब अंत आ गया। विद्रोही सेना के युद्ध में दम आ रहा है और अनेक क्षेत्रों की जनता सेना में मिल रही है। [4]

श्याम सुंदरसेन दैनंदिन विद्रोही सेना और भारतीय राजाओं की प्रगति, विद्रोह और सफलताओं की खबरें लिखते, जिससे डर कर लार्ड कैनिंग ने जून, 1857 में 'प्रेस एक्ट' पारित कर लेखन मुद्रण की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाना प्रारंभ कर दिया। इस कानून के पहले मुजरिम श्यामसुंदर सेन जी ही बने। वह शिक्षा से वकील भी थे, इसलिए अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों का प्रतिवाद स्वयं न्यायालय में करने का निर्णय लिया। उन्होंने तर्क दिया कि देश के शासक के फरमान को प्रकाशित करना राजद्रोह नहीं। उस समय तक भारत का वैधानिक शासन मुगल बादशाह के ही अधीन आता था, ईस्ट इंडिया कंपनी बादशाह के नाम पर ही राजस्व वसूली करती थी। विवश होकर अंग्रेजों को समाचार सुधावर्षण से मुकदमा वापस लेना पड़ा। लेकिन इसके बावजूद बाबू श्याम सुंदर सेन लगातार राष्ट्रीय चेतना को प्रकाशित करते रहे। 1868 तक के इसके प्रमाण मिलते हैं।

हिंदी पत्रकारिता : द्वितीय उत्थान (1857-1900)

''प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) की असफलता के कारण हमारा जातीय उत्साह कुछ समय के लिए ठंडा पड़ गया और हम एक विशेष प्रकार के अवसाद और उदासी से दब गए थे।'' [5] इस दौर में स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद की धार्मिक-आध्यात्मिक नवजागरण ने देश की चेतना को संभाला एवं नई दिशा दी। राजा राम मोहन रॉय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ऐनी बेसेंट, देवेन्द्र नाथ टैगोर आदि के धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलनों ने देश की चेतना को समृद्ध किया। भावी क्रांतिकारी आंदोलन और राष्ट्रीय कांग्रेस का बीजवपन भी इसी काल में हुआ। इसी दौर में हिंदी, राष्ट्रीयता और भाषा का केंद्र ग्रहण कर रही थी। हिंदी साहित्य का यह भारतेंदु युग था, जो दरबारी संस्कृति और रीतिकालीन साहित्य के प्रति विद्रोह प्रकट कर रहा था।

भारतेंदु युग की पत्रकारिता अर्थात हिंदी के दूसरे दौर की पत्रकारिता की विवेचना करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं- ''पत्र साहित्य की परंपरा न होते हुए भी उसने थोड़े ही वर्षों में जो उन्नति की, उसका एकमात्र कारण लेखकों की धुन थी। परिस्थितियाँ कठोर (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट) थीं, परंतु उन्होंने अपने आपको दृढ़तर सिद्ध किया। यदि उस युग के साहित्यकारों ने यह लगन और फक्कड़पन न प्रकट किया होता तो निश्चय ही वह परिस्थितियों के नीचे कुचल दिये गये होते।'' [6]

इस युग का नेतृत्व भारतेंदु हरिश्चंद्र के हाथों में था। वे स्वदेशी के आग्रही और प्रचारक थे। ''यह युग हिंदी गद्य निर्माण का युग माना जाता है। हिंदी की अनेक महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी युग में हुआ।'' [7] 'कविवचन सुधा' (1867), हरिश्चन्द्र मैगनीज (1874), 'बालाबोधिनी' (1883) और 1895 में नागरी प्रचारिणी पत्रिका के प्रकाशन ने भावी पथ प्रशस्त किया। हिंदी भाषा और साहित्य को एक आकार दिया। लेकिन कलकत्ता से निकलने वाले तीन प्रमुख पत्र- भारत मित्र (1878), सारसुधानिधि (1879) और

उचितवक्ता (1880) हिंदी के इस समय के सबसे ज्यादा राजनीतिक तेजस्विता के पत्र थे। यह समय हिंदी साहित्य, पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन में राजभक्ति बनाम राष्ट्रभक्ति के अंतर्द्वंद्व का समय था। भारतेंदु जी ने कहा है- स्वत्व निज भारत गहै-यह स्वत्व ही उस समय की राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति है।

20वीं सदी की हिंदी पत्रकारिता : तृतीय उत्थान : द्विवेदी युग/तिलक युग (1900-1918)

बीसवीं शताब्दी के शुरुआती वर्ष लॉर्ड कर्जन के कुकृत्यों से भरे हुए रहे।''कलकत्ता कॉपोरेशन के अधिकारों में कभी सरकारी कटौती, विश्वविद्यालयों को सरकारी निमंत्रण में लेना, जिससे शिक्षा महँगी हो गई, भारतीयों के चरित्र को असत्यमय बताना, बारह सुधारों का बजट, तिब्बत आक्रमण और अंत में बंग विच्छेद सब लॉर्ड कर्जन के ऐसे कार्य थे, जिससे राजभक्त भारत की कमर टूट गई और सारे देश में एक नई स्पिरिट पैदा हो गई।''[8] बंगभंग ने पूरे देश में गहरा आक्रोश व्याप्त कर दिया। क्रांतिकारी और कांग्रेस-दोनों ही इस आंदोलन के फलस्वरूप पूरे देश में फैल गए।

इस दौर की हिंदी पत्रकारिता राजभक्ति से पूरी तरह विरत हो गई। हिंदी साहित्य का यह द्विवेदी युग था, जो अपनी साहित्य आदर्शवादिता के लिए विख्यात है। इसका नेतृत्व स्वयं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कर रहे थे। 'सरस्वती (1903)' के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक और साहित्यिक दोनों रूप में नई चेतना का सूत्रपात किया। उन्होंने ही हिंदी भाषा को परिमार्जित और परिष्कृत कर 'मानक रूप' दिया। बाबू बालमुकुन्द गुप्त के संपादन में 1899 से 'भारतमित्र' अपनी राजनीतिक चेतना को आगे बढ़ाते हुए एक नवीन भूमिका में आया। 1903 में 'भारतमित्र' में गुप्त जी द्वारा छद्म नाम से लिखे गए 'शिवशंभू के चिट्ठों' ने तहलका मचा दिया। बंगभंग के खिलाफ भी 'बंगविच्छेद' शीर्षक से 1905 में गुप्त जी ने आक्रोश व्यक्त किया।

इस दौर के अन्य प्रमुख पत्रों में पं. कालीप्रसन्न संपादित 'हितवार्ता'(1903), पं. गोविन्दनारायण मिश्र द्वारा संपादित 'सारस्वत सर्वस्व'(1903) तथा शिवचंद्र भरतीया जी द्वारा संपादित - वैश्योपकारक (1904) प्रमुख हैं। इन सभी पत्रों में भी राष्ट्रीय चेतना और जातीय स्वर प्रमुखता से मुखर हुए।

राजनीतिक रूप से इस दौर के सबसे प्रखर व्यक्तित्व लोकमान्य तिलक जी थे, जिन्होंने अपने पत्रों द्वारा पूर्ण स्वराज्य की कामना को वैचारिक आधार दिया। उनके महान उद्घोष 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' ने पूरे देश में 'पूर्ण स्वराज्य' की माँग को व्यापक बना दिया।

'बंग-भंग' के खिलाफ चले आंदोलन ने कांग्रेस के अंदर नए 'गरम दल' को जन्म दिया, जिसके नेता लाल-बाल-पाल की त्रिमूर्ति के रूप मे प्रसिद्ध हुए। अर्थात लोकमान्य तिलक के साथ ही विपिनचंद्र पाल और लाला लाजपतराय का नाम पूरे देश में क्रांतिकारी पंक्ति में गिना जाने लगा।

तिलक जी एक तेजस्वी पत्रकार थे, जिन्होंने 'मराठा' और 'केसरी' नामक दो पत्रों का संपादन किया। मराठा अंग्रेजी में प्रकाशित होता था तो केसरी मराठी में, लेकिन इन दोनों पत्रों ने सभी भाषा की पत्रकारिता को प्रभावित किया। 'केसरी' के लेख देशी भाषाओं के अनेक पत्रों में अनूदित कर प्रकाशित किए जाते। हिंदी भाषा में तो नागपुर से 'हिन्दी केसरी' नाम का हिंदी साप्ताहिक पत्र ही निकलने लगा, जिसका संपादन लब्ध प्रतिष्ठित लेखक माधवराव सप्रे जी कर रहे थे, जिसे पूरे हिंदी प्रदेश में बड़ी उत्सुकता से पढ़ा जाता। उस पत्र ने विशेषत: उत्तर भारत के नवयुवक मंडल में ओजस्विनी देशभक्ति को जाग्रत करने का अद्भुत कार्य किया।

हिंदी पत्रकारिता : चतुर्थ उत्थान : गांधी युग (1918-48)

गांधी जी अपने युग के ऐसे नेता थे, जिनका देश की समग्र चेतना पर प्रभाव था। तिलक ने सबसे पहले स्वराज्य को जन्म सिद्ध अधिकार घोषित किया, लेकिन ग्रामों के रहने वाले किसानों और मजदूरों तक यह आवाज नहीं पहुँची थी। यह महत कार्य गांधी युग में

संपन्न हुआ, जो 1919 में 'असहयोग आंदोलन' के रूप में प्रस्फुटित हुआ। 1920 से 1930 तक का समय पुराने संस्कारों के प्रति विद्रोह और नवीन संस्कारों के बीजारोपण का समय है।[9]

गांधी जी स्वयं पत्रकार थे और पत्रकारिता को वह वैचारिक क्रांति का सशक्त माध्यम मानते थे। उनके हाथ में अपने पत्र थे, साथ ही उन भाषाओं में अनेक पत्र प्रकाशित हो रहे थे, जिन पर गांधी विचार का असर था। राजनीति के साथ ही शिक्षा और साहित्य पर भी उनका गहरा प्रभाव पड़ा।

हिंदी का छायावाद युग, गांधी युग की साहित्यिक उपलब्धि है। छायावाद द्विवेदीकालीन राष्ट्रीयतावाद के साथ ही मानव ऐक्य की भावना पर भी विशेष बल देता है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी की चतुष्टयी ने हिंदी को सर्वथा नया स्वर दिया। छायावादी-स्वच्छंतावादी कवि के अलावा भी इस युग के कुछ ऐसे विश्रुत साहित्यकार हुए, जो गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता थे और उन्होंने गांधी जी के आचार पक्ष से काफी प्रभाव ग्रहण किया। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और सियारामशरण गुप्त ऐसे ही कवि थे तो कथा लेखकों में प्रेमचंद और जैनेंद्र पर गांधी दर्शन का प्रभाव स्पष्ट है।

स्मरणीय है कि 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन हिंदी पत्रकारिता के उन्नयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। इसी अधिवेशन से हिंदी की चर्चा राष्ट्रभाषा के रूप में होने लगी। राजनीतिक पत्रकारिता में भी यहीं से एक नया युग प्रारंभ होता है।[10] गांधी युग की हिंदी पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इस युग में साहित्यिक पत्रकारिता, राजनीतिक पत्रकारिता से पृथक हुई।

मतवाला, सुधा, चाँद, हंस, विशाल भारत इस समय के प्रमुख साहित्यिक पत्र हैं तो इण्डियन ओपिनियन, हरिजन, नवजीवन (संपादक-महात्मा गांधी), प्रताप (1913, गणेशशंकर विद्यार्थी) अभ्युदय (1907, मालवीय जी), आज-1920 शिवप्रसाद गुप्त/पराड़कर, आदि प्रमुख राजनीतिक पत्र थे।

गांधी युग की पत्रकारिता में संपूर्ण स्वाधीनता और स्वराज का स्वर ही मुख्य था। इस दौर में एक आधुनिक स्वतंत्र राष्ट्र की परिकल्पना की अवधारणा ही राष्ट्रीयता की अवधारणा थी, जो 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ साकार होती है। ❑

संदर्भ ग्रंथ :

1. जवाहर लाल नेहरू - 'द डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पृष्ठ 73
2. भारतीय पत्रकारिता : नींव के पत्थर-डॉ. मंगला अनुजा,म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी संस्करण-1996, पृष्ठ 24
3. 1857 नवजागरण और भारतीय भाषाएँ, हिंदी संस्थान, पृ. 228
4. भारतीय पत्रकारिता- नींव के पत्थर, डॉ. मंगला अनुजा, पृ 72
5.. जवाहर लाल नेहरू : हिन्दुस्तान की कहानी, पृ. 441
6. डॉ. रामविलास शर्मा : भारतेन्दु युग पृ. 3
7. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास : डॉ. रामरतन भटनाकर पृ. 33-34
8. डॉ. पट्टाभि सीतारमैया : कांग्रेस का इतिहास, पहला खंड, पृ. 64
9. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ.148
10. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास : डॉ. रामरतन भटनाकर पृ. 357

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

सूफी संत साहित्य का उद्‌भव और विकास

डॉ. सुरेश मुंढे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
श्री संत सावता माली ग्रामीण
महाविद्यालय, फुलंब्री,
जिला - औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
मो. 9422974444
ईमेल : sumundhe929@gmail.com

भूमिका :

'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में निर्णय करते समय सभी विद्वानों में गहरा मतभेद है। विद्वानों का एक वर्ग ऐसा है, जो कि 'सूफी' की उत्पत्ति के शाब्दिक अर्थ पर जोर देता है। वहीं पर दूसरे समूह ने 'सूफी' शब्द को किसी-न-किसी प्रसंग से जोड़कर अर्थ समझाने की चेष्टा की है।

विद्वानों का एक वर्ग इसे 'सफा' अर्थात पवित्रता से बना हुआ मानता है। उनका मानना है कि सूफी वह होता है, जिसका हृदय सांसारिक वासनाओं से पवित्र है, जो अपने मन-वाणी एवं कर्म से पवित्र है। वहीं कुछ अन्य विद्वानों का मानना है 'सफा' शब्द यहाँ निष्कपट भाव के लिए व्यवहृत हुआ है। इसलिए सूफी ऐसे व्यक्ति को कहना चाहिए, जो कि न केवल परमात्मा के प्रति निश्छल भाव रखता है वरन् सारे प्राणियों के साथ भी शुद्ध बर्ताव करता है, अपितु जिसके लिए परमात्मा स्वयं भी स्नेह प्रदर्शित करता है। वहीं दूसरे समूह का विचार है कि 'सूफी' शब्द 'सफ' अर्थात पंक्ति से बना है। इनका मानना है कि कयामत के दिन कुछ लोग सदाचारपूर्ण व्यवहार तथा जीवन पर्यंत प्रभु स्मरण के कारण औरों से अलग एक पंक्ति में खड़े किए जाएँगे, वास्तव में वे ही लोग सूफी हैं।

विद्वानों के तीसरे वर्ग का मानना है कि 'सूफी' शब्द की निर्मिति 'सुफ्फा' से हुई है। मुहम्मद साहब द्वारा निर्मित मदीना की मस्जिद के सामने एक चबूतरा था, जिसे 'सुफ्फा' कहते थे एवं इस पर आकर बैठने वाले और साथ ही पवित्रतापूर्वक जीवनयापन करने वाले एवं परमात्मा की इबादत में तल्लीन रहने वाले मुहम्मद के समसामयिक व्यक्तियों को 'अल-अल-सुफ्फाह' कहा जाता था। इसी सुफ्फा शब्द से सूफी शब्द बना है। ''गिया मुल लुगात में 'सुफाह' शब्द से 'सूफी' शब्द का बनना माना गया है। कहा जाता है कि जाहिलिया काल में अरबों की एक ऐसी जाति थी, जिसकी सांसारिक व्यापारों से अलग होकर मक्का के देवालय की सेवा में नियुक्त हो गई। कुछ विद्वानों ने ग्रीक शब्द 'सोफिस्ता' से 'सूफी' और 'थियोसोफिया' शब्द से 'तसव्वुफ' की व्युत्पत्ति के प्रयास किए हैं। 'सोफिया' शब्द का अर्थ है- ज्ञान। सूफी साधकों के लिए अनुभव द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान ही

महत्वपूर्ण होता है। लेकिन आज अधिकांश विद्वानों का मानना है कि 'सूफ' अर्थात ऊन से ही 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। ऊनी वस्त्रों को पहनने का प्रचलन ईसाई संतों के यहाँ भी था। ''बपतिस्मा देने वाला जान या युहन्ना भी सूफधारी था। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी का मानना है कि 'पहले-पहल यह शब्द केवल उन्हीं व्यक्तियों के लिए प्रयोग में आता था, जो अपने पहनावे के लिए मोटे ऊनी वस्त्रों का व्यवहार किया करते थे। वे लोग ऐश्वर्य या भोग-विलास से सदा दूर रहा करते थे और अत्यंत सीधा-साधा जीवन व्यतीत करते हुए केवल आध्यात्मिक साधनाओं में लगे रहते थे।'' भाषाशास्त्रियों ने भी 'सूफ' शब्द से ही 'सूफी' शब्द की व्युत्पत्ति को मान्यता दी है। उनका मानना है कि अगर सूफी शब्द 'सफा' से बनता तो इसका व्याकरणिक रूप 'सफवी' होता; यदि यह 'सुफ्फा' से बनता तो इसका रूप 'सुफ्फी' रहा होता अगर 'सफ' से बनता तो 'सफी' होता।

इसी कारण इन भाषाशास्त्रियों का मानना है कि भाषा की दृष्टि से 'सूफी' शब्द के मूल में सूफ का होना ही व्याकरण सम्मत है। इसी कारण वे तीनों मतों को अस्वीकारते हैं। पर अब 'सूफी' शब्द का प्रयोग मुस्लिम संत या फकीर के लिए ही नियत-सा समझा जाता है।

भारत में सूफी मत का प्रभाव :

भारत में सूफी मत के प्रवेश की कोई निश्चित तिथि नहीं है, लेकिन फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं कि मुस्लिम आक्रमणों के तुरंत बाद से ही सूफी-साधकों का यहाँ आना-जाना प्रारंभ हो गया। भारत और अरब के संबंध बहुत प्राचीन हैं। इस्लाम के उदय से भी पहले दोनों देशों में व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध थे। लेकिन ऐसा माना जाता है कि ''प्रथम मालाबार में मुसलमान तीर्थयात्रियों का एक दल आया, जो सीलोन में आदम के पाद चिह्न का दर्शन करने जा रहा था। इस दल का नेता शेख शरफ बिन मलिक था, जो करगंनोर (मालाबार) के राजा को धर्मोपदेश द्वारा मुसलमान बनाने में सफल हुआ। लोगों का विश्वास है कि यह घटना हजरत मुहम्मद के जीवनकाल की है और बहुतों का ख्याल है कि ईसा की नवीं शताब्दी की यह बात है।''

भारत में इस्लाम का प्रवेश 711 ई. में हो चुका था। बसरा के गर्वनर हज्जाज बिन यूसुफ के आदेश से अरबी जनरल इमामुद्दीन मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध पर अपनी फौजों के साथ आक्रमण कर मुल्तान के प्रदेश को जीत लिया। दक्षिण भारत में अरब व्यापारियों का आना-जाना बहुत पहले से था। इस्लाम की सैनिक विजयों के साथ में ही उसका प्रचार-प्रसार भी बढ़ा और ''पहले पहल आने वाले धर्म प्रचारकों में शेख इस्माइल का नाम आता है। वह सन 1005 में लाहौर में आया।'' इन धर्म प्रचारकों के साथ ही सूफी साधक भी भारत आए और धर्म प्रचार में अपना हाथ बँटाने लगे, क्योंकि ''अगर केवल बल-प्रयोग और सैनिक विजयों के द्वारा ही अगर इस्लाम का प्रचार होना संभव होता तो प्राय: संपूर्ण भारतवर्ष इस्लाम धर्म को कबूल कर लिया होता।'' लेकिन ''सूफीमत का निरंतर रूप से प्रचार 12वीं शताब्दी के प्रथम चरण में प्रसिद्ध सूफी अल हुज्विरी के आगमन से हुआ। इनकी मृत्यु लाहौर में लगभग संवत 1928 में हुई।''

अल हुज्विरी जुनैद के सिद्धांतों को मानने वाले थे। इन्होंने अविवाहित जीवन व्यतीत किया और लगभग 60 वर्षों तक धर्म-प्रचार में लगे रहे। इनकी रचना 'कुश्फुल महजूब' को प्रमाणित सूफी गंन्थ माना जाता है।

हिंदी के प्रमुख सूफी कवि :

सूफी संतों ने सामाजिक समन्वय, इस्लाम के प्रचार-प्रसार आदि के क्षेत्र में ही महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई, अपितु साहित्य के संवर्द्धन में भी उनकी एक परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष भूमिका रही है। शोध का मूल विषय हिंदी के सूफी संत कवियों की व्याख्याओं से संबद्ध है। अतएव इन महत्वपूर्ण कवि सूफी संतों के विषय में संक्षिप्त ज्ञान रखना भी प्रासंगिक होगा। इस श्रेणी के प्रमुख सूफी संत कवि हैं- मुल्ला दाऊद, कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी, उस्मान, शेख नबी, कासिम शाह, नूर मुहम्मद, आदि।

मुल्ला दाऊद :

प्रेमाश्रयी शाखा के सूफी कवि मुल्ला दाऊद का मध्ययुगीन हिंदी साहित्य के कवियों में महत्वपूर्ण स्थान

है। सल्तनत काल में हिंदी को राज्याश्रय प्राप्त नहीं था। फिर भी जिस तन्मयता से हिंदी साहित्य में मुल्ला दाऊद ने अपनी रुचि दिखलाई, वह सराहनीय है। फिरोज तुगलक की धार्मिक कट्टरता ने हिंदू और मुसलमानों में विभेद की वह रेखा खींच दी थी, जिसके कारण दोनों धर्मों के अनुयायी एक-दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखने लगे थे। ऐसे समय में मुल्ला दाऊद प्रेम की पवित्र भावना को लेकर हिंदी साहित्य के माध्यम से समन्वयवाद क्षेत्र में अवतरित हुए। मुल्ला दाऊद रायबरेली के अंतर्गत डलमऊ बस्ती के रहने वाले थे।

डलमऊ के संबंध में अवध गजेटियर में लिखा है- फिरोजशाह तुगलक ने यहाँ मुस्लिम धर्म और विद्या के अध्ययन के लिए एक विद्यालय की स्थापना की थी। इसकी उपयोगिता इस बात से प्रकट है कि डलमऊ के मुल्ला दाऊद नामक कवि ने सन 719 हिजरी (1255 ई.) में भाषा में चन्दायन नामक ग्रंथ का संपादन किया। इस वर्णन से इतनी सूचना मिलती है कि डलमऊ के मुल्ला दाऊद ने चन्दायनी गाथा के आधार पर ग्रंथ संपादित किया था।

कुतुबन :

प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों में कुतुबन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये चिश्ती वंश के शेख बुरहान के शिष्य थे और जौनपुर के शासक हुसैन शाह के आश्रित थे। परंपरागत शैली का अनुसरण करते हुए कवि ने भी समसामयिक हुसैन शाह का वर्णन किया है। साहित्य में वर्णित यह हुसैन शाह कौन है; यह ऐतिहासिक विवाद है। रामचंद्र शुक्ल ने जायसी ग्रंथावली में कुछ और तथा हिंदी साहित्य के इतिहास पुस्तक में कुछ और, अर्थात दो तरह की बातें लिखी हैं। जायसी ग्रंथावली में शुक्ल जी ने लिखा है कि पूरब में बंगाल के शासक हुसैनशाह शर्की के अनुरोध पर जिसने सत्यपीर की कथा चलाई थी, कुतुबन मियाँ एक ऐसी कहानी लेकर जनता के समक्ष आए, जिसके द्वारा उन्होंने मुसलमान होते हुए भी अपने मनुष्य होने का परिचय दिया।

मंझन :

मंझन का पूरा नाम क्या था इस विषय में मतभेद है। सत्यजीवन वर्मा का कहना है कि मधुमालती में मंझन का नाम दो स्थानों पर आया है, जिनमें एक स्थान पर मलिक के नाम से प्रयुक्त है। वास्तव में मधुमालती में 'मंझन' नाम कम-से-कम पाँच स्थानों पर आया है, किंतु कहीं भी उसके साथ मलिक जुड़ा हुआ नहीं मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि सत्यजीवन वर्मा के पढ़ने में कोई त्रुटि हुई होगी। मंझन एक मुसलमान सूफी कवि थे।

प्रेम के माध्यम से मंझन ने भारतीय समाज में समाप्त हो रहे इंसानियत को जगाने का प्रयास किया है। ईश्वरीय प्रेम की अनुभूति तभी हो सकती है, जब मनुष्य को आपसी प्रेम का रहस्य समझ में आ जाए।

मलिक मुहम्मद जायसी :

निर्गुण धारा के प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी को सूफी कवियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। इनके जन्म के विषय में भी मतभेद है। अपने जन्म के विषय में 'जायसी' ने लिखा है-

''मा अवतार मौर नव सदी।

तीसर बरस ऊपर कवि वदी।''

रामचंद्र शुक्ल का कहना है कि यदि 'नवसदी' ही पाठ माने तो जन्म काल 900 हिजरी (1492 ई.) के लगभग ठहरता है। दूसरी पंक्ति का अर्थ यही निकलेगा कि जन्म से तीस वर्ष पीछे जायसी अच्छी कविता करने लगे। जयदेव तथा सैयद कत्वे मुस्तफा भी जायसी का जन्म काल 900 हिजरी मानने के पक्ष में हैं। किंतु रामपूजन तिवारी का कहना है कि जायसी का जन्म 870 हिजरी (1464 ई.) माना जा सकता है। जायसी के जीवन की अन्य घटनाओं से इसकी संगति बैठ जाती।

जायसी का जन्म जायस में हुआ था। पं. सूर्यकांत शास्त्री ने भी लिखा है कि इनका जन्म जायस शहर के कंचना मुहल्ला में हुआ था। जायस का पूर्व नाम उद्यान था, जहाँ पर थोड़े दिनों के लिए जायसी पाहुन के रूप में आए थे- बाद में वैरागी हो गए। कुछ विद्वानों का मत है कि जायसी गाजीपुर में पैदा हुए थे और मानिकपुर (प्रतापगढ़) में अपने ननिहाल में आकर कुछ दिनों तक रह गए थे।

विभिन्न विद्वानों और शोधों के आधार पर यह

निष्कर्ष निकाला गया कि जायसी ने लगभग 24 खंड काव्यों की रचना की है, जिसमें पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, मसला आदि प्रमुख हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से जायसी ने ईश्वर की प्राप्ति का मार्ग प्रेम बतलाया है। जायसी ने शुद्ध प्रेम का मार्ग दिखाकर यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि हिंदू हो या मुसलमान; प्रेम के द्वारा सभी ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं।

उस्मान :

कवि उस्मान गाजीपुर नगर के निवासी थे। गाजीपुर का वर्णन करते समय उन्होंने वहाँ की भौगोलिक स्थिति तथा वहाँ की सुख-शांति का वर्णन किया है। उस्मान निजामुद्दीन चिश्ती की शिष्य परंपरा में हाजी बाबा के शिष्य थे। उस्मान अत्यंत विनीत स्वभाव और गुणी परिवार के सदस्य थे। उन्होंने चित्रावली को प्रेम की अभिव्यक्ति का एक मात्र साधन बनाया है। गुण तत्व तो उनका ईश्वर की खोज से संबंधित है। चित्रावली के माध्यम से यह कहलवाना कि ''सरोवर के अन्दर मैं छिप जाती हूँ और कोई मुझे खोज ले'' निश्वित रूप से उस ब्रह्म की तलाश की ओर कवि ने इशारा किया है, जिसके पीछे सारा संसार अंधी दौड़ लगाता है। लेकिन ब्रह्म पास में रहते हुए मिल नहीं पाता। उस्मान प्रेम की प्रतिष्ठा इसी में समझते हैं कि प्रेमी को प्रेमिका की खोज में सारा जीवन अर्पण कर देना चाहिए। तभी प्रेमिका की प्राप्ति संभव है। ऊपरी दिखावे और ढोंग से प्रेमिका (ईश्वरी) को प्राप्त करना अत्यंत मुश्किल है। इस प्रकार उस्मान भी सूफी मत की प्रेमाश्रयी शाखा के एक महत्वपूर्ण संत थे।

शेख नबी :

सम्राट जहाँगीर के शासन काल के समय शेख नबी का स्थिति काल ज्ञात होता है। ये जौनपुर जिले में दोसपुर के पास मऊ नामक स्थान के रहने वाले थे। इन्होंने 'ज्ञानदीप' नामक आख्यान काव्य लिखा है, जिसमें राजा ज्ञानदीप और रानी देवजानी की कथा है। कवि परमात्मा के स्मरण को अपना सबसे बड़ा गुण मानता है, शेष तो वह स्वयं के अंदर अवगुण ही बताता है। कवि परमात्मा के निर्गुण स्वरूप का ध्यान करता है। वह अपने आपको परमात्मा के सम्मुख समर्पित कर देता है। कवि ने प्रेम का आविर्भाव साक्षात दर्शन से कराया है। प्रेमोदय पहले नायिका के हृदय में होता है। प्रेम विरह आदि को कवि ने संयोजित किया है। ईश्वर के प्रति समर्पित होकर कवि ने साधक को साधना में लीन होने की बात स्पष्ट की है। ग्रंथ का रचनाकाल सन 1619 निश्चित होता है। इस प्रकार से हिंदी के सूफी संत कवियों का अपना एक पृथक इतिहास है और हिंदी साहित्य तथा सूफी धर्म के प्रति उनके अनुराग एवं अवदान को भुलाया नहीं जा सकता है। प्राय: इन सभी सूफी संतों का प्रधान लक्ष्य सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना ही रहा है। ❑

संदर्भ ग्रंथ :

1. सूफीमत साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, पृ. 142
2. सूफीमत साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, पृ. 408
3. सूफीमत साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, पृ. 418
4. सूफी काव्य-संग्रह, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पृ. 37
5. सूफी काव्य-संग्रह, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, पृ. 38
6. सूफीमत साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, पृ. 443
7. सूफीमत साधना और साहित्य, रामपूजन तिवारी, पृ. 437
8. सूफीमत और हिन्दी सूफी काव्य, डॉ. नरेश, पृ. 34
9. रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 66
10. डॉ. परमेश्वरी लाल गुप्त : कुतुबन कृत मृगावती, कड़वक-9, पृ. 117
11. शिवगोपाल मिश्र (संपा.), मंझनकृत मधुमालती (भूमिका), पृ.9
12. शिव गोपाल मिश्र, मधुमालती (भूमिका से उद्धृत), पृ. 13
13. रामपूजन तिवारी, जायसी (दिल्ली, 1973), पृ. 12

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

कवि बेचैन कण्डियाल कृत कविता संग्रह 'राग जिंदगी का' में वर्णित सामाजिक यथार्थ

डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र

सहायक प्राध्यापक , हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय
अरुणाचल प्रदेश
रोनो हिल्स, दैमुख-791112
मो. 9863027568
ई-मेल : nehu00vishwajit@gmail.com

साहित्य वह माध्यम है, जिसको आधार बनाकर साहित्यकार समाज को वर्णित करता है। इसी प्रकार कवि बेचैन कण्डियाल भी अपनी कृतियों में सामाजिक जीवन को तथा समाज से जुड़े विविध विषयों को यथार्थ रूप से चित्रित करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं की तरह गजलों में भी सामाजिक जीवन के यथार्थ का उल्लेख सहजता से किया है। 'राग जिंदगी का' उनकी एक सफल कृति है। सामाजिक यथार्थ की प्रस्तुति की वजह से यह कृति और भी अधिक महत्वपूर्ण बन गई है। जीवन के यथार्थ का चित्रण करने के साथ-साथ कण्डियाल जी धार्मिक आडंबर आदि को भी अपनी गजलों में दर्शाते हैं, जिसे आधुनिक समाज तथा यथार्थ से जोड़कर भी देखा जा सकता है। कवि लिखता है-

ओ बाहर के ढोंगियो
तुम दीये जलाओ लाखों
अंदर से दिल तुम्हारा हरदम रहता है काला। [1]

गजलों की इन पंक्तियों को जहाँ एक ओर धार्मिक पाखंड तथा आडंबरों से जोड़कर देखा जा सकता है, तो वहीं दूसरी ओर आज के समय के, राजनीतिज्ञ और समाज के शासक वर्ग से भी जोड़ा जा सकता है। कवि कण्डियाल जी कहते हैं कि हे पाखंडियो, तुम ईश्वर की जितना भी आराधना करो, दीपक जलाओ, तुम ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि तुम्हारे मन में ईश्वर के प्रति सच्ची आस्था तथा श्रद्धा नहीं है। तुम्हारे मन में ईश्वर के प्रति भक्ति-भाव का अभाव है। अगर इन्हीं पंक्तियों को आज के समय से जोड़ कर देखें तो इनमें छली-दम्भियों की सच्ची तस्वीर को उभारा गया है। वे बाहर से लोगों को जितने भी वादे करें, वचन दें, फिर भी वे उन वादों को कभी पूरा नहीं करेंगे। क्योंकि उनके मन में जनता के प्रति

उत्तरदायित्व के बोध का अभाव है। वे केवल अपने स्वार्थ के बारे में ही सोचते रहते हैं। उन्हें जनता तथा लोगों से कोई लगाव नहीं रहता। वे बाहर से जितने अच्छे लगे, परंतु मन से सदा स्वार्थी ही रहते हैं।

इसी प्रकार कवि कण्डियाल ने बदलते समय तथा परिस्थिति के साथ लोगों के बदलते रिश्तों को भी परिभाषित किया है। अच्छे समय में हर कोई मित्र बन जाता है, परंतु सच्चे मित्रों की पहचान बुरे वक्त में ही होती है, क्योंकि बदलते स्थिति के साथ ही लोग आपसे दूरी भी बना लेते हैं। जब तक लोगों को आपसे फायदा मिलता रहता है, वे आपसे अच्छे संबंध बनाए रखते हैं। किंतु ज्यों ही आपकी स्थिति बिगड़ने लगती है, त्यों ही लोग आपसे दूर चले जाते हैं। कवि कण्डियाल जी लिखते हैं कि जब उनके जीवन की स्थिति में परिवर्तन आया तो उनके सभी मित्रों ने उनसे किनारा कर लिया है। उनके सभी मित्र दुश्मन बन गए। जो कभी अच्छे समय में जिगर के पास थे, वे आज सभी उनसे दूर हो गए हैं–

जो कभी थे दिल-जिगर के पास वो
आज दिखते हैं सभी उस किनारे। [2]

कण्डियाल जी की गजलों में वर्तमान समय के लोगों के जीवन में बढ़ रहे अकेलापन, हताशा, निराशा का वर्णन हुआ है। आज लोगों का मन बेचैन है। उन्हें कुछ न होने पर भी अकेलापन, सूनापन घर कर गया है। लोगों के मन तनाव से बेचैन है, फिर भी उन्हें खामोशी ही अच्छी लगती है। उनके जीवन में हर रोज यह अकेलापन बढ़ ही रहा है। सभी अपने आप में ही सिमट गए हैं। किसी के पास भी दूसरों के लिए समय नहीं है। उनके पास समय है, तो केवल अपने अकेलापन, तनाव तथा उदासी के लिए। व्यक्तियों में मौजूद ऐसी स्थिति को कण्डियाल जी कुछ इस प्रकार शब्दबद्ध करते हैं –

अच्छी लगती हैं खामोशियाँ
दिन-दिन बढ़ती बेचैनियाँ। [3]

ठीक इसी प्रकार अपने ही एक अन्य गजल में वे लिखते हैं कि आज लोग अपने आप में सिमटते चले जा रहे हैं। परिणामस्वरूप उन्हें अपने आसपास ऐसा कोई व्यक्ति नहीं नजर आता, जिससे अपने दुखों को साझा किया जा सके। व्यक्तियों में सहृदयता का होना मुश्किल दिखता है तथा लोगों के पास अपना कहने के लिए भी कोई नहीं है। वे केवल अपने जीवन को लेकर ही व्यस्त हैं। आज लोग अपने आपमें इस हद तक व्यस्त हो गए हैं कि उनलोगों के पास अपना कहकर अपने जीवन के दुख सुनाने के लिए भी कोई नहीं है। कवि लिखते हैं –

दर्द दिल का हम भला किससे कहें
कौन अपना है भला जिससे कहें। [4]

अक्सर लोग गजलों का सीधा संबंध प्रेम से जोड़ते हैं। कण्डियाल जी भी अपनी गजलों में 'प्रेम संबंधों' का वर्णन करते हैं। वे आज के समय के प्रेम संबंधों का चित्रण करते हुए लिखते हैं कि अब उनके जीवन में कोई भी खुशी नहीं रही है, क्योंकि उनके अपने आज उनसे दूर है। आज उनके हमदम के उनसे दूर चले जाने के कारण उनका जीवन दुख तथा उदासी से भर गया है। वे कहते हैं कि आज वह अपने प्रिय के लिए उस तरह तड़प रहे हैं, जिस तरह चाँद के लिए चकोरी तड़पती है। वह कहते हैं कि आज किसी के भी पास ऐसा कोई मरहम नहीं है, जो कवि के टूटे हुए दिल को जोड़ सके। आज इस संसार में ऐसा कोई नहीं है, जो थोड़े समय के लिए ही सही खुशी दे सके –

अब तो अपनी कोई खुशी कोई गम नहीं है
जब अपना कोई भी यहाँ हमदम नहीं है।

हमारे टूटे हुये दिल को जो कुछ देर जोड़ दे
ऐसा किसी के पास भी यहाँ मरहम नहीं है। [5]

कवि को अपने प्रिय से हर रोज अनेक जख्म तोहफे की तरह मिला। परंतु कवि ने उन सभी जख्मों को अपने दिल में सजा कर रखा है। उन्होंने हर जख्मों एवं यादों को अपने पास सँजोये रखा है, जिसकी अभिव्यक्ति कण्डियाल जी निम्न गजलों के माध्यम से करते हैं –

इस तरह से हमने हौसला बनाये रखा
तेरी यादों को जिगर में बसाये रखा।
बहुत जख्म दिए हैं तुमने तोहफों की तरह
हर जख्म गुलशन की तरह सजाये रखा। [6]

कवि की गजलों में प्रेम की पराकाष्ठा का चित्रण दिखाई देता है। कवि अपने प्रिय को अपनी प्रेरणा बनने के लिए कहता है ताकि वह अपने जीवन में कुछ कर सके। यह कवि के प्रेम की पराकाष्ठा ही है कि अपने प्रिय की प्रेरणा से ही वह जीवन में कुछ करने में सक्षम हैं।

कवि कण्डियाल जी ने तत्कालीन समाज के यथार्थ को गजलों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाया है। उनके गजलों में तत्कालीन समाज में व्याप्त गरीबी, महँगाई का भी चित्रण हुआ है। कवि कहता है कि आज वक्त ने लोगों के जीवन में इस तरह परिवर्तन ला दिया है कि किसी के जीवन में हर रोज दिवाली है तो किसी का गरीबी तथा महँगाई के कारण दिवाला निकल गया है। जो गरीब है गरीबी की चक्की में पिस रहा है, बाहर निकलने के लिए उनके पास कोई भी मार्ग उपलब्ध नहीं है। समाज में व्याप्त महँगाई किसी के दिल में चुभ रही है तो किसी के जीवन में यही महँगाई दिवाली में जलाए जाने वाली फुलझड़ी बन गई। किसी का जीवन खुशी से व्यतीत हो रहा है तो अधिकतर लोग गरीबी से परेशान होकर महँगाई की चक्की में पिसते जा रहे हैं। कवि कहता है कि कहीं पर इस गरीबी के कारण देवी लक्ष्मी फूल-दीप के लिए भी तरस रही हैं तो कहीं पैसों की माला से लक्ष्मी का स्वागत किया जा रहा है –

मत पूछो यारों वक्त ने, ये कैसा कमाल कर डाला
किसी की मन रही दिवाली, किसी का निकला दिवाला
किसी के दिल में झड़ रही हैं, फुलझड़ियाँ खुशी की
किसी के दिल पर चुभ रहा है, महंगाई का पैना भाला
कहीं लक्ष्मी तरस रही है, पूजा के चन्द फूलों को
कहीं सुशोभित उसको करती, नोटों की भारी माला।[7]

कवि कण्डियाल ने अपने गजलों में स्वाधीनता के पश्चात लोगों के मन के स्वप्नभंग का भी वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि देश के आजादी के बाद हमने जो भी स्वप्न देखे थे, उनमें से अधिकांश ही झूठे साबित हुए हैं। जहाँ आजादी से पहले अंग्रेज हमारा शोषण करते थे, वहीं अब अपने ही हमारा शोषण करने में लगे हुए हैं, जिन्हें हम अपना समझकर उम्मीद बनाकर रखे थे। उन्होंने हमारे स्वप्नों तथा आशाओं को रौंदकर कुचला है। अर्थात कवि कहते हैं कि हमारे स्वप्नों को अपने देश के लोगों ने ही कुचला है। लोगों ने स्वाधीनता से पूर्व जो भी स्वप्न देखा था, कोई भी पूरा नहीं हुआ है। लोग आजादी के बाद खुशहाली के जो स्वप्न देखे थे, वे अधूरे ही रह गए।

रोज जुड़े में शौक से टाँकते थे जिसको।
हाथों से मसलकर गुलाब मुरझाया है उसने।[8]

कवि कण्डियाल जी अपनी गजलों में नेताओं द्वारा लोगों से किए गए झूठे वादों का भी उल्लेख करते हैं। वे कहते हैं कि अब हमें आपलोगों के स्वप्न तथा वादों से डर लगने लगा है। कवि आगे कहते हैं कि किसी के द्वारा किए गए सुख-सुविधाओं के वादों से अब लोगों का मन भरने लगा है। इसलिए अब हमें कोई भी आशा मत दिखाओ, जो बाद में तुम लोग पूरा करना भूल जाते हो। नेता वोट प्राप्ति हेतु लोगों को अनेक आशा दिलाते हुए स्वप्न दिखाते हैं। विभिन्न वादे भी करते हैं, परंतु वोट प्राप्ति के बाद वे उन वादों को बाद में भूल जाते हैं। साथ ही लोगों के विकास के नाम पर अपना विकास करते चले जाते हैं। सामाजिक यथार्थ को गजलकार ने कुछ यूँ बयाँ किया है –

उजालों से अब मन भरने लगा है।
दिये मत जलाओ दिल डरने लगा है।[9]

कवि कण्डियाल ने अपनी गजलों में आज के समाज का सटीक चित्रण किया है। वह आज के आधुनिक समाज का चित्रण करते हुए कहते हैं कि आज समाज में चारों ओर केवल आदमी ही आदमी हैं। परंतु कहीं पर कोई मनुष्य नहीं है, जिसमें मानवता जीवित हो। आज लोगों में रिश्तों का कोई महत्व नहीं है। वे केवल पैसों के पीछे ही भागने में व्यस्त हैं।

हर व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे अपनी मानवीयता का न्योछावर कर चुका है। आज समाज में व्यक्ति के लिए रिश्तों का कोई महत्व नहीं है। अपने ही पराये हो गए हैं। लोगों को केवल अपने जीवन से ही प्रेम है। हर तरफ लोग गरीबी से बेहाल हैं। परंतु लोगों को केवल अपने स्वार्थ से मतलब है। दूसरे व्यक्तियों के लिए

उनलोगों के पास भी समय नहीं है। यहाँ तक कि प्रेम से बुलाने के लिए भी लोग अपना स्वार्थ ही देखते हैं। जहाँ स्वार्थ नहीं, वहाँ आदमी जाता नहीं। व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के पीछे पड़ा हुआ है, जिसकी पुष्टि गजलकार की गजल से होती है–

स्वार्थ निष्ठा इस कदर बढ़ती गई
पराया होने लगा है आदमी। [10]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कवि बेचैन कण्डियाल ने अपनी कृति 'राग जिंदगी' में 21वीं सदी के समाज का वर्णन किया है, जहाँ लोगों में स्वार्थ और लालच की भावना मुख्य रूप से भरी हुई है। ऐसे बहुत ही कम लोग होंगे, जो समाज और संसार के अन्य जीवों के दुखों से अपना जुड़ाव महसूस करते होंगे। अपने अलावा मनुष्य में अन्य व्यक्तियों के प्रति प्रेम एवं बंधुत्व की भावना के विपरीत इर्ष्या की भावना अधिक देखने को मिल रही है। समाज में स्वार्थसिद्धि, निराशापन, अकेलापन जैसी स्थितियों ने आसानी से घर कर लिया है। अत: कवि ने अपनी गजलों के माध्यम से समाज की वास्तविकता को पाठकों के समक्ष सहजता से प्रस्तुत किया है। ❑

संदर्भ सूची :

1. राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-08
2. वही, पृ.- 78, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
3. वही, पृ.- 72, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
4. वही, पृ.- 57, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
5. वही, पृ.- 22, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
6. वही, पृ.- 42, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7. वही, पृ.- 26, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
8. वही, पृ.- 15, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
9. वही, पृ.- 49, राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
10. वही, पृ.- 50 राग जिंदगी का, बेचैन कण्डियाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

असमिया लोकगीतों में रामकथा का वर्णन

डॉ. अर्चना हजारिका

सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग
नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज, असम
मो. 8638558401
ई-मेल : archana.h.ghy@gmail.com

शोध-सार :

लोक साहित्य मूलत: लोक द्वारा निर्मित, लोक से संबंधित तथा लोक में ही प्रचलित गीत है। 'असमिया लोक गीत' असमिया लोक साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। ये गीत असमिया समाज जीवन का दर्पण है, असमिया समाज और संस्कृति की पहचान है। असमिया लोक गीतों में रामकथा का वर्णन एक पुरानी परंपरा है। इन गीतों में राम के आदर्श एवं मर्यादा पुरुषोत्तम रूप की सहज अभिव्यक्ति की गई है।

बीज शब्द : लोक साहित्य , लोक गीत, राम कथा।

प्रस्तावना :

लोक गीत मूलत: साधारण जन की मौखिक काव्य सृष्टि है। समाज के साधारण जन ही समाज के हित के लिए इन गीतों की रचना करते हैं। इसलिए इन गीतों में व्यक्ति चेतना की बजाय सामाजिक चेतना का प्रभाव परिलक्षित होता है। असमिया लोक गीतों का निर्माण भी असमिया समाज जीवन के हित के लिए ही किया गया है। इन लोक गीतों में असमिया समाज जीवन की परंपरा, संस्कृति का परिचय प्राप्त होता है। अगर असमिया समाज जीवन के प्राचीन परंपरागत रीति -रिवाज, संस्कृति आदि को जानना है तो असमिया लोक गीतों का अध्ययन करना आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रत्येक कार्य के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। प्रस्तुत शोधालेख का भी कुछ उद्देश्य है, जो इस प्रकार है -

(क) असमिया लोक गीतों का अध्ययन करना।

(ख) असमिया लोक गीतों में राम कथा वर्णन पर प्रकाश डालना।

अध्ययन की सीमा : प्रस्तुत शोधालेख की सीमा असमिया लोक गीत और इन लोक गीतों में राम कथा का वर्णन तक ही सीमित है।

अध्ययन की पद्धति : प्रस्तुत शोधालेख पूर्ण रूप से तथ्यात्मक है। इस शोध कार्य को संपूर्ण करने हेतु विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक पद्धतियों का सहारा लिया गया है।

मूल विषय : पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों में सैकड़ों जनजातियाँ रहती

हैं। सबकी भाषा-संस्कृति अलग -अलग है। पूर्वोत्तर भारत लोक-साहित्य का भंडार है। आज भी जिन जनजातियों की अपनी लिपि नहीं है अथवा लिखित साहित्य नहीं है, वे लोक साहित्य में बहुत समृद्ध हैं। किसी भी समुदाय की संस्कृति को जानने-समझने का सबसे बेहतर माध्यम उनका लोक साहित्य है।

असमिया लोक साहित्य : असम भारत के उत्तर - पूर्व का एक राज्य है। जहाँ तक असमिया समाज की बात है, यहाँ विभिन्न समय में आईं विभिन्न जनगोष्ठियों का प्रभाव देखा जाता है। यह प्रभाव भाषा, पोशाक, रीति -रिवाज, उत्सव आदि सभी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अत: कहा जा सकता है कि द्रविड़, मंगोल आदि के साथ-साथ सभी जनजातीय संस्कृति के मेल से ही वृहद् असमिया जाति का निर्माण हुआ है। असम में लिखित साहित्य के साथ-साथ लोक साहित्य की भी कोई कमी नहीं है। सामान्य रूप से असमिया लोकसाहित्य को छह भागों में विभाजित किया गया है-

(1) लोक गीत, (2) कहानी, (3) मुहावरा, (4) लोकोक्ति, (5)दृष्टांत, (6)मंत्र।

इन छह भागों को भी कई उपभागों में विभाजित किया गया है। हमारे आलोचना का विषय है 'लोकगीत', अत: यहाँ पर सिर्फ लोक गीत पर ही चर्चा की जाएगी।

असमिया लोक गीत का संक्षिप्त परिचय : लोक जीवन का सहज और यथार्थ चित्रण लोक गीतों में प्राप्त होता है। लोक गीत एक ऐसा दर्पण है, जिसमें व्यक्ति, समाज और यहाँ तक कि संपूर्ण राष्ट्र अपना यथार्थ प्रतिबिंब देख सकता है। अत: लोक गीतों का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का कथन है -**''भारतीय हृदय का सामान्य स्वरूप पहचानने के लिए पुराने प्रचलित ग्राम गीतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, केवल पंडितों द्वारा प्रवर्तित काव्य परंपरा का अनुशीलन ही आलम नहीं है।''**[1]

असमिया लोक गीत असमिया जन जीवन, असमिया लोक-मन की आशा-आकांक्षाओं का सजीव चित्रण है। इन गीतों में जिस प्रकार सामान्य जनमानस के भावावेग, अनुभूति, सुख-दुख के क्षण, परंपरा, विश्वास आदि संस्कृति के विविध पक्ष मुखर हो उठे हैं, उसी प्रकार इन गीतों से सामाजिक और नैतिक सीख भी प्राप्त होती है।

असमिया समाज में प्रचलित लोक गीत विभिन्न उत्सव, पर्व, त्योहारों आदि पर गाए जाते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-विवाह गीत, बिहू गीत, श्रम गीत, आई नाम (शीतला माता पूजन के गीत), निचुकनि गीत (लोरी), देव-देवी पूजन के गीत, बारह महीनों के गीत आदि। इन गीतों का उद्देश्य मन बहलाने व मनोरंजन के अतिरिक्त श्रम परिहार, मनोवेगों की शांति, दुखों का निवारण, शिक्षा तथा उपदेश, बच्चों को सुलाना, खिलाना मन बहलाना आदि है।

असमिया लोक गीत में रामकथा का वर्णन : असमिया लोक साहित्य में विशेष रूप से मुहावरे, लोकोक्ति, लोकगीत, लोक कहानियों आदि में रामायण कथा का प्रभाव परिलक्षित होता है। असमिया लोक गीतों के अंतर्गत अनेक ऐसे गीत हैं, जहाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से राम कथा का वर्णन किया गया है।

1. विवाह गीत : असमिया समाज में विवाह संस्कार सबसे प्रसिद्ध और प्रधान है। विवाह संस्कार से संबंधित अनेक लोक गीत असमिया समाज में प्रचलित हैं। इन गीतों में वर खोजने से लेकर बारात की विदाई तक का वर्णन मिलता है। दुख तथा करुणा के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य इन गीतों की मूल विषय-वस्तु है। यद्यपि ये गीत स्वत:स्फूर्त हैं, फिर भी इन गीतों के माध्यम से नारी मन की अनुभूति, दूल्हा -दुल्हन के रूप-सौंदर्य, वैवाहिक जीवन में एक नारी का कर्तव्य तथा दायित्व आदि विषयों का वर्णन किया गया है। असमिया 'ब्याह- गीतों' या 'बियानामों' में लौकिक कथाओं के साथ-साथ राम-सीता, शिव-पार्वती, रुक्मिणी-कृष्ण आदि की कथा का वर्णन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सर्वत्र विद्यमान है। ये गीत सिर्फ महिलाएँ गाती हैं। असमिया विवाह संस्कार में जोरोण(चढ़ावा), पानी तोला, नोवनी (स्नान), दूल्हे का स्वागत, अग्नि कुंड, पंडाल सजावट, बेटी विदाई आदि अनेक परंपरागत रस्म, रीति-रिवाज हैं, जहाँ राम-सीता की कथाओं का वर्णन है। राम-सीता को इन गीतों में आदर्श नारी-पुरुष माना गया है।

(क) पानी तोला गीत : असमिया समाज में विवाह संस्कार में एक महत्वपूर्ण रस्म है 'पानी तोला'। इसमें गाँव की महिलाएँ पास की नदी या तालाब से कलश में पानी लाती हैं और बाद में उसी पानी से दूल्हा - दुल्हन को नहाया जाता है। पानी लाने जाते समय सभी महिलाएँ हर्षोल्लास के साथ-साथ नृत्य-गीत भी करती हैं। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं, उसे ब्याह-गीत कहा जाता है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

''जोन बेलि छकुरि गोपीनी
जोन बेलि जोने चिकेमिकाय
तरा ऐ मइ बोलो किबा फूल फुले।
जोन बेलि रामचंद्रर पदुलित
जोन बेलि छकुरि गोपीनी
तरा ऐ पारे बुले येन बुले।।'' [2]

(बार माहर तेर गीत, पृ.21)

अर्थात चाँद सूरज जैसी सुंदर गोपियाँ एक साथ पानी लेकर आ रही हैं। दूर से उन्हें देखकर ऐसा लग रहा है मानो वे कोई फूल हों। आज रामचंद्र जैसे सुंदर वर के आँगन में ढेर सारे फूल खिल रहे हैं। इस गीत में वर की रामचंद्र के साथ तुलना की गई है।

(ख) नोवनी गीत (स्नान गीत) : असमिया समाज में शादी से पहले दूल्हा और दुल्हन को नहाने का रस्म है। इस रस्म में दूल्हा-दुल्हन को हल्दी लगाकर केले के पेड़ के नीचे स्नान कराया जाता है और इस अवसर पर गाँव की महिलाएँ गीत गाती हैं, जिसे नोवनी गीत कहा जाता है। दूल्हे को स्नान करने के लिए बुलाती हुई महिलाएँ इस प्रकार गाती हैं -

''नोवनी घरलै नाहे रामचंद्र ऐ राम
सीता क'ला बुलि शुनि हे।।
सुवर्णर शज्याते आइदेउ शुइ आछे
इकथा मनतो नाइ।।'' [3]

(बार माहर तेर गीत, पृ. 22)

यहाँ दूल्हे की रामचंद्र के साथ तुलना की गई है। गाँव की महिलाएँ दूल्हे को चिढ़ाती हुई कहती हैं कि हमारे रामचंद्र स्नान घर में नहीं आना चाहते, क्योंकि उन्होंने कहीं से सुन लिया है कि उनकी होने वाली पत्नी सीता काली है। हे राम सोने के पलंग पर बैठकर वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है क्या तुम इस बात को भूल गए हो? इस गीत में दूल्हा-दुल्हन को राम-सीता के साथ तुलना किया गया है।

(ग) जोरोन गीत (चढ़ावा गीत) : इन गीतों को न्योता गीत या चढ़ावा गीत कहा जा सकता है। असमिया विवाह संस्कार में एक रस्म है, जहाँ दूल्हे के घर से दुल्हन के लिए शादी का जोड़ा, गहने आदि भेजा जाता है, जिसे पहनकर दुल्हन विदा होती है। इस रस्म को 'तेल दिया' रस्म भी कहा जाता है। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं, उन गीतों को जोरोन गीत कहा जाता है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

''मारार अलंकार थोवा काति करि
ऐ राम देउतारार अलंकार थोवा है।
रामे दि पठाइछे विचित्र अलंकार
ऐ राम हाते योरे करि लोवा है।
कैकयी आहिछे सुमित्रा आहिछे
आहिछे रामरे माउ।
जनकर जियरी जानकी सुंदरी
जोरोन पिन्धाये आजि चाउ।।'' [4]

(कामरूपी लोकगीत, पृ.87)

अर्थात यहाँ दुल्हन को कहा गया है कि अब तुम अपनी माँ तथा पिताजी का दिया हुआ अलंकार खोल दो। रामचंद्र जैसे तुम्हारे स्वामी ने विचित्र अलंकार भेजा है। दोनों हाथ जोड़ कर उसे ग्रहण करो। कैकेयी, सुमित्रा और राम की माता भी आई हैं। राजा जनक की बेटी जानकी सुंदरी को आज अलंकार पहनाकर देखते हैं।

(घ) जोरा नाम : दूल्हा-दुल्हन जब अग्नि कुंड के पास एक साथ बैठते हैं, तभी गाँव की महिलाएँ दोनों को चिढ़ाती गीत गाती हैं। इन गीतों को जोरा नाम कहा जाता है। इन गीतों के मूल रस हास्य-व्यंग्य है। जैसे -

मारार घरते आछिला आइदेउ
ऐ राम खाइ पिठा गुरिर लाडू।
आमार रामचंद्रत परिला आइदेउ

ऐ राम पिन्धाब सुणरे खारु।।'' [5]

(बार माहर तेर गीत, पृ. 31)

अर्थात अब तक तुम अपने माँ के घर में चावल के लड्डू खा रही थी। हमारे रामचंद्र से तुम्हारा विवाह हुआ है। अब वह तुम्हें सोने के कंगन पहनाएगा।

(ङ) विदाई गीत : असमिया समाज में बेटी विदाई के समय भी गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में भी राम - सीता का वर्णन परिलक्षित होता है। जैसे -

''दीघलकै उरणि नलबा आइदेउ
आगर आशै पोवा दरा।।
उठा जे उठा राम नुठा जे एरि याम
गाभरुर रखीया हबा।
अय अलंकारे सीता ह'ल तोमारे
उठा राम घरलै ब'ला।।'' [6]

(बार माहर तेर गीत, पृ.30)

अर्थात इतना लंबा पल्लू मत लो, क्योंकि दूल्हे को तुम पहले से ही जानती हो। हे राम उठो, अगर नहीं उठे तो तुम्हें यही छोड़ के जाएँगे। तुम इन लड़कियों की रखवाली करना। सभी अलंकारों के साथ सीता तुम्हारी हुई। अर्थात तुम्हारी शादी संपन्न हुई। अब घर चलो।

2. तुलसी गीत : असमिया समाज में आश्विन महीने के अंतिम दिन में काति बिहू मनाया जाता है। उस दिन तुलसी के पौधे और खेत में मिट्टी का दीया लगाने की परंपरा है। लोगों का विश्वास है कि इससे उनके जीवन में सुख -शांति आती है तथा खेती अच्छी होती है। इससे उन्हें अन्न की कमी नहीं होगी। इस अवसर पर छोटे-छोटे लड़के तुलसी के पौधे के चारों तरफ घूम-घूम कर जो गीत गाते हैं उसे तुलसी गीत कहा जाता है। इन गीतों में राम कथा का वर्णन बड़े ही सुंदर ढंग से किया गया है। ये गीत मूलत: भक्तिमूलक हैं। एक उदाहरण -

''तुलसीर तले तले मृग पहु चरे
ताके मारिबक लागि रामे यतन करे।।
राम गैला मृग मारिब लक्ष्मण गैला लरि।
लंकार रावण पाइ सीताक नीला हरि।।
मरि गेल तुलसी खरि गेल पात।
गुर्खा गरखीया चलि नाम धरे उठे जात जात।
रामे रुवे तुलसी लक्ष्मण ढाले पानी।।'' [7]

(असमिया लोकगीत संचयन, पृ. 98)

अर्थात तुलसी के पौधे के नीचे मृग घूम रहा है। राम उसे मारने की कोशिश करते हैं। जब राम मृग को मारने के लिए जाते हैं, तब लक्ष्मण भी उनके पीछे-पीछे भागते हैं। उसी समय लंका नरेश रावण आकर सीता का हरण करता है। तुलसी का पौधा मुरझा जाता है और उसके पत्ते गिरने लगते हैं। चरवाहे के बच्चे भक्ति गीत गा रहे हैं। राम पवित्र तुलसी का पौधा लगा रहे हैं और लक्ष्मण उसमे पानी देते हैं।

3. नावरीया गीत : नावरीया गीत मूलत: मल्लाह गीत है। यह आनंद का गीत है और ये समूह में गाए जाते हैं। इन गीतों के द्वारा लोगों के मन में उत्साह तथा आनंद उत्पन्न होता है। मल्लाह अपने श्रम को आनंददायक बनाने के लिए इस प्रकार के गीत गाते हैं। असम के बरपेटा जिले के नाव खेल उत्सव में भी इस प्रकार के गीत गाने की परंपरा है। नावरीया गीत में राम कथा का वर्णन इस प्रकार किया गया है -

''राम आहिलारे माया मृग मारि।
माया करि मारीच मायार चुड़ामणि।।
माया मृग धरि खेदे रामर बिधिनि।
आतर करिला राम लक्ष्मण दुइ भाई।
हरिला रावण सीता शून्य घरे पाय।।'' [8]

(असमिया लोकसाहित्यर रूपरेखा, पृ.115)

अर्थात राम मायावी मृग का शिकार करने जाते हैं। वह मायावी मृग और कोई नहीं मारीच था। उस मायावी मृग ने छल से राम और लक्ष्मण को सीता से दूर किया। तब कुटिया में सीता को अकेली पाकर रावण ने उसका हरण किया।

''कि चाइ आछिला भाया कि ए हे
रावणे हरि निला सीताक कि ए हे
अ' राम अ' हरि।
सीता हरिल रे, अ' पंचवटी बने

पुष्पक रथत तुलि निये मायावी रावणे।
आकाशर उपरे तुलि मारिल उरावे।।'' [9]

(कामरूपी लोकगीत, पृ.96)

अर्थात हे भाई लक्ष्मण तुम क्या देख रहे थे। रावण सीता को हरण कर ले गया। हे राम, हे हरि। मायावी रावण ने पंचवटी बन में सीता का हरण कर उसे पुष्पक रथ में में ले गया है।

4. हुँसरी गीत : ये गीत असमिया बोहाग बिहू के समय गाए जाते हैं। सभी लड़के और बुजुर्ग व्यक्ति दल बनाकर गाँव के प्रत्येक घरों में जाकर हुँसरी गीत गाते हैं। सभी घर वाले इस हुँसरी दल से आशीर्वाद माँगते हैं। असमिया समाज के लोगों का मानना है कि इन हुँसरी दल के आशीर्वाद से उनके जीवन में खुशियाँ और धन-धान की कोई कमी नहीं होती। ये हुँसरी गीत मूलत: भक्तिमूलक होता है। इन गीतों में भी राम कथा का सुंदर वर्णन परिलक्षित होता है। जैसे -

''राम कांदे लक्ष्मण कांदे कांदे दुइ भाई।
हनुमंतइ गछर डालत सीतार गुणे गाइ।।
हनुमंतइ बोले प्रभु नकरिबा चिंता।
सागरते सेतु बाँधी आनी दिम सीता।।'' [10]

(असमिया रामायणी साहित्य, पृ.712)

अर्थात राम और लक्ष्मण दोनों भाई मिलकर रो रहे हैं। हनुमान पेड़ की डाली में बैठ कर माता सीता का गुण गान कर रहे हैं। हनुमान कहते हैं प्रभु चिंता मत कीजिए। सागर में सेतु बनाकर हम माता सीता को वापस लेकर आएँगे।

5. होली गीत : होली फाल्गुन महीने में मनाया जाता है। यह रंगों का त्योहार है। राम कथा से संबंधित होली गीत इस त्योहार का मूल अंग है। जैसे -

आजि आमि होली खेलिम दिने राति
चैते फागुन मास
राम गेल बनबास
महिरावणे हरि निला पाताले।।'' [11]

(असमिया लोकसाहित्यर रहघरा, पृ.146)

अर्थात आज हम रात-दिन होली खेलेंगे, फाल्गुन महीने से चैत्र महिने तक। राम वनवास चले गए और महिरावण उनका अपहरण कर पाताल लोक ले गया।

बच्चों के होली गीत -

''कानने कानने
लंकार रावणे
अ' सीता जानकीक हरिले
दहमुरीया रावणे।'' [12]

(असमिया लोकसाहित्यर रहघरा, पृ.146)

6.गोपिनी सवाहर गीत : गोपिनी सवाह गीत असमिया परंपरागत प्रार्थना गीत है, जिसे महिलाएँ एक साथ मिलकर गाती हैं। यह मूलत: भक्तिमूलक गीत है और ये असमिया समाज तथा संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग 'नामघर' में गाए जाते हैं। इस गीत को गाने वाली महिलाओं को 'गोपिनी' कहा जाता है। इन गीतों का मूल विषय ज्यादातर राम - सीता और राधा - कृष्ण ही हैं। जैसे -

''जानकी गोसानी ऐ
अ' आइ तोके नोबोलो भाल
तोक नालागे सोणर पालेंग
तोक लागे मृगर चाल।'' [13]

(असमिया लोकसाहित्यर रहघरा, पृ. 144)

अर्थात हे जानकी देवी! हम तुम्हें आदर्श नारी नहीं कहेंगे। तुम्हें सोने का पलंग नहीं चाहिए। तुम्हें तो हिरण की त्वचा चाहिए।

7. दुर्गा पूजा के गीत : दुर्गा पूजा में शास्त्रीय रीति - रिवाजों के साथ-साथ असमिया महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले लोक गीतों का विशेष महत्व है। इन गीतों के माध्यम से लोक मन में निहित विश्वास तथा देवी दुर्गा के प्रति गंभीर श्रद्धा का परिचय मिलता है। दुर्गा पूजा के गीतों में देवी दुर्गा के साथ-साथ राम कथा का भी वर्णन किया गया है। एक उदाहरण इस प्रकार है -

''अ'रावण बधिते योवा अखुर बधिते योवा
हाते धनुरबान धरि।
अयोध्यार राम लक्ष्मण सेते
जानकी माहेश्वरी

दहिछे लंका पुरी।'' [14]

(असमिया लोकसाहित्यर रहघरा, पृ.142)

अर्थात हे राम! आप असुर रावण का वध करने जाओ। जानकी माहेश्वरी अयोध्या के राम-लक्ष्मण के साथ हैं। संपूर्ण लंका नगरी को जला डालो।

8. बारह माही गीत : इन गीतों को बारह मासा गीत कहा जाता है। पूरे भारतवर्ष के साहित्य में ऋतु अथवा बारह महीनों के प्राकृतिक सौंदर्य से संबंधित गीत उपलब्ध हैं। इस तरह के गीत मूलत: विरह के गीत हैं। बारहमासा गीतों की परंपरा बहुत प्राचीन है। असमिया बारहमासा का प्रारंभ साधारणत : अगहन महीने से होता है और हिंदी भाषा में आश्विन महीने से माना जाता है। असमिया समाज में सीता को लेकर अनेक बारहमासा गीत रचे गए हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है -

सीता बारमाही

''दिहा -कांदे मोर जानकी सीता।
पद : वैहागर माहते बापु अशोकर तले।
मइ नारी निद्रा गेलो उरतर शिताने।।
जेठरे माहते बापु रावणे नेइ हरिया।
इन्द्रे दिला मुक्तार माला ब्रह्माक लागिया।।
आहारर माहते बापु पकि परे आम।
सितो बेला थाको मइ ऋषिर आश्रम।।'' [15]

(बार माहर तेर गीत, पृ.72)

अर्थात वैशाख महीने में अशोक के पेड़ के नीचे मैं नारी चिंता में सो जाती हूँ। ज्येष्ठ महीने में रावण मेरा हरण करता है। इंद्रदेव ब्रह्मा को मोतियों की माला उपहार देते हैं। आषाढ़ महीने में आम पक कर गिरते और उस समय में ऋषि के आश्रम में थी।

निष्कर्ष : असमिया साहित्य में राम कथा वर्णन की परंपरा बहुत प्राचीन है। असमिया लोक गीत असमिया समाज जीवन, संस्कृति का दर्पण है। ये गीत असमिया ग्रामीण लोगों के सुख-दुख आदि अनुभूतियों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है असमिया समाज रामायण कथा से काफी प्रभावित था तथा राम के आदर्शों को अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग करता था, जिसका उदाहरण लोक गीतों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अत: कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही असमिया समाज जीवन, साहित्य, संस्कृति तथा दर्शन रामायण कथा से प्रभावित है। ❑

संदर्भ ग्रंथ :

1. शुल्क, रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकरण -3 (काव्य खंड), पृष्ठ 326
2. गोस्वामी, प्रफुल्ल दत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ 21
3. वही, पृष्ठ 22
4. दास, बाबुल, कामरूपी लोकगीत (संकलन /संपादना), स्टूडेंट्स स्टोर्स, गुवाहाटी, 2011, पृष्ठ 87
5. गोस्वामी, प्रफुल्ल दत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ 31
6. वही, पृष्ठ 30
7. शर्मा, हेमंत कुमार, असमिया लोकगीत संचयन,गुवाहाटी, बिना लाइब्रेरी, 2006, पृष्ठ 98
8. गोगोई, लीला, असमिया लोक साहित्यर रूपरेखा, डिब्रूगढ़, बनलता प्रकाशन, 2017, पृष्ठ 115
9. दास, बाबुल, कामरूपी लोकगीत (संकलन/संपादना), स्टूडेंट्स स्टोर्स, गुवाहाटी, 2011, पृष्ठ 96
10. महंत, केशदा, असमिया रामायणी साहित्य : कथावस्तुर आतिगुरि, जोरहाट, 2011, पृष्ठ 712
11. चहरिया, कनक चंद्र, असमिया लोकसाहित्यर रहघरा, गुवाहाटी, चंद्र प्रकाश, 2013, पृष्ठ 146
12. वही, पृष्ठ 146
13. वही, पृष्ठ144
14. वही, पृष्ठ.142
15. गोस्वामी, प्रफुल्ल दत्त, बार माहर तेर गीत, कलकत्ता, 2012, पृष्ठ 721

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

शोध : अर्थ, परिधि एवं प्रकार

डॉ. जाकिर हुसैन

प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कन्या महाविद्यालय
गीतानगर, गुवाहाटी- 781021
मो. +91-91018-57651
ई-मेल : drjkrhssn77@gmail.com

शोध का अर्थ :

'शोध' एक अनंतकालीन अध्ययन प्रक्रिया है। हमारे दैनंदिन जीवन में शोध कार्य जाने-अनजाने बच्चा से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक होते रहते हैं। इस दृष्टि से सूक्ष्म रूप में शोध को दो प्रकार से विभाजित कर सकते हैं। एक औपचारिक और दूसरा अनौपचारिक। जो शोध कार्य स्कूल, कॉलेजों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में होते रहते हैं उसे औपचारिक शोध कहते हैं। इस प्रकार के शोध को स्वीकृति मिलती है। दूसरे प्रकार के शोध का कोई दलील या स्वीकृति नहीं होती है। पारिवारिक जीवन में लोग जो कुछ सोचते रहते हैं तथा कुछ-न-कुछ नए उद्भावन करते रहते हैं।

'शोध' अंग्रेजी शब्द 'रिसर्च' का पर्याय है, जिसका अर्थ 'खोज' है। यहाँ खोज का अर्थ पुन: 'खोज' नहीं, अपितु 'गहन खोज' है। अर्थात किसी एक निर्दिष्ट विषय में गंभीरतापूर्वक खोज करना है। यह 'रिसर्च' मूल रूप से लैटिन भाषा का शब्द है। जिसमें 'रि' अर्थात 'बार-बार' 'सर्च' अर्थात 'खोजना' से बना है। इसके अनुसार अब रिसर्च शब्द का अर्थ हुआ 'बार-बार खोजना'। अर्थात वैज्ञानिक पद्धति द्वारा ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास ही शोध है। दूसरी ओर, हिंदी में 'शोध' शब्द 'रिसर्च' शब्द के अनुवाद के रूप में प्रयोग किया जाता है। सबसे ज्यादा लोग या तो शोध कहते हैं या रिसर्च कहते हैं। लेकिन इसके समानांतर हिंदी में और भी शब्द प्रचलित हैं, जैसे खोज, अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा आदि।

व्यापक अर्थ में शोध या अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में 'ज्ञान की खोज करना' या 'विधिवत गवेषणा' करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में वैज्ञानिक विधि का अनुपालन करते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुरानी वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुन: परीक्षण करना, जिससे कि नए तथ्य प्राप्त हो सकें, उसे शोध कहते हैं।

शोध के अंतर्गत बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर

सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धांतों का उद्घाटन किया जाता है। शोध का परिचय देते हुए डॉ. नगेंद्र लिखते हैं कि- ''अनुसंधान का अर्थ है परिपृच्छा, परीक्षण, समीक्षण आदि। संधान का अर्थ है दिशा विशेष में प्रवृत्त करना या होना और अनु का अर्थ है पीछे, इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ- किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष में बढ़ना- पश्चाद्गमन अर्थात किसी तथ्य की प्राप्ति के लिए परिपृच्छा, परीक्षण आदि करना।''[1]

शिक्षा के क्षेत्र में दीक्षित होकर शोधार्थी अपने शैक्षिक विषय में कुछ जोड़ने की कार्य करते हैं। यह क्रिया अनुसंधान कहलाती है। पीएच.डी./डी.फिल या डी.लिट/डी.एस.-सी जैसी शोध उपाधियाँ इसी उपलब्धि के लिए दी जाती हैं। इनमें अध्येता से अपने शोध से ज्ञान के कुछ नए तथ्य या आयाम उद्घाटित करने की अपेक्षा की जाती है।

दिन-पर-दिन शोध का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसका प्रमुख कारण शोध के प्रति शोधार्थियों की बढ़ती रुचि तथा आजकल किसी भी चयन परीक्षा में शोध विषयक पाठ्यक्रम शामिल किया जाना भी है। इसके अतिरिक्त एम.फिल/पीएचडी की डिग्री हेतु अध्ययनरत विद्यार्थियों को इसे अनिवार्य रूप में पढ़ना होता है। शोध को जाने बिना गवेषणा करना असंभव है।

शोध की परिधि :

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। वह प्राचीन काल से ही नए-नए खोजों के लिए अध्ययन करता आ रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मनुष्य ने अपने विवेक के आधार पर विभिन्न वैज्ञानिक खोज किए हैं। अनुसंधान ही एक ऐसा विषय है, जिसके माध्यम से हम अपना चिंतन शक्ति, तर्क शक्ति, विवेक को बढ़ा सकते हैं। समय के अनुसार भी अनुसंधान में परिवर्तन होता रहता है। प्राचीन काल में जो अनुसंधान होता था और जो वर्तमान में अनुसंधान होता है-दोनों का स्वरूप बदल चुका है। आज के व्यक्ति की सोच और प्राचीन काल की व्यक्ति की सोच में जमीन आसमान का फर्क है। और समय के अनुसार होना भी चाहिए क्योंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय के अनुसार सब चीजों में परिवर्तन होता रहता है। इसलिए अनुसंधान में भी समय के अनुसार परिवर्तन होता गया। ये क्यों हुआ, क्योंकि प्राचीन काल यानी आदिमानव काल का मनुष्य था। वह पथरी युग में था यानी पत्थर के युग में प्रवेश किया उसने। धीरे-धीरे उसके ज्ञान का संचार होना शुरू हुआ और फिर धीरे-धीरे उसने अनुसंधान करना शुरू किया। इसी प्रकार अनुसंधान कार्य का परिसर बढ़ता चला गया।

हम किसी भी चीज को बार-बार खोजते रहते हैं। जैसे किसी भी एक टॉपिक पर खोज हो चुकी है तो ऐसा नहीं है कि उसके बाद उस टॉपिक पर खोज होनी बंद हो जाए। नई-नई टेक्नोलॉजी विकसित हो गई है। जैसे-जैसे समय में परिवर्तन हो गया है तो उस क्षेत्र में नई-नई टेक्नोलॉजी विकसित होती जा रही है, जिसके माध्यम से हम बार-बार रिसर्च करते आ रहे हैं।

अनुसंधान कार्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द और उसके मायने-

पहला- समंको (Data) : शोध कार्य सबसे पहला काम है डेटा (तथ्य) संग्रह करना। डेटा (तथ्य) संग्रह किए बिना शोध कार्य संपूर्ण नहीं माना जाएगा। संगृहीत तथ्यों को दो भागों में विभाजित किया जाता है-

एक- प्राथमिक तथ्य : यह उन सभी मौलिक सूचनाओं एवं आँकड़ों से है, जिन्हें अनुसंधानकर्ता प्राथमिक स्रोतों द्वारा प्राप्त करता है।

दो- द्वितीयक तथ्य : ये वे तथ्य हैं, जिन्हें अनुसंधानकर्ता ने स्वयं प्रथम बार संकलित नहीं किया है, बल्कि किसी अन्य के द्वारा पूर्व में एकत्रित किए गए हैं, जिनका उयोग अनुसंधानकर्ता अपने शोधकार्य में करता है।

दूसरा- विश्लेषण (Analysis): यानी समंक या डेटा को विश्लेषण करना। किसी विधान या व्यवस्थाक्रम की सूक्ष्मता से परीक्षण करने की तथा उसके मूल तत्वों को खोजने की क्रिया ही विश्लेषण है।

तीसरा- वैज्ञानिक अन्वेषण (Scientific Research) : इस विधि द्वारा छात्रों में वैज्ञानिक

दृष्टिकोण उत्पन्न किया जा सकता है। उनमें वैज्ञानिक अभिरुचि तथा निरीक्षण का विकास होता है।

चौथा- पृच्छा (Enquiry) : शोध में पृच्छा करनी पड़ती है। भले ही टॉपिक कोई भी हो, परंतु हमें अनुसंधान के अंतर्गत पृच्छा करनी होती है। निर्धारित टॉपिक पर जितना कार्य हुआ है, उस पर ज्यादा-ज्यादा डेटा मिल जाए। अर्थात ज्ञान इकट्ठा करना होता है।

पाँचवाँ- क्रमबद्ध (Systematic) : शोध कार्य क्रमबद्ध तरीके से करना पड़ता है। अव्यवस्थित तरीके से किया गया शोध कार्य का परिणाम गलत निकल सकता है।

ऊपर उल्लिखित चर्चे में शोध का अर्थ, स्वरूप तथा अनुसंधान में प्रयोग किए जाने वाले कुछ विशेष शब्दों के बारे में जान लिया गया है। अब निम्नलिखित रूप में शोध के प्रकारों पर विशद रूप में चर्चा प्रस्तुत है।

शोध के प्रकार :

वर्तमान समय में शोध के विभिन्न प्रकार परिलक्षित हो रहे हैं, जो निम्न हैं-

1. साहित्यिक शोध : साहित्य विषयक शोध या अनुसंधान ही साहित्यिक शोध है। अपनी प्रकृति और विविध स्वरूप के कारण साहित्यिक शोध मौखिक, लिखित और प्रकाशित रूप में उपलब्ध होता है। डॉ. तिलक सिंह ने साहित्यिक शोध को चार वर्गों में विभाजित किया है-

पहला, जीवन वृत्तीय शोध- किसी साहित्यकार के संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करना ही जीवन वृत्तीय शोध कहलाता है। साहित्यकार का जन्म, जन्म स्थान, जन्म तिथि, शिक्षा-दीक्षा, माता-पिता का परिचय आदि की खोज और इन सब का साहित्यकार के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी हासिल करना ही शोधार्थी का लक्ष्य होता है। साथ ही साथ साहित्यकार की तत्कालीन परिस्थितियों, उसकी रचना का कारण, उसके कृतित्व आदि की जानकारी जीवन वृत्तीय शोध के अंतर्गत परिगणित होता है। शोधार्थी साहित्यकार के जीवन वृत्त के अध्ययन के लिए दो प्रकार की सामग्री से सहायता लेता है। पहले, वह जिसमें रचनाकार अपनी रचनाओं में स्वयं के जीवन के बारे में कहता है अर्थात अत:साक्ष्य। दूसरी उन तथ्यों की पुष्टि के लिए संग्रहीत किए गए बाह्य तथ्य या बाह्य साक्ष्य। इसके लिए शोधार्थी रचनाकार पर लिखी गई कृतियों, ऐतिहासिक प्रमाणों, शिलालेखों, जनश्रुतियों आदि का उपयोग करता है। जीवन वृत्तीय शोध के लिए शोधार्थी को तथ्य के सार्थक विश्लेषण की आवश्यकता होती है। कई बार रचनाकार के कृतियों के संदर्भ तो मिल जाते हैं, परंतु कृतियाँ उपलब्ध नहीं होतीं। और कई बार एक ही रचना की एक से अधिक प्रतियों में पाठ भेद के कारण रचनाकार के जीवन वृत्त की प्रामाणिकता सिद्ध नहीं हो पाती है। रचना और इतिहास के प्रामाणिक तथ्यों में मेल नहीं खाने पर रचनाकार का जीवन अप्रामाणिक ठहरता है। भक्ति काल के कवि कबीर, सूर, तुलसी आदि कवियों के जन्म एवं मृत्यु तिथियों का विषय आज भी विवादास्पद है। अत: ऐसी स्थिति में शोधार्थी को इतिहास सम्मत प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर ही किसी निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

दूसरा, प्रवृत्तिगत शोध- हिंदी साहित्य के इतिहास के चार कालखंडों में प्रत्येक कालखंड अपनी प्रवृत्तियों के कारण दूसरे कालखंड से अलग दृष्टिगोचर होता है। विशेष प्रवृत्ति के आधार पर कालखंड का नामकरण होता है। विदित है किसी कालखंड में विशेष प्रवृत्ति के अलावा अन्य प्रवृत्तियाँ भी साहित्य को प्रभावित करती हैं। शोधार्थी एक या एक से अधिक प्रवृत्तियों को आधार बनाकर शोध विषय चुन सकता है।

तीसरा, प्रभावगत शोध- वर्तमान सदैव इतिहास से प्रभावित होता है। इसी प्रकार एक काल का साहित्य अपने पूर्ववर्ती काल से प्रभावित रहता है। संस्कृत साहित्य समय परिवर्तन के बावजूद गतिशील बना रहा। इसी कारण हिंदी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए हम सूरदास की रचनाओं को ले सकते हैं, जिनपर श्रीमद्भागवत, पुराण का प्रभाव पड़ा है। उसी प्रकार तुलसी दास रचित रामचरितमानस पर वाल्मीकि रामायण का रीतिकालीन कवियों की रचनाओं पर संस्कृत के रीति ग्रंथों का

प्रभाव दिखाई पड़ता है। संस्कृत के अतिरिक्त प्राकृत, अपभ्रंश या किसी अन्य भारतीय भाषा या विदेशी भाषा का प्रभाव भी उक्त शोध के अंतर्गत आएगा। भाषा के साथ-साथ भाव, विचार, दर्शन आदि कई प्रकार से एक काल के साहित्य का प्रभाव दूसरे काल के साहित्य पर पड़ता है। दूसरे काल पर पड़ने वाले इसी प्रभाव का अध्ययन प्रभावगत शोध के अंतर्गत आता हैं।

चौथा, आलोचनात्मक शोध- साहित्यिक शोध के अंतर्गत आलोचनात्मक शोध आधुनिक युग की देन है। अन्य शोध प्रकारों की तुलना में वर्तमान में आलोचनात्मक शोध अधिक हो रहे हैं। आलोचनात्मक शोध व्याख्यात्मक और सैद्धांतिक दो रूपों में विभक्त हैं। व्याख्यात्मक आलोचना को पुन: दो वर्गों में विभाजित किया गया है। पहला, प्रभाववादी आलोचना तथा दूसरा, वस्तुवादी आलोचना। प्रभाववादी आलोचना की अपेक्षा वस्तुवादी आलोचना शोध का विशिष्ट क्षेत्र है, जिसमें वस्तुनिष्ठ तथ्यों की प्रधानता होती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य में इस आलोचना पद्धति को प्रश्रय दिया। सैंद्धातिक आलोचना के भी तीन वर्ग हैं। पहला, प्रगतिवादी आलोचना, दूसरा, रसवादी आलोचना तथा तीसरा सांस्कृतिक आलोचना। जहाँ प्रगतिवादी आलोचना मार्क्सवादी चिंतन को स्पष्ट करती है, वहीं रसवादी आलोचना रस सिद्धांत को। सांस्कृतिक आलोचना संस्कृति की पारंपरिक और प्रवाहमान चेतना की परिचायक है।

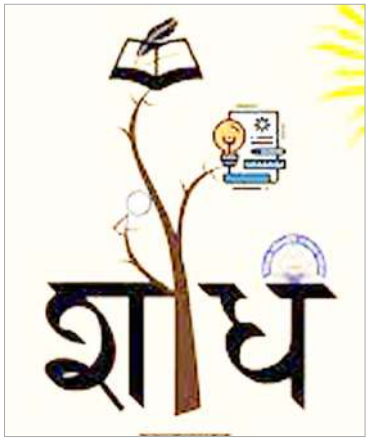

2. ऐतिहासिक शोध : बुद्धि संपन्न होने के कारण मनुष्य आरंभ से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। मनुष्य की इसी जिज्ञासा ने ऐतिहासिक शोध की सृष्टि की। प्रत्येक काव्यरूप, प्रवृत्ति, भावधारा, दर्शन, काव्य सिद्धांत, शैली आदि का एक इतिहास होता है। भाषा सदा से पूर्व पर संबंधों पर आधारित रही है। अत: उसके परिवर्तन एवं विकास के कारणों का पता ऐतिहासिक शोध से चलता है। ऐतिहासिक शोध एक श्रमसाध्य शोध का रूप है। इतिहास के तथ्यों को जानने और परखने का कार्य, तथ्य सामग्री को इकट्ठा करने का कार्य अत्यंत ही परिश्रम से भरा हुआ है। इसके लिए सामान्यत: विषय के अनुसार ही शोध सामग्री एकत्रित की जाती है। लोक-साहित्य के अध्ययन से भी हमें किसी काल के परिवेश का पता चल सकता है। ऐतिहासिक शोधार्थी शिलालेखों से भी मदद ले सकता है। ऐतिहासिक शोध के अंतर्गत इतिहास का पुन:लेखन, उद्भव और विकास, परंपरा, पृष्ठभूमि, साहित्यधारा, विधा, प्रभाव आदि अनेक रूपों में शोध कार्य हो सकता हैं।

3. तुलनात्मक शोध : शोध का उद्देश्य होता है सत्य की खोज। शोधार्थी सत्य की प्रामाणिकता के लिए रचना या युग विशेष के साथ-साथ साहित्यकारों का भी अध्ययन करता है। सामान्य अध्ययन में रचना एवं रचनाकारों की भूमिका शोधार्थी के लिए अपने तथ्यों को पुष्ट करने में सहायक मात्र होती है। लेकिन जब यही अध्ययन दो रचनाओं, दो रचनाकारों, दो कालों, दो भाषाओं, दो प्रवृत्तियों या दो विधाओं पर समानांतर किया जाता है, तब यह तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण तुलनात्मक शोध कहलाता है। शोधार्थी दो रूपों में तुलनात्मक शोध कर सकता है। पहला है, एक भाषा के अंतर्गत तुलनात्मक शोध, दूसरा है- दो भाषाओं के अंतर्गत तुलनात्मक शोध। पहले रूप में शोधार्थी एक भाषा के अंतर्गत दो विधाओं, दो प्रवृत्तियों की, दो कालों की, दो रचनाओं एवं रचनाकारों आदि की तुलना कर सकता है। उदाहरण के लिए दो रचनाओं की तुलना में रामचरितमानस और रामायण का तुलनात्मक अध्ययन। दो रचनाकारों की तुलना में देव और बिहारी का तुलनात्मक अनुशीलन आदि विषय को लिया जा सकता है। दूसरे रूप में दो भाषाओं के साहित्य पर किया जाने वाला तुलनात्मक शोध कठिन माना जाता है। हिंदी भाषी

शोधार्थी किसी दूसरी भाषा के साहित्य के साथ तुलनात्मक शोध तभी कर सकता है, जब उसे दूसरी भाषा पर पूर्ण अधिकार हो, उसकी पूरी जानकारी हो। दो भाषाओं के तुलनात्मक शोध के अंतर्गत दो लेखकों की तुलना, एक साहित्यिक प्रवृत्ति की तुलना, एक काल विशेष की तुलना, एक विधा की तुलना आदि विषय आ सकते हैं। उदाहरण के लिए एक साहित्यिक प्रवृत्ति की तुलना में हिंदी तथा तमिल का शैव भक्त साहित्य, एक विधा के अंतर्गत हिंदी और पंजाबी उपन्यासों में विभाजन की त्रासदी आदि विषय लिए जा सकते हैं। सामान्य शोध कार्य की तुलना में तुलनात्मक शोध कठिन होता है, क्योंकि एक ही दिशा क्षेत्र में शोधार्थी का ध्यान एक जगह केंद्रित होता है। वहीं तुलनात्मक शोध में शोधार्थी को दो दिशाओं में ध्यान लगाना होता है। शोधार्थी को भाषा विषयक कठिनाई पहले होती है। दोनों भाषाओं के साहित्य के प्रति शोधार्थी की समान रुचि और समग्र ज्ञान ही उसके शोध को सफल बनाता है। दूसरी समस्या निर्देशन की भी होती है। निर्देशक को दोनों भाषोओं का ज्ञान शोधार्थी से अधिक होना चाहिए। कई बार एक भाषा के ज्ञान के अभाव में एक निर्देशक की जगह दो निर्देशक की जरूरत होता है। कई कठिनाइयों के बावजूद हमारे देश की विभिन्न भाषाओं, साहित्य और संस्कृति का पता चलता है, जो हमारे ज्ञान में अभिवृद्धि करता है। देखा जाए तो एक तरह से तुलनात्मक शोध राष्ट्र की एकता को प्रतिपादित करता है, क्योंकि उक्त शोध में विविध साहित्य और संस्कृति का समन्वय होता है।

4. मनोवैज्ञानिक शोध : मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा की psychology शब्द का हिंदी रूपांतर है। मन का नियम या मन का सैद्धांतिक रूप मनोविज्ञान है। साहित्य मानव मन की अभिव्यक्ति है और उस अभिव्यक्ति का मन के स्तर पर किया गया विश्लेषण मनोवैज्ञानिक शोध कहलाता है। मनोविज्ञान रचनाकार के मन तथा उसके क्रिया-व्यापारों का अध्ययन करता है। मनुष्य किसी विचार की ओर उन्मुख क्यों हुआ यह सामान्य व्यक्ति के लिए एक सामान्य प्रश्न है। किंतु मनोवैज्ञानिक के लिए यह उस मनुष्य के मन की ग्रंथियों को समझने का आधार है। रचनाकार अपनी रचना में दो रूपों में उपस्थित होता है। एक में वह स्वयं अपनी निजी भावों को अभिव्यक्त करता है तथा दूसरे में वह समष्टि के माध्यम से वह व्यष्टि की बात करता है। अर्थात अपने मन के भावों की अभिव्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से करता है। उक्त दोनों प्रकार की कृतियों में रचनाकार के भावों की अभिव्यक्ति का शोधपरक अध्ययन मनोवैज्ञानिक शोध के द्वारा संभव है। हिंदी साहित्य के आदिकाल में ही वीर काव्यों की रचना ने शौर्य भाव की मनोवृत्ति को आधार दिया। आगे चलकर भक्तिकाल में भक्ति, रीति काल में श्रृंगार तथा आधुनिक काल में नैतिकता, अहं, कुंठा, घृणा आदि मनोवृत्तियों का रूप धारण किया। मन की इन्हीं वृत्तियों का जानकार मनोवैज्ञानिक आधार पर शोध कार्य कर सकता है। उदाहरण के लिए राम की शक्ति पूजा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा तुलसी के काव्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण जैसे विषय को लिया जा सकता हैं।

5. समाजशास्त्रीय शोध : साहित्य को समाज के दर्पण की संज्ञा दी गई है, क्योंकि समाज की समस्त परिस्थितियाँ साहित्य में ध्वनित होती हैं। साहित्य में विद्यमान इसी ध्वनि अर्थात सामाजिक तत्वों का वैज्ञानिक अनुशीलन ही समाजशास्त्रीय शोध है। साहित्य के किसी कालखंड, कवि या रचना का समाजपरक अध्ययन ही उक्त शोध का कार्य है। इस प्रकार के शोध में सामाजिक समस्याओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि का विश्लेषण किया जाता है। उदाहरण के लिए आधुनिक हिंदी कविता में समाज या प्रेमचंद की रचनाओं में समाज और संस्कृति का चित्रण आदि विषयों को लिया जा सकता है।

6. सांस्कृतिक शोध : संस्कृति शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है सम्यक क्रिया अर्थात वह क्रिया जिससे किसी क्षेत्र में रहनेवाले लोगों की जीवन-पद्धति, विचारों और क्रिया-व्यपारों का पता चले। इन्हीं विचारों एवं पद्धतियों का अध्ययन एवं विश्लेषण सांस्कृतिक शोध कहलाता है। कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति गाँवों में बसती है। इसलिए उक्त शोध का अध्ययन करते समय लोक-साहित्य को विशुद्ध साहित्य से अधिक महत्व दिया

जाता है। लोक जीवन का परिष्कृत और परिमार्जित रूप ही संस्कृति है। संस्कृति के आंतरिक पक्ष में आध्यात्मिकता, मानवतावादी दृष्टिकोण, नैतिकता, सौंदर्यबोध आदि मुख्य तत्व हैं। वही बाह्य पक्ष में सामाजिक संबंध, व्यवहार, जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ आदि शामिल हैं। संस्कृति के क्षेत्र की व्यापकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह क्षेत्रीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक विद्यमान हो सकती है। अहिंसा, धर्म, आध्यात्मिकता आदि गुण भारतीय सांस्कृतिक एकता के परिचायक हैं। सांस्कृतिक शोध के अंतर्गत शोधार्थी संस्कृति के विविध रूपों को अपने शोध का आधार बना सकता है। जैसे- सूरदास के काव्य में ब्रज संस्कृति या उत्तर प्रदेश के लोकगीत जैसे विषयों को शोध के लिए लिया जा सकता हैं।

7. भाषा वैज्ञानिक शोध : भाषा और साहित्य का संबंध अविच्छिन्न है। भाषा ही वह माध्यम है, जिससे साहित्य को अभिव्यक्ति मिलती है। भाषा का विशिष्ट ज्ञान भाषा विज्ञान कहलाता है। किसी भी भाषा में रचित साहित्य या किसी रचना के आधार पर भाषागत अध्ययन करते हुए सत्य की खोज ही भाषा वैज्ञानिक शोध कहलाता है। भाषा का मूलाधार शब्द है, जिसे भारतीय आचार्यों ने परम ब्रह्म कहा है। साथ ही भाषा के दो रूपों को स्वीकार किया गया है। वे हैं सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा। साहित्यिक भाषा की संरचना रचनाकार के मानसिक संरचना का परिचायक होती है। भाषा की संरचना और उसके व्यावहारिक रूप के शोध के लिए भाषा विज्ञान के प्रमुख आधार रूपों को स्वीकारा जा सकता है, जिनमें भाषा की संरचना में सहायक शाखाएँ- ध्वनि विज्ञान, शब्द विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान आदि तथा उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने वाली शाखाएँ अर्थ विज्ञान, शैली विज्ञान आदि हैं। इन शाखाओं को आधार बनाकर साहित्यिक रचनाओं की भाषा का चार भिन्न-भिन्न पद्धतियों द्वारा अध्ययन किया जा सकता है। पहली पद्धति है- वर्णात्मक, दूसरी ऐतिहासिक, तीसरी तुलनात्मक तथा चौथी प्रयोगात्मक।

उक्त पद्धतियों में भाषा की रचना प्रक्रिया, भाषा का विकास क्रम, एक भाषा का किसी अन्य भाषा का तुलनात्मक अध्ययन तथा शब्दकोशों व लिपि सुधार आदि को लिया जाता है। साथ ही साथ उक्त शोध में दूसरी भाषाओं से हिंदी भाषा में आए शब्दों के स्रोतों का अध्ययन भी आवश्यक होता है। उक्त शोध के अंतर्गत अवधि का विकास, परिनिष्ठित हिंदी का स्वरूप, आधुनिक हिंदी भाषा का विकास आदि विषय आ सकते हैं।

निष्कर्ष : उपर्युक्त शोध के विषयों एवं विविध प्रकारों की विवेचना से स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य जगत में न तो क्षेत्र वैविद्धता की कमी है और न ही शोध हेतु विषयों का अभाव। नित नए लेखकों और उनकी रचनाओं और नए विमर्श आदि शोध के क्षेत्र को व्यापकता प्रदान कर रहे हैं। साथ ही इंटरनेट, कंप्यूटर जैसे माध्यमों ने शोध की सामग्री को शोधार्थी के और अधिक समीप ला दिया है। निश्चित रूप से आवश्यकता इस बात की है कि शोधार्थी नए-नए विषयों के साथ सतत प्रयास करते हुए शोध को अधिक से अधिक समृद्ध बनाएँ। जो शोध की समृद्धि के साथ-साथ उनके विचार चिंतन शक्ति को भी बढ़ावा देगा। ❑

सहायक ग्रंथ सूची :

1. शोध-प्रविधि : डॉ. विनय मोहन शर्मा, पेपरबैक प्रकाशन, 2018
2. शोध-प्रविधि : हरीश कुमार खत्री, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2013
3. शोध-प्रविधि : डॉ. एन. के. शर्मा, 2009
4. अनुसंधानस्य प्रविधि : डॉ. नगेंद्र
5. शोध पद्धतियां एवं सांख्यिकीय तकनीक, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
6. आस्था के चरण : डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
7. www.Shodhsahitya.Com

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

नारी प्रेरणास्त्रोत : तुलसीदास खंडकाव्य

तैयबुन नेशा

शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय
जालुकबाड़ी, गुवाहाटी (असम)-781014
मो. 6001237650
ई-मेल : taiboonnesha123@gmail.com

शोध-सार :

भारत में ही नहीं, समूचे विश्व में नारी की स्थिति पुरुष के साथ सहयोगी भाव की रही है। श्रद्धा-विश्वास की साक्षात प्रतिमूर्ति नारी जीवन के समतल में पीयूष स्त्रोत-सी प्रवाहमान होती हुई उसे सुंदर ढंग से जीने योग्य बना देती है। समाज निर्मात्री और गृह-साम्राज्ञी स्त्री मध्ययुगीन सामाजिक बुराइयों तथा धार्मिक आडंबरों के कारण समाज एवं परिवार में किंकरी, परिचारिका और दासी बनकर रह गई थी, जिसे तुलसीदास खंडकाव्य में निराला ने स्त्री-पुरुष की सक्रियता एवं विधायी शक्ति की प्रेरणास्त्रोत एवं सृष्टि के निर्माण में सर्वत्र पुरुष और प्रकृति की लीला सक्रिय रूप में चित्रित किया है। सदियों से चली आ रही नारी के प्रति धारणा इस काव्य कृति में अपनी एक अलग अस्मिता की अधिकारिणी है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय नारी त्याग, तपस्या एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है। वह धरती की तरह सहनशील है, जिसके कारण अनेक दुखों एवं कष्टों को अपने अंदर समाहित करने से पीछे नहीं हटती, जिसकी झाँकी प्रस्तावित 'खंडकाव्य' में देखी जा सकती है कि किस प्रकार तुलसीदास की पत्नी रत्नावली केवल एक भारतीय नारी के रूप में सामने नहीं आई है, बल्कि स्वाभिमानी नारी की भाँति जनकल्याण के लिए समर्पित है।

बीज शब्द : नारी, प्रेरणास्त्रोत, तुलसीदास, लोक कामना।

प्रस्तावना :

''बाल झबरे, दृष्टि पैनी, फटी लुंगी...
किन्तु अंतर्दीप्त था आकाश सा उन्मुक्त मन।''

आलोच्य पंक्तियों के माध्यम से हिंदी साहित्य के जिस ओजस्वी एवं क्रांतिकारी कवि के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का शब्द चित्र अंकित किया गया है, वह है छायावाद का अभिमन्यु एवं माँ भारती का एकनिष्ट साधक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'। एक ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्व, जो साहित्य के क्षेत्र में अपने नाम के अनुरूप केवल निराले ही नहीं,

अपितु जीवन भर अपने काव्य सृजन को अर्थगांभीर्य, भव्यता, वेदना एवं अनुराग से भरते रहे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि निराला के काव्य में कबीर की निर्भीकता, सूफियों का सादापन, सूर-तुलसी की प्रतिभा और प्रसाद की सौंदर्य चेतना साकार हो उठी हैं। युग - परंपरा के प्रति प्रबल विद्रोह का भाव लेकर काव्य रचना करने वाले कवियों में सर्वाधिक अनोखे व्यक्तित्व की गरिमा से मंडित महाप्राण निराला हिंदी साहित्य के युग प्रतिनिधि कवि हैं। युगों से बहती हवा के रुख को मोड़ने वाले निराला के व्यक्तित्व की चर्चा के बिना हिंदी साहित्य प्रेमियों का सफर पूरा ही नहीं होता है।

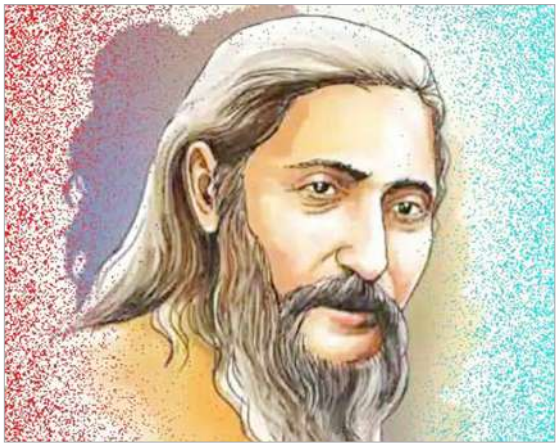

बहुमुखी प्रतिभा के धनी सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' प्रारंभ से ही हिंदी, बंगला, अंग्रेजी एवं संस्कृत भाषाओं में निपुण थे। समकालीन कवियों से अलग पहचान बनाने वाले निराला अपनी रचनाओं में कल्पना से अधिक यथार्थ को प्रमुखता देते हुए हिंदी में मुक्तक छंद के प्रवर्तक के पद पर भी आसीन रहे। सन 1930 ई. में प्रकाशित परिमल की भूमिका में कविता की मुक्ति की बात की है, जिसमें वे स्वतंत्र रूप से गुहार लगाते हुए कहते हैं, 'मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं फिर भी स्वतंत्र।' निराला के जीवन पर श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद तथा रवींद्रनाथ टैगोर आदि महान विभूतियों से प्रभावित होने के कारण उनके विचारों एवं कृतियों में इस प्रकार का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। स्वच्छंद प्रकृति की भाँति विद्यालय में पढ़ने से अधिक घूमने, खेलने, तैरने के अलावा कुश्ती लड़ने एवं संगीत जैसी विभिन्न कलाओं में उनकी रुचि बढ़ने लगी। इन तमाम कलाओं में विशेष रुचि होने के कारण अध्ययन की ओर उनका ध्यान कम होने लगा, जिसके कारण हृदय में पुत्र के प्रति अपार स्नेह होने के बावजूद नहीं चाहते हुए भी पिता को अपने पुत्र के प्रति कठोर व्यवहार करना पड़ा। इन सबके बीच 16-17 वर्ष की उम्र से ही उनके जीवन में विपत्तियों का आगमन रहा, परंतु प्रकृति और चेतना के बीच जाने कितने निष्फल प्रयोगों के उपरांत निराला जैसे व्यक्तित्व का निर्माण हुआ, जो अपने आप में स्रष्टाओं से श्रेष्ठ है। इन तमाम संघर्षों को झेलते हुए संपादन, स्वतंत्र लेखन एवं अनुवाद कार्य की ओर आकृष्ट हुए और साहित्य संबंधी विधाओं पर लेखनी चलाई है, किंतु उनकी लोकप्रियता का मूलाधार उनके काव्य ही हैं। अपने युग जीवन की गतिविधियों को आत्मसात करते हुए उन्होंने अनामिका, परिमल, गीतिका, सरोज स्मृति, अनामिका नवीन, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, आराधना, गीतकुंज आदि दर्जनों काव्यों की रचना की है। इन्हीं में से तुलसीदास भी एक है, जिसमें भारत का सांस्कृतिक सूर्य अस्त होने के पश्चात भारतीय जनमानस में उपजे हताशा, निराशा, अन्याय एवं उत्पीड़न से निजात पाने की भावना को वाणी प्रदान की गई है।

वस्तुत: किसी भी देश की पराधीनता सबसे पहले राष्ट्र के गौरव पर चोट करती है, लेकिन जब मुक्ति की आकांक्षा उत्पन्न होती है तो व्यक्ति को सबसे पहले अपने राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव उत्पन्न करना होता है । अतीत भले ही गुलाम रहा हो, किंतु वर्तमान सदैव ऐसा ही नहीं रहेगा। यही पुनरुत्थान भारतीयों को मानवीय मूल्यों को पहचानने की नवीन दृष्टि प्रदान की तथा अतीत की घटनाओं के माध्यम से गुलामी की जंजीरों को काटने एवं स्वतंत्र राष्टख की कल्पना का आह्वान

'तुलसीदास खंडकाव्य' में अभिव्यक्त हुआ है। भारत के सांस्कृतिक सूर्य के अस्त होने पर देश में किस प्रकार अंधकार छाया हुआ है, इसका मार्मिक चित्र समाज के सामने लाने के लिए निराला ने तुलसीदास जैसी अमूल्य धरोहर को इस खंडकाव्य का मुख्य पात्र के रूप में चयन किया। संपूर्ण काव्य में निराला ने तुलसीदास को विभिन्न समस्याओं में उलझे हुए दिखाया है और उन तमाम समस्याओं में कवि की सारी हुँकार किस प्रकार झलकती है, इसका सजीव चित्र तुलसीदास शीर्षक चरित्र में देखा जा सकता है।

विश्लेषण :

मनुष्य का प्रकृति के साथ सर्वाधिक एवं सर्वप्राचीन संबंध रहा है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। सही मायने में कहा जाए तो प्रकृति मनुष्य के लिए गुरु की भूमिका के रूप में सामने आया है। आदिकाल से ही मनुष्य की सहचरी रही है। दरअसल, प्रकृति मानव को अनेक ज्ञान के प्रति आकर्षित करती है, जिसमें पतझड़ का मतलब पेड़ का अंत होना नहीं होता। प्रकृति के इस तथ्य को जिस व्यक्ति ने स्वीकार किया है, उसने अपने मार्ग से विचलित हुए बगैर नए सिरे से सफलता पाने की कोशिश की है, जिसमें उन्हें सफलता के साथ-साथ अनेक नए ज्ञान से रू-ब-रू होने का अवसर प्राप्त हुआ है। गौरतलब है कि प्रकृति की सतरंगी चूनर मानव मन को लुभाया है तो कभी विशाल पर्वतों एवं दुर्गम जंगलों ने मानव मन को विस्मित भी किया है। इसका उल्लेख भारतीय पुराणों में भी देखा जा सकता है। सृष्टिकर्ता ब्रह्मा प्रकृति के रहस्यमय पुष्प कमल से उत्पन्न हुए थे तथा भारतीय संस्कृति के रक्षक ऋषि-मुनियों ने भी वनों और पर्वतों में ही अपना जीवन बिताया। आधुनिक युग तक आते-आते प्रकृति ने अपने सौंदर्य, सुषमा तथा यौवन के साथ काव्य क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई । छायावाद की यही प्रेमवादी प्रकृति तुलसीदास की सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति को कई रूपों में ईश्वरीय सत्ता की श्रृंगारिक आधारशिला स्थापित की है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि प्रकृति ने हमेशा से ही मनुष्य की सहचरी की भूमिका निभाई है। दैनिक जीवन के लिए उपलब्ध तमाम संसाधनों को प्रकृति पूरा करती है। प्रकृति की इस मनोहर एवं मादक दशा ने मनुष्य को मुग्ध किया है तो कभी माँ एवं सहचरी की भाँति मार्गदर्शन भी कराया है। प्रकृति के पास कुछ ऐसी परिवर्तनशील शक्तियाँ संचित रहती हैं, जो मानव स्वभाव को उसके अनुसार बदलती हैं। मूलत: छायावादी कवियों की भाँति तुलसीदास भी प्रकृति के मनमोहक रूप को देखकर प्रकृति के सूक्ष्म सौंदर्य में ही अपनी पत्नी की सुंदरता को अनुभव कर मुग्ध हो गए थे। तुलसीदास को पत्नी प्रेम एवं मोह ने अपने माया रूपी जाल में इस प्रकार जकड़ा हुआ था कि उन्हें पत्नी मोह की कल्पना के आगे संसार के भयंकर संकट के प्रति ध्यान ही नहीं था। दरअसल, तुलसी के इस आत्मबोध के पीछे लोक की विपन्नता का प्रभाव था । समाज को इस पीड़ा से मुक्त करने के लिए तुलसी के अतिरिक्त कोई नहीं आत्मसात करा सकता। इनका संपूर्ण जीवन आदर्शवादी लोक जीवन के अनुकूल था । तुलसी की चिंता का मुख्य अंश लोक वेदना से ही परिचालित था।

एक तरफ तुलसी की माया रूपी वासना प्रकृति में अपने प्रतिबिंब का आभास कराती है तो दूसरी ओर देश निरंतर पराधीनता की ओर बढ़ रहा था। ऐसी स्थिति से उबरने के लिए निराला लोक में प्रचलित उस कथा को आधार बनाया, जिस माया रूपी वासना में लीन होकर तुलसीदास स्वयं को वैभव संपन्न अनुभव कर रहे थे। यहाँ इस कथ्य का उल्लेख करना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जिस माया रूपी पत्नी ने उन्हें मन मुग्ध किया था, उसी मोह ने मानो स्वयं सरस्वती रूप में प्रकट होकर अतीत एवं वर्तमान की चुनौतियों से अवगत कराते हुए पत्नी मोह से मुक्त कर लोक कल्याण के प्रति प्रेरित किया, जिसमें समग्र भारत की सभ्यता को पुनर्जीवन देने की कामना है।

ऐसी स्थिति में तुलसीदास में पूर्ण रूप से लोक कल्याण की समस्त सेवा भावना जगाने वाली पत्नी रत्नावली ने आदर्श चरित्र राम के शील गुण कर्तव्यों के प्रति संकेत करते हुए तुलसीदास को भी जन कल्याण के

प्रति प्रेरित किया है–

हाड़ मांस की देह मम, तापर जितनी प्रीति,
तिसु आधी जो राम प्रति, अवसि मिटहिं भव

भीति (निराला : खंडकाव्य, भूमिका)

गौरतलब है कि सदियों से चली आ रही नारी के प्रति धारणा इस काव्य कृति में अपनी एक अलग अस्मिता की अधिकारिणी है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय नारी त्याग, तपस्या एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है। वह धरती की तरह सहनशील है, जिसके कारण अनेक दुखों एवं कष्टों को अपने अंदर समाहित करने से पीछे नहीं हटती। इस काव्य में तुलसीदास की पत्नी रत्नावली केवल एक भारतीय नारी के रूप में सामने आती हुई दिखाई नहीं दी है, बल्कि स्वाभिमानी नारी की भाँति जनकल्याण के लिए समर्पित है। कवि ने आलोच्य काव्यकृति में तुलसीदास एवं पत्नी रत्नावली के दांपत्य जीवन की मधुर झाँकी के साथ-साथ तुलसी की बोध – प्राप्ति का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है, जिसमें विवाहोपरांत तुलसी को अपनी पत्नी से बेहद प्रेम करते हुए दिखाया गया है। पत्नी मोह के कारण तुलसीदास रत्नावली को उसके मायके नहीं जाने देते, जिसके कारण तुलसीदास को बाजार जाने के पश्चात रत्नावली का भाई तुलसी की पत्नी को लेकर अपने घर लौट जाता है। तुलसी जब वापस आते हैं तो पत्नी को घर में नहीं पाने के कारण काफी निराशा होती है, फलस्वरूप पत्नी मोह तुलसी को पत्नी के पीछे जाने से नहीं रोक सका । तुलसी के इस फैसले से पत्नी रत्नावली के आत्मसम्मान को ठेस पहुँची । घर पहुँचने पर पत्नी रत्नावली उद्बोधनपूर्ण वाक्यों से तुलसी को भौतिक प्रपंच के संकीर्ण जाल से मुक्त कर देती है। पत्नी पति के मोह को अगर स्वीकार कर लेती तो तुलसी को अपने भटके हुए मार्ग का ज्ञान नहीं होता और ना ही इतने बड़े खंडकाव्य की नींव रखी जाती।

वस्तुत: जिस विलक्षण प्रतिष्ठा के लिए तुलसीदास ने लोक मंगलकारी सत्य धर्म की प्रतिष्ठा का आरंभ राम के चरित्र के माध्यम से किया था, उसकी दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। उन्होंने केवल कठोर और कोमल हृदय पक्ष का ही समन्वय नहीं किया, बल्कि अपने समय में व्याप्त समाज की विभिन्न विषमताओं को दूर करते हुए समन्वय का अनूठा प्रयास किया था, ठीक उसी प्रकार निराला ने भी 'तुलसीदास खंडकाव्य' के माध्यम से प्रत्येक भारतवासी को हजारों सालों पुरानी भारतीय परंपरा में प्रचलित वेदों एवं दर्शनशास्त्रों की पवित्र भारतभूमि की गौरवमयी सभ्यता एवं सांस्कृतिक चेतना के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए वर्तमान की चुनौतियों से निजात पाने हेतु दृढ़ संकल्प लिया है।

प्राचीन काल से जिस ओजस्वी महाशक्ति ने अपने त्याग एवं बलिदान के द्वारा समाज और राष्ट्र को गौरवान्वित किया है, उसी महाशक्ति का एक अन्य रूप इस काव्य कृति में व्यक्त हुआ है । कहने की आवश्यकता नहीं कि यह पंक्तियाँ अपने आप में कितनी महत्वपूर्ण हैं। बस इतना ही कहा जा सकता है कि हजार चेहरों में एक आप ही अच्छे लगे, जिसकी कथा ने गुमनामी के रास्ते में फँसी असीम शक्ति का अनुभव कराते हुए संपूर्ण राष्ट्र के कल्याण हेतु प्रेरित किया। एक तरफ समाज कल्याण तो दूसरी ओर अंधकार पर विजय प्राप्त करने की एक अन्य बड़ी चुनौती तुलसी के सामने खड़ी हुई, जिसमें तुलसी को संपूर्ण जन मानस में करुणामयी आशा की पुकार सुनाई दे रही थी। भारतीय जीवन की प्राणहीन आभासित गति के पीछे तुलसीदास का मार्मिक प्रेम धुँधला पड़ता हुआ दिखा। तुलसीदास ने वैराग्य लिया, उनके पूर्व संस्कार जागृत हुए। तुलसीदास की आसक्ति राम के प्रति परिवर्तित हुई, जिसके परिणामस्वरूप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने 'तुलसीदास खंडकाव्य' की संपूर्ण आधारशिला स्थापित कर समसामयिक परिस्थितियों को सिर्फ आलंकारिक रूप ही प्रदान नहीं किया, बल्कि स्वाधीनता की असीम ऊँचाईयों तक पहुँचाने वाली भावना को भी जागृत किया है, जिसका आधुनिक काल में ... विशेषत : वर्तमान समय में ये उक्तियाँ भारतीय युवा पीढ़ी की मानसिकता को उद्घाटित कर सभ्य एवं संस्कारित राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए एक मिसाल बनकर सामने आएगी। वस्तुत: यह दृष्टांत उक्तियों ने स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में स्वयं महाकवि तुलसीदास को सत्य के मार्ग के प्रति किस प्रकार उद्वेलित किया, इसकी कल्पना

संपूर्ण जन मानस के लिए ज्योति पथ के रूप में मार्ग दर्शन करेगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

निष्कर्ष :

आलोच्य काव्य कृति में कवि ने व्यक्तिगत सुख रूपी मोह माया से वंचित कर ज्ञान रूपी सत्य की खोज के प्रति ध्यान आकृष्ट करने का प्रयत्न किया है। समाज में व्याप्त संपूर्ण घटना चक्र को निराला तुलसी के नजरिये से दिखाने भारतीय युवा पीढ़ी के सामने लाए हैं। उनका यह प्रयास अज्ञान रूपी अंधकार को निर्मल कर व्यक्ति अंतर्मन की मनोवैज्ञानिक भूमि पर विश्लेषित कर इतिहास के परिपार्श्व में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अध्ययन को महत्वपूर्ण मानते हुए प्रकृति के सूक्ष्म सौंदर्य में आध्यात्मिक सत्ता की ओर भी संकेत किया है। वर्तमान को बदलने की प्रबल आकांक्षा ने तुलसीदास जैसे महान कवि के जीवन को कथा का आधार बनाया है तथा उन्हें विभिन्न क्रिया-कलापों एवं समस्याओं से घिरते हुए दिखाकर उस विकट परिस्थिति में रास्ता निकालने की ओर उन्मुक्त किया है। निराला की आत्मसंतुष्टि ने उन्हें प्रेरित कर जनकल्याण की ओर अग्रसर किया, जिसमें अपने समय के अज्ञान एवं अंधकार से समाज को मुक्त करने का जो प्रयास तुलसीदास ने किया, वही प्रयास निराला का भी रहा। उन्होंने अतीत, वर्तमान एवं भविष्य की मुक्ता को वाणी प्रदान करते हुए आम आदमी की चेतना को उद्दीप्त किया है। प्रस्तावित काव्यकृति में तुलसीदास का चित्रण श्रीराम भक्त के रूप में न करके युग-प्रतिनिधि के रूप में किया गया है। संपूर्ण काव्य में जीवन मूल्यों की अंतिम परीक्षा ली गई है, जिसमें एक ओर तुलसीदास संस्कृति के उद्धारक के रूप में सामने आते हैं तो दूसरी ओर सफल युग प्रतिनिधि के रूप में ।

सही मायने में देखा जाए तो तुलसीदास का गृहस्थ जीवन वैराग्य की परिणति नहीं है, अपितु संसार के उज्ज्वल भविष्य की कामना है, जिसमें सदियों से चली आ रही स्त्री के प्रति पुरुष की रूढ़िवादी मानसिकता को स्वतंत्र रूप प्रदान किया गया है। यही स्वतंत्रता नारी को अबला कहने की वजाय सबला, कामिनी से कामदाहिनी, एवं सीमित गृहिणी से नील वासना 'शारदा' का रूप प्रदान करती है। नारी की शक्ति को सिद्ध करते हुए तुलसीदास के सोए हुए संस्कार को जगाने वाली रत्नावली युग नारी के स्तर को और ऊँचा उठाने में विशेष महत्व रखती है। अत: नारी की शक्ति के साथ-साथ पुरुष की शक्ति एवं सीमा की भी बड़ी सहजता के साथ अभिव्यक्ति प्रदान की गई है, जो भारत की सबसे प्राचीन और सबसे समृद्ध संस्कृति की विरासत संजोए हैं। अत: कोई भी देश अपनी सांस्कृतिक धरोहर से ही महान बनता है। देश की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। यही प्रयास 'तुलसीदास खंडकाव्य' में 'प्रेम सत्यम् शिवम् सुंदरम्' का रूप धारण कर भारतीय संस्कृति की अदमित शक्ति को सिद्ध करते हुए जीवन भर लोकहित की कामना से बहते रहने का दृढ़ संकल्प है। ❑

संदर्भ ग्रंथ :

1. निराला, तुलसीदास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
2. सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन,19वाँ संस्करण, नई दिल्ली, 2015
3. वर्मा, धनंजय, निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन, विद्या प्रकाशन मंदिर, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 1973
4. डॉ. सक्सेना, द्वारिका प्रसाद, हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मंदिर, नवीन संस्करण, आगरा, 2002
5 . डॉ. नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, दरियागंज, 1973

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में नारी मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति

खुराइजम बेबीरोशिनी

शोध छात्रा, हिंदी विभाग
मणिपुर विश्वविद्यालय, काँचीपुर
इंफाल, मणिपुर-795003
मो. 6909549667
ईमेल : khuraijambabyroshinid@gmail.com

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है, जिसमें मानव व्यवहार तथा उसकी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। शुरुआती दौर में मनोविज्ञान विषय को दर्शनशास्त्र का अंग माना जाता था, पर बाद में धीरे-धीरे दर्शनशास्त्र से हटाकर इसके अंतर्गत मानव मन का अध्ययन होने लगा। मानव मन के पश्चात मनुष्य के व्यवहार की ओर ध्यान गया, जिसमें मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य के व्यवहार को वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने की प्रणाली विकसित की।

मनोविज्ञान विषय के संदर्भ में वियेना के निवासी 'सिग्मण्ड फ्रायड' का नाम लेना उचित होगा, जिन्होंने मनोविज्ञान के नए आयाम को प्रस्तुत कर मनुष्य के आंतरिक रूप की बड़े ही सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक ढंग से विवेचना की है। उनके अनुसार मानव मन की तीन दशाएँ हैं - (1) चेतन (conscious), (2) अर्द्ध चेतन (subconscious), तथा (3) अचेतन (unconscious)। चेतन मन से तात्पर्य उस मन से है, जिसका संबंध बाहरी वास्तविकताओं के साथ होता है। जब हम वर्तमान समय में रहकर विभिन्न क्रिया-कलापों से विचार अनुभव ग्रहण करते हैं तथा किसी से बातचीत करने के दौरान विचारों की अनुभूति होती है, वह चेतन होता है। जैसे उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं कि **''अभी आप यह किताब पढ़ रहे हैं। अतः इससे जो अनुभूति आपके मन में हो रहा है वह चेतन (conscious) है।''**[1] अर्द्ध चेतन या अवचेतन मन से तात्पर्य उन अनुभवों, विचारों आदि से है, जिन्हें व्यक्ति वर्तमान समय में रहकर अर्जित करता तो है, लेकिन थोड़ी देर के लिए वह उन विचारों को भूल जाता है। लेकिन स्मरण की प्रक्रिया से भूले हुए विचारों को फिर से याद

किया जा सकता है । जैसे- **''आलमारी में आप अमुक किताब को नहीं पाते हैं और आप थोड़ी देर के लिए परेशान हो जाते हैं। फिर कुछ सोचने पर याद आता है कि अरे वह किताब तो हम अपने मित्र को दे दिया था।''** [2] अचेतन मन से तात्पर्य उन अनुभवों से है, जो न ही हमारी चेतना में होते हैं और न ही हमारी अर्द्ध चेतना में। ऐसे अनुभव हमारे अचेतन मन में होते हैं। इसमें ऐसी दबी हुई इच्छाएँ विद्यमान रहती हैं , जिसका स्वरूप कामुक, असामाजिक, अनैतिक तथा घृणित होता है। इस तरह के अनुभव, विचार, इच्छा आदि अचेतन में रहकर समाप्त नहीं होते हैं बल्कि स्वप्न, दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ, सम्मोहन आदि अवसरों पर अचेतन की अनुभूतियाँ चेतन में अभिव्यक्त होती हैं। **''जैसे किसी मित्र के घर पर यदि रूमाल या कलम या किताब छोड़कर हम चले आते हैं तो फ्रायड के अनुसार आप में उस मित्र से पुनः मिलने की एक इच्छा रहती है, जो अचेतन में होती है। वही इच्छा वेश बदलकर चेतन में (अर्थात रूमाल या कलम या किताब मित्र के घर पर छोड़ देने के रूप में) व्यक्त हो रही है।''** [3]

आज के जमाने में व्यक्ति अपनी जिंदगी का निर्वाह करने के किए परिवेश के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करता है। जब परिवेश में चल रही सामाजिक व्यवस्था में असंतुलन पैदा होता है तो सामंजस्य न कर पाने के कारण व्यक्ति हताश होकर मानसिक पीड़ाओं से गुजरता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार जीवन यापन करना चाहता है, लेकिन समाज में प्रचलित कुरीतियों के कारण उसकी इच्छा के अनुरूप नहीं हो पाता है तथा व्यक्ति की दबी हुई इच्छाएँ अचेतन मन में रह जाती हैं। **''आधुनिक युग मानव-मन की उलझनों का युग है। कहीं व्यक्ति अपने परिवेश से सामंजस्य नहीं बैठा पा रहा है तो कहीं किसी कारण से अपराधबोध या हीनभाव से ग्रस्त है। कहीं व्यक्ति किसी घटना या कारण से मानसिक पीड़ा से संत्रस्त है ।''** [4] इस तरह की समस्या मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'चाक' में भी पाई जाती है। उपन्यास की नायिका 'सारंग' समाज में प्रचलित स्त्रियों के ऊपर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है तो कुछ लोग उसके द्वारा किए गए कार्यों को गलत साबित कर दबाने की कोशिश में रहते हैं। परिणामस्वरूप उसे कई तरह की मानसिक पीड़ाओं से गुजरना पड़ता है, जिनके अनुभव उसके अचेतन मन में जमा होते रहते हैं, जो समय-समय पर प्रस्फुटित होते हैं।

उपन्यास की शुरुआत सारंग की फुफेरी बहन रेशम की मौत के खिलाफ प्रतिक्रिया से होती है। रेशम खुले स्वभाव की स्त्री है तथा अपनी इच्छा के अनुसार जीवन यापन करना पसंद करती है। वह विधवा होकर भी दूसरे पुरूष के साथ देह संबंध बनाती है तथा समाज की मान-मर्यादाओं को पीछे लांघकर अपनी स्वतंत्र चाह के अनुरूप बच्चे को जन्म देने के लिए प्रण लेती है। **''पेड़ हरा-भरा रहे तो फल-फूल क्यों नहीं लगेंगे ? क्या ऐसा हो सकता है कि ऋतु आए और वल्लरी न फूले।''** [5] ससुराल वाले उसकी इच्छा के खिलाफ हो जाते हैं। उसकी परंपरावादी सास बच्चे को गिराने के लिए रेशम पर दबाव डालती है, लेकिन रेशम साफ मना करती हुई सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ अपने विचार प्रदर्शित करती है - **''मैंने कह तो दिया पंचायत जोड़ लो, मैं कह दूँगी मुझे छोड़ दो। बच्चा मेरे पेट से पैदा होगा, घर वाले इसमें शामिल ही कहाँ है ?''** [6] रेशम और उसकी सास दोनों अपने-अपने विचार प्रदर्शित करती हैं तो उनकी बातों ही बातों में बहस छिड़ जाती

है। पर बाद में सास को यह मालूम हो जाता है कि इस बकझक से कुछ हासिल नहीं होने वाला है, रेशम से विनती करना ही ठीक रहेगा। इसी तरह सास रेशम को डोरिया (जेठ) का हाथ थामने के लिए कहती है - **''बेटी, मेरी पत राख । रेसम, मेरी बछिया, इस घर की लाज राख ले । जो कर बैठी, सो कर बैठी । भूल ठहरी। अब तू ऐसा कर कि डोरिया की बाँह थाम ले । सब परदा ढक जाएँगे मेरी बेटी, सब परदा...घर की बात घर में रहेगी।''** [7] समाज के सामने घर की इज्जत बनाए रखने के लिए सास रेशम को उसके जेठ के साथ बछिया करने के लिए कहती है। सास की इसी बात को रेशम ठुकरा देती है तथा अपने मन की बात को इस प्रकार प्रकट करती है -**''अम्मा, तुम बूढ़ी होकर ऐसी बातें करती हो ? पिता समान जेठ का हाथ पकड़ लूँ ? फिर जो बच्चे का बाप है ही नहीं, उसको बाप का दर्जा क्यों दूँ ? ऐसा ही करना होता तो तुम्हारे बड़े पूत का ही बालक करती।''** [8] रेशम की सास उसे मार डालने के लिए हर प्रकार से इंतजाम करती है, मगर हर प्रयास में वह असफल सिद्ध होती है। एक दिन वह गर्भ गिराने की दवा माँगकर लाती है तथा दूध में मिलाकर रेशम को पीने के लिए कहती है। लेकिन रेशम सच्चाई से वाकिफ हो जाती है और दूध को बिना पीए ही फेंक देती है। ससुराल वालों के बार-बार समझाने पर भी रेशम मानने को तैयार नहीं होती है, नतीजा उसे मौत के घाट उतारा जाता है। इस संदर्भ में 'आदमी की निगाह में औरत' से लिया गया कथन द्रष्टव्य है - **''साहित्य और समाज की सबसे बदनाम, बहिष्कृत और गुमराह औरतें वे हैं, जो अपने शरीर और मन को अपने पतियों, स्वामियों या अभिभावकों तक ही सीमित नहीं रख पाईं। यानी शरीर की माँग ने जिनके भीतर एक स्वतंत्र इच्छाशक्ति जगा दी। वे पुंश्चली, कुलटा, छिनाल, रंडी, पतिता इत्यादि के नाम से सजा की अधिकारिणी हुईं । इस स्वतंत्रता की सजा मौत ही थी। उन्हें गुपचुप या सार्वजनिक रूप से सजा देने को हर समाज ने जायज समझा।''** [9]

''मैं ही नहीं जान पा रही कि जो कुछ उसके साथ हुआ, वह उसकी भरपाई थी या मेरी अपनी अधूरी-पूरी इच्छा ? दबी-घुटी लालसा या वर्जित फल को चखने-जाँचने की जिद ? मेरा ही फैसला था कहीं। आजाद होकर सोच रही थी अपने बारे में। ...चंदन के कारण श्रीधर को बाँधना चाह रही हूँ मैं ? या अकेली ही चलकर ताकत इकट्ठा कर रही हूँ ? देखना चाहती हूँ कि कहाँ-कहाँ से गुजर जाऊँगी ? मालूम नहीं श्रीधर के संग एक हो जाने का कौन-सा कारण था ?''

अब सारंग अपनी बहन के हत्यारे से बदला लेने के लिए दृढ़ निश्चय लेती है। वह बिना किसी भय के डोरिया (रेशम के हत्यारे) को सजा दिलाने के लिए हर परिस्थितियों का सामना करती है। शुरू में तो पति रंजीत उसका साथ देता है, पर बाद में गाँव वालों के डर से अपने मुकदमे को वापस ले लेता है। पुख्ता सबूत न मिलने के कारण डोरिया जेल से रिहा हो जाता है। इसके बाद सारंग की जिंदगी में परेशानियाँ शुरू हो जाती हैं। डोरिया उसके इकलौते बेटे चंदर को मार डालने की धमकी देता है। इसमें सारंग चुप न रहकर प्रतिक्रियास्वरूप डोरिया की छाती पर जूतों से वार करती है । सारंग अपने बेटे के लिए चिंतित होती है तथा कुछ उपाय नहीं होने के कारण न चाहते हुए भी वह अपने बेटे चंदर को जेठ-जेठानी के पास रहने के लिए आगरा भेज देती है । दूसरी तरफ सारंग फिर से बदला लेने के लिए रिश्ते में बहनोई कैलाशसिंह को बुलाकर डोरिया को अखाड़े में परास्त भी करवाती है । इन सबके बीच पति का साथ न देना और अपने बेटे के चले जाने से सारंग अपने आपको बहुत कमजोर महसूस करती है। सिर्फ इतना ही नहीं, सारंग समाज की मान-मर्यादाओं को मानकर चलना चाहती तो है, लेकिन समाज में पनप

रहे असंतुलन की स्थिति से सारंग तनाव से मुक्त नहीं हो पाती है तथा वह दिन-ब-दिन मानसिक परेशानियों का सामना करती है ।''**सामान्यतः स्त्री समाज के विभिन्न पहलुओं से सामंजस्य स्थापित करते हुए शांतिपूर्वक जीने का प्रयास करती है, परंतु जब इस सामंजस्य में असंतुलन पनपता है तो उसका व्यक्तित्व बिखरने लगता है। वह अपने को बहुत कमजोर समझने लगती है।**''[10]

धीरे-धीरे सारंग का अपने पति से विश्वास टूटने लगता है, जिससे आगे की घटनाएँ जन्म लेती हैं। गाँव में आए स्कूल मास्टर श्रीधर के व्यक्तित्व से सारंग प्रभावित हो जाती है तथा उसका मन नए मास्टर की ओर आकर्षित होने लगता है । वह उसे देवता के रूप में देखती है, जो बाद में सारंग की जिंदगी में आई कठिनाइयों में साथ देता है । श्रीधर जाति से कुम्हार है, जो पढ़ा - लिखा व्यक्ति है। गाँव में आए लगभग सभी मास्टर ज्यादा समय तक नहीं टिक पाते हैं, जिसकी वजह से गाँव के बच्चे पढ़ने के लिए शहर में पलायन कर जाते हैं। सारंग नहीं चाहती है कि अन्य मास्टरों की भाँति श्रीधर मास्टर भी गाँव से चला जाय। स्कूल में पढ़ाने वाले मास्टर रहेंगे तो बच्चे भी सीखेंगे तथा जीवन में आगे बढ़कर कुछ कर गुजर पाएँगे। इसी विचार को ज्यादा अहमियत देते हुए सारंग श्रीधर मास्टर से नजदीकियाँ बढ़ाती रहती है।

जिस तरह एक हाथ से ताली नहीं बजती, उसी तरह नारी का साथ जब पुरुष देता है तो वह कुछ भी कर सकती है । इसी तरह श्रीधर मास्टर की संगति से सारंग की बौद्धिकता को अधिक गति मिलती है तथा उसके दिलों - दिमाग में दबी हुईं इच्छाएँ हकीकत में बदलने का मौका भी पाती हैं । वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान कर केवल घर पर ही नहीं, बल्कि बाहर भी निकलकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करती है। श्रीधर की प्रेरणा से सारंग पूरे आत्मविश्वास के साथ घर की दहलीज पार करती हुई चुनाव तक लड़ने के लिए तैयार हो जाती है और लोगों के लिए चर्चा के केंद्र में होती है। पति रंजीत साथ में रहकर भी सारंग के कार्यों में साथ देने के बजाय हस्तक्षेप करता है। परिणामस्वरूप पति-पत्नी के बीच जंग छिड़ जाती है। दोनों पति-पत्नी के मध्य एक-दूसरे पर विश्वास न होने के कारण दोनों एक-दूसरे के आचरण को गलत ढंग से देखने लगते हैं। रंजीत को लगता है कि सारंग दिन-ब-दिन चरित्रहीन बनती जा रही है और सारंग को लगता है कि उसका पति प्रधान फत्तेसिंह के कुचक्र में घुसता जा रहा है। दूसरी तरफ श्रीधर मास्टर और सारंग की समीपता को देखकर पति रंजीत के दिलों - दिमाग में खून खौल उठता है। रंजीत इसे बर्दाश्त नहीं कर पाता है और सारंग के ऊपर ललकारता हुआ कहता है -''**साली इधर आ । बाहर निकल बदकार । तेरी माँ को...बहन चो...निकल! आ! बंदूक का बट उछालते हुए झपटे ।**''[11] वह चुप न रहकर श्रीधर पर सीधा हमला करने लग जाता है। इसके बाद श्रीधर किसी भी तरह उस हमले से बच जाता है। सारंग और श्रीधर की नजदीकियाँ बाद में शारीरिक संबंध में बदल जाती हैं। सारंग श्रीधर के साथ देह संबंध बनाकर भी अपराध बोध महसूस नहीं करती है।''**मुझे तो पाप नहीं लगा अपना किया। कतई नहीं हुआ पाप-बोध। जो किया, सोच-समझकर किया। मैं अबोध थी, न विधवा राँड और न कुँआरी अल्हड़ जवानी की मारी। श्रीधर के ऊपर अहसान भी नहीं किया मैंने। नहीं किया! वे घायल, टूटे बिखरे से...ऐसे ही, जैसे चंदन था नया जन्मा। छोटा-सा अवश अबोध। दूध भी नहीं चकोर पाता था निर्बल। अपनी छातियाँ मसलकर दूध की बूँदें जुटाई थीं, उसके होंठों पर चुआ दी, कि तालू चटके नहीं। श्रीधर ऐसे ही तो लगे थे। नहीं तो उस घड़ी यह बरसों पुरानी बात क्यों याद आई ?**''[12]

सारंग अपनी शारीरिक इच्छा को भी स्वीकार करती हुई कहती है- ''**मैं ही नहीं जान पा रही कि जो कुछ उसके साथ हुआ, वह उसकी भरपाई थी या मेरी अपनी अधूरी-पूरी इच्छा ? दबी-घुटी लालसा या वर्जित फल को चखने-जाँचने की जिद ? मेरा ही फैसला था कहीं। आजाद होकर सोच रही थी अपने बारे में। ...चंदन के कारण श्रीधर को बाँधना चाह रही हूँ मैं ?**

या अकेली ही चलकर ताकत इकट्ठा कर रही हूँ? देखना चाहती हूँ कि कहाँ-कहाँ से गुजर जाऊँगी? मालूम नहीं श्रीधर के संग एक हो जाने का कौन-सा कारण था?'' [13]

कथा के अंतिम भाग में सारंग गाँव में प्रधानी का चुनाव लड़ती है, लेकिन इस कार्य के लिए गाँव वालों की तरफ से समर्थन मिलना तो क्या? औरत होने के कारण उसे सिर्फ मजाक बना दिया जाता है। इस पर फत्तेसिंह सारंग की तरफ व्यंग्य करते हुए कहता है - **''तुम तो प्रधान का पर्चा भरो, नहीं तो इस गाँव में गधाराज होगा या लुगाईराज। रंजीता के लक्षण देख लिए? साला काबिल की पूँछ बना फिरता है। लुगाई यहाँ चाखी-सी चलाने आ गई। तुम उस कुँवरपाल को ब्याही लुगाई की तरह कब तक चिपकाए फिरोगे? रहेगा तो साला ढेड़ ही। दोनों का किस्सा खतम। भरो तुम तो पर्चा।''** [14] लेकिन सारंग पर इस व्यंग्य का कोई असर नहीं पड़ता है और वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती जाती है। गाँव की स्त्रियों को संगठित करती हुई राजनीति के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर आगे आती है। औरतों को उनका हक दिलाने तथा गाँव की उन्नति के लिए वह संघर्ष के मार्ग की ओर चलती है। साथ ही सारंग अपने पति के बदले हुए स्वभाव को सही रास्ते पर लाने में भी सक्षम होती है, **''बंद किवारों तक मुँह ले गए रंजीत। परिचित गंध अपनेपन का एहसास जगा रही है। सिर टेक दिया किवाड़ पर आँखें मूँद लीं। लगा कि चलते चाक पर बैठे हैं।''** [15]

इस तरह 'चाक' उपन्यास में चित्रित सारंग एवं रेशम के स्त्री चरित्रों के माध्यम से लेखिका ने नारी मनोविज्ञान की जीवंत अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है, जो स्त्रियों के सशक्त व जुझारू चरित्रों को रेखांकित करता है। ❑

संदर्भ सूची :

(1) आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान (Modern Abnormal Psychology), अरूण कुमार सिंह, Creative Publication दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2001 ई., पृष्ठ संख्या - 125

(2) वही, पृष्ठ संख्या - 126

(3) वही, पृष्ठ संख्या - 127

(4) सम्मेलन पत्रिका, अधिवेशन अंक-16 भाग-93, संख्या - 4, पृष्ठ संख्या - 162

(5) चाक, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण -1997 ई., पृष्ठ संख्या - 8

(6) वही, पृष्ठ संख्या - 21

(7) मैत्रेयी पुष्पा रचना संचयन, सं. सुशील सिद्धार्थ, किताबघर प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संसकरण - 2016 ई., पृष्ठ संख्या - 81

(8) चाक, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण -1997 ई., पृष्ठ संख्या - 19

(9) आदमी की निगाह में औरत, राजेंद्र यादव, राजकमल नयी दिल्ली, पहला संस्करण - 2006 ई., पृष्ठ संख्या - 16

(10) समकालीन हिंदी उपन्यास समय से साक्षात्कार, डॉ. एलाड.बम विजयलक्ष्मी, राधाकृष्ण नयी दिल्ली, पहला संस्करण - 2006 ई., पृष्ठ संख्या-84

(11) मैत्रेयी पुष्पा, चाक, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1997 ई. , पृष्ठ संख्या - 325-326

(12) वही, पृष्ठ संख्या - 328

(13) वही, पृष्ठ संख्या - 328

(14) वही, पृष्ठ संख्या - 407

(15) वही, पृष्ठ संख्या - 435

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

कार्बी लोकसाहित्य में प्रकृति

नफीसा अहमद

सहायक प्राध्यापिका
रूपही महाविद्यालय, नगांव, असम
संपर्क : मोहखुली, नगांव
असम-782003
मो. 8099159632
ई-मेल : na635937@gmail.com

शोध सार :

'कार्बी' असम की एक उल्लेखनीय पहाड़ी जनजाति है। कार्बी लोक साहित्य पहाड़ी जीवन और परिवेश की मनोरम झाँकी प्रस्तुत करता है। इनका श्रवन-पठन श्रोता व पाठकों को देशकाल का अतिक्रमण कर नैसर्गिक पहाड़ी वातावरण और जीवन से रूबरू कराने में सक्षम है। इनके गीत, गाथा, कथा व मुहावरे-लोकोक्तियों में अभिव्यक्त जीवनशैली प्राकृतिक सौंदर्य से ओतप्रोत है। अपने सुख-दुख, आह-कराह, हर्ष-विषाद, प्रेम-ममता, उत्थान-पतन सर्वस्व प्रकृति को साथ लिए गतिमान हैं। प्रकृति केवल इनकी आश्रयदाता और पालनकर्ता ही नहीं है, इनके सृजनात्मकता का भी प्रेरणास्रोत है।

बीज शब्द :

असम, जनजाति, प्रकृति, पारिपार्श्विकता, भौगोलिक स्थिति, जीव-जंतु, पहाड़ी, प्रेम, जंगल।

मूल आलेख :

विश्व के प्राय: सभी जनजातीय समुदाय प्रकृति के निश्च्छल गोद में ही पलते-बढ़ते आए हैं। इनका निवास स्थान अपने में ही जैव-विविधता, प्राकृतिक संपदाओं का अकूत भंडार स्वरूप है। तुलनात्मक रूप से अविकसित तथा पारंपरिक दृष्टि से जीवन निर्वाह करने वाली जनजातियों का जीवनबोध और विचार खासतौर पर अपने पारिपार्श्विक भौगोलिक परिवेश एवं उसके विविध उपादानों से ही संबद्ध रहता है। पूर्व मानव की तरह जंगल-पहाड़ के नैसर्गिक गह्वर में जीवन यापन तथा प्रकृति के विविध उपादानों से लगातार संस्पर्श का ही परिणाम है कि जनजातीय समूह के साहित्य, कला और संस्कृति में प्रकृति का सहज उद्वेलन देखने को मिलता है। जनजातीय समुदाय में प्रकृति के इसी प्रभाव को ध्यान में रखकर पूर्वोत्तर की मंगोलीय जनजाति कार्बी के लोक साहित्य को परखने का प्रयास इस आलेख में किया जा रहा है। भाषातात्विक दृष्टि से 'तिब्बत बर्मीय' भाषागोष्ठी के कुकि-चीन

शाखा से संबद्ध 'कार्बी' समुदाय मेघालय, नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश और बांग्लादेश के कुछ इलाकों के अतिरिक्त असम के कार्बी आंग्लोंग, गोलाघाट, दरंग, नगांव, कामरूप आदि जिलों में रहता है। कार्बी जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में खोज करते हुए विद्वानों ने इन्हें तिब्बत, तत्कालीन पूंजा और नङकुलार के पहाड़ी इलाके, चीन के चालविन उपत्यका ,चीन आराकान पार्वत्यमाला आदि से जोड़कर देखा है। विविध पहाड़-पर्वतों के बीच पल-बढ़कर असम की ओर आने वाली कार्बी मूलत: एक पहाड़ी जनजाति के रूप में ही जानी जाती है। विविध पर्वत-पहाड़ों तथा कलंग, कपिली, डिमुंग, आमरेंग, बरापानी, लंगनित जैसे नदी-झरनों तथा इन स्थलों में उपलब्ध स्थानीय जीव-जंतु , पेड़-पादपों के सान्निध्य में ही इनके साहित्य का अंकुरण-पल्लवन होता आया है। पारिपार्श्विक भौगोलिकता के प्रभावस्वरूप इस जनजाति का हृद स्वरूप मौखिक साहित्य 'पहाड़ी प्रकृति' रूपी रज से स्पंदित मालूम पड़ता है। इस संदर्भ में जयंत दास अपने शोधालेख में कहते हैं - The tribe has lived geographically an insular life amidst nature. Various phenomena of nature ,various forms ,colours and contours of countryside, it's flora and founa, tranquility of nature ..are the basis of the folk literature of the tribe.[1] कार्बियों में प्रचलित 'रङकेकिम' अर्थात गाँव सजाने के गीत में कहा गया है-

''चिफङनाङकिम पारेननि
चिफङपालाङहे कप्लिङ
लाङहे ल'आलि थकक्रि
इरू आलाङहे आबि
नुतुन नूने वाङजेङनि'' [2]

भावार्थ : कपिली नदी में घाट बनाकर दो पंक्तियों में गाँव सजाया है, नदी के घाट के लिए पथ सजाया है, घाट में दरिकना (एक छोटी मछली) का सिलसिलेवार झुँड भरा पड़ा है। स्थानीय पर्वत-पहाड़ , झील-झरनों के नैसर्गिक वातावरण को शब्दों में भरकर उसके माध्यम

से हृदयाभिव्यक्ति के अनेकानेक उदाहरण कार्बी लोक साहित्य में देखने को मिलता है। एक कार्बी युवक द्वारा कार्बी युवती को संबोधित कर गाए जाने वाले गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार से हैं–

''निस के रूपजिली राङन
देखा हुमदुम के मानसेरन
कुलेङके आलङप्र द'अ
जिली सुन हाइहे रा ताङद
थारे ने जुदुन आलामम
जिली नाङसुनतन नाङआज
आनपर के दखा लङलेल
आनसि रूपजिली राङन
आबि सुनदून लाङिआज
आरलङके दङप्लुन पाङथाइ अ
क्लएल आसिलि जिस
जिली बाङचजाक आअतद
देखा के रिदुनदे राम द
हुनचत आबारे आज
निस के रूपजिली राङन
पुसि नाङदखा ले लङप
जिली ने नाङइङजिन देतल'' [3]

ओ प्रिय सोणजनी (आदरसूचक संबोधन) जिली, सिर्फ 'मानसेरन' (एक स्थानीय छोटी-सी मछली) ही पकड़ पा रही हो क्या! कुलेङ नदी में छोटे-बड़े बहुत पत्थर हैं। सावधानी से उतरना। नहीं तो तुम्हें एक मछली भी नहीं मिलेगी। अरे! ये क्या! मेरी बातें सुनते ही तुम तो पानी में ही उतर गई ..अब देखो पत्थर पर फिसलकर गिर गई न। तुम्हारे मेखेला-मेथनि (वस्त्र) भी खिसक गए। अरे सोणजनी, तुम तो मछली पकड़ना छोड़कर वापस जा रही हो! शरमा गई क्या? नदी के किनारे से इस तरह तुम्हें वापस जाते देख मेरे मन में दया उमड़ रही है...।)

'अककिप्रु' (मछली पकड़ने का उत्सव) के दौरान गाए जाने वाले एक गीत की कुछ पंक्तियों पर ध्यान दीजिए –

''लङजुन अककिप्रु
दुङनाडने अम्फु
नाङचन उन ए लङप्र
के चङहङकक मेमु'' [4]

इन पंक्तियों का भावार्थ यह है कि लङजु (एक निर्दिष्ट स्थानीय घाट) में 'अककिप्रु' का आयोजन हुआ है। पर हे स्वर्णिम कपोलों वाली मेरी प्रिया, तुम्हें जाने की जरूरत नहीं। तीव्र प्रवाह वाली नदी के पत्थरों को लाँघकर तुम नहीं जा पाओगी। इन गीत पंक्तियों में हम कार्बियों से संबंध रखने वाले स्थानीय नदी, मछली आदि का नाम ही केवल नहीं सुनते, बल्कि इनसे ओत-प्रोत कार्बी लोक जीवन के सहज स्वरूप से भी अवगत होते हैं। कैसे पत्थर भरे निश्च्छल नदियों के जल में भीगना, तैरना, कलकलाहट भरे जलप्रवाह से चंचल मछली पकड़ना आदि उनके जीवन का एक अविच्छिन्न अंग है। प्रेमी द्वारा प्रेमिका को 'इन परिस्थितियों का सामना नहीं कर पाओगी या नहीं कर पा रही हो' इस प्रकार का उद्बोधन इन गीतों को और अधिक प्रभावी बनाने का काम करता है। कार्बी लोकगाथा 'हाई -लङ' के प्रेमकाव्य के संदर्भ में एक विद्वान ने कहा है- ''हाइ काव्यत उमरासि जुरित जिमान विषाद भरा अनुभूतिरे काव्यर आत्माक उपलब्धि करिब पारि सिमानेइ आमतारपेङ नइ खनर माजेरे हाई लङर शैशवर मधुरता उपलब्धि करिब पारि'' [5] (उमरासि झील के माध्यम से एक ओर जहाँ हाई काव्य की आत्मा और उसके विषाद भरे अनुभूति को महसूस किया जा सकता है, वहीं आमतारपेङ नदी के माध्यम से हाइ-लङ के शैशवावस्था की मधुरता को अनुभव किया जा सकता है।) इस प्रेमकाव्य की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार से हैं, जहाँ बालक लङटेरण बालिका हाई से कहता है–

''आमतारपेङआपाम
मिलि इंथु फ्लान
वाले जुइदाम नाङ'' [6]

(चलो आमतारपेङ के रेत में हम खेलने चले..)

इसके अतिरिक्त जंगली कपोतक जैसे कई पक्षियों

तथा शिमलु, मदार आदि पुष्पवान पेड़ों का कार्बी लोक संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। जंगली कपौतक इनके लिए एक ओर जहाँ प्रेमी और परलोकगामी आत्मीयजन का संदेशवाहक है, वहीं इसका कलपता हुआ मद्धम स्वर जीवन की वेदना का प्रतीक है। प्रकृति से जुड़े इन विश्वासों का भावविह्वल कलात्मक प्रस्फुटन हम इनके गीतों में देख सकते हैं। एक गीत की कुछ पंक्तियाँ देखिए, जिसमें प्रिया के वियोग में पहले से ही आकुल कार्बी हृदय, मुरली बाँस की अगियारे बैठे जंगली कपोतक को कलपता सुन सवाल करता है–

''माहिन फराजाङ
सिमलीर थुङलाङबाङ
नांजु कातेराम
ने जु पाताल नाडफान
सामि बङआफान तङ
स रूनए किबान
मारि थुङलाडबाङ'' [7]

ओ कपोतक, तुम क्यों इतना कलप रही हो? क्या तुम इससे मेरी प्रियतमा की अस्वस्थता का संदेश मुझे देना चाहती हो। बसंत ऋतु के आगमनोपरांत विविध पुष्पित पेड़ों का या अन्य जीव-जंतुओं को आलंबन, उद्दीपन सजाकर मनोरम भावाभिव्यक्ति की अनेक उदाहरण भी इनमें सुलभ है-कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार से हैं–

''मडवेपि नाङले
फारकङपेन फारसे
काङथु चिबाते
लासि ने सेडवे
इंजारजि मन ए
सेङसिबेर उन ए'' [8]

(बसंत ऋतु का आगमन हो रहा है। शिमलु के साथ मदार भी फूलने लगा। इन रक्तरंजित पुष्पों से लदे पेड़ों को देख मेरा मन भी उड़ान भरने लगा है। हे प्रिया मन को मैं बाँध नहीं पा रहा हूँ)। झूम खेत में अकेला बैठा प्रेमी मन मधुमक्खी को अपने पास गुनगुनाता देख भी गा उठता है–

''ने साम्पुङवेत जा
नाङकाडवाई जेवे
नाङतिनकोक नाङसे
कारजूटोन नेके
चारसाकलोक कुबे'' [9]

(हे प्रिया! झूम खेती के खलिहान में अकेले बैठे हुए क्षण में एक मधुमक्खी पास गुनगुनाने लगी। प्रिया उसकी गुनगुनाहट मुझे तुम्हारी ही मधुर स्वर प्रतीत हो रहा था। उसका स्वर मुझे तुम्हारी स्वर का ही स्मरण करा रहा था। कोर के डंडे में हाथ टिकाकर आत्मा हारा हुए मैं उसी के गीत को सुने जा रहा था। मगन हुए जा रहा था।)

'रोमीर' प्रेमकथापरक गीतों की कुछ पंक्तियाँ देखिए–

हुन मेलान केवान
रूप अरे तत फ्लान
रोमीर सेर आथान
नाङमेककृ वेन बान
नेसेङमाथा दाम'' [10]

(चांदी वर्णा ओस बूँदों को कोहरों ने बुला लाया है। हे प्रिया! वे बूँदे मुझे तुम्हारे ही अश्रु बूँद मालूम पड़ रहे है।) इसके अतिरिक्त कई सारे ऐसे गीत हैं, जो कार्बियों के जीवन में प्रकृति के महत्वपूर्ण प्रभाव को दर्शाते हैं। चमांकान के दौरान गाए जाने वाले एक गीत में गायक मृतात्मा को स्वर्ग का राह दिखाने की कोशिश करता हुआ कहता है-हे आत्मा पृथ्वी को भूलकर तुम यमदेवता की ओर प्रस्थान करो। जाते-जाते तुम्हें पिंद पहाड़ मिलेगा। लेकिन उसके पुष्पों को तुम मत तोड़ना। उसके बाद चलिङ और देङकुर नामक दुर्गम पहाड़ों को अतिक्रम कर मकिन्दन पहाड़ मिलेगा ..फिर तुम पाओगे कि तुम्हारे परदादा कपोतक वेश में आकर तुम्हें स्वर्ग पथ पर लिए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त नवदंपति को आशीर्वाद देने के लिए आम तौर पर भारतीय समाज में राधा–

कृष्ण, राम-सीता की उपमा देते हुए आशीर्वचन कहे जाते हैं। वहीं कार्बियों के 'आदाम आचार' के दौरान गाए जाने वाले एक गीत का उल्लेख इस संदर्भ में किया जा सकता है, जिसमें नवदंपति को 'पक्षियों के कलरव से भरे सदाबहार झील' की तरह जीवनाधिकारी बनने का आशीर्वाद दिया जाता है। अन्य समुदाय की तरह कार्बियों के 'असकेबेइ आलुन' (शिशुओं के मनोरंजन संबंधी गीत) में चाँद, तारे, सूरज, जुगनू आदि का सामान्य उल्लेख मात्र नहीं है, बल्कि कार्बियों के जीवन में प्रकृति का जो प्रभाव है उसका मनोरम छाप भी नजर आता है। उदाहरण के तौर पर एक गीत की निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं, जिसमें एक कार्बी माता कहती है-

''एजाङपो मानदंड
मालोंङआफुलुम
देङदङपाङरेङक्रोम
सुरिर रोइदून'' [11]

अर्थात् मेरा बेटा जंगल साफ करना, पेड़ काटना सीख चुका है, पहाड़-पर्वत में चढ़ जाता है। वह हजार किलो अनाज झूम खेती में उठा सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य समुदाय की तरह कार्बी जनजाति के मध्य ऋतु संबंधी गीतों का प्रचलन भी अत्यंत सुलभ है। इस संदर्भ में कार्बी वसंतोत्सव 'बतर किकुर' के दौरान गाए जाने वाले गीतों का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है। पुरजोर वर्षा की कामना लिए कार्बी लोग इन

गीतों का राग जोड़ते हैं। हालाँकि ये गीत सामूहिक रूप से या किसी भी सामान्य व्यक्ति द्वारा नहीं गाया जाता है। 'काथार बुरा' रूपी विशेष व्यक्ति को ही इसके गान का अधिकार होता है। गीत इस प्रकार से है–

चि चि माङनेङनेङ

चि चि नाङहाङजेङ

वान बर रूवे हाङजेङ

इन पंक्तियों के माध्यम से 'काथार बुरा' जिलियों (एक विशेष कीट जो खासकर संध्या के बाद मधुर शोर करता है) को संबोधित करते हुए गाता है, हे मौसम की वार्तावाहक जिलियो! तुम लोग अपने गीतों के झंकार से वर्षादेवी को धरा में ले आओ। फिर 'क्रकचूर' पक्षी को संबोधित करते हुए आगे 'काथार बुरा' गाता है–

क्रकचुर मा क्रकचुर

क्रकचुर नाङकेकुर

वाङबतर नाङचिङथुर

बर रूये नाङकुर

अर्थात् हे क्रकचुर पक्षी! तुम अपने मधुमय स्वर से वर्षादेवी को धरती पर ले आओ। फिर मेंढक को संबोधित करते हुए गाया जाता है–

''हाङज वाङबतर सारप

रामनङआपरल

पिनिरानि फ

दान दि पि एतल'' [12]

अर्थात्, हे भोकराज! तुम भी अपने अमृतमय राग जोड़कर वर्षा देवी को पृथ्वी पर ले आओ।

दरअसल जिलि, क्रकचुर पक्षी, मेंढक आदि जीवों को लेकर कार्बियों में यह विश्वास है कि इनका वर्षा ऋतु के साथ खास आत्मीय संबंध है। इनमें वर्षा के गंध और स्पर्श से आप्लुत होने की आतुरता है। इसलिए वे इन्हीं जीवों का हवाला देकर समस्त प्राणीजगत और माँ वसुंधरा को सजल बनाने की कामना लिए गीत गाते हैं।

लोककथा : किस्से-कहानियाँ सदियों से लोक समाज में मनोरंजन और शिक्षा का माध्यम रही है। बाघ, मेंढक, मयूर, बंदर आदि जैसे विविध पशु-पक्षियों का व्यापक प्रयोग अन्य समुदायों की तरह कार्बी लोककथा में भी देखने को मिलता हैं। 'मिस'रङप पेनचङह काल'स' (चींटी और मेंढक), वरामपी (मयूरपक्षी), सेर वकेक (स्वर्णिम तोता), किपिप पेनचितुङप(बंदर और कछुआ) आदि कहानियाँ केवल कार्बी समाज की कल्पना कपोलता, शैशवानुकूल मनोरंजन को ही नहीं दर्शातीं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि ये जीव-जंतु उनके लिए आश्चर्यकर वस्तु कतई नहीं हैं, बल्कि उनके जैसे ही प्राणपूर्ण हैं। उन्हीं के बीच के हैं। उन्हीं के अपने जैसे हैं।

कार्बियों के मध्य प्रचलित किवंदंतिपरक कथा 'बामन किरिप और पुत्र सामबेप' में हम मानव और घड़ियाल जैसे जीव के बीच मधुर संबंध का उद्वेलन देख सकते हैं। हम देखते हैं कि सामबेप, घड़ियाल की निरंतर सहायता से यमपुरी में स्थित अपने माता-पिता से मिल पाता है। घड़ियाल की सहायता के उपहारस्वरूप सामबेप घड़ियाल को आशीर्वाद देता है कि कार्बी लोग ईश्वर की पूजा, स्वर्गगामी माता-पिता के श्राद्धानुष्ठान में पठित मंत्र-श्लोक में घड़ियाल का नाम अवश्य लेंगे। कार्बियों में प्रचलित जीव-जंतु संबंधी कथाएँ कल्पना कपोल होते हुए भी अपने आप में सार्थक भाव लिए हुए हैं। ये कथाएँ हम मनुष्य को अन्य जीवकूलों के साथ सामंजस्यपरक सहानुभूतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनके दुख या उनके योगदानों को समझने-सराहने के लिए प्रेरित करती हैं।

लोकगाथा : लोकगाथाओं की दृष्टि से कार्बी लोक साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। 'साबिन आलुन' (जनजातीय रामकथा) हाई, रोमिर जैसी प्रेमपरक लोकगाथाओं के अतिरिक्त कार्बी के प्लांग (कार्बियों की उत्पत्ति), लखी केप्लांग (धान की उत्पत्ति), बेङकेप्लांग (मछली की उत्पत्ति), लो केप्लांग (केले के पेड़ की उत्पत्ति), थाप केप्लांग (बाखर की उत्पत्ति) जैसी अनेक लोकगाथाओं से इनका लोक साहित्य भरा है, जो मानव और मानवेत्तर जीव-जगत के बीच आलौकिक अपितु रुचिकर संबंधों को उद्भाषित करती हुई नजर आती हैं। 'हाई-लङ' के

प्रेमकाव्य में हम पाते हैं कि लङ के प्रेम में समर्पित हाई अंततः मृत्यु को प्राप्त करते हुए समस्त संसार को शीतल करने वाली वर्षा देवी की मर्यादा को प्राप्त करती है। 'लो केप्लांग' में हम पाते हैं कि सृष्टिकर्ता की बेटी अपनी कई पुत्रियों के साथ धरती पर उतरती है। साथ लाती है ढेर सारे केले और भुट्टे का बीज। तभी धरती के बहुत सारे हिरण, चूहा, पक्षी आदि उनकी पुत्रियों से विवाह करने को लालायित होते हैं। अतंतः शर्तानुसार पक्षी सबसे तेज गति से केले और भुट्टे के बीजों को चारों तरफ फैलाकर उनकी पुत्रियों से विवाह करने में सफल होते हैं। 'बेङ केप्लाङ' के अनुसार कारेङ और काले नामक दो बहनें अचानक आमतारपेङ नदी में डूब कर मछली का रूप पा जाती हैं। 'बङ सिम बङ दाम केप्लांग' और 'थाप केप्लांग' के अनुसार सृष्टिकर्ता ने अपनी पुत्रियों को क्रमशः बीज और पक्षी रूप में कार्बियों के बीच भेजा था। प्राणवान पौधे के बीज रूप में धरती में समा कर विधाता की पुत्रियों ने एक ओर जहाँ चपल लता का आकार लेकर कालक्रम में कद्दू आकार के फल दिए, जिसका उपयोग कार्बी लोग मदिरा रखने के पात्र में करने लगे। वहीं पक्षी आकार में धरती पर आने वाली विधाता की पुत्रियों (कङ और सिङ) की सुगंधमय विष्ठा से 'बाखर' (कार्बी लोग मदिरा बनाने में इसका उपयोग करते हैं) बनाने की कला का विकास कार्बियों में हुआ।

कार्बियों की उत्पत्ति संबंधी कथा 'कार्बी केप्लांग' के अनुसार पृथ्वी के सृजन के बाद ब्रह्मदेव ने महसूस किया कि पृथ्वी बहुत खाली और निर्जीव लग रही है। इस खालीपन को दूर करने के लिए उन्होंने पेड़-पौधों और अन्य छोटे-बड़े जीव जंतुओं का सृजन किया। फिर उन्होंने स्वर्ग से पृथ्वी की ओर देख कर महसूस किया कि पृथ्वी अब सुंदर तो हो गई है, पर अभी भी कुछ कमी है! इस कमी की पूर्ति के लिए उन्होंने वप्लाकपि पक्षी के अंडों से खासीया, असमिया, नगा, कार्बी आदि जनजातियों का सृजन किया।

लोकसुभाषित : कार्बियों ने अपने भौगोलिक पारिपार्श्विक स्थिति में रचा-बसा कर ही लोकसुभाषितों के समृद्ध खजाने को गढ़ा है, जिस वजह से प्रकृति का स्पर्श कार्बी लोकसुभाषितों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। हम देखते हैं कि अंग्रेजी के "Something is better than nothing" या असमिया के 'नाइ मोमाइतकइ कना मोमाइ भाल' अर्थात मामाविहीन होने से अच्छा है एक अंधे मामा का होना। इस प्रकार के भाव की अभिव्यक्ति के लिए कार्बियों ने मछली, केकड़ा आदि का प्रयोग उचित समझा और "Ave Ong te chehe ta ok" (जब मछली नहीं तो केकड़ा ही सही) जैसा मुहावरा गढ़ा। ठीक इसी प्रकार अंग्रेजी में जिस भाव की अभिव्यक्ति "Might is right" के रूप में की गई है, उसी समान भाव की अभिव्यक्ति कार्बी जनमानस Nanghili ri thokvam ke ati (अर्थात् भालू अगर बोले कि वह अंडा देता है तो यह मान लो, उससे बहस मत करो) रूप में किया है।

इसके अतिरिक्त कार्बियों में प्रचलित पहेलियों के संदर्भ में धरमसिङ तेरण कहते हैं कि "Generally the riddles start with words like pirthe /hem tibinpi le..etc.Which translate to 'in the shadows of earth..forest,river etc."[13] उदाहरण के तौर पर कुछ पहेलियों का उल्लेख किया जा सकता है-

''इंगनाम कि इकपि आजो
वो इकपि पेन वो इकपि
लाङके एर जूनबोम राम दो
ला के कोटि लो आसो'' [14]

अर्थात् घने जंगलों की छाया में काले वर्ण की पक्षी जोड़ा लाल पानी पी रहा है, वह छोटी-सी चीज क्या है? (जुआं)

''इंगनाम टिबिनपि ले
रेंचो आसेर आहारलोङ
केङदो दोकोक कोपिलो'' [15]

अर्थात् घने जंगलों की छाया में राजा का सुनहरा प्याला अपने पैरों पर खड़ा है (मशरूम)।

''लङरोइ टिबिनपि ले
सेर आटारसो आहि आथाक
मिथोङक्राङबिकोक कोपिलो''[16]

अर्थात् एक बड़ी नदी की छाया में बिछे स्वर्ण चादर पर चक्का घूम रहा है (केकड़ा)।

''इंङनाम टिबिनपि ले
रेचो आसो अकेंङअवे अरि अवे
केचोटा अदे पेन केदामता अदे पेन कपिलो'' [17]

अर्थात् घने जंगल की छाया में बिना हाथ पैरों वाला राजकुमार जीभ से खाना खाता है और चलता है (घोंघा)।

निष्कर्ष : निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कार्बी लोक साहित्य की विविध विधाएँ प्रकृति के मनोरम स्पर्श से भरपूर हैं। लोक गीतों में एक ओर जहाँ प्रकृति का कलात्मक और लयात्मक प्रवाह सुलभ है, वहीं लोककथा और गाथाओं में मानव और मानवेत्तर के मध्य रोमांचक अपितु सरल संबंधों का संगुम्फन। कार्बियों में युग-युगांतर से प्रवाहित लोकोक्तियों, मुहावरे भी प्रकृति का सपाट अपितु पैने स्पर्श से इस जनजाति के प्रकृति के सान्निध्य को ही अभिव्यक्त करती नजर आते हैं। ❑

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Jayanta, Das, Folk Literature of the Karbis of Assam:A study,Gauhati University, 2015, page no-82
2. देबेन, गोगोई, कार्बि लाङपिर गीत, रङमिलि बुक स्टॉल,1994, पृ. संख्या-70-71
3. बिदर, सिङक्रङ कार्बी संस्कृतिर अन्वेषण, सांस्कृतिक परिक्रमा विभाग,कार्बी आङलङ स्वायत्तशासित परिषद, डिफू, 2015, पृ. संख्या -115
4. मल्लिका, बोला, कार्बि आरू डिमासा लोक उत्सव एटि तुलनामूलक अध्ययन, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, 2018, पृ. संख्या-243
5. देबेन, गोगोई, कार्बि लाङपिर गीत, रङमिलि बुक स्टॉल, 1994, पृ. संख्या-178
6. वही पृ,संख्या-178
7. विश्वज्योति, हाजरिका, रङबङतेराङर प्रबन्ध संकलन (प्रथम खण्ड), आंगिक प्रकाशन, 2016, पृ. संख्या-3
8. देबेन, गोगोई, कार्बि लाङपिर गीत,रङमिलि बुक स्टॉल, 1994, पृ संख्या-81
9. वही, पृ. संख्या-80
10. वही, पृ. संख्या-143
11. Jayanta, Das, Folk Literature of the Karbis of Assam:A study, Gauhati University, 2015, page no-157
12. मल्लिका बोला, कार्बि आरू डिमासा लोक उत्सव एटि तुलनामूलक अध्ययन, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, 2018, पृ.-240
13. Dharamsing, Teron, Karbi Studies (vol 2)Assam book Hive, panbazaar, Guwahati, 2011, page no-51
14. वही, पृ. संख्या 49
15. वहीं, पृ. संख्या 50
16. वहीं, पृ. संख्या 50
17. वहीं, पृ. संख्या 50

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

हिंदी आलोचना में अभिव्यक्त दलित समाज का प्रतिबिंब

अजीत कुमार

शोध छात्र, हिंदी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू),
शिलोंग, मेघालय-793022
मो- 9077078917
ईमेल-ajitk1134@gmail.com

शोध सार :

वर्तमान सदी की हिंदी आलोचना में दलित समाज का सजीव चित्रण दिखाई देता है। आज की आलोचना में भारतीय समाज के साथ दलित समाज का चित्रण किन रूपों में हुआ है उसको भी आप देख पाएँगे। भारतीय समाज में दलित समाज की स्थिति क्या रही है उसे भी आप जान सकेंगे। भारतीय सामाजिक व्यवस्था के प्रारम्भिक दौर को भी समझ सकेंगे। मानव विकास के क्रम को दिखाने का प्रयास किया गया है। वर्तमान सदी की हिन्दी आलोचना के माध्यम से दलित समाज में उत्पन्न समानता और असमानता का दिग्दर्शन भी देख सकेंगे। राजनीति के माध्यम से दलित समाज का उत्थान कैसे हो इसे भी जान सकेंगे। वर्तमान सदी की हिन्दी आलोचना दलित साहित्य की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे। इस लेख का उद्देश्य दलित, गैर-दलित आलोचक और आलोचना की पृथकता बताने का नहीं है, अपितु वर्तमान सदी की हिंदी आलोचना में दलित समाज की समस्या और संवेदना प्रलक्षित हो रही है कि नहीं, वह है।

बीज शब्द :

हिंदी आलोचना, दलित समाज, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, सभ्यता, समानता-असमानता, कुकृत्य, अलगाव, पार्थक्य, उत्पीड़न, राजनीति।

मूल आलेख :

भारतीय सामाजिक व्यवस्था की जड़ें एक प्राचीन सभ्यता के विकास क्रम का द्योतक हैं। यह बात जब भी उभरती है तो एक की प्रक्रिया हमारे समक्ष उद्धृत होती है। इस विकास क्रम में जो भी व्यवस्था कार्य कर रही थी, उसमें किसी ने किसी को अवरोध नहीं पहुँचाया, बल्कि एक-दूसरे का हाथ थामे एकता की अनुपम मिसाल

प्रस्तुत की। भारतीय सामाजिक संरचना में विभिन प्रकार के पार्थक्य देखने को मिल जाएँगे। इस पार्थक्य के बावजूद यह अपनी सामाजिक व्यवस्था को गतिशीलता प्रदान करती रही है। अनेक बोलियों और संस्कृतियों को अपने आप में समेटे हुए एक सुदृढ़ व्यवस्था को जीवित रखा और यहीं इसकी खासी महत्ता रही। ऐसा माना जाता रहा है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था एक सभ्यता की उपज है। इस सभ्यता का संबंध सिंधु घाटी से माना जाता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई के पश्चात इसका प्रमाण मिलता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सिंधु घाटी की सभ्यता को विकसित सभ्यता माना जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकर चाइल्ड का इस संदर्भ में विचार दृष्टव्य है, ''गलियों की सुंदर तरतीब और नालियों की बहुत बढ़िया व्यवस्था और उनकी बराबर सफाई इस बात का संकेत देते हैं कि बाढ़ों की वजह से बार-बार बनीं इमारतों की तैयारी के समय भी नगर निर्माण के और सड़कों की कतारों की रक्षा करने के लिए नियम का पालन होता था।''[1] यह प्राचीन विकसित सभ्यता का उदाहरण है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उस समय में नगर की बनावट किस प्रकार और कैसी थी।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग दलित समाज भी है। वैसे तो भारतीय सामाजिक संरचना में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को रखा गया है, किंतु इस व्यवस्था के अंतर्गत आदिवासी समाज भी आता है, जिसको शूद्र की श्रेणी में ही माना जाता है। दलित समाज को सामाजिक व्यवस्था के क्रम में चौथे पायदान पर रखा गया और यहीं से इसकी दासता की कहानी प्रारंभ होती है। दलित समाज के लिए यह नियम बना दिया गया कि वो बाकी तीनों समुदाय की सेवा आदि करेगा। यह विडंबना भारतीय समाज को खोखली करती रही फिर भी यह समाप्त नहीं हो पाई। इस रूढ़ी को समाप्त करने के लिए अंबेडकर से पहले कई समाज सुधारकों ने प्रयास किए। राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में रह रहे दलित समाज को न्याय देने के लिए धर्म में व्याप्त दोषपूर्ण विधियों को खत्म करने का प्रयास किया। किंतु अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि यह पूर्णत: समाप्त नहीं हो पाया। इस क्रम में परमहंस सभा का भी नाम जुड़ता है। परमहंस सभा ने मुंबई में 1840 में यह प्रयास किया कि जाति व्यवस्था समाप्त कर दी जाए। किंतु परमहंस सभा के प्रति विरोध इतना बढ़ा की वह चाह कर भी इसे समाप्त न कर सकी। जाति प्रथा उन्मूलन के संदर्भ में केशवचन्द्र और विवेकानंद का भी प्रयास सरहनीय रहा है। ये दोनों भी चाहते थे कि जाति प्रथा समाप्त हो। केशवचन्द्र का तो कहना था कि इसका निवारण अंतर्जातीय विवाह से ही होगा। केशवचन्द्र सेन का इसे कहने के पीछे कारण यह था कि अंतर्जातीय विवाह की संख्या बढ़ती है तो जाति प्रथा खुद-ब-खुद कमजोर होती जाएगी और जब कमजोर होगी तो धीरे-धीरे समाप्त भी हो जाएगी। विवेकानंद तो मानते थे कि अगर हिंदू धर्म को जीवित रखना है तो जाति व्यवस्था को अति शीघ्र समाप्त करना होगा।

महात्मा गांधी भी अस्पृश्यता निवारण के पक्षपाती थे। ''अस्पृश्यता-निवारण आंदोलन को और धारदार एवं व्यापक बनाने के लिए गांधी जी ने उसी वर्ष यानी 1932 में ही जो दूसरा महत्वपूर्ण कार्य किया, वह था अंत्यजों को मंदिर प्रवेश करने का अधिकार दिलाना। वस्तुत: आस्तिकता के अखाड़े में सवर्ण आस्तिकता का होश दुरुस्त करने के लिए गांधीजी ने एक अत्यंत कारगर हथियार के रूप में हिंदू-मंदिर में अछूतों के प्रवेश का आंदोलन चलाया।''[2] भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी जी का कद क्या रहा है यह आज भी भली-भाँति सब जानते हैं। भारतीय समाज में गांधी जी ऐसे पुरुष हुए, जिसे सब वर्ग के लोगों ने अपनाया ही नहीं, बल्कि उनकी एक-एक बात को अपने भीतर उतारा भी। महात्मा गांधी जी भारतीय सामाजिक संरचना की बुनावट को बहुत अच्छी तरह पहचानते थे। यही कारण है कि वे हमारे समाज में जड़ जमाई हुई जाति-पाति और छुआ-छूत के भेद-भाव को खत्म करना चाहते थे। उनकी व्यक्तिगत चाह थी कि भारतीय समाज ऊँच-नीच के भाव को मिटाकर एकजुट हो जाए ताकि भारतीय समाज एक ऐसा समाज बने, जिसका अनुकरण विश्व करे। महात्मा गांधी जी का अस्पृश्यता निवारण कितना सफल हुआ, नहीं हुआ, यह तो बाद की बात है। किंतु एक बात तो इससे स्पष्ट हो ही जाती है कि अस्पृश्यता

निवारण को लेकर भारतीय जनमानस में चेतना अवश्य आई हुई दिखाई पड़ती है।

सामाजिक न्याय को लेकर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का उल्लेखनीय योगदान रहा है। सामाजिक न्याय की लड़ाई वे आजीवन लड़ते रहे। ''दलित-वर्ग का स्पर्श या दलित-वर्ग के व्यक्ति का स्पर्श भ्रष्ट कर देता है, मुसलमानों का नहीं। व्यापार और उद्योगों में मुसलमानों पर कोई प्रतिबंध नहीं, जबकि दलितों पर है। मुसलमानों पर हीनता का कलंक भी नहीं लगा हुआ है, जैसा दलितों पर लगा है। परिणामस्वरूप मुसलमान इस बात के लिए स्वतंत्र हैं कि जैसे चाहे पहनावा पहनें, जैसे चाहे रहें और जैसे चाहे करें। दलितों को यह छूट नहीं है। कोई दलित आर्थिक सामर्थ्य होने के बावजूद अपना पैसा खर्च करके गाँव वालों से अच्छा वस्त्र नहीं पहन सकता। उन्हें झोपड़ी में ही रहना पड़ेगा। कोई दलित उत्सव आदि पर भी अपने धन और ऐश्वर्य का अधिक प्रदर्शन नहीं कर सकता। उसका दूल्हा बारात में सड़कों पर घुड़सवारी नहीं कर सकता। जो रीति-रिवाज उसके लिए बनाए गए हैं, उन्हें तोड़ने पर उन्हें पूरे गाँव का कोप-भाजन बनना पड़ेगा। जिसके बीच वह रहता है।'' [3] सामाजिक न्याय दलितों को कैसे मिले इसको लेकर अंबेडकर सदैव सचेत और संघर्ष करते रहे। अंबेडकर के प्रयास का ही परिणाम है कि कई जगहों पर दलित समाज को न्याय मिल पा रहा है। एक और विशेष मुद्दे को लेकर बाबा साहब का संघर्ष जारी रहा। अंबेडकर समानता की भावना सभी वर्ग के लिए चाहते थे। ''बाबा साहब बराबर इस बात पर जोर देते रहे कि सभी धंधों में पिछड़े वर्गों, विशेषकर दलित-वर्गों को स्थान मिलना चाहिए। यदि संभव हो तो सभी सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। विधानसभाओं में दलितों, अनुसूचित जातियों, जनजातियों को सही प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। उन्होंने यह सोचकर ही दलित छात्रों के लिए देशी-विदेशी छात्रवृत्तियों के मसले को उठाया और संघर्ष किया। वे साफ कहते थे कि दलित बच्चे जीवन-भर सवर्णों की चिलम भरने का काम ही न करते रहें। वे शिक्षक, वैज्ञानिक, डॉक्टर बनें ताकि उनमें शिक्षा के विकास से आत्मविश्वास पैदा हो। वे सभी क्षेत्रों में अपने पैरों पर खड़े हो सकें। समाज में अस्पृश्यता की हालत यह थी कि शिक्षित विद्वान अंबेडकर से भी सवर्ण समाज भेदभाव करता था। गांधी जी से यह शिकायत उन्होंने की है।'' [4] एक और उद्धरण से दलित समाज कि आर्थिक और सामाजिक असमानता के प्रश्न को समझा जा सकता है, ''दलित आर्थिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में विषमता के शिकार हैं।'' [5] दलित साहित्य का ध्येय सामाजिक न्याय का भी है, ''नया दलित-विमर्श समतामूलक, शोषण-मुक्त, आत्म-सम्मानपूर्ण, छुआछूत रहित समाज बनाने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देता है।''[6] आज के दलित साहित्य का मंतव्य यही है। सामाजिक न्याय एवं समानता दलित समुदाय को दिलाने के लिए अंबेडकर जी जैसे महान व्यक्ति आजीवन संघर्ष करते रहे।

दलित साहित्यकार और साहित्य पर सबसे ज्यादा प्रश्न उठे हैं। यह कितना सही है कितना गलत इसका मूल्यांकन तो बाद की बात है। किंतु कोई भी साहित्य अपने आप में अच्छा ही होता है। कभी-कभी किसी खास चीज का विरोध करते-करते हम सही को भी गलत कहने लगते हैं। दलित साहित्य अपने आप में अपने भीतर एक बहुत ही भयंकर पीड़ा को समेटे हुए हैं, जोकि कालांतर से चलता आ रहा है। दलित साहित्य की महत्ता को परिभाषित करते हुये चौथीराम यादव लिखते हैं, ''दलित साहित्य कलावादी सौंदर्यशास्त्र का मोहताज नहीं है। वह कलावादी विरोधी, मनुष्य-केंद्रित और जीवनवादी साहित्य है, जिसके समुचित मूल्यांकन के लिए दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र भी लिखा जा रहा है। इसलिए उस पर कला-सौंदर्य विहीनता और एकरसता का आरोप लगाना व्यर्थ है।'' [7] चौथीरम राम का स्पष्ट मत है कि दलित साहित्य पर किसी भी प्रकार का आरोप लगाना व्यर्थ है और यह सही भी है। दलित साहित्य के प्रति फिजूल विरोध के बहस नकार का दिग्दर्शन प्रतिबद्धता की नई जमीन में देखने को मिलता है, ''दलित व्यक्ति का मन, हृदय, आत्मा, चेतना, बुद्धि और स्वभाव आग में जलते ऐसे अनमोल तत्व हैं, जिनका असली स्वरूप आज तक प्रत्यक्ष हुआ ही नहीं। दलित हृदय के कोने-कोने से घाव की तरह रिसते

आँसुओं की थाह लेने का आज तक कोई पैमाना नहीं बना। दलित मनुष्य वह वृक्ष है, जिसकी शाखाओं को काट डाला गया है, जड़ों को खोखला कर दिया गया है।'' [8] कवि, कहानीकार एवं युवा आलोचक भरत प्रसाद त्रिपाठी की यह स्थापना दलित साहित्य और दलित संवेदना के गहराई को आत्मसात किए हुए है। वर्तमान समय में विरले ऐसे एक दो आलोचक हैं, जो दलित संवेदना और प्रासंगिकता को समझ पाए हैं। उनमें एक भरत प्रसाद भी हैं। भरत प्रसाद एक ऐसे आलोचक हैं, जिनकी लेखनी में तटस्थतता और ईमानदारी दिखाई देती है।

दलित समाज सदियों से कुछ कार्य करते आ रहा है, जो आज भी विद्यमान है। दो कार्यों को लेकर दलित समाज के प्रबुद्ध वर्ग और नेतागण लामबंद हैं। पहला डांगर (मारे हुए मवेशी) उठाने की प्रथा और दूसरा सौर कमाना (अर्थात नार वियान प्रसूति)। मरे मवेशी को उठाना तो कम हो गया है, किंतु गाँव घर में आज भी सौर कमाने की प्रथा प्रचलित है। ''दलित नेता और कार्यकर्ता दो प्रश्नों को लेकर लामबंद थे- डांगर (मरे मवेशी) उठाने की प्रथा पर रोक लगाना और सौरी कमाने (नार वियान-प्रसूति से जुड़े कार्य) की परंपरा बंद करवाना।'' [9] नार वियान प्रसूति की परंपरा को अब हर कोई नर्स के रूप में निभा रहा है। राजनीतिक एकजुटता ने दलित समाज को मजबूत बनाया। अंबेडकर कहा करते थे कि जिस समाज में राजनीतिक चेतना आती जाएगी वह समाज निरंतर आगे बढ़ता जाएगा। यह तथ्य दलित समाज पर भी लागू होता है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा संपादित पुस्तक 'दलित चेतना की पहचान' में दलितों की राजनीतिक चेतना दिखाई देती है। ''बाबा साहब राजनीति को समाज परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम मानते थे। दलितों को सत्ता की सीढ़ी पर पहुँचना चाहिए, ऐसी उनकी मान्यता थी। सत्ता के सारे सूत्र दलितों के हाथों में आएँ, वह व्यवस्था को संचालित करने का मुद्दा रखे, ऐसी उनकी धारणा थी।''[10] राजनीतिक सामूहिकता दलितों में बहन कुमारी मायावती और कांशीरम के आने के बाद और भी बढ़ती है। ''लेकिन बसपा की इस जोरदार सफलता का एक दूसरा पहलू भी है, जो पिछले दो-तीन वर्षों से उभर कर सामने आ रहा है। 1996 और 18 के चुनावी आँकड़े बताते हैं कि बसपा ने हरियाणा, पंजाब, उप्र और मप्र में सात साल से लेकर बीस प्रतिशत वोट हासिल किए हैं।'' [11] यह दलित समुदाय की राजनीतिक एकजुटता का सबब है। दलित समाज की एकजुटता का ही परिणाम है कि बसपा जैसी पार्टी आज पूरे देश में जानी जाती है। वर्तमान समय की राजनीतिक पार्टियाँ इनकी सामूहिकता को देखकर ही इनका वोट पाने के लिए नवीन हथकंडे अपना रही हैं। ''देश की राजनीति केवल संसद और विधानसभाओं तक सीमित नहीं है। समाज में घटित होने वाली गुटबंदी, निम्न स्तर की जाति, संप्रदाय, धर्म और भाषा आदि की राजनीति को दलित कथाकारों ने अपने कथा-साहित्य में प्रकारांतर से दर्ज किया है। इनके सारतत्व का अध्ययन करना समीचीन होगा। अस्तु, प्रस्तुत अध्याय में कथा-रचनाओं में समाहित राजनीतिक चेतना से संबद्ध प्रसंगों के माध्यम से इस तरह की रचनात्मकता को रेखांकित कर विवेचन करने का प्रयास किया जाएगा।'' [12] दलित समाज को केवल संसद और विधानसभाओं की राजनीति की समझ नहीं रखनी होगी, अपितु सम्यक रूप से वर्तमान राजनीति को समझना होगा, तब जाकर दलित साहित्य और मजबूत होगा।

दलित साहित्य और दलित समाज दोनों का ध्येय स्वतंत्रता और समता पर टीका हुआ है। समाज की बुनावट का जो प्रमुख तत्व होता है समता, बंधुत्व और स्वतंत्रता - उसी को अपनाकर दलित साहित्य चल रहा है। इसका दिग्दर्शन दलित साहित्य वेदना और विद्रोह में चित्रित हुआ है, ''दलित-साहित्य का स्वतंत्रता और समता के चेतना से निर्माण हुआ है और इसी कारण अनिवार्य रूप से हिंदू धर्म तथा उसके द्वारा मान्यता प्राप्त जाति संस्था के विरोध की प्रतिक्रिया साबित होती है।'' [13] किसी भी कार्य को अगर ईमानदारी और पूरी प्रतिबद्धता से किया जाए तो उसका परिणाम सही ही निकेलगा। दलित साहित्य वास्तव में एक प्रतिबद्ध सर्जना है। इस संदर्भ में बजरंग बिहारी तिवारी का विचार समीचीन है, ''समाजवादी समाज व्यवस्था की स्थापना की चेतना से लैस होकर दलित आंदोलन में ईमानदारी और प्रतिबद्धता से काम किया जाए तो दलित

सभी प्रकार के शोषण से मुक्त हो सकते हैं और उनका उद्धार होने से कोई रोक नहीं सकता है।'' [14] दलित साहित्यकार वर्ग को अपने यथार्थ को पूरे मजबूती के साथ पकड़े रहना है। यही उनके उद्धार का कारक साबित होगा। अपनी निष्ठा को नियमित माजते रहने से एक-न-एक दिन दलित साहित्य संपूर्ण साहित्य को मार्गदर्शन का कारक भी साबित हो सकता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वर्तमान सदी की हिंदी आलोचना में दलित जीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। आज की हिंदी आलोचना अपनी संपूर्ण प्रतिबद्धता के साथ दलित समाज का प्रतिनिधित्व करती हुई दिखाई देती है। दलित समाज से जुड़े अनेक प्रश्नों को सिर्फ उठा ही नहीं रही, अपितु उसके समाधान का भी मार्ग प्रशस्त कर रही है। दलित जीवन की समानता और असमानता के मुद्दे को भी रेखांकित करती नजर आ रही है। वर्तमान राजनीतिक मुद्दे की शिनाख्त कर उससे जुड़े जटिल प्रश्नों को भी उजागर कर रही है। दलित साहित्य समता, समानता और बंधुत्व को अपने अंदर समाहित किए हुए है। वर्तमान सदी की हिंदी आलोचना दलित उत्पीड़न जैसे भयावह कुकृत्य को प्रतिबिंबित करने का कार्य कर रही है। वर्तमान सदी के दलित आलोचक के साथ-साथ गैर-दलित आलोचक की आलोचना में भी दलित समाज की समस्याओं का दिग्दर्शन देखने को मिल रहा है। ❑

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. दोषी, एस.एल., जैन, पी.सी. - भारतीय सामाजिक व्यवस्था, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2014, पृ. सं. 4
2. सिंह भगवान - गांधी और दलित भारत-जागरण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2010, पृ. सं. 75
3. पालीवाल कृष्णदत्त - उत्तर आधुनिकता की ओर, प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 155
4. वही, पृ. सं. 151
5. तिवारी बजरंग बिहारी - जाति और जनतंत्र दलित साहित्य का उत्पीड़न का वर्तमान, साहित्य संस्थान, लोनी गाजियाबाद, उप्र. पृ. सं. 36
6. पालीवाल कृष्णदत्त - उत्तर आधुनिकता की ओर, प्रकाशन मंडल, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 167
7. यादव चौथीरम - उत्तरशती के विमर्श और हाशिए का समाज, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. नई दिल्ली, 2014 पृ. सं. 10-11
8. प्रसाद भरत - प्रतिबद्धता की नई जमीन, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, 2018, पृ. सं. 29-30
9. तिवारी बजरंग बिहारी - जाति और जनतंत्र दलित उत्पीड़न का वर्तमान, साहित्य संस्थान, लोनी, गाजियाबाद (उप्र.), पृ. सं. 32
10. रड़सुभे डॉ. सूर्यनारायण - दलित चेतना की पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. 174
11. दुबे सं. अभय कुमार - आधुनिकता के आईने में दलित, वाणी प्रकशन, नई दिल्ली, 2008, पृ. सं. 271
12. 'मीनू' रजत रानी - हिन्दी दलित कथा-साहित्य : अवधारणाएँ और विधाएँ,अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्रा. लि. नई दिल्ली, 2010, पृ. सं. 197
13. लिंबाले सं. शरणकुमार - दलित साहित्य वेदना और विद्रोह, वाणी प्रकाशन, 2010, पृ. सं. 239
14. तिवारी बजरंग बिहारी-जाति और जनतंत्र दलित उत्पी]न का वर्तमान, साहित्य संस्थान, लोनी, गाजियाबाद (उप्र.) पृ. सं. 85

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

आलेख

आदिवासी साहित्यकार पीटर पॉल एक्का के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-संघर्ष

('पलास के फूल' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

पूजा पॉल

शोधार्थी (पीएच.डी, हिंदी विभाग
राजीव गांधी विश्वविद्यालय
अरुणाचल प्रदेश-
मो : 9101173387
ईमेल-pujapaullanka@gmail.com

शोध सारांश :

आदिवासी साहित्यकार पीटर पॉल एक्का का स्थान कथा-साहित्य में अग्रणी है। हिंदी कथा-साहित्य की उपन्यास विधा के माध्यम से पीटर पॉल एक्का ने पाठकों का ध्यान केन्द्रित किया है। उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में आदिवासी को केंद्र में रखा है। उनके उपन्यासों में आदिवासी जीवन से संबंधित प्राय: सभी समस्याओं को विस्तार से चर्चा किया गया है। खासकर देश स्वाधीन होने के बाद विकास की लहर ने आदिवासियों के जीवन पर परिवर्तन लाना शुरू कर दिया। इस प्रकार के परिवर्तन ने आदिवासियों के जीवन में संघर्ष निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। पीटर पॉल एक्का द्वारा रचित पलास के फूल उपन्यास में मूलत: आदिवासी जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित है। इस उपन्यास में विकास का दुष्प्रभाव, आदिवासियों के प्राण स्वरूप जल, जंगल और जमीन का विनष्टीकरण, मजदूर बनते आदिवासी, विस्थापन की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, शोषकों द्वारा शोषित होते आदिवासी, अस्मिता और अस्तित्व का चिह्न मिटते आदिवासियों के जीवन-संघर्ष की गाथा को यथार्थ ढंग से चित्रित किया ग्रया है। पलास के फूल उपन्यास सरकारी योजनाओं के मूल उद्देश्य से बहुत दूर एवं आडंबरपूर्ण विकास का पर्दाफाश करने में सफल माना जाता है।

बीज शब्द :

आदिवासी, उपन्यास, पीटर पॉल एक्का, समस्या, जीवन, संघर्ष, कथा साहित्य, पलास के फूल इत्यादि।

मूल आलेख :

झारखंड के आदिवासी साहित्यकार पीटर पॉल एक्का हिंदी साहित्य में अपना मौलिक योगदान देने के लिए जाने जाते हैं। हिंदी साहित्य में कथा साहित्य के अंतर्गत कहानी और उपन्यास नामक विधा में अपनी

एक अविस्मरणीय छाँप छोड़ी है। इनके कुल चार उपन्यास हैं 'जंगल के गीत', 'पलास के फूल', 'मौन घाटी' और 'सोन पहाड़ी'। पलास के फूल उपन्यास सन् 1982 में प्रकाशित है। 'पलास के फूल' पीटर पॉल एक्का का पहला उपन्यास है। आदिवासी जीवन-संघर्ष पर केन्द्रित पलास के फूल उपन्यास आदिवासी जीवन की आंतरिक-बाह्य समस्याओं को बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। आधुनिकता के दौर में हमारा देश भी स्वाधीन होने के बाद भागीदारी लेने लगा। हमारे भारत को उन्नति एवं विकास के पथ पर लाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सरकारी योजना बननी शुरू हो गयी। आदिवासी समाज की सर्वोपरि भलाई सरकारी योजनाओं का मूल उद्देश्य रहा है। सरकार के द्वारा बनाया गया योजना असफल होता ही अत्याधिक नजर आता है। भू-मंडलीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभाव ने आदिवासियों का जीवन अत्यधिक संकट पूर्ण बना दिया है।

आनंद कुमार पटेल जी 'पलास के फूल' उपन्यास के सम्बन्ध में कहते हैं कि **'पलास के फूल' उपन्यास में झारखंड के आदिवासी समाज की सांस्कृतिक विशिष्टता के साथ-साथ उनकी समस्याओं को भी देखने की कोशिश की गई है। पलायन, विस्थापन, खत्म होते जंगल, अस्तित्व से जूझते आदिवासियों की पीड़ा को दर्शाया गया है'** [i] 'पलास के फूल' उपन्यास आदिवासी जीवन पर केन्द्रित है। उपन्यास की शुरुआत ही गाँव में सड़क, पुल बनाने की सरकारी योजना को सफल बनाने के लिए आदिवासियों से जी तोड़ मेहनत कराते हुए दिखाया जाता है। मजदूरी करने के दौरान जवाबदार उन पर शोषण चलाते हैं। आदिवासियों से अत्याधिक काम लेना, पगार कम देना, मजदूरी करने के दौरान अगर कोई दुर्घटना हो जाए तो सहायता न करना, कोई आदिवासी शारीरिक रूप से दुर्बल भी हो जाए उससे भी क्षमता के बाहर काम निकलवाना चाहते हैं। एक बुजुर्ग मजदूर इंजीनियर आनंद से कहते हैं कि **'हाँ साब। आधा मजूरी देता है, पूरे पगार पर ठप्पा लगवाता है। पूरा काम लेता है, ओभर टेम भी करवाता है। अपने लोगों को काम पे लगाता, हमको छोड़ देता है'** [ii] किसान से मजदुर बनते आदिवासियों के संघर्षमय जीवन की सच्ची घटना को उजागर किया गया है ङ्क

आदिवासी पुरुषों का नशाखोरी करने का स्वभाव ने इन लोगों के जीवन को और अधिक संघर्षपूर्ण बना दिया है। गाँव में दारु की दूकान खुलने के कारण घर के सभी मर्द अपने दिन भर की कमाई को दारु पीने में उरा देते। **'ये आदिवासी घर, खेत, खलिहान सब बेच देंगे पर पीएंगे जरूर'** [iii] दारु पीकर मर्द अपनी पत्नी को पीटते और यह हर घर की कहानी बन गयी थी। घर चलाने की जिम्मेदारी आदिवासी महिलाओं को ही उठाना पड़ता। आदिवासी महिलाओं का घर के

बाहर और घर में भी शोषण करना जारी रहा। इस उपन्यास में परवती का भाई सरजू को किशोर अवस्था में ही दारू पीने की गंदी आदत लग जाती है। अकेली परवती पूरे घर को संभालने के साथ पियक्कड़ भाई का भी भार लेना पड़ता है। दारु पीने की आदत आदिवासियों के जीवन को खोखला कर देता है। उस गाँव के आदिवासी सामाजिक, आर्थिक इत्यादि समस्याओं से उन लोगों का जीवन घिर जाता है। आर्थिक समस्याओं से जूझते आदिवासी जमींदार, ठेकेदारों से कर्ज लेना बहुत घातक साबित होती है। कर्ज देने के बदले उनका भरपूर शोषण कर जमीन छींन ली जाती है। **'ऋण क्या लिया जिनगी बिक गया साब। सौ रूपये लिया था साब, अब तक चुकता नहीं हुआ। अब तीन महीने से अपना जवान लड़का-लड़की साहूजी का काम करता। फिर भी कर्जा नहीं भरता। यह तो जैसे जन्म भर का गुलाम हो गया'**[iv] ऐसे ही गाँव के ठेकेदार, जमींदार लोग गाँववालों को कर्ज के षड्यंत्र में फसाँकर धीरे-धीरे आदिवासियों का खून चूसते रहते हैं। अंत में गाँववासी ऋण से मुक्त होने के लिए अपना सर्वस्व शोषकों को सौंप देते हैं। आदिवासियों के जीवन में विस्थापन की समस्या खड़ा होने का यह भी एक महत्वपूर्ण कारण है।

गाँव में विकास की हवा चलते ही प्राकृतिक संसाधन का अत्यधिक दोहन होने लगता है। उस गाँव में आदिवासियों का जंगल ही रोजगार का माध्यम है। सरकारी कर्मचारी निजी स्वार्थ पूर्ति हेतु एवं विकास की योजनाओं के तहत आदिवासियों से रोजगार छीन लिए। शहरीकरण का प्रभाव भीतरी गाँव में भी पड़ने लगा। विकास की पटरी पर दौड़ने के लिए आदिवासियों से जमीन छीनी जाने लगी। जिस जमीन पर खेती-बारी कर अपनी रोजी-रोटी कमाते थे, वह भी आदिवासियों से छीन लिया गया। सरल शब्दों में कहा जाए तो जल, जंगल और जमीन से आदिवासियों का अधिकार छीन ली गई। इसी असमंजसपूर्ण स्थिति में आदिवासियों के पास केवल मजदूरी द्वारा जीवन-यापन करने का विकल्प रह जाता है। **'थोड़ी-सी मजूरी मिलती भोले-भाले ग्रामीण युवक-युवतियाँ अपना ही घर जंगल उजाड़ने में जोत दिए जाते। मजूरी का सवाल था, पापी पेट क्या नहीं करता है'**[v] आदिवासियों का जीवन मात्र संघर्षों से घिरा हुआ, उपन्यास में दिखाया गया है। फॉरेस्ट गार्ड गाँव में आकर अपनी स्वार्थ के अनुसार प्राकृतिक संपदा का दोहन करते हैं। आदिवासियों से जंगल का अधिकार छीन लिया जाता है। जंगल का विनाश करने के साथ ही आदिवासी महिलाओं को भोग-विलास का वस्तु के रूप में इस्तेमाल करते हैं। चाहकर भी आदिवासी इनका विरोध नहीं कर पाते। सलोमी कहती है कि **'क्या करें आनंद बाबू, हम आदिवासियों का इतना ही भाग्य है। जमींदार, सेठ, साहूकार, शहरी बाबू सभी तो तंग करते हैं हमें। जीने कौन देता है? आज हम यहाँ हैं, कल कहीं और होंगे। जंगल के जंगल, पहाड़-घाटियाँ जाने कहाँ-कहाँ भटकना होता है। सब तो भटकते ही जा रहे हैं। यहाँ से हजारों मील दूर चाय के बगानों, ईंट-भट्टों का स्वप्न कौन देखता है, वहाँ भी दबाए जाएंगे, निचोड़े जाएंगे। पर शायद दो जून की रोटी जुट जाएगी। यही हमारा धर्म हो गया है, भाग्य बन गया है।'** [vi]

विस्थापन की समस्या आदिवासियों के लिए अभिशापस्वरूप माना जाता है। गाँववासियों के सुविधा के लिए सड़क-पुल बनाने की योजना जब पूरी हो गयी तो आदिवासियों को फिर से बेरोजगारी की समस्या ने आ घेरा। यातायात-परिवहन की सुविधा तो मिल गयी, लेकिन सरकार की तरफ से दी गयी सुविधाओं को भोगने के लिए आदिवासियों को भूखे पेट मरना होगा। बेरोजगारी की समस्या के चलते गाँववालों ने अपनी भूमि छोड़ने का फैसला लिया। **'सरकारी योजनाएँ तो ज्यादातर कागजों में ही सिमट कर रह जाती हैं। दिखावे के खर्च होते रहेंगे। इन आदिवासियों का भाग्य वहीं का वहीं रह जाएगा।** [vii] गाँव के जंगल और जमीन को विनष्ट कर किये गये विकास ने आदिवासियों से अपना जंगल और जमीन का अधिकार छीन लिया। आदिवासियों को बेरोजगार करने के साथ-साथ विस्थापित होने के लिए विवश किया गया। उपन्यास के अंत में उस गाँव के आदिवासी अपना जीवन बचाने के लिए अपनी पूरी

दुनिया छोड़ उसी सड़क और पुल से निरुद्देश्य यात्रा की ओर निकल पड़ते हैं।

उपसंहार :

पीटर पॉल एक्का 'पलास के फूल' उपन्यास को यथार्थ के धरातल पर अपनी मौलिकता से रचा-बुना है। आदिवासी आलोचक गंगा सहाय मीणा ने पीटर पॉल एक्का के पलास के फूल उपन्यास के संबंध में कहते हैं कि '**इसमें आदिवासी संस्कृति के प्रामाणिक चित्रण के साथ पलायन की समस्या मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त हुई है। उपन्यासकार विकास के नाम पर आदिवासियों को उजाड़ने का विश्लेषण बड़ी सहजता के साथ करने में सफल हुआ है। कोई भी विकास परियोजना आने पर स्थानीय लोगों को रोजगार और सुविधाएँ देने का वादा किया जाता है, लेकिन असलियत में वह सबकुछ बाहरी लोगों द्वारा बाहरी लोगों के लिए ही होता है। उपन्यास में बताया गया है कि आदिवासी जिन जंगलों के सदियों से रखवाले हैं, उन्हें उन्हीं जंगलों से बेदखल किया जा रहा है और फॉरेस्ट गार्ड रातोंरात ट्रकों से लकड़ियाँ बाहर भेज देते हैं। उपन्यास में आदिवासी किसानों के मजदूर बनने की मजबूरी और प्रक्रिया को भी चित्रित किया गया है। आदिवासी की दृष्टि से यह उपन्यास विकास के दावों की पोल खोलता है।**[viii] यह सच माना जाता है कि सरकारी योजनाएँ अधिकतर फाइलों में ही सिमट कर रह जाती हैं। बाकी जिन योजनाओं पर काम होता है, वह भी बस दिखावा मात्र है। आदिवासियों के विकास एवं उन्नति के लिए बनायी गयी योजनाएँ धरी की धरी ही रह जाती हैं। योजनाओं से जुड़े अन्य सरकारी या गैर-सरकारी लोग अपने व्यक्तिगत हितों को प्राथमिकता देकर योजना के कामकाज को निपटा देते हैं। अत: सरकारी योजनाओं का लाभ आदिवासियों तक पहुँच नहीं पाता है। देश के विकास के लिए बनायी गयी योजनाओं ने आदिवासियों का जीवन तहस-नहस कर दिया है। आदिवासियों के पारंपरिक जीवन-प्रणाली, अस्मिता-अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न खड़ा होना, आदिवासियों का जीवनस्वरूप जल, जंगल और जमीन से अधिकार छीन जाने का दर्द, प्राकृतिक संपदाओं का अत्यधिक दोहन, बेरोजगारी की समस्या, विस्थापन का दंश झेलना, किसान से मजदूर बनते आदिवासी, आदिवासियों का निरंतर शोषण किया जाना और खासकर आदिवासी महिलाओं का यौन-शोषण जैसी समस्याओं का उल्लेख उपन्यास में बखूबी हुआ है। यह उपन्यास आदिवासियों के जीवन में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक पहलुओं की समस्याओं से घिरा हुआ संघर्षपूर्ण जीवन का दस्तावेज है। आदिवासियों के जीवन-संघर्ष की दर्द भरी गाथा में कोई सुधार परिलक्षित नहीं होता है। अत: पलास के फूल उपन्यास में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-संघर्ष की गाथा आज के समय में भी प्रासंगिक है। ❑

संदर्भ सूची :

i. आनंद कुमार पटेल, आदिवासी संवेदना और पीटर पॉल एक्का के उपन्यास, सत्य भारती प्रकाशन, 2020, पृष्ठ 75
ii. पीटर पॉल एक्का, पलास के फूल उपन्यास, पृष्ठ 3
iii. पीटर पॉल एक्का, पलास के फूल, सत्य भारती प्रकाशन, 2012, पृष्ठ 39
iv. पीटर पॉल एक्का, पलास के फूल, पृष्ठ 30
v. पीटर पॉल एक्का, पलास के फुल उपन्यास, पृष्ठ 32
vi. पीटर पॉल एक्का, पलास के फुल उपन्यास, पृष्ठ 58
vii. पीटर पॉल एक्का, पलास के फूल, पृष्ठ 58
viii. गंगा सहाय मीणा, आदिवासी चिंतन की भूमिका, अनन्य प्रकाशन, 2017, पृष्ठ 75

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ আত্মকথা ‘আধালেখা দস্তাবেজ’ৰ ভাষিক বিচাৰ

(ভাষা মিশ্রণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ তাত্ত্বিক ধাৰণাৰ আধাৰত)

বনশ্রী নাথ

গৱেষক, অসমীয়া বিভাগ
গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয
জালুকবাৰী, পিন - ৭৮১০১৪
ম'বাইল ঃ ৬০০৩৫৫৭২৫৬
ই মেইল ঃ banashri654@gmail.com

ড° উপেন ৰাভা হাকাচাম

অধ্যাপক, অসমীয়া বিভাগ
গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয
জালুকবাৰী, পিন - ৭৮১০১৪
ম'বাইল ঃ ৮৬৩৮৬৫৯৫৫৬
ই মেইল - urhakacham@gmail.com

সাৰাংশ ঃ

ভাষা মিশ্রণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণ বহুভাষিক পৰিবেশৰ এটা সাধাৰণ ভাষিক পৰিঘটনা। নির্দিষ্ট এটা ভাষাৰে মত বিনিময় কৰি থাকোতে মুখামুখী কথনত বিষয় আৰু পৰিস্থিতি সাপেক্ষে ভাৰ প্রকাশ কৰি থকা মূল ভাষাটোৰ লগত অন্য ভিন্ন ভাষা ব্যৱহাৰ কৰাৰ দৰে লিখিতভাৱে প্রকাশ কৰা ভাৱৰ ক্ষেত্রতো বহুসময়ত বিষয় আৰু পৰিস্থিতিয়ে বিচৰা মতে এটা মূল ভাষাৰ লগত অন্য ভাষাৰ ভাষিকসমল ব্যৱহাৰ কৰা হয়। এই ক্ষেত্রত ভাষিক, সামাজিক আৰু ভাষাৰ লগত জড়িত অন্য আনুসংগিক কাৰকে প্রভাৱ পেলায়। সেইবাবে সাহিত্য পাঠতো সধাৰণ কথনৰ দৰে ভাষাৰ ব্যৱহাৰ দেখা যায়। সাহিত্য পাঠত ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষাৰ এনে বিশেষত্বৰ এপৰত ভিত্তি কৰি ভাষাৰ গাঠনিক বিশ্লেষণ কৰিব পাৰি। আত্মকথাত সাধাৰণতে লেখকে সাধাৰণ জীৱনৰ অভিজ্ঞতা আৰু ঘটনাপ্রবাহ বর্ণনা কৰে। সেইবাবে সাধাৰণ জীৱনত ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষিক শৈলীৰ প্রভাৱ এনে লেখাত পৰাটো স্বভাৱিক। সাধাৰণ কথনত হোৱা ভাষা সঞ্চৰণ আৰু ভাষা মিশ্রণৰ প্রভাৱকো এইধৰণৰ লেখাত নুই কৰিব নোৱাৰি। এই অধ্যয়নত ভাষা মিশ্রণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ তাত্ত্বিক ধাৰণাৰ গাঠনিক আৰ্হিৰ আধাৰত মামণি ৰয়ছম গোস্বামীৰ আত্মকথা ‘আধালেখা দস্তাবেজ’ৰ ভাষিক বিশ্লেষণ কৰা হ’ব। এই দিশত প্রভাৱ পেলোৱা সামাজিক আৰু অন্য আনুসংগিক কাৰকসমূহো বিশ্লেষণ কৰা হ’ব।

বীজশব্দ ঃ ভাষা, আত্মকথা, ভাষা সঞ্চৰণ, ভাষা মিশ্রণ ইত্যাদি।

১.০০ অৱতৰণিকা ঃ

কথনত ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষা বক্তা আৰু শ্রোতাৰ পাৰস্পৰিক বুজা-বুজি আৰু দক্ষতাৰ ভিত্তিত নির্বাচিত হয়। মানুহে ইজনে-সিজনৰ লগত মত বিনিময় কৰোতে বিষয়ৰ প্রসংগ আৰু শ্রোতাৰ ভাষিক দক্ষতা অনুযায়ী ভাষা সংযোগ কৰে। কথা কবলৈ তথা ভাৱ প্রকাশ কৰিবলৈ বক্তাই বিষয় আৰু পৰিবেশভেদে ভাষা নির্বাচন কৰি লয়। নির্বাচিত মূল ভাষাটোৰে নির্দিষ্ট ভাৱ প্রকাশ কৰিবলৈ অপৰাগ হ’লে তেওঁৰ দক্ষতা থকা অন্য ভাষাৰ পৰা ভাষিক উপাদান সংযোগ কৰি ভাৱক পূর্ণ ৰূপ দিয়ে। নির্বাচিত মূল ভাষাটোৰ লগত সংযোগ কৰা অন্য

ভাষাটোৰ ক্ষেত্ৰত বক্তাই বিষয় উপলক্ষ্য, ঘটনা অথবা উদ্দেশ্যক প্ৰাধান্য দি নিৰ্দিষ্ট ভাষাটো নিৰ্বাচন কৰে। বক্তাই কথনত তথা মুখামুখি ভাৰ বিনিময়ত এটা মূল ভাষাৰ লগত অন্য ভাষাৰ সংযোগেৰে অৰ্থপূৰ্ণ যোগাযোগ ৰক্ষা কৰি ভাৰ বিনিময় কৰাৰ দৰে লিখিত সাহিত্যৰ ক্ষেত্ৰতো ভাৰ উপস্থাপনৰ বাবে নিৰ্বাচিত মূল ভাষাটোৰ লগত বিষয়ৰ প্ৰসংগ অনুযায়ী অন্য ভাষাৰ সমল সংযোগ কৰে। এনেদৰে এটা মূল ভাষাৰ লগত বিভিন্ন কাৰণত অন্য ভাষাৰ ভাষিক উপাদান সংযোগ কৰি ভাৰ প্ৰকাশ কৰাৰ ফলতে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণমূলক ভাষিক স্থিতিৰ সৃষ্টি হয়। এটা মূল ভাষাৰ লগত অন্য এটা ভাষাৰ উপাদান সংযোগ তথা ব্যৱহাৰত বক্তা, শ্ৰোতা, বিষয়, প্ৰসংগ আদি বিভিন্ন কাৰকে ক্ৰিয়া কৰে। নিৰ্দিষ্ট বিষয় এটাৰ স্পষ্ট উপস্থাপন, দৃঢ়তাৰে কোনো বিষয়ৰ উপস্থাপন, কথন প্ৰসংগৰ স্পষ্টীকৰণ, প্ৰকৃত শাব্দিক প্ৰয়োজনীয়তা, পৰিভাষাগত অভাৱ, নিৰ্দিষ্ট শ্ৰোতাৰ মাজত বাৰ্তালাপ সীমাবদ্ধকৰণ, অনুৰোধ বা আদেশৰ প্ৰাৱল্য, স্বাচ্ছন্দতা, সজীৱ তথা জীৱন্ত উপস্থাপন, আৱেগ-অনুভূতিৰ প্ৰকাশ, ব্যঞ্জণামূলক উপস্থাপন, কৌশলেৰে কোনো বিষয় উপস্থাপন আদি বিভিন্ন আনুসংগিক কাৰকে কথন এটাত ভাষা নিৰ্বাচনত প্ৰভাৱ পেলায়। সাধাৰণতে কোৱাতকৈ লিখাৰ ক্ষেত্ৰত অধিক সজাগ সচেতনতা অৱলম্বন কৰা হয় বাবে লিখিত ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত বক্তাই বহুক্ষেত্ৰত সচেতনভাৱে ভাষা নিৰ্বাচন কৰে। বক্তব্য বা বিষয় এটা উপস্থাপনৰ ক্ষেত্ৰত কোনটো মূল ভাষাক অৱলম্বন হিচাপে লৈ বাৰ্তা উপস্থাপন কৰিব আৰু কোনটো ভাষা মূল ভাষাটোৰ লগত ভাষা নিৰ্দেশক কোড হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰিব সেয়া বক্তাৰ ইচ্ছাৰ লগতে বিষয়ৰ প্ৰসংগ আৰু পৰিবেশৰ আধাৰত বক্তাৰ নিৰ্বাচনমতে ব্যৱহাৰ হয়। অনুসংগিক উক্ত বিভিন্ন কাৰকবোৰক মূল ভিত্তি হিচাপে লৈ বক্তাই এটা ভাষাক ভাৰ প্ৰকাশৰ মূল হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰি বক্তাৰ দক্ষতা থকা আন ভাষাৰে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ কৰে। ভাষাটোৰ লগত বিষয়ৰ প্ৰসংগ অনুযায়ী অন্য ভাষাৰ সমল সংযোগ কৰে। এনেদৰে এটা মূল ভাষাৰ লগত বিভিন্ন কাৰণত অন্য ভাষাৰ ভাষিক উপাদান সংযোগ কৰি ভাৰ প্ৰকাশ কৰাৰ ফলতে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণমূলক ভাষিক স্থিতিৰ সৃষ্টি হয়। এটা মূল ভাষাৰ লগত অন্য এটা ভাষাৰ উপাদান সংযোগ তথা ব্যৱহাৰত বক্তা, শ্ৰোতা, বিষয়, প্ৰসংগ আদি বিভিন্ন কাৰকে ক্ৰিয়া কৰে। নিৰ্দিষ্ট বিষয় এটাৰ স্পষ্ট উপস্থাপন, দৃঢ়তাৰে কোনো বিষয়ৰ উপস্থাপন, কথন প্ৰসংগৰ স্পষ্টীকৰণ, প্ৰকৃত শাব্দিক প্ৰয়োজনীয়তা, পৰিভাষাগত অভাৱ, নিৰ্দিষ্ট শ্ৰোতাৰ মাজত বাৰ্তালাপ সীমাবদ্ধকৰণ, অনুৰোধ বা আদেশৰ প্ৰাৱল্য, স্বাচ্ছন্দতা, সজীৱ তথা জীৱন্ত উপস্থাপন, আৱেগ-অনুভূতিৰ প্ৰকাশ, ব্যঞ্জণামূলক উপস্থাপন, কৌশলেৰে কোনো বিষয় উপস্থাপন আদি বিভিন্ন আনুসংগিক কাৰকে কথন এটাত ভাষা নিৰ্বাচনত প্ৰভাৱ পেলায়। সাধাৰণতে কোৱাতকৈ লিখাৰ ক্ষেত্ৰত অধিক সজাগ সচেতনতা অৱলম্বন কৰা হয় বাবে লিখিত ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত বক্তাই বহুক্ষেত্ৰত সচেতনভাৱে ভাষা নিৰ্বাচন কৰে। বক্তব্য বা বিষয় এটা উপস্থাপনৰ ক্ষেত্ৰত কোনটো মূল ভাষাক অৱলম্বন হিচাপে লৈ বাৰ্তা উপস্থাপন কৰিব আৰু কোনটো ভাষা মূল ভাষাটোৰ লগত ভাষা নিৰ্দেশক কোড হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰিব সেয়া বক্তাৰ ইচ্ছাৰ লগতে বিষয়ৰ প্ৰসংগ আৰু পৰিবেশৰ আধাৰত বক্তাৰ নিৰ্বাচনমতে ব্যৱহাৰ হয়। অনুসংগিক উক্ত বিভিন্ন কাৰকবোৰক মূল ভিত্তি হিচাপে লৈ বক্তাই এটা ভাষাক ভাৰ প্ৰকাশৰ মূল হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰি বক্তাৰ দক্ষতা থকা আন ভাষাৰে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ কৰে।

১.০১ অধ্যয়নৰ গুৰুত্ব ঃ

মুখামুখিকৈ কৰা বাৰ্তা বিনিময়ত সন্মুখত থকা শ্ৰোতাৰ বাৰ্তা গ্ৰহণ ক্ষমতা বা দক্ষতাৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি বিষয়সাপেক্ষে ভাষা সংযোগ কৰা হয়। সাহিত্য পাঠ বা লিখিত ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত ভাৰ প্ৰকাশ কৰোতে বক্তাই পাঠকৰ ৰুচি-অভিৰুচিৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি আৰু পাঠটোৱে দাবী কৰা পৰিবেশক প্ৰাধান্য দি ভাষা সংযোগ কৰে। সৃষ্টিশীল সাহিত্যৰ ক্ষেত্ৰত ঘটনা বা চৰিত্ৰই দাবী কৰা পৰিবেশক প্ৰাধান্য দি ভাষা সংযোগ কৰা হয়। কিন্তু যেতিয়া নিজৰ জীৱন কাহিনী তথা জীৱনৰ ভিন্ন অভিজ্ঞতা সামৰি সাহিত্য সৃষ্টি কৰা হয় তেনে সাহিত্যত লেখকৰ সাধাৰণ কথন শৈলীয়ে লেখাৰ মাজত ভুমুকি মাৰে। লগতে পাঠকক জীৱনীৰ সথিক ৰসাস্বাদনৰ কৰাৰলৈ আৰু ইয়াৰ সত্যা-সত্যৰ আমেজ দিবলৈ লেখকে পৰিবেশৰ হুবহু তথা জীৱন্ত উপস্থাপনৰ বাবে ভাষিক পৰিবেশৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি ভিন্ন ভাষাৰূপ ব্যৱহাৰ কৰে। গতিকে কথন পৰিবেশ এটাত ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষাৰ দৰে লিখিত পাঠ এটাত ভিন্ন ভাষাৰ

সংযোগেৰে কথকৰ মনৰ ভাৱ পাঠকৰ আগত তুলি ধৰোতে কি কি কাৰকে প্ৰভাৱ পেলায়, এই মিশ্ৰণ তথা সঞ্চৰণৰ স্বৰূপ, গাঠনিক ধৰণ আদি এই আলোচনাৰ জৰিয়তে জানিব পৰা যাব।

১.০২ অধ্যয়নৰ পদ্ধতি ঃ

অধ্যয়নৰ তথ্যগত মূল সমল গোস্বামীৰ আত্মকথামূলক ৰচনা 'আধালেখা দস্তাৱেজ'। পুথিভঁৰালভিত্তিক অধ্যয়ন এই আলোচনাৰ মুখ্য সমল। তেওঁৰ আত্মকথা অধ্যয়ন কৰি তাত মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ ঘটা ভাষাৰূপসমূহ নিৰ্বাচন কৰি এই মিশ্ৰণৰ স্বৰূপ আৰু কাৰক নিৰ্ণয়ৰ চেষ্টা কৰা হ'ব। ভাষাবিদসকলে বিশ্লেষণ কৰা ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ গাঠনিক আৰ্হিৰ আধাৰত নিৰ্বাচিত সমলসমূহ বিশ্লেষণ কৰা হ'ব।

২.০০ ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ তাত্ত্বিক ব্যাখ্যা ঃ

ভাষাবিজ্ঞানৰ অধ্যয়নত ভাষা সঞ্চৰণ আৰু ভাষা মিশ্ৰণ অভিধা দুটা ষাঠি-সত্তৰৰ দশকৰ সংযোজন। ভাষাবিজ্ঞানী জন পিটাৰ ব্লুম আৰু জন. জে. গুমপার্জে আন্তঃগোট সম্পন্ন ভাষিক যোগাযোগৰ আলোচনা প্ৰসংগত ভাষাতাত্ত্বিক পৰি ভাষা হিচাপে শব্দ দুটা ব্যৱহাৰ কৰিছিল। অৱশ্যে ভাষাবিজ্ঞানৰ পৰিসৰৰ বাহিৰত ১৯২০ চনতে অষ্ট্ৰিয়াৰ স্নায়ু আৰু মনোৰোগ বিশেষজ্ঞ Otto Poetzl এ ওঠৰ বছৰীয়া এটি শিশুৱে Czech ভাষাৰ লগত German ভাষাৰে কৰা ভাষিক সঞ্চৰণ লক্ষ্য কৰিছিল। তেৱেই প্ৰথমে ভাষাৰ এনে সংযোগৰ অৰ্থপূৰ্ণ প্ৰকাশ লক্ষ্য কৰি এই বিষয়ে আলোচনা আগবঢ়াইছিল।[১] পিছত যোৱা শতিকাৰপঞ্চাশৰ দশকৰ পৰা বিভিন্ন ভাষাবিদে কম-বেছি পৰিমানে এই বিষয়ে আলোচনা কৰিছে যদিও ষাঠিৰ দশকত সমাজভাষাবিজ্ঞানৰ অংশ হিচাপে পদ্ধতিগতভাৱে পিটাৰ আৰু গুমপার্জে আলোচনা আৰম্ভ কৰে। পৰৱৰ্তী সময়ত বিভিন্ন ভাষাবিদে পদ্ধতিগতভাৱে ভিন ভিন দৃষ্টিৰে এটা কথনতে সলনা-সলনিকৈ ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষাৰ এই ধৰণ আৰু গঠন সম্পৰ্কে ব্যাখ্যা আগবঢ়াই আহিছে। প্ৰতিটো নতুন নতুন আলোচনাই ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণৰ ভিন ভিন দিশ উন্মোচিত কৰিছে। কোনো এটা কথনত এটা বা তাতকৈ অধিক ভাষা ভাষিক আৰু সামাজিক অনুসংগ অনুকুলে সলনা-সলনিকৈ ব্যৱহাৰ কৰা দক্ষতা আৰু একেটা কথোপকথনতে ভাষিক বৈচিত্ৰ্যৰ সমাহাৰ ঘটা প্ৰক্ৰিয়াই ভাষা সঞ্চৰণ। বহুভাষিক ক্ষেত্ৰ এখনত অথবা যেতিয়া বক্তা এটাতকৈ অধিক ভাষাত দক্ষ হয় তেনে পৰিস্থিতিতে এনে ভাষিক স্থিতিৰ উদ্ভৱ হয়। Encyclopedia Britannicaত উল্লেখ থকা মতে ভাষা সঞ্চৰণ হ'ল "Code-switching, process of shifting from one linguistic code (a language or dialect) to another, depending on the social contex or conversational settings."[২] কথনৰ বিষয় আৰু সামাজিক প্ৰসংগভেদে এটা ভাষাৰে কৰি থকা বার্তা বিনিময় প্ৰক্ৰিয়াত এন্য এটা ভাষাৰ ভাষিক উপাদান সংযোগ কৰা প্ৰক্ৰিয়াই ভাষা সঞ্চৰণ। Oxford Dictionary ত উল্লেখ থকা মতে, "The practice of alternating between two or more languages or verieties of language in conversation."[৩] এটা কথনত দুটা বা তাতকৈ অধিক ভাষা ৰদৱদলকৈ ব্যৱহাৰ কৰি ভাষিক বৈচিত্ৰ্য আৰোপ কৰা প্ৰক্ৰিয়াই ভাষা সঞ্চৰণ। জিংগ্ৰাচৰ মতে, "Code-switching as the alternation of grammatical rules drawn from two difrent languages which occurs between sentance boundaries."[৪] এক কথাত ভাষা সঞ্চৰণ এটা কথনতে এটা বাক্যৰ পৰিধিৰ মাজত বা বাক্যৰ পৰিধিৰ বাহিৰত ঘটা দুটা স্বতন্ত্ৰ ব্যাকৰণিক গাঁথনিযুক্ত ভাষাৰ শব্দ, বাক্যাংশ আৰু বাক্যৰ মাজত হোৱা ভাষাগত মিশ্ৰণ। ভাষা সঞ্চৰণ প্ৰক্ৰিয়াত সঞ্চৰণ ঘটা ভাষাটোৱে মূল ভাষাটোৰ লগত যিকোনো ভাষিক স্থিতিত সংযুক্ত হৈ কথনৰ অৰ্থগত একসূত্ৰিতা বজাই ৰাখে। এনে ভাষিক পৰিবেশত একক ব্যাকৰণিক ৰীতিযুক্ত দুটা ভাষাই সংযোগী প্ৰক্ৰিয়াৰে বাক্য গঠন কৰে। দুয়োটা ভাষাৰ সংমিশ্ৰণত এটা স্বাভাৱিক গাঁথনি দেখা যায়। এনে স্থিতিত ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীসকলো পৰিস্থিতি সাপেক্ষে দুয়োটা ভাষাৰ শব্দ তথা ব্যাকৰণিক গাঠনি কোনো আউল নলগাকৈ প্ৰয়োগ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত দক্ষ হয়। বহুক্ষেত্ৰত এনে ভাষিক স্থিতিত সংযুক্ত দুটা ভাষাৰ ব্যাকৰণিক গাঠনিক স্বতন্ত্ৰভাৱে পৃথক কৰি দেখুৱাব নোৱাৰি। মূল ভাষাটোৰ ব্যাকৰণৰ গাঠনিৰ আৰ্হিতে অৰ্থপূৰ্ণভাৱে দুয়োটা ভাষাৰ পৰা পদ সংযোগ কৰা হয়। ভাষা সঞ্চৰণৰ ধৰণৰ ভিত্তিত Poplack য়ে কৰা বিভাজন অনুযায়ী আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ প্ৰক্ৰিয়াত যিহেতু এটা বাক্যৰ পৰিষৰৰ বাহিৰত পৰৱৰ্তী বাক্যলৈ অন্য ভাষাৰ সঞ্চৰণ হয়, সেয়ে এনে সঞ্চৰণত সঞ্চৰণ ঘটা ভাষাটোৰ

ব্যাকৰণিক গাঠনিৰে ভাষিক উপাদানসহিতে সম্পূৰ্ণ বাক্য গঠন হয়। এনে সঞ্চৰণত বক্তাৰ দুয়োটা ভাষাৰে বাক্যতত্ত্ব আৰু ৰূপতত্ত্বত সমানে দক্ষতা থকাৰ লগতে দুয়োটা ভাষাত বক্তাৰ সাৱলীলতা থাকে। অৱশ্যে অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ আৰু অতিৰিক্ত সংযোজনমূলক সঞ্চৰণতো বক্তাৰ ভাষা দুটাত দক্ষতা থকা আৱশ্যক। কিয়নো বিষয় উপস্থাপনৰ ধৰণেৰে কেতিয়াবা অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণতো সঞ্চৰণ ঘটা ভাষাটোৰ বাক্যগাঠনিৰে সম্পূৰ্ণ বাক্য উপস্থাপন কৰা দেখা যায়। সেয়ে এনে সঞ্চৰণত বক্তাৰ ব্যৱহৃত আটাইকেইটা ভাষাৰ বাক্য গাঁথনিৰ সূক্ষ্ম দক্ষতাৰ প্ৰয়োজন।

ভাষা সঞ্চৰণৰ দৰে ভাষা মিশ্ৰণো দ্বিভাষিক অথবা বহুভাষিক পৰিবেশৰ সাধাৰণ ভাষিক পৰিঘটনা। এনে স্থিতিত কথিত বা লিখিত ভাষাৰ ক্ষেত্ৰত এটা কথনভংগীতে সমগোত্ৰীয় বা বিষমগোত্ৰীয় এটা বা তাতকৈ অধিক ভাষাৰ ভাষিক সমল ব্যৱহাৰ কৰা হয়। বহুভাষিক ক্ষেত্ৰ এখনত এনে ভাষিক স্থিতিৰ উদ্ভৱ হয় য'ত বক্তা এটাতকৈ অধিক ভাষাত দক্ষ হোৱা বাবে পৃথক পৃথক ব্যাকৰণিক ৰীতি সমৃদ্ধ ভিন্ন ভাষাৰ শব্দ, বাক্যাংশ অদি বাক্যৰ বিভিন্ন উপাদানসমূহ এটা বাক্যৰ মাজতে সংযোগ কৰি বার্তা প্ৰেৰণ কৰে। ভাষা মিশ্ৰণত দুটা বা তাতকৈ অধিক ভাষাৰ ভাষিক উপাদানৰ এনে সংযোগৰ ফলত বৰ্ণসংকৰ (hybrid) ভাষাৰূপ এটাৰ সৃষ্টি হয়। এই ভাষাৰ গঠন নির্দিষ্ট মূল ভাষাটোৰ ব্যাকৰণিক গাঠনিসম্ভূত। গুমপার্জৰ মতে, ভাষা মিশ্ৰণ "The bilingual performance of the code-mixing as the juxtaposition in a single speech even of passages of speech belonging to two different grammatical systems or subsystems." [৫] এটা একক কথনত দুটা পৃথক ব্যাকৰণ সমৃদ্ধ ভাষাৰ উপাদান এটা বাক্যৰ পৰিধিৰ মাজত সান্নিধ্যিকভাৱে অৱস্থান কৰি ভাৱ বিনিময় কৰা ভাষিক স্থিতিয়েই ভাষা মিশ্ৰণ। Wardhaugh আৰু Fasold মতে অতি কমেও দুটা ভাষা এটা কথোপকথনৰ পৰিসীমাত একেলগে সলনা-সলনিকৈ ব্যৱহাৰ কৰা ভাষিক স্থিতিয়েই ভাষা মিশ্ৰণ। [৬] অৰ্থাৎ সাধাৰণভাৱে ভাষা মিশ্ৰণ হ'ল এটা কথনভংগীত কোনো দুটা ভাষা এটাৰ পৰা আন এটালৈ সাল-সলনিকৈ ব্যৱহাৰ কৰা ভাষিক স্থিতি।

বিভিন্ন পণ্ডিতে পৃথক পৃথক সংজ্ঞাৰে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ ধাৰণা আগবঢ়াইছে যদিও বহু পণ্ডিতে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণক একেটা বিষয় হিচাপে আলোচনা কৰিছে। ভাষাবিজ্ঞানী ম্যাছকেন (Muysken) ৰ মতে দুয়োটা বিকল্পভাৱে ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষাৰূপ। [৭] এওঁৰ দৰে প'পলেক (Poplack), মায়ার্চ স্কটন (Mayrs Scotton), গার্ডনাৰ (Gardner) আদি ভাষাবিদেও দুয়োটা ধাৰণাকে এটা বিষয়ৰ অন্তর্ভুক্ত কৰি ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণক একে ভাষিক পৰিঘটনা হিচাপে আলোচনা কৰিছে। তেওঁলোকৰ মতে ভাষা সঞ্চৰণৰ অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ প্ৰক্ৰিয়াৰ ধাৰণাই ভাষা মিশ্ৰণক প্ৰতিনিধিত্ব কৰে। ব'কাম্বা (Bokamba), বি. এইচ. আহমদ (B.H.Ahmad), সিং (Singh), শ্ৰীধৰ (Sridhar) আদি ভাষাবিদে বাক্যৰ পৰিষৰৰ ভিতৰত অতি কমেও দুটা ভাষা ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষিক স্থিতিক ভাষা মিশ্ৰণ বুলি আৰু এটা বাক্যৰ পৰিষৰৰ বাহিৰত অর্থাৎ যতিৰ পিছত অন্য ভাষাৰ সমল ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষিক স্থিতিক ভাষা সঞ্চৰণ বুলি অভিহিত কৰিছে। এনেদৰে ভিন ভিন দৃষ্টিৰে ভাষাবিদসকলে এটা কথনত দুটা ভাষাৰ সমল ব্যৱহাৰ হোৱাৰ ধৰণ আৰু কাৰক তথা গাঠনিক দিশসমূহ ব্যাখ্যা কৰাৰ লগতে দুটা ভাষা ব্যৱহাৰ কৰি ভাৱ বিনিময় কৰা এই প্ৰক্ৰিয়াটোৰ ভিন ভিন দশাক প্ৰতিনিধিত্ব কৰি প্ৰতিটো ভাষিক দশাকে নিজা ধাৰণা আৰু গাঠনিক আৰ্হিৰে ভাষা মিশ্ৰণ (Code-Mixing), ভাষা সঞ্চৰণ (Code-Switching), ভাষা সাল-সলনি (Code Alteration), ঋণ (Borrowing) আদি বিভিন্ন পৰিভাষাৰে অভিহিত কৰিছে।

২.০১ ভাষা সঞ্চৰণ আৰু ভাষা মিশ্ৰণৰ প্ৰকাৰঃ

ভাষা সঞ্চৰণ আৰু মিশ্ৰণ হোৱাৰ ধৰণ অনুযায়ী বিভিন্ন ভাষাবিদে ইয়াক বিভিন্ন প্ৰকাৰে ভাগ কৰিছে। প'পলেক (Poplack) ৰ মতে ভাষা সঞ্চৰণ মূলত তিনি প্ৰকাৰৰ -

(ক) অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ
(Intra Sentential Switching)

(খ) আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ
(Inter Sentential Switching)

(গ) অতিৰিক্ত সংযোজনমূলক সঞ্চৰণ
(Tag-Switching) [৮]

অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ বাক্যৰ পৰিসীমাৰ ভিতৰত হয়। এটা বাক্যৰ ভিতৰতে অন্য ভাষাৰ শব্দ বা বাক্যাংশ আদি ব্যৱহাৰ হোৱা ভাষিক স্থিতিয়ে এনে সঞ্চৰণক সূচায়।

আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ এটা বাক্যৰ সীমাৰ বাহিৰত, তথা যতিৰ পিছত সংঘটিত হয়। য'ত এটা নির্দিষ্ট বিষয়ৰ কথনত মূল ভাষাটোৰে ভাৰ প্ৰকাশ কৰি থাকি অন্য এটা ভাষাৰে পৰৱৰ্তী বাক্যটো বা ধাৰাবাহিৰভাৰে কেইবাটাও বাক্য উপস্থাপন কৰি বক্তা আকৌ মূল ভাষালৈ উভতি আহে। আকৌ এটা ভাষাৰে ভাৰ উপস্থাপন কৰি থাকি আগ্ৰহ, অনুৰোধ, প্ৰশ্ন আদি ভৱ প্ৰকাশৰ বাবে কথনৰ শেষত অতিৰিক্তকৈ অন্য ভাষাৰ পৰা কোনো শব্দ বা বাক্যাংশ সংযোজন কৰা ভাষিক স্থিতি অতিৰিক্ত সংযোজনমূলক সঞ্চৰণ। কথন নিশ্চিতকৰণৰ বাবে এই অংশ শেষত অতিৰিক্তকৈ অন্য ভাষাৰ পৰা সংযোজন (Tag) কৰা হয়। হ' ফমেনে (Hoffmann) এনে সঞ্চৰণকে প্ৰতীকাত্মক সঞ্চৰণ (Emblematic Code Switching) বুলি অভিহিত কৰিছে। ইয়াৰ ওপৰিও তেওঁ আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ (Intra Sentential Switching) আৰু পূৰ্বৱৰ্তী বক্তাৰ লগত ধাৰাবাহিকতা ৰক্ষা কৰা (Establissing Continuity with the previus speakers) [৯] হিচাপে ভাষা সঞ্চৰণক তিনিটা ভাগত ভাগ কৰিছে।

মায়ার্চ স্কটন (Myers Scotton) এ ভাষা সঞ্চৰণক চাৰিটা ভাগত ভগাইছে।

(ক) চিহ্নিত সঞ্চৰণ (Marked)

(খ) অচিহ্নিত সঞ্চৰণ (Unmarked)

(গ) অনুক্ৰমিক সঞ্চৰণ

(ঘ) অনুসন্ধানমূলক সঞ্চৰণ [১০]

এই তত্ত্ব মতে ভাষা সঞ্চৰণত মূলত দুই প্ৰকাৰৰ ভাষিক নির্বাচন জৰিত হৈ থাকে। চিহ্নিত আৰু অচিহ্নিত নির্বাচন। চিহ্নিত আৰ্হি মতে এটা কথনভংগীত বক্তা আৰু শ্ৰোতাই বিচাৰ-বিবেচনাৰে ভাষিক নির্বাচনত কম-বেছি পৰিমানে সচেতন নির্বাচন কৰিলে এনে সঞ্চৰণক চিহ্নিতকৰণ আৰ্হি বোলে। আকৌ ভিন্ন পৰিস্থিতি আৰু উদ্দেশ্যভেদে কোনো কথনত অচিহ্নিত নির্বাচন প্ৰক্ৰিয়া সংঘটিত হয়। এনে স্থিতিত বক্তা, শ্ৰোতা আৰু ভাষিক উপাদানৰ সংযোগত এটা নির্দিষ্ট পৰিস্থিতি অনুযায়ী বক্তাই ভিন ভিন ভাষা ব্যৱহাৰ কৰে। এই ধাৰণাৰ আধাৰত গুমপার্জৰ লাক্ষণিক ভাষা সঞ্চৰণ (Metephorical Code-Switching) আৰু পাৰিস্থিতিক ভাষা সঞ্চৰণৰ (Situational Code-Switching) কথাও ক'ব পাৰি।

ভাষা সঞ্চৰণৰ দৰে ভাষা মিশ্ৰণকো ভাষাবিদসকলে বিভিন্ন প্ৰকাৰে ভাগ কৰিছে। ম্যাছকেন (Muysken) ৰ মতে, ভাষা মিশ্ৰণ তিনি প্ৰকাৰে সংঘটিত হয় -

(ক) অন্তর্ভুক্তিকৰণ (Insertion)

(খ) বিকল্পকৰণ (Alternative)

(গ) অনুৰূপ তথা যথাযথ শব্দ প্ৰয়োগকৰণ (Congruent lexicallization) [১১]

এটা ভাষাৰ বাক্যগঠনৰ কাঠামোৰ মাজত অন্য ভাষাৰ শব্দ বা বাক্যখণ্ড প্ৰয়োগ কৰি যোগাযোগ স্থাপন কৰা ভাষিক স্থিতিয়েই অন্তর্ভুক্তিকৰণ। থলুৱা ভাষাৰ গঠনৰ লগত বাক্যৰ মাজত বিদেশী ভাষাৰ শব্দ বা বিদেশী ভাষাৰ গঠন প্ৰক্ৰিয়া সংযোগ কৰিলেও অন্তর্ভুক্তিকৰণ প্ৰক্ৰিয়াই সামৰি লয়। বিকল্পকৰণ এনে এক প্ৰক্ৰিয়া য'ত এটা ভাষাৰ গঠন প্ৰক্ৰিয়াৰ মাজত অন্য ভাষাৰ শব্দ বাবাক্যাংশ ভাৱ প্ৰকাশৰ অনুকুলে মূল ভাষাটোৰ প্ৰায় একে অর্থবাচক শব্দৰ বিকল্প হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হয়। অনুৰূপ তথা উপযুক্ত শব্দ প্ৰয়োগকৰণ প্ৰক্ৰিয়াত ভাষিক ক্ষেত্ৰ এখনত দুটা ভাষাৰ ভিন্ন অংশৰ ব্যাকৰণৰ গাঠনিৰ পৰা ভিন্ন শব্দগত উপাদান নির্বাচন কৰি প্ৰয়োগ কৰা হয়। এই পৰিঘটনাৰ এটা মূল বিশেষত্ব হ'ল ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক মিশ্ৰণ। প্ৰতিটো ভাষাৰে নিজা ব্যাকৰণগত গাঠনি আছে। এনে ভাষিক ক্ষেত্ৰত এটা ভাষাৰ ব্যাকৰণিক গঠনৰীতিৰ লগত অন্য এটা ভাষাৰ ব্যাকৰণগত গাঠনিৰ সাদৃশ্য বিচাৰ কৰা হয়। কেৱল গঠনৰীতিয়েই নহয় ভাষা এটাৰ শব্দগত সাদৃশ্যও চিহ্নিত কৰা হয়। নির্বাচিত মূল ভাষাগত উপাদানটোৰ লগত অন্য ভাষাটো প্ৰায় সমমর্যাদাৰ হ'লে দুয়োটা ভাষাৰ মাজত সমতা স্থাপন হয়। এই ক্ষেত্ৰত Poplack আৰু Pfaff এ আগবঢ়োৱা 'সমতুল্য বাধ্যতা' (Equivelence Constraint)ৰ ধাৰণাটোৰ কথা উল্লেখ কৰিব পাৰি। তেওঁলোকৰ মতে, বাহ্যিক তথা ব্যাকৰণগত সমৰূপতা থকা ভাষাগোটৰ মাজত ভাষিক সমল সাল-সলনিৰ দ্বাৰাহে ভাষা মিশ্ৰণ সম্ভৱ হয়। [১২] অর্থাৎ প্ৰায় একে ব্যাকৰণিক গাঠনিযুক্ত ভাষা ৰূপৰ মাজত ভাষা সঞ্চৰণ তথা মিশ্ৰণ প্ৰক্ৰিয়া সম্ভৱ হয়। ভাষা দুটাৰ ভিন্ন উপাদানে এটা ব্যাকৰণিক গঠনত একেলগে সংযুক্ত হৈ বক্তাৰ অর্থ বহন কৰে। এনে ক্ষেত্ৰত মূল ভাষাটোৰ কোনো কার্যকৰী উপাদানৰ অভাৱ অনুভৱ কৰিলে বক্তাই অন্য ভাষাৰ পৰা

সেই উপাদান অন্তর্ভুক্ত কৰি ভাষিক অভাৱ পূৰণ কৰে। কথনত ভাষা মিশ্রণ ঘটা স্বৰূপৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি আৰু দুই প্রকাৰে ভাগ কৰি দেখুৱাব পাৰি - (ক) অন্তঃবাক্যগত (Intra Sentential C.M) (খ) অন্তঃশব্দগত (Intra Lexical C.M) দুয়োপ্রকাৰৰ মিশ্রণেই বাক্যৰ পৰিসীমাৰ ভিতৰত ঘটা মিশ্রণ। অন্তঃবাক্যগত মিশ্রণত এটা বাক্যৰ পৰিসীমাৰ ভিতৰত এটা মূল ভাষাৰ লগত এটা ততোধিক ভাষাৰ শব্দ বা বাক্যাংশৰ প্রয়োগ কৰি ভাষা মিশ্রণ কৰা হয়। অন্তঃশব্দগত মিশ্রণত এটা শব্দতে এটা অংশ এটা ভাষাৰ আৰু অন্য এটা ভাষাৰ পৰা এটা অংশ সংযোগ কৰি অর্থপূর্ণভাৱে শব্দটো গঠন কৰা হয়।

৩.০০ মামণি ৰয়চম গোস্বামীৰ আত্মকথাত ভাষা মিশ্রণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ স্বৰূপ ঃ

মুখামুখিকৈ কৰা ভাষিক যোগাযোগত সন্মুখত থকা শ্রোতাৰ বার্তা গ্রহণ ক্ষমতা বা দক্ষতাৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰি বিষয়সাপেক্ষে ভাষা সংযোগ কৰা হয়। প্রয়োজনত মনৰ ভাৱ যুকিয়াই লৈ এটাতকৈ অধিক ভাষাৰে বার্তা প্রেৰণ কৰা হয়। সাহিত্য পাঠৰ গঠন বা লিখাৰ ক্ষেত্রতো এনে ভাষাসংযোগ দেখা যায়। লিখিতভাৱে ভাৱ প্রকাশ কৰোতে এটা ভাষাৰ লগত সংযোগ কৰা অন্য ভাষাৰূপবোৰৰ উপস্থাপন কৌশলো ভিন্ন হয়। সাধাৰণতে সৃষ্টিশীল সাহিত্যৰ ক্ষেত্রত বিষয়বস্তু বা সাহিত্যৰ প্রকাৰভেদে ভাষা প্রয়োগৰ ধৰণ ভিন্ন হয়। বিষয়বস্তু প্রকাশৰ ধৰণৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি বিভিন্ন প্রকাৰে ভাৱ প্রকাশৰ বাবে নির্বাচন কৰা মূল ভাষাটোৰ লগত অন্য ভাষাৰ সংয়োগ ঘটে। কাল্পনিক সাহিত্যৰ ক্ষেত্রত কাহিনী বা চৰিত্রভেদে ভাষাৰ সংযোগ ঘটে। আকৌ কোনো সাহিত্য যদি লেখকৰ নিজৰ বিষয়ে লিখা জীৱনৰ বিভিন্ন সত্য ঘটনা তথা কাহিনীৰ উপস্থাপন হয় তেনে ভাৱ অনুযায়ী ভাষা প্রয়োগৰো সুকীয়া শৈলী থাকে। এই সাহিত্যত কথাত এটা ঘটনা যি ৰূপত ঘটে হুবহু তেনে ৰূপত উপস্থাপন কৰা হয়। ফলত এই সাহিত্যৰ ভাষাৰূপ বিচিত্র হৈ পৰে।

ব্যক্তিগত জীৱনৰ ঘটনা প্রবাহৰ স্পষ্ট উপস্থাপনৰ বাবে মামণি ৰয়চম গোস্বামীৰ ভাষাশৈলীত সাধাৰণ কথোপকথনমূলক উপাদান দেখা যায়। জীৱনৰ বিভিন্ন ঘটনা বর্ণনা কৰোতে সাধাৰণ ভাষিক পৰিঘটনাসমূহৰ দৰে তেওঁৰ আত্মকথাত ভাষা মিশ্রণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণ ঘটিছে। ব্যক্তিগত জীৱনৰ পাৰিপার্শ্বিক ভাষিক আৰু সামাজিক অনুসংগই তেওঁৰ লেখাত প্রভাৱ পেলাইছে। সেয়ে ভাষাক্ষেত্র এখনত ঘটা ভাষিক পৰিঘটনাসমূহ তেওঁৰ লেখাত দেখা যায়।

৩.০১ শব্দ আৰু বাক্যাংশৰ ৰূপত হোৱা ভাষা মিশ্রণ ঃ

ভাষামিশ্রণ প্রক্রিয়াত মিশ্রণ ঘটা ভাষাৰূপটো মূল ভাষাৰ বাক্যগঠন ৰীতিৰ ভিতৰত শব্দ বা বাক্যাংশৰ স্তৰত সংযোগ হ'ব পাৰে।

"মাধৱেন **চুপাৰ ষ্ট্রাকচাৰৰ** বৰ সুদক্ষ **ইঞ্জিনিয়াৰ** আছিল।" (আ.লে.দ. পৃ . ৩২)

উক্ত বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগাঠনিৰ লগত ইংৰাজী শব্দৰ মিশ্রণ ঘটিছে। মিশ্রণ ঘটা চুপাৰ ষ্ট্রাকচাৰৰ, ইঞ্জিনিয়াৰ আদি শব্দবোৰৰ অসমীয়া পৰিভাষাৰূপ আছে যদিও সাধাৰণ ভাষিক ক্ষেত্রএখনত এনে ইংৰাজী ৰূপবোৰৰ বহুল ব্যৱহাৰ দেখা যায়। নির্দিষ্ট ক্ষেত্র নির্বিশেষে তেওঁ এনে বিশেষ্য ৰূপবোৰ সাধাৰণভাৱে ভাষিক ক্ষেত্রএখনত ব্যৱহাৰ হোৱা ধৰণে ব্যৱহাৰ কৰিছে। মিশ্রণ ঘটা এনে ভাষাৰ উপাদানৰ ভাষিক ক্ষেত্রত হোৱা প্রচলনৰ স্বৰূপ আৰু পৰিচয়ৰ ধৰণ আনুযায়ী কিছুমান শব্দ তেওঁ অর্থ ভাঙনি কৰিও ব্যৱহাৰ কৰিছে।

"মাটি খন্দা...**ৰিমফর্চমেন্ট কাম অর্থাৎ লোহাৰ ৰ'ড বেকা কৰা...**।" (আ. লে. দ. পৃ. ৩৫)

এই বাক্যটোতো অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগাঠনিত ইংৰাজী শব্দৰ মিশ্রণ ঘটিছে। বিভিন্ন কাৰণ তথা বক্তাৰ কথন শৈলীৰ বাবে সাধাৰণভাৱে কথা কওঁতেও মানে, অর্থাৎ আদি সংযোগী শব্দ ব্যৱহাৰ কৰি এটা শব্দকে পৃথক পৃথক ভাষাৰে দুবাৰ পর্যন্ত উচ্চাৰণ কৰা ভাষাৰীতি সর্বপৰিচিত। কথনৰ এনে উপস্থাপন নির্দিষ্ট বিষয়ৰ স্পষ্টতা আৰু শ্রোতা তথা পাঠকৰ দৃষ্টি আকর্ষণৰ এটা কৌশল। বিষয় উপস্থাপনৰ এনে কৌশলৰ বাবে গোস্বামীৰ ৰচনাত ভাষা মিশ্রণ ঘটিছে।

"দুদিন ধৰি **কোম্পানীৰ ব্রান্স মেনেজাৰ, ছিনিয়ৰ ইঞ্জিনিয়াৰ, অভাৰচিয়াৰ, একাউন্টেন্ট** ইত্যাদিৰ সৈতে এটা বিচিত্র তম্বুৰ তলত তেওঁৰ গোপন **মিটিং** বহিল।"(আ. লে. দ. পৃ. ৪০)

"**একাউন্টেন্ট, ছুপাৰ ভাইজাৰ, টাইমকিপাৰ আৰু ইঞ্জিনিয়াৰৰ** পৰিবাৰসকলৰ লগত মোৰ বন্ধুত্ব ঘটিল।"(আ.লে.দ.পৃ, ৪৪)

উক্ত চাৰিওটা উদাহৰণত ব্যৱহাৰ কৰা ইংৰাজী ভাষাৰ বিশেষ্য ৰূপ চুপাৰ ষ্ট্ৰাকচাৰ, কোম্পানী, ব্ৰান্স মেনেজাৰ, ছিনিয়ৰ (বিশেষণ) ইঞ্জিনিয়াৰ, অভাৰচিয়াৰ, একাউন্টেন্ট, ছুপাৰ ভাইজাৰ, টাইমকিপাৰ আদিৰ অসমীয়া ভাষাৰূপ উদ্যোগ, শাখা ব্যৱস্থাপক, জ্যেষ্ঠ্য অভিযন্ত্ৰা, তত্ত্বাৱধায়ক, হিচাপ নিৰীক্ষক, কার্যদর্শী, সময় লেখক আদি আছে যদিও কথা কওঁতে এইৰূপবোৰ প্ৰায়ে ব্যৱহাৰ কৰা নহয়। ভাষান্তৰ কৰা উক্ত প্ৰায়বোৰ অসমীয়া শব্দৰ কাষত ইংৰাজী ৰূপবোৰ ব্যৱহাৰ নকৰিলে সকলো পাঠকে সহজতে এই শব্দবোৰৰ অর্থবোধ কৰিব পাৰিবনে নোৱাৰিব সেয়াও নিশ্চিত নহয়। সেয়ে যিবোৰ শব্দ অসমীয়া ভাষাত সাধাৰণভাৱে কথোপকথনত ব্যৱহাৰ কৰা হয় তেওঁ সেই ৰূপবোৰ লেখাতো একেধৰণে উপস্থাপন কৰিছে, যাতে সহজভাৱে সকলোৱে কথনৰ অর্থ বুজি পাব পাৰে। ভাষাক্ষেত্ৰ এখনত অন্য ভাষাৰ পৰা ব্যৱহাৰ কৰা অন্য ভাষাৰ এনে উপাদানবোৰ সকলোৱে সাধাৰণভাৱে ব্যৱহাৰ কৰি থকাৰ ফলত ভাষিক পৰিবেশৰ লগত খাপ খাই পৰে। বহুক্ষেত্ৰত এই শব্দবোৰ অসমীয়া ৰূপত উপস্থাপন কৰিবলৈহে হয়তো কোনো কোনোৱে ভাবি চাবলগীয়া হ'ব পাৰে। বিভিন্ন কথনত সেয়ে এই শব্দবোৰ অসমীয়া ৰূপত ব্যৱহাৰ কৰিলে অর্থৰ স্পষ্টতাৰ বাবে আৰু শ্ৰোতা তথা পাঠকৰ বোধগম্যতাৰ বাবে সমার্থক ইংৰাজী ৰূপটোৰ ব্যৱহাৰো আৱশ্যকীয় হৈ পৰে। অর্থাৎ নিম্নোক্ত ধৰণে উপস্থাপন কৰিবলগীয়া হয়।

"ভাৰ হৈছিল...ভাগ্যৰ লগত **মোকাবিলা** অর্থাৎ (compromise) কৰি লৈছে।"(আ.লে.দ. পৃ. ১৬০)

উক্ত বাক্যটোত ব্যৱহাৰ কৰা অসমীয়া শব্দ 'মোকাবিলা'ৰ কাষত সমার্থক ইংৰাজী ৰূপটো লেখিকাই উল্লেখ কৰিছে। ভাষিক ক্ষেত্ৰ এখনত ভাষা ব্যৱহাৰৰ ধৰণ আৰু নির্দিষ্ট ভাষিক পৰিবেশৰ লগত ভাষা ব্যৱহাৰকাৰী অভ্যস্ত হৈ পৰা বাবে সাধাৰণভাৱে ব্যৱহাৰ কৰি মত বিনিময় কৰি থকা প্ৰথম ভাষাটোতকৈ ক্ষেত্ৰ বিশেষৰ লগত জৰিত অন্য ভাষাৰ শব্দৰ লগত বক্তা অভ্যস্ত হৈ পৰে। সেয়ে এই পৰিচিত শব্দবোৰৰ ব্যৱহাৰেৰে বহু সময়ত পৰিবেশৰ উচিত উপস্থাপনৰ লগতে কথন কার্য সহজ অর্থবোধক কৰি তোলাৰ বাবে ভাষা মিশ্ৰণ ঘটে। উক্ত বাক্যটোত মিশ্ৰণ ঘটা মোকাবিলাৰ সমার্থক ইংৰাজী ভাষাৰূপ compromise শব্দটো অসমীয়া ভাষাক্ষেত্ৰৰ সাধাৰণ ব্যৱহৃত আৰু পৰিচিত ৰূপ। সেয়ে একে অর্থবাচক অসমীয়া উপাদানৰ ব্যৱহাৰৰ পাছতো ইংৰাজী ৰূপটো অর্থবোধৰ সুবিধাৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰিবলগীয়া হৈছে।

উক্তভাষা মিশ্ৰণৰ উদাহৰণখিনিত অসমীয়া ভাষাৰ ভাষিক তথা ব্যাকৰণিক গাঠনিৰ লগত ইংৰাজী ভাষাৰ মিশ্ৰণ ঘটিছে। ভাষা অন্তর্ভুক্তিৰ এই লক্ষণৰ ভিত্তিত Pieter Muysken য়ে ভাষা মিশ্ৰণ প্ৰক্ৰিয়াত অন্তর্ভুক্তিকৰণৰ ধাৰণা আগবঢ়াইছে। এই প্ৰক্ৰিয়াত কোনটো ভাষালৈ কোনটো ভাষাৰ অন্তর্ভুক্তি ঘটিছে তাৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি Myers Scotton য়ে 'MLF' শীর্ষক ধাৰণাৰ পোষকতা কৰিছিল। ভাষাৰ এই গাঠনিক আর্হি মতে, ভাষা মিশ্ৰণ প্ৰক্ৰিয়াত এটা আধিপত্যশীল ভাষা থাকে। এই ভাষাটোত অন্য ভাষাৰ উপাদান সংযুক্ত হৈ ভাষা মিশ্ৰণ ঘটে। ভাষা মিশ্ৰণৰ এই প্ৰক্ৰিয়াত আধিপত্যশীল ভাষাটোক তেওঁ সাৰ ভাষা বা মূল ভাষা (Matrix language) বুলি অভিহিত কৰিছে, আৰু সংযোগ ঘটা অন্য ভাষাটোক খচিত বা অনুবিদ্ধ ভাষা (Embedded language) বুলি অভিহিত কৰিছে। এই আর্হি মতে, উপৰোক্ত মিশ্ৰণত মূল ভাষা তথা Matrix languageটো অসমীয়া ভাষা আৰু খচিত ভাষা তথা Embedded languageটো ইংৰাজী ভাষা।

কথকে প্ৰকাশ কৰিব বিচৰা নির্দিষ্ট অর্থ পাঠক তথা শ্ৰোতাৰ হৃদয়ঙ্গম কৰিবলৈ কিছুমান শব্দ ভাৰ প্ৰকাশ কৰি থকা মূল ভাষাটোত থকাৰ পিছতো সেই শব্দটোৰ বিকল্পৰূপে অন্য ভাষাৰ পৰা আনি ব্যৱহাৰ কৰে।

"প্ৰিয়জনৰ লগত বিচ্ছেদ হোৱাৰ **দাৰুণ** পৰিণতিৰ...কাতৰ হৈ পৰিছিল।" (আ.লে.দ. পৃ. ১৪)

উক্ত বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ লগত ভগ্নীস্থানীয় বাংলা ভাষাৰ উপাদানৰ মিশ্ৰণ ঘটিছে। ইয়াত ভাৰ প্ৰকাশৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা Matrix ভাষা অসমীয়াৰ লগত Embedded ভাষা হিচাপে বাংলা ভাষাৰ উপাদান ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। আপোনজনক হেৰুওৱাৰ ভয়ত সৰুৰেপৰা প্ৰতিসময়ত ম্ৰিয়মান হৈ থকা ব্যক্তিগৰাকীয়ে যেতিয়া হাঁহিবলৈ শিকোৱা প্ৰিয় জীৱনসংগীজনক হেৰুওৱাই পেলাইছিল সেই দুখ আৰু বিচ্ছেদে তেওঁৰ জীৱনটো কিদৰে বেদনাদায়ক কৰি তুলিছিল সেই কৰুণতম অনুভৱ স্পষ্ট কৰিবলৈ তেওঁ বাংলা ভাষাৰ বিশেষণীয় উপাদান 'দাৰুণ'

শব্দটো অতি সচেতনভাৱে নিৰ্বাচন কৰি ব্যৱহাৰ কৰিছে। অসমীয়া ভাষাত একে অৰ্থবাচক 'কৰুণ' শব্দটো থকাৰ পিছতো লেখিকাই প্ৰকাশ কৰিব বিচৰা ভাৱ তথা অৰ্থৰ সঠিক উপস্থাপন কৰিবলৈ 'দাৰুণ' শব্দটো অসমীয়া 'কৰুণ' শব্দৰ বিকল্পৰূপে বাংলা ভাষাৰ পৰা ব্যৱহাৰ কৰিছে। সাধাৰণভাৱে মত বিনিময় কৰি থকা ভাষাটোত যদি কথকে প্ৰকাশ কৰিব বিচৰা ভাৱৰ উপযোগী শব্দৰ অভাৱ অনুভৱ কৰে তেতিয়া প্ৰায় সমাৰ্থক ভাৱ প্ৰকাশক নিৰ্দিষ্ট ভাষাৰ শব্দটো বাদ দি অন্য ভাষাৰ পৰা একে তথা সমাৰ্থক শব্দ নিৰ্বাচন কৰি কথনৰ মাজত প্ৰয়োগ কৰাৰ ফলত ভাষা এনেদৰে মিশ্ৰণ ঘটে।

"হাতুৰীৰ কোবৰ দৰে সময়ে সময়ে শুনা সীমাৰক্ষী বাহিনীৰ **ৰাইফলৰ আৱাজ**?" (আ.লে.দ., পৃ. ৪১)

এই বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগাঠনিৰ গাঠনিক ক্ৰমত অসমীয়া ভাষাৰ উপাদানৰ লগত ইংৰাজী আৰু হিন্দী ভাষাৰ মিশ্ৰণ ঘটিছে। বাক্যটোত 'আৱাজ' শব্দটোৰ সলনি 'শব্দ' বা 'ধ্বনি' বুলিও লেখিকাই ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰিলেহেতেন কিন্তু ৰাইফলৰ(এই শব্দটো যিহেতু এই বিষয়ৰ সকলো বৰ্ণনাতে ব্যৱহাৰ কৰিছে) ধ্বণি বা ৰাইফলৰ শব্দ বুলি কোৱাতকৈ ৰাইফলৰ আৱাজ শব্দটো শ্ৰুতিমধুৰ হৈছে আৰু শব্দদুটা অৰ্থগত দিশৰ লগতে গাঠনিক ভাৱেও খাপ খাই পৰিছে। সেয়ে ধ্বণি শব্দৰ বিকল্পৰূপে তেওঁ 'আৱাজ' শব্দটো ব্যৱহাৰ কৰিছে। এই মিশ্ৰণ প্ৰক্ৰিয়াৰ Matrix ভাষাটো অসমীয়া ভাষা আৰু Embedded ভাষা হিচাপে ইংৰাজী (ৰাইফল) ভাষা আৰু হিন্দী (আৱাজ) ভাষাৰ উপাদান ব্যৱহাৰ হৈছে। অৰ্থাৎ Matrix ভাষাটোৰ "তাৰিৰ আনটো পাৰত গ্ৰীফ অৰ্থাৎ **জেনেৰেল ইঞ্জিৰিয়াৰিং ফৰ্চৰ বেটেলিয়ান** এটা থাকে। ...এইটো তেওঁলোকৰ **'নন ফেমিলি ষ্টেশ্যন**।" (আ. লে. দ., পৃ. ৪৯)

এই কথনটোত দুয়োটা বাক্যত অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগঠন শৈলীত ইংৰাজী ভাষাৰ মিশ্ৰণ ঘটিছে। মিশ্ৰণ ঘটা বাক্যাংশ দুটাৰ প্ৰথম বাক্যটোত হোৱা মিশ্ৰণত ব্যৱহৃত বাক্যাংশ অসমীয়াকৰণ কৰিব গ'লে বৰ্ণনাৰ ৰূপত উপস্থাপন কৰিব লাগিব। লগতে সকলোৰে বোধগম্যতাৰ বাবে ইংৰাজী অংশও সংযোগ কৰিব লাগিব। দ্বিতীয় বাক্যটোত ব্যৱহৃত বাক্যাংশ অসমীয়া ভাষাত 'পৰিয়াল বহিৰ্ভুত বসতি ক্ষেত্ৰ' বুলি ভাষান্তৰ কৰিব পৰা যায় যদিও নিৰ্দিষ্ট ক্ষেত্ৰত নিৰ্দিষ্ট ৰূপত ব্যৱহৃত ভাষাৰূপ বহুসময়ত বৰ্ণনাৰ লগত বেছি খাপখোৱা হয় আৰু কথনৰ সাৱলীলতা আৰু মাধুৰ্যও ৰক্ষিত হয়। এনেধৰণৰ মিশ্ৰণত বক্তাৰ অনুৰূপ অথবা যথাযথ ভাষিক উপাদান ব্যৱহাৰৰ দ্বাৰা কথনৰ গুণাগুণ তথা অন্য ধৰ্ম ৰক্ষা কৰাৰ প্ৰৱণতা লক্ষ্য কৰা যায়। Matrix ভাষাৰূপে ব্যৱহৃত অসমীয়া ভাষাৰ লগত ইংৰাজী ভাষাক Embedded ভাষা হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে।

৩.০২ অন্তঃশব্দগত মিশ্ৰণ ঃ

গোস্বামীৰ লেখাত অন্তঃশব্দগত ভাষা মিশ্ৰণ ঘটিছে। হিন্দী বা ইংৰাজী ভাষাৰ শব্দৰে ভাষা মিশ্ৰণ হওঁতে শব্দটোক অসমীয়া মূল গঠনৰ বাক্যৰ লগত সংযুক্ত কৰিবলৈ অসমীয়া ভাষাৰ ব্যাকৰণগত উপাদানেৰে বান্ধি লৈছে।

প্ৰথমা বিভক্তি **/এ/** - "ঘোচ খাবলৈ এক্‌জিকিউটিভ **ইঞ্জিনিয়াৰে** বিলবোৰ জব্দ কৰি থৈছিল।" (আ. লে. দ., পৃ. ৪০)

চতুৰ্থী বিভক্তি **/লৈ/** - "**কেম্পবোৰলৈ** অহা আপুনিয়েই প্ৰথম মহিলা।" (আ. লে. দ., পৃ. ৩৯)

পঞ্চমী বিভক্তি **/ৰ পৰা/** - **কম্পাৰ্টমেণ্টৰপৰা** বাহিৰলৈ ওলাই আহি দেখিলোঁ **ক'ৰিডৰৰ** মুখত এটা বুঢ়া **গাইডে** টোপনিয়াই আছে। (আ. লে. দ., পৃ. ১০৫)

ষষ্ঠী বিভক্তি **/ৰ/** - "শেষৰ **লাইট পষ্টৰ** ওচৰলৈ গ'লো আৰু উভতিও আহিলো।" (আ. লে. দ., পৃ. ৩০)

সপ্তমী বিভক্তি **/ত/** - "...চুইমিং **পুলত** সাঁতোৰাগৈ...।" (আ. লে. দ., পৃ. ১২)

উক্ত বাক্যবোৰত ব্যৱহাৰ কৰা ইংৰাজী ভাষাৰ বিশেষ্য শব্দবোৰক অসমীয়া বাক্যগাঠনি অনুসৰি অসমীয়া ভাষাৰ বিভক্তিৰে বান্ধি লোৱা হৈছে। অসমীয়া ভাষাৰ নিৰ্দিষ্টতাবাচক প্ৰত্যয়, একবচনবাচকৰূপ, বহুবচনবাচক ৰূপ আদিও মিশ্ৰণ ঘটা ভষিক উপাদানৰ লগত সংযুক্ত হৈ ভাৱ প্ৰকাশ কৰিছে। তলত উল্লেখ কৰা ধৰণে অন্য ভাষাৰ ভাষিক উপাদানৰ লগত এই বদ্ধৰূপবোৰৰ অৰ্থপূৰ্ণ সংযোগ ঘটিছে।

নিৰ্দিষ্টতাবাচক প্ৰত্যয় **/টো/** - **"ক'ৰিড'ৰটো**ৰ ওচৰলৈ গৈ আকৌ উভতি আহিলোঁ।" (আ. লে. দ., পৃ. ১০৩)

নির্দিষ্টতাবাচক প্রত্যয় **/যোৰ/** - "...পুৰণা চুইমিং **চুটযোৰ** পিন্ধি গৈছিলো।" (আ. লে. দ., পৃ. ১৩)

বহুবচনবাচক প্রত্যয় **/বোৰ/** - "তুমি মোৰ লগে লগে **ব্রান্সবোৰত** ঘূৰি ফুৰি শ্রমিকৰ কাহিনী লিখিব পাৰিবা।" (আ. লে. দ., পৃ. ২৭)

তেওঁ লেখাত এনেদৰে অসমীয়া ভাষাৰ লগত মিশ্রণ ঘটা অন্য ভাষাৰ উপাদানবোৰ অসমীয়া ব্যাকৰণৰ ৰূপেৰে বান্ধি লৈছে।

এই ক্ষেত্রত ভাষা মিশ্রণৰ গাঠনিক দিশত আগবঢ়োৱা Aravind Joshi ৰ Closed Class Constriant শীর্ষক ধাৰণাৰ প্রাসংগিকতা স্পষ্ট কৰিব পাৰি। এই ধাৰণা মতে, ভাষাৰ বদ্ধ ৰূপসমূহ(প্রত্যয়, বিভক্তি আদি)ৰ কেতিয়াও সঞ্চৰণ বা মিশ্রণ নঘটে। ইয়াৰ উপৰি ভাষাৰ অব্যয়, সর্বনাম আদি উপাদানবোৰ মিশ্রণ নঘটে। উপৰোক্ত উদাহৰণকেইটাতে এই ধাৰণাৰ স্পষ্ট প্রতিফলন দেখা যায়।

মিশ্রণ ঘটা উপাদান	ভাষিক বিশিষ্টতা	বদ্ধ ৰূপ	বদ্ধ ৰূপৰ বিশিষ্টতা
ইঞ্জিনিয়াৰ	বিশেষ্য	-এ	বিভক্তি
কেম্প	বিশেষ্য	-বোৰ -লৈ	বহুবচনবাচক ৰূপ, বিভক্তি
কম্পার্টমেন্ট	বিশেষ্য	-ৰ-পৰা	বিভক্তি
ক'ৰিড'ৰ	বিশেষ	-ৰ	বিভক্তি
গাইড	বিশেষ্য	-এ	বিভক্তি
লাইট পোষ্ট	বিশেষ্য	-ৰ	বিভক্তি
চুইমিং পুল	বিশেষ্য	-ত	বিভক্তি
ক'ৰিডৰ	বিশেষ্য	-টোৰ	নির্দিষ্টতাবাচক প্রত্যয়
চুট	বিশেষ্য	-যোৰ	বহুবচনবাচক ৰূপ
ব্রান্স	বিশেষ্য	- বোৰ -ত	বহুবচনবাচক ৰূপ, বিভক্তি

এই মিশ্রণত Myers Scotton -য়ে ব্যাখ্যা ক ৰা ভাষা মিশ্রণৰ MLF প্রক্রিয়াৰ গাঠনিক আর্হিৰ আধাৰত ইয়াৰ Matrix ভাষাটো হৈছে অসমীয়া ভাষা আৰু Embedded ভাষাটো হ'ল ইংৰাজী ভাষা। উপৰোক্ত গোটেইকেইটা উদাহৰণতে Embedded ভাষাৰ বিশেষ্য ৰূপবোৰৰ লগত Matrix ভাষাৰহে বদ্ধৰূপ(বিভক্তি, বহুবচনৰ ৰূপ, নির্দিষ্টতাবাচক প্রত্যয়)ৰ সংযোগ হৈছে। এই ধাৰণা মতে, মিশ্রণ ঘটা ভাষাটোৰ যিবোৰ উপাদান বা ৰূপতাত্ত্বিক উপাদান মূল ভাষাটোৰ সৈতে মিল থকা তথা সামঞ্জস্যপূর্ণ, সেই ৰূপবোৰৰ মাজতহে মিশ্রণ বা সঞ্চৰণ সম্ভৱ। এই প্রসংগত Poplackৰ সমতুল্য বাধ্যতাৰ ধাৰণাটোও প্রাসংগিক হৈ পৰিছে। এই ধাৰণা মতেও যিবোৰ দিশ দুয়োটা ভাষাতে বাহ্যিক গঠন তথা ব্যাকৰণগত দিশত একে তেনে উপাদানবোৰৰ সাল-সলনিৰ দ্বাৰাহে ভাষা মিশ্রণ ঘটে। উপৰোক্ত অটাইবোৰ মিশ্রণৰ উদাহৰণতে মিশ্রণ ঘটা ভাষাৰূপবোৰে মূল ভাষাটোৰ লগত একাত্ম হৈ যোৱা বাবে অথবা মূল ভাষাটোৱে অন্য ভাষাটোৰ সঞ্চৰণৰ জৰিয়তে ভাৰ প্রকাশত কোনো বাধা জন্মোৱা নাই বাবেই সঞ্চৰণ সম্ভৱ হৈছে। তেওঁ আগবঢ়োৱা ভাষা মিশ্রণ তথা সঞ্চৰণৰ Free Morpheme Constraint বা মুক্ত-ৰূপ বাধ্যতাৰ ধাৰণা অনুসৰিও উক্ত মিশ্রণ ঘটা ভাষাৰূপৰ শব্দমূল আৰু বদ্ধৰূপৰ মাজত অন্য ভাষাৰ সঞ্চৰণ বা মিশ্রণ ঘটা নাই।

৩.০৩ অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ ঃ

ভাষা সঞ্চৰণ প্রক্রিয়াৰ Poplack-এ আগবঢ়োৱা গাঠনিক ধাৰণাৰ আর্হিৰে চালে মামণি ৰয়চম গোস্বামীৰ আত্মকথাত অন্তঃবাক্যগত আৰু আন্তঃবাক্যগত দুয়ো প্রকাৰৰ ভাষা সঞ্চৰণ দেখা যায়। আত্মকথাত সাধাৰণতে জীৱনৰ ঘটনা প্রবাহৰ লগতে লেখকৰ আদর্শ তথা চিন্তা-চেতনা প্রকাশ পায়। প্রসংগক্রমে এনে বর্ণনাত সমাজ জীৱনত বহুলভাৱে চর্চিত নীতি বা আদর্শসূচক বাক্য বিষয় অনুসাৰে ব্যৱহাৰ কৰা হয়। এই নির্দিষ্ট বাক্য বা বাক্যাংশ যি মূল উৎসৰ পৰা আহৰণ কৰি ব্যৱহাৰ কৰা হয় সাধাৰণতে সেইদৰেই হুবহু লেখাৰ মাজত সংযোগ কৰাৰ ফলত ভাষা সঞ্চৰণ ঘটে।

"তেওঁৰ যেন এটা ধর্ম আছিল - simple living and high thinking." (আ. লে. দ., পৃ. ১৩)

লেখিকাই পিতৃৰ গুণাগুণৰ বিষয়ে বর্ণনা কৰি থাকি এই বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ মাজত চিহ্নিত আর্হিৰে নির্বাচন কৰি ইংৰাজী ভাষাৰ বাক্যাংশ ব্যৱহাৰ কৰিছে। বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগঠনৰ আর্হিতে ইংৰাজী বাক্যাংশ সংযোগ কৰা হৈছে যদিও বাক্যটোত অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যগঠনৰ সাধাৰণ আর্হি 'কর্তা-কর্ম-ক্রিয়া'ৰ ধাৰা ৰক্ষিত হোৱা নাই। বাক্যটো ইংৰাজী বাক্যৰ গঠনৰ দৰে 'কর্তা-ক্রিয়া-কর্ম' ৰূপেহে গঠন হৈছে। অৱশ্যে অসমীয়া ভাষাত বিষয় উপস্থাপনৰ ধৰণ অনুসাৰে পদৰ সাল-সলনি সংযোগেৰে 'কর্তা-কর্ম-ক্রিয়া'ৰ সাধাৰণ আর্হিৰ ওপৰিও অন্য ধৰণে সংযোগ কৰিও বাক্য গঠন কৰা হয়। অসমীয়া ভাষাটো ইংৰাজী বাক্যৰ দৰে ক্রিয়াৰ মধ্য অৱস্থানেৰে বাক্য

গঠন নোহোৱা নহয়। এই উপস্থাপনত বিষয় অনুযায়ী লেখিকাৰ ভাৱ উপস্থাপনৰ লক্ষ্য তথা কাৰকে প্ৰভাৱ পেলাইছে। বাক্যটোত ইংৰাজী বাক্যাংশখিনি স্পষ্ট (highlight) কৈ উপস্থাপন কৰিববৈলে তেওঁ এইধৰণে পদক্ৰম গঠন কৰিছে। লগতে এই পদক্ৰমটোৱে বাক্যটোত শ্ৰুতিমাধুৰ্যও আনি দিছে। বাক্যটো অসমীয়া ভাঙনি কৰিও লেখিকাই ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰিলেহতেন যে, 'সাধাৰণভাৱে বাস কৰি উচ্চ চিন্তা কৰাই তেওঁৰ ধৰ্ম আছিল' বুলি। কিন্তু গান্ধীজীৰ আত্মকথাৰ পৰা লোৱা তথা জনমুখত বহুলপ্ৰচলিত এই বাক্যটোৰ ভাষিক মাধুৰ্য অৰ্থগত ভাষিক ৰূপান্তৰে হ্ৰাস কৰাৰ সম্ভাৱনা অধিক। বহুক্ষেত্ৰত এনে ৰূপান্তৰ আৰু প্ৰয়োগে অৰ্থগত সমৰূপতাও বহন কৰিব নোৱাৰে। কোনো কোনো ক্ষেত্ৰত এনে অৰ্থগত বা শব্দগত ভাঙনিয়ে মূল কথনৰ মানদণ্ডও ৰক্ষা কৰিব নোৱাৰে আৰু কথাৰ ওজন কমাৰ সম্ভাৱনা থাকে। সেয়ে এনে উক্তি তথা কথোপকথন তেওঁ হুবহু উপস্থাপন কৰিছে।

"তেওঁৰ আত্মজীৱনীত কৈছিল -

"I have always felt...the courresy of a visit."

এই কথাষাৰৰ সত্যতা ... কৰিছিলো।" (আ. লে. দ., পৃ.১৭)

এই বাক্যটো অসমীয়া ভাষাৰে আৰম্ভ কৰি তেওঁ ইংৰাজী ভাষাৰ উপস্থাপনৰ শেষত পূৰ্ণ যতি প্ৰয়োগেৰে বাক্যটো শেষ কৰিছে। এই ধৰণৰ উপস্থাপন তেওঁৰ আত্মকথাত যথেষ্ট পৰিমানে দেখা যায়। বৰ্ণনীয় বিষয়ৰ লগত মিলাই কোনো বিখ্যাত ব্যক্তিৰ মুখৰ উক্তি বা কিতাপৰ উক্তি উপস্থাপন কৰোতে এইধৰণৰ সঞ্চৰণ ঘটিছে। সঞ্চৰণ কৰা কথাখিনি উৰ্ধকমাৰ ভিতৰত উপস্থাপন কৰিছে যদিও অসমীয়া উপস্থাপনৰ পিছত তেওঁ কথাখিনি সংযোজক চিহ্নৰে (-) সংযোগ কৰিছে। অসমীয়া ভাষাৰে আৰম্ভ কৰা বাক্যটোত পূৰ্ণ যতি প্ৰয়োগ নকৰাকৈ হেডী লেমাৰৰ আত্মকথাৰ পৰা লোৱা কথাখিনিৰ লগত বিষয়ৰ সংযোগ স্থাপন কৰিছে। পূৰ্ণ যতিৰ পিছৰ পৰৱৰ্তী উপস্থাপনত পুনৰ অসমীয়া ভাষালৈ উভতি আহিছে। এইদৰে নিজৰ জীৱনৰ অভিজ্ঞতাৰ লগত সংগতি ৰাখি উল্লেখ কৰা অন্য গ্ৰন্থৰ এনে উপস্থাপনে আলোচিত বিষয় সমৃদ্ধ কৰাৰ লগতে পাঠকক উক্ত বিষয়ৰ অতিৰিক্ত তথ্য যোগান ধৰিছে। ফলত এনে লাক্ষণিক ভাষা সঞ্চৰণ পাঠকৰ বাবে অধিক জ্ঞানদায়ক হৈ পৰিছে। গুমপাৰ্জে ভাষা সঞ্চৰণৰ ধৰণৰ বিষয়ে কৰা আলোচনাত লাক্ষণিক ভাষা সঞ্চৰণ (Metaphorical Code switching) আৰু পৰিস্থিতিক ভাষা সঞ্চৰণ (Situational Code switching)ৰ ধাৰণা আগবঢ়াইছে। তেওঁৰ ধাৰণাৰে লাক্ষণিক সঞ্চৰণত বক্তাই বিচাৰ বিবেচনাৰে বহুসময়ত ইচ্ছাকৃতভাৱে ভাষা সঞ্চৰণ কৰে। এনে সঞ্চৰণে লেখা সমৃদ্ধ কৰাৰ লগতে তথ্যমূলক কৰি তুলিব পাৰে। পৰিস্থিতিক সঞ্চৰণ বিষয় বস্তুৰ ধৰণ-কৰণে পৰিচালনা কৰে। উক্ত ধাৰণাৰ আধাৰত লাক্ষণিক ভাষা সঞ্চৰণে বহুক্ষেত্ৰত গোস্বামীৰ লেখাৰ মান উন্নত কৰিছে। জীৱনৰ ভিন্ন অভিজ্ঞতাৰ লগত খাপ খুৱাই কোনো প্ৰখ্যাত সাহিত্যিকৰ জীৱনৰ আদৰ্শমূলক উক্তি ব্যক্তিজনৰ জীৱনী সমৃদ্ধ গ্ৰন্থৰ পৰা এনেদৰে উদ্ধৃত কৰাৰ ফলত পাঠকো উক্ত গ্ৰন্থৰ লগতে ব্যক্তিজনৰ জীৱন তথা আদৰ্শ সম্পৰ্কে এই লেখাৰ মাজেৰে অৱগত হ'ব পাৰিছে। এনে অভিব্যক্তিয়ে লেখা সমৃদ্ধ কৰাৰ লগতে পাঠককো ভিন্ন স্বাদৰ জ্ঞান দিছে।

বৰ্ণনাৰ পৰিস্থিতি সাপেক্ষে তেওঁ বিভিন্ন ঠাইত ভাষা সঞ্চৰণ কৰিছে। এই কথা তেওঁৰ আত্মকথাখনৰ বৃন্দাবনত কটোৱা কালৰ বৰ্ণনা অংশ পঢ়িলে অনুভৱ কৰিব পাৰি। তেওঁৰ স্কুলীয়া দিনৰ বৰ্ণনা দিওঁতে অথবা স্বামীৰ লগত তেওঁৰ কৰ্মসূত্ৰে বিভিন্ন ঠাইত ঘূৰি-ফুৰি কটোৱা সময়ৰ বৰ্ণনা দিওঁতে যি অনুপাতত ভাষা মিশ্ৰণ বা সঞ্চৰণ ঘটিছে বৃন্দাবনৰ বৰ্ণনা অংশত সেইদৰে মিশ্ৰণ বা সঞ্চৰণ ঘটা নাই। তাত লগ পোৱা কিছুমান মানুহৰ বিষয়ে বৰ্ণনা দিওতে প্ৰংগক্ৰমেহে কম পৰিমানে ভাষা মিশ্ৰণ ঘটিছে। কিছুমান বৰ্ণনাত পৰিস্থিতিৰ উপযুক্ত চিত্ৰণৰ বাবে কিছুমান পৰিস্থিতি কথকৰ ভাষা সহিতে হুবহু উপস্থাপন অতি আৱশ্যকীয় হৈ পৰে। এনে উপস্থাপনত পৰিস্থিতি নিৰ্দেশক ভাষা সঞ্চৰণ ঘটিছে। কোৰ্ট-কাছাৰী তথা আইন-কানুন সম্পৰ্কীয় কাম-কাজবোৰত যিহেতু ইংৰাজী ভাষাক মূল মাধ্যম হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা হয় লেখিকায়ো এই বিষয়ৰ কথা-বাৰ্তাৰ উপস্থাপনত ইংৰাজী ভাষাক প্ৰাধান্য দিছে।

"'**চে'ন থাৰটিন অব্ চিভিল মেৰেজ এ**" অনুযায়ী যিগৰাকী লোকক গ্ৰহণ কৰা হৈছে তেওঁৰ বাবে হৃদয়ত কি কাৰণে অনুকম্পা হোৱা নাই?" (আ. লে. দ., পৃ. ২৯)

"কেনেধৰণৰ কি আইন মতে দফাঁ এঘাৰৰ বিবাহ অধিকাৰীৰ উক্তি..." They appeard before me...in my

presence."... ওফৰাই পেলাবলৈ মেজিষ্ট্রেটৰ ওচৰত ... নাজানিছিলো।"(আ. লে. দ., পৃ. ৩০-৩১)

দুয়োটা বৰ্ণনাতে অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ লক্ষ্য কৰা যায়। প্ৰথমটো সঞ্চৰণত অসমীয়া ভাষাৰে উপস্থাপন কৰি থকা ভাৱৰ মাজত আইন সম্পৰ্কীয় বিষয় অহাৰ লগে লগে আইনখনৰ কথা ইংৰাজী ভাষাৰে উপস্থাপন কৰিছে। এই সঞ্চৰণৰ এটা উল্লেখনীয় বিশেষত্ব হ'ল ইংৰাজী কথাখিনি তেওঁ অসমীয়া লিপিৰে উল্লেখ কৰিছে। ইও লিখিত সাহিত্যত ভাষা সঞ্চৰণৰ এটা বিশেষত্ব। পিছৰ উদাহৰণটোত এটা অসমীয়া বাক্যৰ ভিতৰত ভালেকেইটা ইংৰাজী বাক্য সংযোগ কৰি তেওঁ পুনৰ মূল (অসমীয়া) ভাষালৈ ঘূৰি আহিছে। বিষয় প্ৰসংগত সম্পূৰ্ণ বিবাহ অধিকাৰীৰ উক্তিখিনি অসমীয়া বাক্যটোৰ মাজত উল্লেখ কৰিছে। সম্পূৰ্ণ ইংৰাজী উপস্থাপনখিনিত পূৰ্ণ যতিও ভালে কেইঠাইত পৰিছে। অন্য উৎসৰ পৰা সংযোগ কৰা বাবে ইংৰাজী উপস্থাপনখিনিৰ শেষৰ বাক্যটোতো পূৰ্ণ যতি প্ৰয়োগ কৰিছে। কিন্তু সেই ঠাইত লেখকৰ ভাৱৰ পূৰ্ণ যতি পৰা নাই। ইংৰাজী উপস্থাপনখিনিৰ শেষত বাক্যটো সম্পূৰ্ণ কৰিব নোৱাৰি। অসমীয়া ভাষাৰে আৰম্ভ কৰা বাক্যটো মন কৰিলে দেখা যায় যে অসমীয়া বাক্যটোৰ মাজৰ পৰা ইংৰাজী উপস্থাপনখিনি আঁতৰাই আনিলেও এটা সম্পূৰ্ণ অৰ্থপূৰ্ণ বাক্য পোৱা যায়। কিন্তু লেখিকাই বৰ্ণনাৰ মাজেৰে তেওঁৰ জীৱনৰ সেই কঠিন সময়খিনি পাঠকক অনুভৱ কৰাবলৈ বিবাহ উক্তিখিনি বাক্যটোৰ মাজত পোনে পোনে সংযোগ কৰিছে। ফলত অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ ঘটিছে।

আত্মকথাখনত তেওঁ কৌশলেৰে নিজৰ জীৱনৰ নীতি-আদৰ্শসমূহো উপস্থাপন কৰি গৈছে। ঘটনাৰ লগত মিলাই কৰা এনে উপস্থাপনত বহু সময়ত চিহ্নিত ভাষা সঞ্চৰণৰ আৰ্হি লক্ষ্য কৰা যায়।

"মাধুৰে মোৰ মনৰ ভাৱ জানি হাঁহি হাঁহিয়ে ক'লে - "she will play if you allow...in the same court." (আ. লে. দ., পৃ. ৫০)

বাক্যটোত অসমীয়া উপস্থাপনৰ মাজত মাধৱেনৰ মুখৰ কথাখিনি ইংৰাজী ভাষাৰে হুবহু উপস্থাপন কৰা হৈছে। অসমীয়া ভাষাৰে কৰি যোৱা বৰ্ণনাখিনিৰ লগত ইংৰাজী ভাষাৰ কথাখিনি সংযোগ কৰিবলৈ সংযোজক চিহ্ন (-) প্ৰয়োগ কৰিছে। আনহাতে অসমীয়া উপস্থাপনখিনিত ভাৱৰ পূৰ্ণ যতি পৰা নাই । ইংৰাজী উপস্থাপনখিনিৰ শেষতহে ভাৱৰ যতি স্পষ্ট হৈছে। তেওঁ পোনে পোনে নিজৰ আদৰ্শৰ কথা উল্লেখ কৰাতকৈ এই কৌশলেৰে ঘটনাৰ লগত মিলাই অন্য ব্যক্তিৰ মুখৰ উক্তিৰে বিষয় উপস্থাপন কৰিছে। অন্য ভাষাও যে কৌশলপূৰ্ণভাৱে ভাৱ প্ৰকাশৰ মাধ্যম হ'ব পাৰে আৰু এনে নিৰ্বাচনে ভাষা সঞ্চৰণ ঘটাব পাৰে সেই কথা উক্ত উদাহৰণটোৱে স্পষ্ট কৰে।

কিছুমান এনে বৰ্ণনা আছে যিবোৰ বৰ্ণনাত দুটা ভাষাৰ সংযোগ আৱশ্যকীয় হৈ পৰে। বৰ্ণনীয় বিষয়ৰ লগত সংগতি ৰাখি এনেদৰে কৰা ভাষা সঞ্চৰণ অচিহ্নিত আৰ্হিৰ সঞ্চৰণ।

"শেষত ক'লে - ' যিচ কাম কে লিয়ে যা ৱহী হো ওসমে সফল হোগী'। যদি এইসা না হোৱা তো ম্যায় এ কড়িও কা খেল হামেসা কে লিয়ে চোড় দোঙ্গা।" বৃদ্ধ কড়ি বাবাই...।" (আ. লে. দ., পৃ. ২১৪)

বৃন্দাবনৰ কড়ি বাবাক লগ কৰিবলৈ যোৱা বৰ্ণনাত কড়ি বাবাৰ মুখৰ কথাখিনি তেওঁ হিন্দী ভাষাৰে (অসমীয়া লিপিত) উপস্থাপন কৰিছে। যিহেতু কড়ি বাবা হিন্দী ভাষী আছিল সেয়ে পৰিস্থিতিৰ উপযুক্ত চিত্ৰণত হিন্দী ভাষাৰ ব্যৱহাৰে ভাষিক পৰিবেশটো স্পষ্ট কৰি তুলিছে। অসমীয়া ভাষাৰে আৰম্ভ কৰি তেওঁ বাক্যটো হিন্দী ভাষাৰে শেষ কৰিছে। বাক্যটোত অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ লক্ষ্য কৰা যায়।

৩.০৪ আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ ঃ

বিষয় বৰ্ণনা কৰি থকা মূল ভাষাটোৰ পূৰ্ণ বাক্যৰ শেষত তথা এটা ভাষাৰ বাক্যৰ পূৰ্ণ যতিৰ পিছত একেটা কথনতে অন্য ভাষাৰে কোনো বাক্য উপস্থাপন কৰা ভাষিক স্থিতিয়েই আন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণ। গোস্বামীৰ লেখাত এনে আৰ্হিৰ সঞ্চৰণ দেখা যায়।

"ব্ৰাহ্মণৰ মুখত মই কালীৰ স্তুতি শুনিছিলো।

সৃক্ কদ্বয়গলদ্রক্ত ধাৰা ... শৱপ্রেতসমাৰূঢ়া মহাকালো পৰিস্থিতাম।" (আ. লে. দ., পৃ. ২৩-২৪)

এই সঞ্চৰণ আন্তঃবাক্যগত। অসমীয়া ভাষাৰ লগত সঞ্চৰণ ঘটা সংস্কৃত ভাষাৰ শ্লোকটো অসমীয়া বাক্যটোৰ পূৰ্ণ যতিৰ পিছত আৰম্ভ হৈছে। কিন্তু কথনৰ বিষয় একে আছে। উদ্দেশ্যমূলকভাৱে বিষয়ৰ আৱেদন বঢ়োৱাৰ লগতে কালীপূজা সম্পৰ্কে সৰুৰে পৰা তেওঁৰ মনত খোপনি লোৱা ভাৱধাৰা স্পষ্টভাৱে প্ৰকাশ কৰিবলৈ এই সঞ্চৰণ

কৰিছে। বৰ্ণনীয় পৰিবেশৰ লগত জড়িত প্ৰাসংগিক বিষয় উপস্থাপন কৰি তেওঁ চিহ্নিত আৰ্হিৰে ভাষা সঞ্চৰণ কৰিছে। তেওঁ ইচ্ছাকৃতভাৱে শৈশৱ আৰু বৰ্তমান(নিজৰ হকে কৰা বলিকৰ্মৰ)ৰ পৰিবেশ দুটা সংযোগ কৰোতে এই সঞ্চৰণ ঘটিছে।

"ফাৰ্চী কবি ফিৰদৌদিয়ে লেখা বুলি প্ৰচলিত পংক্তিসমূহে অহৰহ যেন কাণৰ ওচৰত গুণগুণাই আছিলঃ

"ওসকে মৰনে পৰ হোঠ ৱহ বাত

.....বঢ় কৰ হ্যায়।"

তেওঁৰ(সীতাৰ) মৃত্যুৰ পাছতো ওঁঠত সেই শব্দ ফুটি নুঠে।...থৈ যায়।

"সীতাজী কে শৰীৰ কো কিসীনে

...নহী দেখা।"

সীতাৰ শৰীৰকতো কোনেও ...দেখা নাই।"

এই বৰ্ণনাখিনিত প্ৰথম অংশত অসমীয়া ভাষাৰ লগত হিন্দী ভাষাৰ অন্তঃভাষাগত সঞ্চৰণ ঘটিছে। প্ৰথম সঞ্চৰণটোৰ অসমীয়া ভাষাৰ বাক্যটো গাঠনিক দিশেৰে সম্পূৰ্ণ যদিও বিষয়ৰ সংগতি তথা সংযোগ ৰক্ষা কৰি লেখিকাই পূৰ্ণ যতি প্ৰয়োগ নকৰাকৈ হিন্দী ভাষাৰ কবিতাৰ পংক্তিটোৰ লগত ভাৱৰ সংযোগ ঘটাইছে। পংক্তিটোৰ শেষত পূৰ্ণ যতি প্ৰয়োগ কৰি পুনৰ অসমীয়া ভাষাৰে কবিতাটিৰ ভাঙণি আগবঢ়াইছে।। অসমীয়া ভাষাত কবিতাৰ পংক্তিটোৰ ভাঙণি কৰি সেই অংশত ভাৱ আৰু বাক্যৰ যতি পেলাইছে। পৰৱৰ্তী পুনৰ হিন্দী ভাষাৰ কবিতাৰ পংক্তি উল্লেখ কৰিছে। সম্পূৰ্ণ বৰ্ণনাংশত প্ৰথমে অন্তঃভাষাগত আৰু পিছত আন্তঃভাষাগত সঞ্চৰণ হৈছে। পাৰিস্থিতিকভাৱে এই বৰ্ণনা অংশত ৰামচন্দ্ৰৰ মানৱ ৰূপৰ বিষয়ে থকা ধাৰণা স্পষ্ট কৰিবলৈ অচিহ্নিত আৰ্হিৰে বিষয় স্পষ্টতাৰ বাবে ভাষা সঞ্চৰণ কৰিছে।

৪.০০ সামৰণি ঃ

গোস্বামীৰ আত্মকথাত ভাষা মিশ্ৰণ আৰু ভাষা সঞ্চৰণৰ স্বৰূপ আৰু ধৰণ বিশ্লেষণ কৰি কেইটামান কথা স্পষ্ট কৰিব পাৰি। বিষয় আৰু পৰিস্থিতিয়ে তেওঁৰ ৰচনাৰ ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ নিয়ন্ত্ৰণ কৰিছে। বিষয়সাপেক্ষে বৰ্ণনাবোৰত সচেতনভাৱে আৰু কিছুমানত স্ব ভাৱগত ভাৱে ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ ঘটিছে। কিছুমান ঘটনাই মনত সৃষ্টি কৰা অনুভূতি পাঠকৰ হৃদয়ংগম কৰিবলৈ অসমীয়া শব্দৰ বিকল্পে অন্য ভাষাৰ শব্দৰে ভাৱ প্ৰকাশ কৰি ভাষা মিশ্ৰণ কৰিছে। ভাষিক ব্যঞ্জণা সৃষ্টিও তেওঁৰ লেখাত ভাষা মিশ্ৰণ ঘটাৰ অন্যতম কাৰক। অৰ্থপ্ৰকাশক অসমীয়া শব্দৰ অভাৱত কিছুমান বৰ্ণনাত অন্য ভাষাৰ শব্দৰ অন্তৰ্ভুক্তিকৰণেৰে ভাষা মিশ্ৰণ কৰিছে। কেতিয়াবা সমাৰ্থক অৰ্থ প্ৰকাশক অসমীয়া শব্দ থকাৰ পাছতো লেখিকাই প্ৰকাশ কৰিব বিচৰা নিৰ্দিষ্ট ভাৱৰ যথাৰ্থতাৰ বাবে তেওঁ নিৰ্বাচন কৰি লোৱা অন্য ভাষাৰ পৰা শব্দ বা বাক্যাংশ ব্যৱহাৰ কৰাৰ ফলত ভাষা মিশ্ৰণ ঘটিছে। কেতিয়াবা সাধাৰণ কথনভংগীৰে অসমীয়া কথনৰ মাজত সোমাই পৰা আৰু কথন পৰিবেশত বহুলভাৱে ব্যৱহৃত শব্দৰ ব্যৱহাৰেৰে ভাষা মিশ্ৰণ কৰিছে। বৰ্ণনাত্মকভাৱে ব্যাখ্যা কৰিবলগীয়া ধাৰণা কিছুমান অন্য ভাষাৰ শব্দ বা বাক্যাংশৰে চুটিকৈ উপস্থাপন কৰি নিৰ্দিষ্ট অৰ্থ প্ৰকাশ কৰাৰ ফলতো ভাষা মিশ্ৰণ আৰু সঞ্চৰণ ঘটিছে। আৱেগ-অনুভূতিৰ বৰ্ণনাৰ ক্ষেত্ৰত ভাষা মিশ্ৰণ কৰিছে। কৌশলপূৰ্ণ কথা উপস্থাপনৰ পদ্ধতি হিচাপেও তেওঁ Matrix Language ৰ লগত Embedded Language নিৰ্বাচন কৰি ব্যৱহাৰ কৰিছে। তেওঁৰ ৰচনাত উদ্ধৃতি উপস্থাপন ভাষা সঞ্চৰণৰ এক বিশেষ কাৰক। প্ৰসংগ বা বিষয় স্পষ্টীকৰণৰ বাবে তেওঁ কিছুমান বাক্য বা বাক্যাংশ বিষয়সাপেক্ষে অন্য ভাষাৰ পৰা ব্যৱহাৰ কৰি ভাষা মিশ্ৰণ কৰিছে যদিও অসমীয়া বাক্যগাঁথনিৰ মাজত সংযোগ হোৱা এনে শব্দবোৰ অসমীয়া ব্যাকৰণবাচক ৰূপেৰে বান্ধি বাক্যৰ মাজত ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। তেওঁৰ লেখাত বিশেষ্য আৰু বিশেষণবাচক ৰূপৰ মিশ্ৰণ বেছিকৈ দেখা গৈছে। বাক্যৰ আৰম্ভণিত, শেষত অথবা মাজত সকলো ঠাইতে মূল ভাষাৰ লগত অন্য ভাষাৰ মিশ্ৰণ ঘটা দেখা গৈছে। অন্তঃবাক্যগত সঞ্চৰণৰ ক্ষেত্ৰত বহু সঞ্চৰণত বাক্যটো অসমীয়া ভাষাৰে আৰম্ভ কৰি আধাৰ পৰা বাকীখিনি সম্পূৰ্ণ ইংৰাজী ভাষাৰে শেষ কৰা দেখা গৈছে। অৱশ্যে বাক্যৰ আৰম্ভণি আৰু মাজতো কম পৰিমানে সঞ্চৰণ ঘটা দেখা গৈছে। বহু বৰ্ণনাত তেওঁ চিহ্নিত আৰ্হিৰে নিৰ্বাচন কৰি ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিছে । পৰিবেশ সাপেক্ষে আৰু বিষয়ভেদে অচিহ্নিত সঞ্চৰণো ঘটিছে। অন্তঃভাষাগত মিশ্ৰণৰ ধাৰণাৰে তেওঁৰ লেখাত সংস্কৃত,

বাংলা আৰু হিন্দী ভাষাৰ মিশ্রণ ঘটিছে। বাহ্যিক ভাষাগত মিশ্রণৰ ধাৰণাৰে ইংৰাজী ভাষাৰ মিশ্রণ ঘটিছে।

তেওঁৰ লেখাত পৰিস্থিতিক আৰু লাক্ষণিক দুয়ো প্রকাৰৰ ভাষা সঞ্চৰণেই দেখা যায়। লাক্ষণিক ভাষা সঞ্চৰণত তেওঁ বর্ণনীয় বিষয় আৰু জীৱনৰ অভিজ্ঞতাৰ লগত মিলাই বিশেষ ব্যক্তি তথা সাহিত্যপাঠৰ উক্তি অন্তর্ভুক্ত কৰি বিষয়ৰ গাম্ভীর্য বঢ়োৱাৰ লগতে লেখা তথ্যপূর্ণ কৰি তুলিছে। বর্ণনীয় বিষয়ৰ পৰিস্থিতিৰ উপযুক্ত চিত্রণৰ বাবেও তেওঁ এটা ভাষাৰ পৰা অন্য এটা ভাষালৈ ভাষা সঞ্চৰণ কৰিছে। ❑

প্রসংগ টোকা ঃ

1 Limacher, Ute. Code Switching and Code mixing, para. 2.

2 Morrison, Carlos D. Code-switching, Encyclopedia Britannica. beitannica.com

3 Chandler Daniel & Rod Munday. Oxford A Dictionary of Media & Communication (2nd), p. 167, oxfordreference.co

4 gingras, p,167

5 gumparz.j.j Discourse Strategies. Cambridge University Press.p. 59

6 Wardhaugh, Ronaid. An Introduction to Sociolinguistics. p. 101

7 Muysken, pieter. Bilingual Speech:A typollogy of Code-Mixing. p.14

8 Poplack, Suzane. Sometimes I start a sentence in Spanish Y TERMING EN Espanol:Towards A typollogy of code-mixing in Linguistics. p.

9 Hoffmann, Charlotte. Introduction to Bilingualism.p.112

10 Mayers Scotton,C & Ury, W. Bilingual Strategies: The Social Function of Code Switching. p. 4

11 Muysken, pieter. Bilingual Speech:A typollogy of Code-Mixing. p.246

12 Matras, Yaron. Language acontact. Cambridge university press,p.129

গ্রন্থপঞ্জী ঃ

অসমীয়া সমল ঃ

মুখ্য সমল ঃ

গোস্বামী, মামণি ৰয়চম। *আধালেখা দস্তাবেজ*। গুৱাহাটী ঃ চন্দ্র প্রকাশ, ২০১৮ (১৯৮৮)। প্রকাশিত।

গোস্বামী, মামণি ৰয়চম। *দস্তাবেজৰ নতুন পৃষ্ঠা*। গুৱাহাটী ঃ জ্যোতি প্রকাশন, জানুৱাৰী, ২০১২ (২০০৯)। প্রকাশিত।

ভৱালী, হেমন্ত কুমাৰ সম্পা.। *মামণি ৰয়চম গোস্বামীৰ সাহিত্য সম্ভাৰ প্রথম খণ্ড*। গুৱাহাটী ঃ অসম প্রকাশন পৰিষদ, ডিচেম্বৰ, ২০১৪। প্রকাশিত।

ভৱালী, হেমন্ত কুমাৰ সম্পা.। *মামণি ৰয়চম গোস্বামীৰ সাহিত্য সম্ভাৰ* দ্বিতীয় খণ্ড। গুৱাহাটী ঃ অসম প্রকাশন পৰিষদ, ডিচেম্বৰ, ২০১৪। প্রকাশিত।

গৌণ সমলঃ

দাস, অমলচন্দ্র সম্পা. । *অসমীয়া জীৱনী আৰু আত্মজীৱনী আধ্যয়ন*। গুৱাহাটী ঃ পূর্বাঞ্চল প্রকাশ, মার্চ, 2018। প্রকাশিত।

দাস, বিশ্বজিৎ। *সমাজভাষাবিজ্ঞান*। ডিব্রুগড় ঃ বনলতা, এপ্রিল, ২০১৭। প্রকাশিত।

মৱল, ভগবান। *ভাষার্থ-বিজ্ঞান*। গুৱাহাটী ঃ পঞ্চ জ্যোতি প্রকাশ, ২০১৯ (১৯৮৬)। প্রকাশিত।

ৰাভা হাকাচাম, উপেন। *অসমীয়া ভাষাৰ গঠন ঃ ঐতিহ্য আৰু ৰূপান্তৰ*। ধেমাজি ঃ কিৰণ প্রকাশ, 2014। প্রকাশিত।

শর্মা, অনুৰাধা। *সমাজ আৰু সমাজভাষাবিজ্ঞানৰ পৰিচয়*। গুৱাহাটী ঃ বান্ধৱ প্রকাশ, ২০১৬। প্রকাশিত।

শর্মা, গোবিন্দ প্রসাদ। *জীৱনী আৰু আত্মজীৱনী অসমীয়া আৰু পাশ্চাত্যত*। গুৱাহাটী ঃ বনলতা, ফেব্রুৱাৰী, ২০১৯ (২০০৯)। প্রকাশিত।

শইকীয়া বৰা, লীলাৱতী। *সাহিত্য আৰু সাহিত্যিকৰ ভাষা*। গুৱাহাটী ঃ ষ্টুডেণ্টচ্ ষ্টৰচ, ২০০৭। প্রকাশিত।

ইংৰাজী সমল ঃ

Auer, Peter. *Code-Switching in Conversation* : Language, Interaction and Identity.Routledge Tay lor and Francis Group, 2016. Print.

Bloomfield, Leonard. *Language*. New York : Holt Rinehart and Winston, 1933. Print.

Canfield, Kip. *A Note on Navajo-English Code-Mixing*. Autobiographical Linguistics, Vol.22, No.5, May 1980, pp. 218-220. Print.

Chaer, Abdul & Leonie Agustina. *Sociolinguistics.* Pengantar Awal. Jakarta : P T Rineka Cipta. 2004. Print.

Chomsky, Noam. *Knowledge of Language*. London : Praeger Publishers, 1986. Print.

Chandler, Daniel & Rod Munday. O*xford A dictionary of Media & Communication.* oxfordreference.com

Diller, Hans-Jurgen. *Code-switching in Medieval English Drama. Comparative Drama*. Vol.31, No.$, winter 1997-98, pp. 506-537.

Gumperz,J.J. *Discourse Strategies*. Cambridge University Press, 1982. Print.

Haksin, Waode. *Code Mixing and Code Switching in Umar Kayam's Novel Parapriyayi*. Didaktis, Vol.15, No.1, February 2015. pp 31-45.

Hoffmann, Charlotte. *Introduction to Bilingualism*. Routedge, 2016.

Hudson, Richard Anthny. *Sociolinguistics*. Cambridge : Cambridge University Press, 1980. Print Matras, Yaron. *Language Contact*. Cambridge University Press, 2020. Print.

Mayer's Scotton, C. & Ury, W. *Bilingual Strategies : The Social Function of Code Switching*. An Interdisciplinary Journal of Language Science, Vol.15, Issue.193, 2009, pp. 5-10.

Morrison, Carlos D. *Encyclopedia Britannica*. britannica.com

Muysken, Pieter. *Bilingual Speech : A typpollogy of code-mixing.* New York : Cambridge Univer sity Press, 2000. Print

Poplack, Suzane. *Sometimes I'll Start a Sentance in Spanish Y TERMINO EN ESPANOL : Towards a Typology of code-switching in Linguistics.* Vol.18,1980. pp.581-618.www.researchgate. net/publication.

Poplack, Suzane. *Sometimes I start a sentance in Spanish TERMING EN ESPANOL : toward a typology of code-mixing*.

Romanie, Suzanne. *Bilingualism*. Blackwell apublishers, 2000.

Suwito. *Sociolinguistics*. Surakarta : Fakultas sastra Universitys Sebelas Market. 1983. Print

Wardhaugh, Ronaid. *An Introduction to Sociolinguistics.* 5th ed. New York : Brasil Biackwell, 1986. Print.

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্ৰবন্ধ

বৈদ্যুতিন মাধ্যমত অসমীয়া ভাষা ঃ এক ভাষাতাত্ত্বিক বিশ্লেষণ

ফেঞ্চী চুতীয়া
সহকাৰী অধ্যাপক, অসমীয়া বিভাগ
দুধনৈ মহাবিদ্যালয়, দুধনৈ-৭৮৩১২৪
ম'বাইল ঃ ৬০০০৯৫৯৪৬৩
ই মেইল - chutiafancy1@gmail.com

ড°স্বপ্নালী দাস
সহকাৰী অধ্যাপক, অসমীয়া বিভাগ,
কটন বিশ্ববিদ্যালয়
ম'বাইল ঃ ৯৩৬৫৫৭০৬৪০
ই মেইল : swapnalidasghy @gmail.com

সংক্ষিপ্ত সাৰ ঃ

ভাষা পৰিৱৰ্তনশীল। সময় পৰিৱৰ্তনৰ লগে লগে ভাষাৰ ৰূপবো পৰিৱৰ্তন ঘটে। নতুন নতুন শব্দৰ সংযোজন, কিছুমান শব্দৰ বিয়োজন আদি প্ৰক্ৰিয়া ভাষা এটাৰ কাৰণে স্বাভাৱিক কথা। তথাপিও ভাষাটোৰ প্ৰকৃত ৰূপটো ধৰি ৰখাত সমাজৰ প্ৰত্যেকজন লোকৰে অপৰিসীম দায়িত্ব আছে। বৰ্তমান বিজ্ঞান আৰু প্ৰযুক্তি বিদ্যাৰ যুগত আমাৰ ভাষা কথ্য, লিখিত ৰূপত ব্যৱহাৰ হোৱাৰ উপৰিও বিভিন্ন প্ৰচাৰ মাধ্যমতো ব্যৱহাৰ হয়। তাৰ ভিতৰত বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যম উল্লেখনীয়। সাম্প্ৰতিক সময়ত বৈদ্যুতিন প্ৰচাৰ মাধ্যমে ব্যাপক জনপ্ৰিয়তা লাভ কৰিছে। সমসাময়িক সমাজখনত ঘটি থকা দৈনন্দিন ঘটনা, খবৰ আদিবোৰৰ প্ৰচাৰত বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমৰ ভূমিকা উল্লেখনীয়। এই মাধ্যমত ব্যৱহৃত হোৱা অসমীয়া ভাষা সম্পৰ্কে বিশ্লেষণ কৰাৰ যথেষ্ট থল আছে। কিয়নো দেশ-বিদেশৰ বাতৰি প্ৰচাৰৰ লগতে ব্যৱহৃত ভাষাটোৰ প্ৰচাৰতো এই মাধ্যমৰ ভূমিকা মনকৰিবলগীয়া। সেয়েহে, এই গৱেষণা পত্ৰত বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমত ব্যৱহাৰ হোৱা অসমীয়া ভাষাৰ ধ্বনিতাত্ত্বিক আৰু ৰূপতাত্ত্বিক দিশসমূহ বিশ্লেষণ কৰিবলৈ প্ৰয়াস কৰা হ'ব।

বীজ শব্দ ঃ বৈদ্যুতিন মাধ্যম, অসমীয়া ভাষা, শব্দ, ৰূপ ইত্যাদি।

অৱতৰণিকা ঃ

বৰ্তমান বিশ্বৰ প্ৰেক্ষাপটত সৰ্বাধিক আলোচ্য বিষয় হৈছে বিশ্বায়ন। এই বিশ্বায়নৰ মুক্ত বাণিজ্যিক নীতি আৰু উদাৰীকৰণ পৃথিৱীৰ বহু দেশেই কম বেছি পৰিমাণে মানি লৈছে। এই প্ৰক্ৰিয়াই বিশ্বৰ বিভিন্ন ভাষাৰ লগতে অসমীয়া ভাষাৰ ক্ষেত্ৰতো পৰিৱৰ্তন আনিছে। এফ. এম. ৰেডিঅ', টেলিভিছনৰ বিভিন্ন সংবাদ চেনেল, মবাইল, ইণ্টাৰনেট আদিয়ে অসমীয়া ভাষাৰ ৰূপ সলনি কৰিছে। অতি সম্প্ৰতি অসমীয়া ভাষাৰ মাজত ইংৰাজী, হিন্দী, বাংলা মিশ্ৰিত ভাষাই ব্যাপক ৰূপত স্থান দখল কৰা পৰিলক্ষিত হৈছে। ভাষা সংক্ৰমণ আৰু ভাষা মিশ্ৰণৰ দ্বাৰা বাক্-ভংগী সলনি কৰি বিভিন্ন শব্দৰ প্ৰয়োগ কৰি বাক্ বিনিময় কৰা দেখা গৈছে। যাৰ ফলস্বৰূপে অসমীয়া ভাষাৰ এটি নতুন ৰূপ প্ৰকাশ হ'বলৈ ধৰিছে। আমাৰ এই আলোচনাত বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমত

অসমীয়া ভাষাই লাভ কৰা নতুন ৰূপটোক বিশ্লেষণ কৰা হ'ব।

মূল আলোচ্য বিষয় ঃ

ভাষা এটা জীৱন্ত আৰু সবল ৰূপত বর্তি থাকিবৰ বাবে ইয়াৰ মূল ঠাঁচ ৰক্ষিত হোৱা নিতান্তই প্ৰয়োজন। মূলৰ সৈতে সম্পৰ্কবিহীন ভাষা একোটাৰ ভৱিষ্যত একেবাৰে অনিশ্চিত। পৰিৱর্তনৰ সোঁতত পৰি ভাষায়ো পৰিৱর্তিত ৰূপ লাভ কৰে। এই মাধ্যমৰ জড়িয়তে অসমীয়া ভাষায়ো এক পৰিৱর্তিত ৰূপ লাভ কৰা দেখিবলৈ পোৱা গৈছে। বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমৰ জড়িয়তে ভাষাটোৱে প্ৰচাৰ আৰু প্ৰসাৰ লাভ কৰিছে যদিও এই মাধ্যমত নিয়োজিত কিছু লোকৰ অৱজ্ঞা, অনীহা তথা অজ্ঞতাৰ কাৰণে অসমীয়া ভাষাৰ এটি বিকৃত ৰূপে ধৰা দিয়া পৰিলক্ষিত হৈছে। সচৰাচৰ প্ৰত্যক্ষ হোৱা সমলৰ আধাৰত অসমীয়া ভাষাৰ নতুন ৰূপটোৰ আলোচনা কৰোঁতে ধ্বনিগত, ৰূপগত আৰু শব্দগত দিশত ভাগ কৰি আলোচনা কৰিবলৈ যত্ন কৰা হৈছে।

(ক) ধ্বনিতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্য ঃ

বৈদ্যুতিন গণমাধ্যমত অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰয়োগৰ ক্ষেত্ৰত সততে চকুত পৰা আসোঁৱাহবোৰ হ'ল— পৰিবেশকসকলৰ শব্দ উচ্চাৰণৰ ক্ষেত্ৰত থকা বিসংগতি। এনে বিসংগতিয়ে গোটেই ভাষাটোকে বিকৃত ৰূপ এটি প্ৰদান কৰে। দুৰদর্শনত বিভিন্ন অনুষ্ঠানৰ আঁত ধৰোঁতাসকলৰ মুখত সঘনে দেখা পোৱা ধ্বনিতাত্ত্বিক ৰূপবোৰ হ'ল—

১। বর্ণ	শুদ্ধ উচ্চাৰণ	অশুদ্ধ উচ্চাৰণ
অ > আ	প্ৰিয়ংকা	প্ৰিয়াংকা
	সংঘমিত্ৰা	সাংঘামিত্ৰা
অ' > অ	ল'ৰা	লৰা
	হ'ব	হব
	ক'লা	কলা
	ক'ব	কব
শ, ষ, স > চ	ৰাজবংশী	ৰাজবংচি
	শিৱসাগৰ	চিবসাগৰ
	এশ টকা	একচ টকা
	মনীষা	মনীচা
	বনিষা	বনিচা
	সৰে	চবে
	সাত টকা	চাত টকা
	প্ৰসৱ	প্ৰশৱ
ংহ > ঙঘ	সিংহ	সিঙঘ
শ > স্‌স	নিঃশেষ	নিস্‌শেষ
স > ইস	স্কাৰ্ট	ইসকার্ট
	স্কুল	ইসকুল, ইত্যাদি।

২। দ্বিত ব্যঞ্জনৰ উচ্চাৰণত সচৰাচৰ বিসংগতি দেখিবলৈ পোৱা যায়। যেনে—

স্ব > চ স্বৰ > চৰ

স্বর্গ > চর্গ

শ্ব > স্‌ ঈশ্বৰ > ইস্‌সৰ। কেতিয়াবা আকৌ 'চ' উচ্চাৰণো পৰিলক্ষিত হয়। যেনে— ঈশ্বৰ > ইচৰ।

ত্ব > ত্ত তত্ব > তত্ত

তাত্বিক > তাত্তিক

সাত্বিক > সাত্তিক

দ্ব > দ্দ হৰিদ্বাৰ > হৰিদ্দাৰ

দ্বাৰকা > দ্দাৰকা

৩। তিনিটা ব্যঞ্জনৰ যুক্ত ৰূপৰ উচ্চাৰণৰ ক্ষেত্ৰত দুটা ব্যঞ্জন বর্ণৰ মাজত এটা স্ববর্ণ সুমুৱাই লৈ শব্দ উচ্চাৰণ কৰা দেখা যায়। যেনে—

সংস্কৃতি > সঙস্‌কৃতি।

৪। 'ক্ষ' ধ্বনিৰ উচ্চাৰণ 'খ্য' ৰূপে কৰা দেখা যায়। যেনে—

লক্ষ > লইখ।

৫। কেতিয়াবা আকৌ 'ক্ষ' ধ্বনিৰ উচ্চাৰণ 'ক্‌চ' ৰূপে উচ্চাৰণ কৰে। যেনে—

দীক্ষু > দীক্‌চু।

৬। 'জ্ঞ' ধ্বনিৰ উচ্চাৰণ 'গ্য' ৰূপত কৰা দেখা যায়। যেনে—

বিজ্ঞ > বিগ্য

অৱজ্ঞা > অৱগ্যা।

৭। অসমীয়া ভাষাৰ মতে দুটা 'আ' ধ্বনি ওচৰা-ওচৰিকৈ ব্যৱহাৰ নহয়। তাৰ সলনি আগৰ স্থানৰ 'আ' > 'এ' বা 'অ' লৈ ৰূপান্তৰিত হয়। কিন্তু বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমত এই নিয়ম স্বাভাৱিকতে পৰিলক্ষিত নহয়। যেনে—

নম্বৰ > নাম্বাৰ

পগলা > পাগলা

ইস্তফা > ইস্তাফা, ইত্যাদি।

৮। ব্যঞ্জন লোপ হোৱাৰ প্ৰৱণতাও দেখিবলৈ পোৱা যায়। যেনে—

দেখুৱাম > দেখাম

দাদা > দা, ইত্যাদি।

(খ) ৰূপগত বৈশিষ্ট্য ঃ

ধ্বনিৰ ক্ষেত্ৰত স্বকীয়তা হেৰুওৱা বিভিন্ন শব্দ পোৱাৰ দৰে ভাষাৰ ৰূপতাত্ত্বিক দিশতো কিছু পৰিৱৰ্তন দেখা পোৱা যায়।

১। কাৰক বিভক্তিৰ ক্ষেত্ৰত সম্পাদান কাৰক 'লৈ'ৰ প্ৰয়োগ নকৰাকৈয়ে কেতিয়াবা বাক্য নিৰ্মাণ কৰা দেখা যায়। যেনে— আজি মুখ্যমন্ত্ৰী দিল্লীলে (লৈ) ৰাওনা হৈছে।

২। সম্বন্ধবাচক নিৰ্দিষ্টতা প্ৰত্যয়ৰ প্ৰয়োগ ক্ৰমান্বয়ে কমি আহিছে। যেনে— তোমাৰ মাৰা, তোমাৰ দেউতাৰা, তেওঁৰ মাক আদিৰ ঠাইত তোমাৰ মা, তোমাৰ দেউতা, তেওঁৰ মা আদি ৰূপ প্ৰয়োগ হোৱা দেখা যায়।

৩। বহুবচনৰ প্ৰয়োগৰ ক্ষেত্ৰতো বিশেষ পৰিৱৰ্তন দেখিবলৈ পোৱা গৈছে।উদাহৰণস্বৰূপে— সিহঁতবোৰ, ৰাইজসকল, আমিবোৰ ইত্যাদি। আমি, ৰাইজ, সিহঁত প্ৰত্যেকেই একোটা বহুবচন, গতিকে ইয়াত বোৰ, সকল আদি বহুবচনাত্মক প্ৰত্যয় সংযোগ কৰাৰ প্ৰয়োগ নাই। উদাহৰণস্বৰূপে—

(ক) আমিবোৰ আজি এই বৃহৎ খেলপথাৰত উপস্থিত হৈছোঁ।

(খ) কি কয় ৰাইজসকল?

৪। বৰ্তমান কালত ভৱিষ্যতৰ ৰূপ বহুলভাৱে ব্যৱহাৰ হোৱা দেখা যায়। বিশেষকৈ টেলিভিছনৰ পৰ্দাত কোনো এটা বিষয় দেখুৱাই থকাৰ পাছতো ঘোষিকা বা সংবাদসেৱীসকলে কয়— "আজি আমি আপোনাক দেখুৱাম সমস্ত ঘটনাৰাজি।" শুদ্ধ ৰূপ "আজি আমি আপোনাক দেখুৱাইছো সমস্ত ঘটনাৰাজি।" অথবা "বৰ্তমান আমি আপোনাক দেখুৱাই আছোঁ সমস্ত ঘটনাৰাজি।"

৫। লিংগবাচক শব্দবোৰৰ ক্ষেত্ৰত কোনো পাৰ্থক্য ৰখা সহজে দেখা নাযায়। তেনে শব্দৰ ভিতৰত সম্পাদক, সভাপতি, অভিনেতা আদি উল্লেখনীয়।

৬। বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমত সঘনাই যোৱাকালি, অহাকালি আদি ৰূপৰ সঘন প্ৰয়োগ কৰে। কিন্তু পাৰ হৈ যোৱা দিনটোক বুজাবলৈ 'কালি' আৰু আহিব ধৰা দিনটোক বুজাবলৈ কালিলৈ/কাইলৈ আদি ৰূপহে যথাৰ্থতে ব্যৱহৃত হ'ব লাগে।

(গ) শব্দগত বৈশিষ্ট্য ঃ

১। বৈদ্যুতিন মাধ্যমত অসমীয়া ভাষাৰ লগত প্ৰয়োগ হোৱা বিদেশী শব্দই ভাষাটোৰ নিজস্বতা বহু পৰিমাণে ম্লান কৰিছে যেন বোধ হয়। উদাহৰণস্বৰূপে— ব্ৰেকিং নিউজ, প্ৰাইম টাইম নিউজ, ব্ৰেকফাষ্ট লাইভ, হে'ড লাইন, ব্ৰেক লোৱা ইত্যাদি।

২। অনুষ্ঠানৰ আঁত ধৰোতা অথবা ভাগ লওঁতাসকলে কেতিয়াবা প্ৰয়োগ কৰা কিছুমান ইংৰাজী শব্দই অসমীয়া ভাষাটোক বিকৃত কৰিছে। যেনে— "Suppose কথাটো এনেধৰণৰ" ইয়াৰ পৰিৱৰ্তে "ধৰা হওঁক কথাটো এনেধৰণৰ" এনেদৰে ক'লে অসমীয়া ভাষাৰ যথাৰ্থ ৰূপৰ প্ৰয়োগ হ'ব।

৩। বিজ্ঞাপনসমূহৰ ক্ষেত্ৰত বাক্যৰ মাজত অযথা ইংৰাজী শব্দৰ প্ৰয়োগেৰে আকৰ্ষণ বৃদ্ধি কৰিবলৈ চেষ্টা কৰাৰ ফলস্বৰূপে এক অন্য ৰূপৰ সৃষ্টি হোৱা দেখিবলৈ পোৱা যায়। যেনে— "একেই কফি একেই চাহ, সকলোতে মাথো সোৱাদ জাগে ফ্ৰেছ আৰু তাজা আমূল গাখীৰেৰে তৈয়াৰী অমূল্য।"

৪। কিছুমান শব্দৰ ভুল প্ৰয়োগ দেখিবলৈ পোৱা যায়। যেনে—

ব্যক্তি > বেক্তি

শ্ৰদ্ধাঞ্জলি > চৰ্ধাঞ্জলি।

৫। কিছুমান শব্দৰ প্ৰয়োগত অৰ্থ বিভ্ৰান্তি দেখা পোৱা যায়। যেনে—

(ক) "অম্বুবাচী মেলাৰ প্ৰাকক্ষণত ভক্তগণৰ আগমণত কামাখ্যা ধাম মহাতীৰ্থলৈ পৰ্যবসিত হৈছে।" ইয়াত 'পৰ্যবসিত'ৰ ঠাইত পৰিণত হ'লেহে সঠিক অৰ্থ ফুটি উঠিব।

(খ) "দুৰ্বৃত্তৰ দলঙত অগ্নি সংযোগ।" এই বাক্যটোৰ গাঁথনিত থকা বিসংগতিৰ বাবে দলংখনৰ মালিক দুৰ্বৃত্ত যেন অৰ্থ প্ৰকাশ পাইছে। ইয়াৰ পৰিৱৰ্তে দুৰ্বৃত্তৰ দলে/দুৰ্বৃত্তই দলঙত অগ্নি সংযোগ কৰিলে বুলিলেহে শুদ্ধ অৰ্থ প্ৰকাশ পাব।

সামৰণি ঃ

বৈদ্যুতিন মাধ্যমত ব্যৱহৃত হোৱা অসমীয়া ভাষাৰ এইধৰণৰ ৰূপ পৰ্যবেক্ষণ কৰি ক'ব পাৰি যে, ভাষাটোক অবিকৃতভাৱে প্ৰচলন কৰিবলৈ পৰিহাৰ কৰিব লাগিব। কিয়নো বৈদ্যুতিন মাধ্যম সমাজৰ সকলো শ্ৰেণীৰ মানুহৰ মাজতে অতিকৈ জনপ্ৰিয়। এই মাধ্যমত পৰিৱেশন হোৱা অনুষ্ঠানৰাজি শিশুৰ পৰা প্ৰাপ্ত বয়স্ক তথা সমাজৰ প্ৰতিটো স্তৰৰ লোকে অতি বিশ্বাসযোগ্যভাৱে উপভোগ কৰে। ইয়াত প্ৰয়োগ হোৱা ভাষাৰ ৰূপটো তেওঁলোকে শুদ্ধ বুলিয়ে গণ্য কৰি আয়ত্ত কৰে। সেয়েহে এনে মাধ্যমবোৰত প্ৰয়োগ হোৱা ভাষাটো সদায় শুদ্ধ আৰু স্পষ্ট অৰ্থ প্ৰকাশক হোৱা দৰকাৰ। বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমৰ লগত জড়িত থকা ব্যক্তিসকল এই ক্ষেত্ৰত সচেতন হোৱাৰ প্ৰয়োজনীয়তা আছে। সমগ্ৰ বিশ্বৰ মানুহৰ আগত থিয় হৈ থকা এক বৃহৎ আনুষ্ঠানিক পটভূমিত মাতৃভাষাটো শুদ্ধ ৰূপত ব্যৱহাৰ কৰিব লাগিব। তেতিয়াহে ভাষাটোৱে সুকীয়া ৰূপে নিজস্ব স্বকীয়ত্ব আৰু ঐতিহ্য বহন কৰি প্ৰজন্মৰ পাছত প্ৰজন্মলৈ চহকী ভাষা ৰূপে স্বীকৃতি লাভ কৰি সুৰক্ষিত হৈ থাকিব। ❑

সহায়ক গ্ৰন্থপঞ্জী ঃ

গোস্বামী, যতীন্দ্ৰনাথ। মাতৃভাষা শিক্ষণ। গুৱাহাটী ঃ জ্যোতি প্ৰকাশন, ১৯৬৪। মুদ্ৰিত।

চট্টোপাধ্যায়, পাৰ্থ। তত্ত্ব আৰু প্ৰয়োগেৰে গণসংযোগ। গুৱাহাটী ঃ বীণা লাইব্ৰেৰী, ২০০৮। মুদ্ৰিত।

দুৱৰা, মৌচুমী দত্ত। ভাষা-সাহিত্য-সংস্কৃতিৰ বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন আৰু ব্যৱহাৰিক অৱলোকন। শিৱসাগৰ ঃ খোজ প্ৰকাশন, ২০১৭। মুদ্ৰিত।

নেওগ, মহেশ্বৰ। নিকা অসমীয়া ভাষা। গুৱাহাটী ঃ লয়ার্চ বুক ষ্টল, ১৯১০। মুদ্ৰিত।

বৰা, বিন্দুভূষণ। বাতৰিকাকত আৰু বৈদ্যুতিন সংবাদ মাধ্যমত অসমীয়া ভাষাৰ দুৰ্দশা। গৰীয়সী, (পৃ ৯০-৯২)। মুদ্ৰিত।

ভূঞা, স্মৃতিৰেখা। বৈদ্যুতিন মাধ্যমত ব্যৱহৃত অসমীয়া ভাষা। গৰীয়সী (পৃ ১৭-২০), ২০১২, জুন। মুদ্ৰিত।

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

লঘুত্রয়ীত প্রকৃতি ঃ এক অধ্যয়ন

অৰুণ শর্মা

সহকাৰী অধ্যাপক, সংস্কৃত বিভাগ
কটন বিশ্ববিদ্যালয়,
গুৱাহাটী-৭৮১০০১ (অসম)
ম'বাইল ঃ ৭০০২৮০১৮৮৫
ইমেইলঃ sarmaarun123@gmail.com

সাৰাংশ ঃ

দীপশিখা খ্যাত কবিকুল শিৰোমণি মহাকবি কালিদাস সংস্কৃত সাহিত্য আকাশৰ উজ্জ্বল নক্ষত্র। তেখেতে ৰচনা কৰা ৰঘুবংশম্ আৰু কুমাৰসম্ভৱম্— এই মহাকাব্য দুখন আৰু মেঘদূতম্ নামৰ খণ্ডকাব্যখনক একেলগে লঘুত্রয়ী বুলি কোৱা হয়। তেখেতে তেখেতৰ প্রতিখন ৰচনাতে বক্তব্য বিষয়ৰ উপৰি প্রকৃতিক এক নিখুঁত, নিভাঁজ ৰূপত প্রকাশ কৰিছে। কাৰণ হয়তো এয়াও হ'ব পাৰে সংস্কৃত আলংকাৰিকসকলৰ মতে মহাকাব্যত প্রকৃতিৰ উপাদানসমূহৰ বর্ণনা থকাটো কাম্য। প্রকৃতি জল, স্থল আৰু অন্তৰীক্ষৰ সমন্বয়। মহাকবিজনাৰ মতে প্রকৃতি আৰু মানুহ সুখ-দুঃখৰ সমভাগী, যিহেতু প্রাণী (চেতন) আৰু অপ্রাণী (অচেতন) মিলিয়ে প্রকৃতিৰাজ্য। ইয়াৰোপৰি প্রকৃতিসৃষ্ট খাদ্য গ্রহণ কৰিয়ে জীৱকূল জীয়াই থাকে। প্রকৃতিক বাদ দি কোনেও থাকিব নোৱাৰে। কুমাৰসম্ভৱমৰ প্রথম সর্গৰ হিমালয়ৰ বর্ণনা, তৃতীয় সর্গত বসন্তকালৰ বর্ণনা, ৰঘুবংশৰ চতুর্থ সর্গত শৰত ঋতুৰ বর্ণনা, ত্রয়োদশ সর্গৰ সমুদ্র বর্ণনা অতি হৃদয়াকর্ষক। মেঘদূতম্ নামৰ খণ্ডকাব্যখনৰ টীকাকাৰ মল্লিনাথৰ মতে ৰামায়ণত বর্ণিত সীতাৰ প্রতি ৰামৰ হনুমানৰ জৰিয়তে পঠোৱা বার্তাটোকে মনত ধাৰণ কৰি কালিদাসেও মেঘৰ জৰিয়তে যক্ষপ্রিয়ালৈ যক্ষৰ বার্তা প্রেৰণ কৰিছিল। নহ'লেনো মহাকবিজনাই নাজানেনে, ধোৱা, জ্যোতি, পানী আৰু বায়ুৰ সমষ্টি মেঘ অচেতন পদার্থ। অচেতন মেঘে চৈতন্যগুণযুক্ত যক্ষৰ বাতৰি কেনেদৰে নিব? ইয়াৰো যুক্তি দিছে— কামাতুৰজনে চেতন আৰু অচেতনৰ মাজত প্রভেদ বিচাৰি নাপায়। কামাসক্ত যক্ষৰ পত্নীলৈ পঠোৱা বাতৰিটো বাদ দিলে সমস্ত মেঘদূতখনত প্রকৃতি বর্ণনাভাগহে থাকি যায়। প্রকৃতি বর্ণনাত কালিদাস সিদ্ধহস্ত। প্রকৃতিৰ কবি কালিদাস।

বীজ শব্দ ঃ কালিদাস, লঘুত্রয়ী, ৰঘুবংশম্, কুমাৰসম্ভৱম্, মেঘদূতম, প্রকৃতি।

বিষয়বস্তুৰ আলোচনা ঃ

সংস্কৃত সাহিত্যত পাঁচখন শ্রেষ্ঠ মহাকাব্যক 'পঞ্চমহাকাব্যানি' বুলি কোৱা

হয়। ইয়াৰোপৰি কালিদাস প্ৰণীত মেঘদূতম্ নামৰ খণ্ডকাব্যখনো যদি সন্নিৱিষ্ট কৰা হয়, তেনেহ'লে এই ছয়খন কাব্যক বৃহত্ৰয়ী আৰু লঘুত্ৰয়ী নামে দুটা ভাগত পণ্ডিতসকলে ভাগ কৰিছে। বৃহত্ৰয়ীত অন্তৰ্ভূক্ত মহাকাব্য তিনিখন যথাক্ৰমে ভাৰৱিকৃত কিৰাতাৰ্জুনীয়ম্, মাঘপণ্ডিত বিৰচিত শিশুপালবধম্ আৰু শ্ৰীহৰ্ষ ৰচিত নৈষধচৰিতম্। তেনেদৰে লঘুত্ৰয়ী কাব্য তিনিখন সংস্কৃত সাহিত্য আকাশৰ নক্ষত্ৰ, কবিকুল শিৰোমণি, দীপশিখা খ্যাত মহাকবি কালিদাসে ৰচনা কৰিছে। উক্ত তিনিখন যথাক্ৰমে— ৰঘুবংশম্, কুমাৰসম্ভৱম্ আৰু মেঘদূতম্। তেখেতৰ এই কাব্য তিনিখনত মূল বক্তব্য বিষয়ৰ উপৰিও প্ৰকৃতি ৰাজ্যৰ এক নিখুঁত, নিভাঁজ বৰ্ণনা আগবঢ়াইছে। কবিগৰাকী প্ৰকৃতি বৰ্ণনাত সিদ্ধহস্ত। প্ৰকৃতি বৰ্ণনাখিনি বাদ দিলে কবিৰ বৰ্ণনা অসাৰুৱা, আধৰুৱা হ'ব। উদাহৰণস্বৰূপে মেঘদূতম্ নামৰ খণ্ডকাব্যখনৰ পৰা কুৱেৰৰ দ্বাৰা অভিশপ্ত, বিচ্ছেদ বেদনাৰে ব্যথিত যক্ষই মেঘৰ জৰিয়তে অলকাপুৰীত থকা তেওঁৰ নৱবিবাহিতা প্ৰিয়ালৈ পঠোৱা বাতৰিটো বাদ দিলে প্ৰকৃতিৰ বৰ্ণনাৰ বাহিৰে একো নাথাকে। তাকে নকৰি যদি বাতৰি পঠোৱাটোৱে কবিৰ একমাত্ৰ কাম্য বিষয় আছিল তেনেহ'লে তিনি-চাৰিটামান শ্লোকতে কাব্যখন সীমাবদ্ধ হ'লহেঁতেন। তেতিয়াহ'লে কাব্যখনে নিশ্চয় কাব্যত্ব হেৰুৱালেহেঁতেন। এতিয়া আন এটা প্ৰশ্ন হয় মহাকাব্য ৰচনা কৰোঁতে প্ৰকৃতি বৰ্ণনা কৰাটো অপৰিহাৰ্যনে? আলংকাৰিকসকলৰ মতে মহাকাব্য হ'বলৈ প্ৰকৃতিৰ বৰ্ণনা থকাটো বাধ্যতামূলক। বিশ্বনাথ কবিৰাজে সাহিত্য দৰ্পণৰ ষষ্ঠ পৰিচ্ছেদত মহাকাব্যৰ লক্ষণ নিৰূপণ কৰিবলৈ লিখিছে—

সন্ধ্যাসূৰ্যেন্দুৰজনী প্ৰদোষধ্বান্তবাসৰাঃ।
প্ৰাতৰ্মধ্যাহ্নমৃগয়াশৈলৰ্তুবনসাগৰাঃ।।

অৰ্থাৎ সন্ধ্যা-সূৰ্য-চন্দ্ৰ-ৰাতি-প্ৰভাত-মধ্যাহ্ন-মৃগয়া পৰ্বত বন-সমুদ্ৰ আদিৰ বৰ্ণনা মহাকাব্যৰ আৱশ্যকীয় উপাদান বা বৰ্ণনা কৰাটো বাধ্যতামূলক। কালিদাস প্ৰণীত প্ৰতিখন কাব্যই প্ৰকৃতিৰ কোলাতেই বৰ্ণিত হৈছে, সেয়েহে প্ৰতিখন ৰচনাতে প্ৰকৃতিয়ে মূৰ্ত ৰূপ প্ৰকাশ পাইছে। প্ৰকৃতি জল, স্থল আৰু অন্তৰীক্ষৰ সমষ্টি। ছয় ঋতু, বননি, গছ-গছনি, তৰু-লতা, বননিত বিচৰণ কৰা চৰাই-চিৰিকটি, হৰিণ ইত্যাদি, সূৰ্য, মেঘ, সমুদ্ৰ, নদ-নদী, সৰোবৰ, হ্ৰদ আদি জলাশয়, মুঠতে প্ৰাণী (চেতন), অপ্ৰাণী (অচেতন) সকলো মিলিয়ে প্ৰকৃতিৰাজ্য। কবিগৰাকীয়ে প্ৰকৃতিক নিজৰ কৰিলৈ জীৱন্ত ৰূপত প্ৰকাশ কৰিছে। তেখেতে প্ৰাণী-অপ্ৰাণীৰ মিলন-বিচ্ছেদৰ দুঃখ-বেদনাৰ জৰিয়তে মানুহৰ লগত প্ৰকৃতিৰ সম্বন্ধ কিমান গভীৰ তাকে বিস্তৃতভাৱে সুন্দৰকৈ প্ৰকাশ কৰিছে। গতিকে প্ৰকৃতিৰ কবি কালিদাস।

প্ৰকৃতিৰ কোলাতেই আমি জন্মিছোঁ, প্ৰকৃতিপ্ৰদত্ত বস্তু খাইছোঁ, প্ৰকৃতিৰ সামগ্ৰীকে ব্যৱহাৰ কৰিছোঁ। খাদ্য-শস্য উৎপন্ন হয় ৰৱষুণৰ পৰা। জগৎকাৰণ সূৰ্য ৰৱষুণৰ কাৰণ। সূৰ্যৰশ্মিৰ দ্বাৰা শোষিত ৰস (জলভাগ) ৰৱষুণৰূপে পৃথিৱীত পৰে। ৰৱষুণ পৰিলে পৃথিৱী উৰ্ৰৱা হয় ফলত খাদ্য-শস্য উৎপাদন হয়। প্ৰকৃতিজগততে শাক-পাচলি, ফলমূল আদি খাই মানুহে জীৱন নিৰ্বাহ কৰে। ঘাঁহ, গছ-পাত খাই গৰু-ছাগলী জীয়াই থাকে। প্ৰকাৰান্তৰে সকলো প্ৰাণীয়ে প্ৰকৃতিৰ কৃপাতহে বৰ্তি আছে। গতিকে প্ৰকৃতিৰ প্ৰতিও আমি সহৃদয় হৈ প্ৰকৃতিক সযতনে ৰখা উচিত। তেতিয়াহে উভয়কূলৰ ৰক্ষা হ'ব।

ৰঘুবংশৰ প্ৰথম সৰ্গত মহাৰাজ দিলীপ আৰু সুদক্ষিণা ৰথেৰে বশিষ্ঠাশ্ৰমৰ পিনে আহি থাকোঁতে পথৰ দুকাষে প্ৰকৃতিৰ অপৰূপ সৌন্দৰ্যৰ সমাৱেশ ঘটা দেখা পাইছিল। শালগছৰ নিৰ্যাসৰ গোন্ধেৰে আমোদিত সুখস্পৰ্শ বায়ু আৰু পৰাগৰেণু শোভিত অনুকূল বায়ু তেওঁলোক দুজনৰ সেৱাত নিয়োজিত হৈছিল।

সেব্যমানৌ সুখস্পৰ্শৈঃ শালনিৰ্যাসগন্ধিভিঃ।
পুষ্পৰেণুৎকিৰৈৰ্বাতৈৰাধৃতবনৰাজিভিঃ।।

ৰঘুবংশ-১/৩৮

ৰাজদম্পতীৰ ৰথৰ চকাৰ শব্দ শুনি বাৰিষাৰ আকাশত মেঘ আৰু বিদ্যুতৰ সংযোগ (মেঘগৰ্জন) বুলি ভাবি ম'ৰা চৰাইবোৰে ষড়জ সুৰেৰে মনোৰম কেকাৰৱ কৰিছিল।[১]

স্তম্ভবিহীন তোৰণৰ নিচিনা শ্ৰেণীবদ্ধ হাঁহবোৰৰ মাত শুনি ৰজা ৰাণীয়ে ওপৰলৈ চাইছিল। বাট এৰি ৰথলৈ চাই থকা হৰিণবোৰৰ চকুত ৰাজদম্পতীয়ে নিজৰ চকুৰ সাদৃশ্য দেখা পাইছিল। ৰজা-ৰাণীৰ অভিলাষ পূৰণৰ সংকেতবাহক মৃদু মলয়া অনুকুল দিশত প্ৰৱাহিত হৈছিল। প্ৰকৃতি মানুহৰ সহচৰ। বসন্ত পূৰ্ণিমাৰ ৰাতিৰ আকাশৰ চিত্ৰা নক্ষত্ৰ আৰু চন্দ্ৰৰ উপমাৰ দ্বাৰা উপমিত কৰি দিলীপৰ আশা পূৰণৰ ইংগিত বহন কৰিছিল।

কাপ্যভিখ্যা তসোৰাসীদ্ৰজতোঃ শুদ্ধবেষয়োঃ।
হিমনির্মুক্তর্যোগে চিত্রাচন্দ্রমসয়োৰিব।।

ৰঘুবংশ ১/৪৬

আশ্ৰমৰ হৰিণাবোৰে নীবাৰ শস্যৰ লোভত ঋষিপত্নীসকলক বাধা দিছিল। কি অপূৰ্ব প্ৰকৃতি বৰ্ণনা। গছৰ গুৰিৰ জলাধাৰৰ পৰা পানী খাবলৈ চৰাইবোৰে ৰৈ থকা বাবে মুনিকন্যাসকলে কাৰ্য অৰ্দ্ধসমাপ্ত কৰি এৰি গৈছিল। সূৰ্য অস্ত যোৱাত হৰিণাবোৰে ঘাহ পাগুলিছিল। সুৰভিৰ কন্যা নন্দিনীৰ দিলীপে সেৱা-শুশ্ৰূষা কৰা, মায়া সিংহৰ দ্বাৰা নন্দিনীক আক্ৰমণ, দিলীপে নিজৰ শৰীৰৰ দ্বাৰা নন্দিনীক ৰক্ষা কৰিব খোজা, মায়াময় সিংহৰ অন্তৰ্দ্ধান, দিলীপৰ প্ৰতি নন্দিনীৰ আশীৰ্বাদ প্ৰদান আদি কাৰ্য প্ৰকৃতিৰ মাজতে সম্পন্ন হৈছিল। ইয়াৰ পিছত দ্বিতীয় সৰ্গত দিলীপে আশ্ৰমলৈ প্ৰত্যাৱৰ্তন কৰোঁতে ক্ষুদ্ৰ জলাশয়ৰ পৰা উটি অহা বৰাহ, বাহ থকা গছবোৰলৈ মূৰ তুলি চাই থকা মতা চৰাই আৰু সেউজীয়া পথাৰত বিচৰণ কৰি থকা হৰিণাবোৰক অপলক দৃষ্টিৰে চাইছিল।

তেনেদৰে ৰঘুদিগ্বিজয় নামৰ চতুৰ্থ সৰ্গত ৰজা ৰঘুই দিগ্বিজয়ৰ বাবে যিহেতু শৰত কালতে যাত্ৰা কৰা প্ৰশস্ত, গতিকে শৰতকাল উপস্থিত হোৱাত উক্ত কাৰ্যভাগ প্ৰাৰম্ভ কৰিছিল। শৰত কালৰ বৰ্ণনা কৰিবলৈ কালিদাসে লিখিছে— সেই সময়ত পদুম ফুল সুশোভিত শৰতকাল দ্বিতীয় ৰাজলক্ষ্মীৰ দৰে উপস্থিত হ'ল। মেঘত পানী নথকা বাবে মেঘ অতিশয় পাতল হৈ সূৰ্যৰ কিৰণৰ পথ মুকলি কৰি দিছিল। সেই সময়ত সূৰ্যৰ কিৰণ আৰু ৰঘুৰ প্ৰতাপ একেলগে চৌদিশে বিয়পি পৰিল। শৰতকাল উপস্থিত হোৱাৰ লগে লগে ইন্দ্ৰই বৰ্ষাকালীন ধনু (ৰামধনু) সম্বৰণ কৰিলে আৰু ৰঘুই ধনু উদ্যত কৰিলে। শৰতকালে পদ্মৰূপ ছত্ৰ আৰু কহুৱা বনৰ পুষ্পৰূপ চোঁৱৰেৰে শোভিত হৈ যেন ৰঘুৰহে অনুকৰণ কৰিলে।[২] সকলোৱে শৰতকালৰ সৌন্দৰ্য উপভোগ কৰি আনন্দ লভিলে। ৰাজহংস, তাৰকাপুঞ্জ, ভেঁটফুল শোভিত সৰোবৰত ৰঘুৰ যশস্যা বিয়পি পৰিল।[৩] শালিধান ৰখীয়া নাৰীসকলে কুঁহিয়াৰ গছৰ ছাঁত বহি বাল্যকালৰ কাহিনীবোৰ চর্বিত-চর্বন কৰিলে।[৪] শৰতকালত নদ-নদী, সৰোবৰৰ পানীভাগ নির্মল হ'ল। মদোদ্ধত বিশাল ককুদ্‌বিশিষ্ট ষাঁড়গৰুবোৰে নদীৰ পাৰৰ মাটি খুঁচৰি যেন ৰঘুৰ বিক্ৰমৰ অনুকৰণ কৰিলে।[৫] সন্তপর্ণ ফুলৰ আঘাতত ৰঘুৰ খঙাল হাতীবোৰে মদক্ষৰণ কৰিব ধৰিলে। এই সময়ত বৰষুণ নথকা বাবে পানীৰ অভাৱত নদীবোৰ সূতৰাং আৰু পথবোৰ বোকাহীন হ'ল। শৰতৰ অপৰূপ সৌন্দৰ্য উপভোগ কৰি কৰি ৰঘুৱে দিগ্বিজয়ৰ বাবে বাধাহীনভাৱে গমন কৰিলে।

ৰঘুবংশ মহাকাব্যৰ ত্ৰয়োদশ সৰ্গত সমুদ্ৰৰ অপৰূপ নৈসৰ্গিক ৰূপৰ বৰ্ণনা কৰিছে। ভাৰত-মহাসাগৰক শৰতকালৰ নির্মল আকাশৰ লগত তুলনা কৰিছে। বিশাল সমুদ্ৰত থকা তিমি মাছ, হাতীৰ দৰে বিশালকায় জল-জন্তুসমূহ বড়বানল, অজগৰ সৰ্প আদিৰ নান্দনিক ৰূপ বৰ্ণনা কৰিছে। সাগৰৰ পাৰে পাৰে শাৰী শাৰীকৈ থকা তমাল গছত সুপক্ক ফলৰ থোকে কি অপূৰ্ব শোভা ধাৰণ কৰিছে। মহাকবিজনাই লিখিছে—

প্রাপ্তা মুহূর্তেন বিমানবেগাৎ
কূলং ফলাবর্জিতপূগমালম্। (ৰঘুবংশ- ১৩/১৭)

ত্ৰয়োদশ সৰ্গত বাইশ সংখ্যক শ্লোকৰ পৰা ৰাৱণে সীতাক হৰণ কৰি নিয়াৰ পিছত ৰামে সীতাক জন্মস্থানৰ পৰা ভাৰত মহাসাগৰৰ তীৰলৈ পত্নী সীতাক বিচাৰি ঘূৰি ফুৰোঁতে দেখা প্ৰাকৃতিক দৃশ্যবোৰ, বাৰিষাৰ সময়ত ৰামৰ মনত কেনে ভাবৰ উদয় হৈছিল সেই কথা, ৰামে ৰাৱণক বধ কৰি সীতাক উদ্ধাৰ কৰি পুষ্পক ৰথেৰে অযোধ্যালৈ

প্রত্যাৱর্তন কৰা সময়ত সীতাক কোৱা কথাৰ পৰা সহজে বুজিব পাৰি। ত্রয়োদশ সর্গৰ ২৬-২৯ শ্লোকত মাল্যবান পর্বত, ৩০-৩২ শ্লোক দুটাত পঞ্চবতী বন, ৪৭সংখ্যক শ্লোকত চিত্রকূট পর্বত, ৪৮ সংখ্যক শ্লোকত মন্দাকিনী নদী, ৫৩ সংখ্যক শ্লোকত শ্যাম বটৰ এক মনোমোহা বর্ণনা দাঙি ধৰিছে। ৫৪-৫৮ মুঠ পাঁচটা শ্লোকত গঙ্গা-যমুনাৰ যি বর্ণনা দাঙি ধৰিছে সেয়া বাস্তৱতো একেই। গতিকে ত্রয়োদশ সর্গতো সম্পূর্ণৰূপে প্রকৃতিৰহে বর্ণনা। প্রকৃতি বর্ণনাভাগ আঁতৰ কৰি দিলে সীতা আৰু ৰামৰ কথোপকথনখিনিহে থাকিব।

কুমাৰসম্ভৱৰ প্রথম সর্গৰ হিমালয়ৰ বর্ণনাই সকলোকে আকর্ষিত কৰে। হিমালয় পর্বতমালা বিভিন্ন ৰত্ন আৰু ঔষধি গছেৰে সমৃদ্ধ। ৰত্নৰ ভঁৰাল হোৱা হেতুকে হিমালয়ৰ সৌন্দর্য বৰফে ঢাকি ৰাখিব নোৱাৰে, যিদৰে অলেখ গুণৰ অধিকাৰী হোৱা বাবে চন্দ্রৰ কলংকই চন্দ্রৰ সৌন্দর্য ম্লান কৰিব নোৱাৰে।

অনন্তৰত্নপ্রভৱস্য যস্য হিমং
ন সৌভাগ্যবিলোপি জাতম্।
একো হি দোষো গুণসন্নিপাতে
নিমজ্জতীন্দোঃ কিৰণেস্বিবাঙ্কঃ।।

(কুমাৰসম্ভৱম্-১/৩)

হিমালয়ৰ শৃংগত থকা সিন্দুৰ গৈৰিকাদি ধাতুৰ পোহৰত মেঘমালাৰ ওপৰত প্রতিবিম্বিত হোৱাত যেন সমগ্র পর্বতখনৰ ওপৰত অকাল সন্ধ্যাৰ অপূর্ব সৌন্দর্য ধাৰণ কৰিছিল আৰু সেয়ে তাত থকা অপ্সৰাসকলে শৃংগাৰৰ (মৈথুন কার্য) সুযোগ লাভ কৰিছিল।[৬] হিমালয়ৰ মধ্যভাগত লাগি থকা মেঘমালাৰ ছাঁ সেৱন কৰি থকা সিদ্ধসকলে পুনৰায় বর্ষাপীড়িত হৈ ঠাণ্ডা আঁতৰাবলৈ সূর্যতাপযুক্ত শিখৰলৈ গৈছিল। হিমালয়ৰ গাত লাগি থকা গুহাত বায়ু প্রৱেশ কৰি ওলাই যোৱাত বাবে বাঁহীৰ সুৰৰ দৰে এটা স্বৰৰ সৃষ্টি হৈছিল। পর্বতৰ গুহাৰ ভিতৰত ঔষধি বৃক্ষৰ পৰা আপোনা-আপুনি পোহৰ নির্গত হৈছিল আৰু ইয়ে সপত্নীক বনবাসীসকলৰ মৈথুন কার্যৰ সময়ত তেলবিহীন চাকিৰ কাম কৰিছিল।[৭] এনে বর্ণনাই ৰসিক পাঠকৰ মনতো শৃংগাৰ ভাবৰ উদয় কৰে। হিমালয়ত বিচৰণ কৰি থকা বনৰীয়া হাতীবিলাকে দেৱদাৰু গছত গা খজুওৱাত এবিধ বগা আঠা ওলাইছিল। ইয়াৰ গোন্ধে সমগ্র পর্বতখনে সুগন্ধিত কৰি তুলিছিল। দিনত বাদুলীবিলাকে দেখা নাপায়। সিহঁতে দিনত হিমালয়ৰ গুহাত আশ্রয় লয়। ইয়াৰ যোগেদি কবিয়ে হিমালয়ৰ শ্রেষ্ঠত্ব প্রতিপন্ন কৰিব বিচাৰিছে, যিদৰে দুর্বল এজনে বলবান আন এজনৰ দ্বাৰা আক্রান্ত হ'লে অন্য এজন উচ্চবংশজাত সজ্জনৰ আশ্রয় গ্রহণ কৰিহে নিজক ৰক্ষা কৰে।

ক্ষুদ্রেহপি নূনং শৰণং প্রপন্নে
মমত্বমুচ্চৈঃশিৰসাং সতীৱ। (কুমাৰসম্ভৱ-১/১২)

চমৰী হৰিণবিলাকে যত্র-তত্র বিচৰণ কৰি হিমালয়ৰ শোভাবর্দ্ধন কৰিছিল। হিমালয়ৰ গুহাত কিন্নৰ আৰু কিন্নৰী যুৱতীসকলে মৈথুন ক্রীড়া কৰোঁতে যুৱতীসকলৰ শৰীৰত বস্ত্র নথকা বাবে উৎপন্ন হোৱা লাজ মেঘে নিবাৰণ কৰিছিল। মেঘে সেই সময়ত গুহাৰ মুখত লাগি থাকি যেন পর্দাৰহে কাম কৰিছিল। এনেকুৱা হৃদয়াকর্ষক বর্ণনাইনো কোন পাঠকক আকর্ষণ নকৰে?

তেনেদৰে কুমাৰসম্ভৱৰ তৃতীয় সর্গত বসন্ত কালৰ এক মনোমোহা বর্ণনা আগবঢ়াইছে। তাড়কাসুৰক বধৰ বাবে দেৱতাসকলে শিৱবীর্যসম্ভূত এক বীর্যবান পুত্র বিচাৰে। কিন্তু সেই সময়ত শিৱ হিমালয়ত তপস্যাৰত। শিৱক পার্বতীৰ প্রতি আকর্ষিত কৰিব পাৰে একমাত্র কামদেৱেহে। সেয়েহে ইন্দ্রই কামদেৱক উক্ত কার্যৰ বাবে প্রেৰিত কৰিবলৈ মাতিছিল। দেৱকার্য সাধনৰ বাবে ইন্দ্রৰ অনুৰোধ মতে কামদেৱ আৰু বসন্ত শিৱৰ আশ্রমত উপস্থিত হোৱাত সূর্যৰ গতি উত্তৰ দিশৰ পৰা দক্ষিণ দিশলৈ নিজে নিজে সলনি কৰিছিল আৰু সুন্দৰী নাৰীসকলৰ পাদপ্রহাৰ অবিহনে অশোক ফুল প্রস্ফুটিত হৈছিল—

অসুত সদ্যঃ কুসুমান্যশোকঃ
স্কন্ধাৎ প্রভৃত্যেৱ সপল্লৱানি।
পাদেন নাপেক্ষত সুন্দৰীণাং
সম্পর্কমাসিঞ্জিতনূপুৰেণ।। (কুমাৰসম্ভৱ ৩/২৬)

শিৱৰ আশ্রমৰ চাৰিওফালে বসন্ত আগমনৰ লগে লগে

গছে গছে কুঁহিপাত, ফলে-ফুলে জাতিস্কাৰ, প্রতিটো ফুলতে ভোমোৱা উপবিষ্ট হৈ কামদেৱ নামটোহে যেন অংকিত কৰিছিল। পলাশ ফুলৰ গোন্ধ নাথাকিলেও যেন ৰংটোৰ বাবেহে আকর্ষণীয় হয়। কাঁচিজোনৰ দৰে পলাশ ফুলক নখৰ লগত তুলনা কৰি কবিয়ে সমগ্র বননিখনকে নখৰ ক্ষত (দাগ)যুক্ত হৈছিল বুলি বর্ণনা কৰিছে।

সদ্যো বসন্তেন সমাগতানাং
নখক্ষতানীব বনস্থলীম্।। (কুমাৰসম্ভৱ ৩/২৯)

আমৰ ফুলত ভোমোৱা বহি যেন গুঞ্জনৰ ছলেৰে নায়িকাক কিবাকিবি কৈ কপালত তিলক আঁকি দিছিল। প্রাতঃকালীন সূর্যৰ ৰঙা ৰং আম্রপল্লবৰূপী ওঁঠত ৰং সানি দিছিল—

ৰাগেন বালারুণকোমলেন
চূতপ্রবালোষ্ঠমলঞ্চকাৰ। (কুমাৰসম্ভৱ ৩/৩০)

বনৰ প্রাণীকূলে বসন্তৰ আগমনৰ লগে লগে পৰস্পৰে পৰস্পৰক আলিংগন কৰিছিল। আমৰ মুকুল ভক্ষণ কৰা বাবে ৰক্তকণ্ঠযুক্ত মতা কুলিবিলাকে সুললিত মাতেৰে অভিমানিনী নাৰীসকলৰ অভিমান দূৰ কৰিছিল।[৮] কামদেৱৰ সৈতে ৰতিদেৱী তাত উপস্থিত হোৱাত স্থাবৰ জংগম সকলোৱে শৃংগাৰভাব প্রদর্শন কৰিছিল। প্রিয়া ভ্রমৰীৰ সৈতে প্রেমিক ভোমোৱাই একেটি পুষ্পৰূপ পাত্রত মৌ পান কৰিছিল। ক'লা বৰণৰ মৃগই স্পর্শসুখ অনুভৱ কৰি চকু মুদি থকা মাইকী মৃগীক শিঙেৰে গা খজুৱাই দিছিল।

মধুদ্বিৰেফঃ কুসুমৈকপাত্রে
পপৌ প্রিয়াং স্বামনুবর্ত্তমানঃ।
শৃঙ্গেণ চ স্পর্শনিমালিতাক্ষীং
মৃগীমকণ্ডুয়ত কৃষ্ণসাৰঃ।। (কুমাৰসম্ভৱ ৩/৩৬)

কামাসক্তা মাইকী হাতীটোৱে পদ্মৰেণুমিশ্রিত জল মাইকী হাতীজনীক ছটিয়াই দিছিল। চক্রবাক পক্ষীয়ে আধা চোবোৱা মৃণালৰ ঠাৰি প্রেয়সী চক্রবাকীক দি প্রেমভাব প্রদর্শন কৰিছিল।

অর্ধোপভুক্তেন বিসেন জায়াং
সম্ভাৱয়ামাস ৰথাঙ্গনামা।। (কুমাৰসম্ভৱ ৩/৩৭)

বৃক্ষবিলাকে শাখা (ডাল)ৰূপী বাহুৰে পুষ্পৰূপী স্তনযুক্তা প্রেয়সী লতাক আলিংগন কৰিছিল। কামদেৱে শিৱলৈ নিক্ষেপ কৰা শৰপাতো পাঁচবিধ ফুলেৰে নির্মিত আছিল। সেয়া ক্রমে অৰবিন্দ (বগা পদুম), অশোক, চূত (আম্রপুষ্প), নৱমল্লিকা আৰু নীলোৎপল (নীলা পদুম)।

মেঘদূতম্ নামৰ খণ্ডকাব্যখনৰো পৃষ্ঠাই পৃষ্ঠাই প্রকৃতি বর্ণনা কৰা দেখা যায়। মেঘদূত এখন প্রকৃতিপ্রধান খণ্ডকাব্য। খণ্ডকাব্য বা দূতকাব্যৰ প্রধান বৈশিষ্ট্য হ'ল দূতৰ জৰিয়তে বার্তা প্রেৰণ। বার্তাপ্রেৰণ নিমিত্ত মাত্র, প্রকৃতি বর্ণনাহে মুখ্য উদ্দেশ্য। এই কাব্যখনত বর্ষা ঋতুৰ অনুপম সৌন্দর্য বর্ণনা কৰা হৈছে কাৰণ মানুহৰ বা প্রাণীকূলৰ বর্ষা ঋতুৰ প্রতি এক অদম্য আকর্ষণ থাকে। বাৰিষা কালত যেতিয়া বৰষুণ হৈ থাকে তেতিয়া প্রিয়তমে প্রিয়তমাৰ প্রতি, তেনেদৰে প্রিয়তমাই প্রিয়তমৰ প্রতি বিশেষভাৱে আকর্ষিত হয়। দুয়ো দুয়োকে একেবাৰে ওচৰত পাব বিচাৰে।

মেঘালোকে ভৰতি সুখিনোহপ্যন্যথাবৃত্তি চেতঃ।
কণ্ঠাশ্লেষপ্রণয়িনি জনে কিং পুণর্দূৰসংস্থে।।
(পূর্বমেঘ- ৩)

মেঘ হ'ল ধোঁৱা, জ্যোতি, পানী আৰু বায়ুৰ সংমিশ্রণ।
ধূমজ্যোতিঃ সলিলমৰুতাং সন্নিপাত ক্ক মেঘঃ।

মেঘদূতত মেঘে বিয়োগৰ উদ্দীপক হিচাপে কার্য কৰিছে। যক্ষই কুৱেৰৰ দ্বাৰা অভিশপ্ত হৈ সুদীর্ঘ আঠমাহ সঙ্গীবিহীনভাৱে (নৱবিবাহিতা পত্নীকো লগ নোপোৱাকৈ) ৰামগিৰি পর্বতত অকলশৰীয়াকৈ অবিবাহিত কৰাৰ পিছত আহাৰ মাহৰ প্রথম দিনত পর্বতত লাগি থকা মেঘ এটুকুৰা দেখি তেওঁৰ প্রিয়াবিচ্ছেদজন্য দুঃখ দুগুণে বাঢ়িছিল। গতিকে মেঘ উদ্দীপক। গতিকে সেই মেঘকে যক্ষৰ কুশল বাতৰি অলকাপুৰীত থকা পত্নীলৈ বহন কৰি নিয়াৰ বাবে অনুৰোধ কৰিছিল। বেদনাকুল যক্ষই মেঘ চেতন নে অচেতন এই চিন্তা কৰিবলৈ জ্ঞানশূন্য হৈছিল (কামার্তা প্রকৃতিকৃপণাশ্চেতনাচেতনেষু)। সেয়ে মেঘক প্রার্থনা কৰিছিল— **'সন্দেশং মে হৰ ধনপতিক্রোধবিশ্লেষিতস্য'।**

যক্ষই অনুৰোধ কৰিলে বাৰু মেঘনো কিয় যাব? তেতিয়া যক্ষই মেঘক উচ্চ বংশজাত বুলি প্রশংসা কৰিছে— **'জাতং বংশে ভূবনবিদিতে পুষ্কৰাবর্তকানাম্।**[৯]' মেঘ শব্দটো যিহেতু অ-কাৰান্ত আৰু পুংলিঙ্গ গতিকে ৰাস্তাত মেঘে সুন্দৰী নায়িকা কিছুমান লগ পাব— এইদৰে তোষামোদৰ সুৰত লোভ দেখুৱাইছিল।

কালিদাসে ৰঘুবংশ মহাকাব্যৰ ত্রয়োদশ সর্গতো সীতাৰ অবর্তমানত গুহাৰ ভিতৰত ৰামৰ বাৰিষা কালত কেনে অৱস্থা হৈছিল তাৰ এক সবিস্তাৰ বর্ণনা কৰিছে। যক্ষৰ অনুৰোধ ৰক্ষা কৰি মেঘে ৰামগিৰিৰ পৰা অলকাপুৰীলৈ যাওঁতে যিবোৰ পর্বত-পাহাৰ, নদ-নদী অতিক্রম কৰিব লাগিব তাৰ এক সবিস্তাৰ মনোমোহা বর্ণনা দাঙি ধৰি পাঠকৰ মনত কৌতূহল সৃষ্টি কৰাৰ লগতে আকর্ষণো বৃদ্ধি কৰিছে। ৰামগিৰিৰ পৰা যাত্রা কৰিলে পথত যথাক্রমে মাল নামৰ ক্ষেত্র, আম্রকূট পর্বত, নর্মদা নদী, বেত্রবতী নদী, ৰাজধানী বিদিশা, বিন্ধ্যাচল পর্বত, নির্বিন্ধ্যা আৰু সিন্ধুনদী, মহাকাল মন্দিৰ, গম্ভীৰা নদী, দেৱগিৰি পর্বত, চর্মন্বতী নদী, ব্রহ্মাবর্ত্ত, কুৰুক্ষেত্র, সৰস্বতী নদী হিমালয় পর্বত য'ত কৈলাশ অৱস্থিত, সেয়া অতিক্রমিহে অলকাপুৰী পোৱা যায়। এই পর্বত, নদী, স্থানসমূহৰ এক মনোমোহা বর্ণনা দাঙি ধৰিব পৰা কবিজন হ'ল কালিদাস। কালিদাসৰ প্রকৃতিৰ প্রতি ভালপোৱা ভাব, মনোমোহা সজীৱ বর্ণনা আন কবিৰ ৰচনাত থকা চকুত নপৰে। প্রকৃতিৰ বর্ণনা প্রায় সকলো কবিৰ ৰচনাতে দেখা যায় কিন্তু কালিদাসৰ ৰচনাত প্রকৃতিয়ে নাটক, মহাকাব্যৰ চৰিত্রৰ নিচিনা আচৰণ কৰিছে।

উদাহৰণস্বৰূপে যক্ষই মেঘক আম্রকূট পর্বত পাব বুলি কৈ কৈছিল— হালধীয়া বৰণৰ পকা আম গছেৰে ভৰা আম্রকূট পর্বত পাই তুমি যেতিয়া শৃংগত বিশ্রাম ল'বা সেই সময়ত আম্রকূট পর্বতখন পৃথিৱী দেৱীৰ (চাৰিওফালে বগা মাজভাগ কলা) এটা স্তন যেন সুশোভিত হৈ উঠিব।[১০] মেঘদূতত যদিও বিপ্রলম্ভ শৃংগাৰ প্রধান তথাপি প্রকৃতি চিত্রণৰ সময়ত সম্ভোগ শৃংগাৰৰ বর্ণনা মুখ্য কৰা হৈছে। বিন্ধ্য পর্বতৰ কাষতে ৰেবা নদী পোৱা যায়। সেই নদীক প্রিয়তমৰ চৰণৰ কাষতে থকা ক্ষীণাঙ্গী নায়িকা যেন দেখা গৈছিল।

ৰেবাং দ্রক্ষ্যস্যুপলবিষয়ে বিন্ধ্যপাদে বিশীর্ণা
ভর্ক্তিচ্ছেদৈৰিব বিৰচিতাং ভূতিমঙ্গে গজস্য।

(পূর্বমেঘ- ১৯)

যদিও যক্ষই বিৰহ দুঃখ-বেদনা সহ্য কৰি আছে তথাপি মেঘে অকলাপুৰীলৈ যাওঁতে বেত্রবতী নদীৰ সৈতে সম্ভোগ সুখ অনুভৱ কৰিব পাৰিব বুলি কৈছিল।[১১] নীচৈ নামৰ পর্বত প্রস্ফূটিত ফুলেৰে শোভাবর্দ্ধন হৈ আছিল। কালিদাসে নির্বিন্ধ্যা নদীক সম্ভোগোৎকণ্ঠিতা নায়িকাৰ লগত তুলনা কৰি লিখিছে— মেঘৰূপ নায়কক দেখি নাভিপ্রদর্শন ৰূপ বিলাস প্রদর্শন কৰিব।

নির্বিন্ধ্যায়াঃ পথি ভৱ ৰসাভ্যন্তৰঃ সন্নিপত্য
স্ত্রীণামাদ্যং প্রণয়বচনং বিভ্রমো হি প্রিয়েষু।।

(পূর্বমেঘ-২৯)

লগে লগে কিন্তু কবিজনাই (পূর্বমেঘৰ-৩০ সংখ্যক শ্লোকত) বিৰহিনী নায়িকাৰ ৰূপত চিত্রিত কৰিছে। শিপ্রা নদীৰ বর্ণনাও ৰতিসম্ভোগতৃপ্ত নায়িকা এজনীৰ লগত তুলনা কৰি লিখিছে। গম্ভীৰা আৰু চর্মন্বতী নদীৰ বর্ণনা অপূর্ব। মেঘদূতত প্রকৃতিৰ মেঘ, নদী আৰু পর্বত এই তিনিটা প্রতিনিধি বর্ণিত হৈছে। এই তিনিটাৰ মাজেৰে প্রকৃতি সুন্দৰীৰ মোহিনী মায়া এনেদৰে সমাৱেশ ঘটাইছে যে সকলো পাঠকে আকৃষ্ট নোহোৱাকৈ থাকিব নোৱাৰে। কস্তুৰী মৃগৰ নাভিৰ সুগন্ধৰে সুগন্ধিত বৰফাবৃত শিলাখণ্ডৰ ওপৰত বপ্রক্রীড়া কৰি থকা মেঘক শিৱৰ বাহন বৃষভে শিঙেৰে মাটি খুঁচৰি থকা যেন দেখা গৈছিল।[১২]

মুঠতে মেঘদূতৰ পূর্বমেঘত দুটা প্রকৃতি চিত্রণে মনত সর্বাধিক আকৃষ্ট কৰে। প্রথমে পর্বতৰ ওপৰত মেঘ আৰু দ্বিতীয়তে নদীৰ ওপৰত মেঘ। প্রকৃতিৰ কবি কালিদাসে দুয়োটা চিত্রণে নিজৰ উৎকৃষ্ট কল্পনা আৰু চিন্তাৰে এনেকুৱা কৰি তুলিছে যেন প্রতিটো চিত্রণে বাৰে বাৰে নতুন ৰূপত প্রকাশ পাইছে।

উত্তৰ মেঘৰ দ্বিতীয় শ্লোকত ছয়টা ঋতুত প্রস্ফুটিত হোৱা ফুলৰ উল্লেখ কৰিছে— হাতত লীলা কমল (শৰত ঋতুত পোৱা যায়), চুলিত কুন্দ ফুল (যিটো হেমন্ত ঋতুত পোৱা যায়), মুখত লোধ্ৰ পুষ্পৰ পৰাগৰেণু (যিটো শীত কালত ফুলে), মূৰত নবীন কুৰৰক পুষ্প (যিটো বসন্ত কালত ফুলে) কাণত শিৰীষ (যিটো গ্রীষ্ম কালত পোৱা যায়) আৰু চুলিৰ মাজৰ সেওঁতাত কদম পুষ্প (যিটো বর্ষাকালত ফুলে)। অর্থাৎ অলকাপুৰীত ছয়টা ঋতুত ফুলা ফুল একে সময়তে পোৱা গৈছিল।

এইদৰে কবি কালিদাসৰ ৰচনাত প্রকৃতিৰ উপাদান নদীয়ে বিলাসিনী নায়িকাৰ ভাব প্রদর্শন কৰে, প্রেম নিবেদন কৰে, সম্ভোগ তৃপ্তা হৈ আনন্দ প্রকাশ কৰে। বতাহ বলি গছৰ পাতে নৃত্য কৰে, মেঘ দেখি ময়ূৰে নৃত্য কৰে ইত্যাদি ইত্যাদি। প্রকৃতিক লৈ কালিদাস ব্যস্ত; প্রকৃতিৰ প্রতি সজাগ। পৰিৱেশ সংৰক্ষণৰ বাবে বনস্পতিসমূহৰ ৰক্ষা বৃদ্ধি কৰিব লাগিব। আয়ুর্বেদীয় ঔষধ প্রায়ে গছ-গছনিৰ ছাল-পাতেৰে তৈয়াৰী।

বীর্যবন্ত্যৌষধ বিকাৰে সান্নিপাতিকে-কুমাৰসম্ভৱম্।

(২/৪৮)

ইমানেই নহয়, মহাকবিজনাৰ কালজয়ী নাটক অভিজ্ঞানশকুন্তলাত কন্বমুনিয়ে পালিতা কন্যা শকুন্তলাৰ পতিগৃহ গমনৰ সময়ত প্রকৃতিৰ গছ-লতা, হৰিণ আদিৰ পৰা অনুমতি লৈহে শকুন্তলাৰ বিদায় পর্ব সম্পন্ন কৰিছে। এনে উদাহৰণ আন কবিৰ ৰচনাত থকা চকুত নপৰে। ❑

সহায়ক গ্রন্থপঞ্জী আৰু প্রসঙ্গ ঃ

ভদ্র শ্রীসুধেন্দু মোহন ঃ ৰঘুবংশম্, চন্দ্র প্রকাশ, তৃতীয় প্রকাশ, জুন ২০০৪

Kale M R– The Raghuramsa

১. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ১/৩৯

২. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ৪/১৭

৩. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ৪/১৯

৪. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ৪/২০

৫. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ৪/২২

শাস্ত্রী জগদীশলাল— কুমাৰ সম্ভৱং মহাকাব্যম্, মোতীলাল বনাৰসীদাস, (১৯৭৫)

৬. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ১/৪

৭. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ১/১০

৮. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— ৩/৩২

Kale M R– The Meghaduta of Kālidasa– Motilal Banarasidass, 1987

৯. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— পূর্বমেঘ-৬

১০. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— পূর্বমেঘ-১৮

১১. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— পূর্বমেঘ-২৫

১২. প্রাগুক্ত গ্রন্থ— পূর্বমেঘ-৫৫

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

কাঞ্চন বৰুৱাৰ ‘উৰ্মিলাৰ চকুলো’ উপন্যাসৰ কলা-কৌশল ঃ এটি বিশ্লেষণাত্মক অধ্যয়ন

অজিৎ কলিতা

গৱেষক, অসমীয়া বিভাগ
কটন বিশ্ববিদ্যালয় তথা সহকাৰী অধ্যাপক, পূব কামৰূপ মহাবিদ্যালয়
ম'বাইল : ৯৮৫৯০১৪৯৮২
ই-মেইলঃ kalitaajit9@gmail.com

ড০ কল্পনা শর্মা কলিতা

সহযোগী অধ্যাপক, অসমীয়া বিভাগ
কটন বিশ্ববিদ্যালয়, পানবজাৰ, গুৱাহাটী-১
ম'বাইল ঃ ৯৮৬৪০৫৯১১৩

সংক্ষিপ্তসাৰ

উপন্যাস হৈছে একধৰণৰ শিল্পকলা। উপন্যাস সাহিত্যৰ শিথিলধৰ্মী ভাগ হোৱা বাবে তাৰ নির্দিষ্ট ৰচনাশৈলী, ৰীতি-নীতি নাথাকিলেও ই এক সচেতনধৰ্মী কলা। বিষয়বস্তুৰ লগত সংগতি ৰাখি লেখকে উপন্যাসৰ বিভিন্ন উপাদানত সৌন্দর্য খটুৰাই উপন্যাসৰ শৈল্পিক ভেটি নির্মাণ কৰে। ঔপন্যাসিক কাঞ্চন বৰুৱাৰ চীনা যুদ্ধৰ পটভূমিত ৰচিত *উৰ্মিলাৰ চকুলো* উপন্যাসখন বিষয়বস্তুৰ পিনৰ পৰা ব্যতিক্রমধৰ্মী আৰু বৈচিত্র্যময় উপন্যাস। আমাৰ গৱেষণা-পত্রত উপন্যাসখনত প্রয়োগ হোৱা কলা-কৌশল বিশ্লেষণ কৰি শৈল্পিক মূল্য বিচাৰ কৰি চোৱা হ'ব। উপন্যাসখনৰ ভাষা প্রয়োগৰ কৌশল, ইংগিতধৰ্মী বর্ণনা, উপস্থাপন ৰীতি, ব্যঞ্জনাধৰ্মী তথা আৱেদনময়ী ভাষা, প্রতীক, চিত্রকল্প, কাব্যিকতা, আলংকাৰিক ভাষা, সংঘাত আদি বিভিন্ন দিশসমূহ বিশ্লেষণ কৰি উপন্যাসখনৰ শৈল্পিক মান নিৰূপণ কৰাৰ প্রয়াস কৰা হৈছে।

বীজ শব্দ ঃ উপন্যাস, উৰ্মিলাৰ চকুলো, কলা-কৌশল, কাঞ্চন বৰুৱা, শৈল্পিক মূল্য।

০.০০ অৱতৰণিকা

উপন্যাস হৈছে সৃজনীশীল সাহিত্যৰ এটি অন্যতম বিভাগ। উপন্যাসত লেখকে মানৰ জীৱনৰ বিস্তৃত আৰু সামগ্রিক ৰূপ ফুটাই তোলে। উপন্যাস হ'ল মানুহৰ বাস্তৱ জীৱনক কল্পনাৰ সংমিশ্রণত কলাত্মকভাৱে অথচ কার্য-কাৰণ সম্পর্কৰে ঘটনাৰ বয়ন কৰি আটিলভাৱে দাঙি ধৰা এক শৈল্পিক কর্ম। লেখকে সচেতন বা অসচেতনভাৱে উপন্যাসত ভিন ভিন কলা-কৌশল প্রয়োগ কৰে। তেনে কলা-কৌশলৰ প্রতি পাঠকৰ সজাগতাই উপন্যাসৰ তাৎপর্য হৃদয়ংগম কৰাত সহায়ক হৈ পৰে আৰু কলা হিচাপে উপন্যাসৰ মূল্য বঢ়াই তোলে। উপন্যাসৰ কলা-কৌশল, বিষয়বস্তু আৰু আংগিকৰ সৈতে অঙ্গাঙ্গীভাৱে জড়িত হৈ থাকে। এই প্রসঙ্গত শৈলেন ভৰালীৰ মন্তব্য প্রণিধানযোগ্য ঃ

উপন্যাসৰ কৌশল উপন্যাসৰ বিষয়বস্তুৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰে। সাধাৰণতে গল্প আৰু কাহিনীৰ মাজত যি সম্পর্কৰ কথা কোৱা হৈছে, বিষয় আৰু আংগিকৰ

মাজতো সেই একে সম্পর্কই থাকে। হেন্ৰী জেম্ছে বিষয় আৰু কৌশলক বেজি আৰু সূতাৰে সৈতে ৰিজাইছে। দৰ্জীৰ কাৰণে বেজি আৰু সূতা— এই দুয়োটা বস্তু যিদৰে সমানে প্ৰয়োজনীয় আৰু এটা নহ'লে আনটো অচল হৈ পৰে, সেইদৰে, এখন ভাল উপন্যাসত বিষয় আৰু আংগিক— এই দুটাৰ মাজত ছিঙিব নোৱাৰা সম্পৰ্ক থাকে— এটাৰ পৰা আনটোক নিলগাই চাব নোৱাৰি। গতিকে, উপন্যাসৰ কৌশল বাহিৰৰপৰা আৰোপ কৰা এটা উপাদান নহয়। ই বিষয়বস্তুৰপৰা বিচ্ছিন্ন হ'ব নোৱাৰে, জীৱনৰ উপলব্ধি অথবা জীৱনসম্পৰ্কীয় দৃষ্টিভংগী দাঙি ধৰাৰ উপায় মাথোন। (১১-১২)

০.০১ অধ্যয়নৰ প্ৰাসঙ্গিকতা

কাঞ্চন বৰুৱাই চীন-ভাৰতৰ যুদ্ধৰ পটভূমিত *উৰ্মিলাৰ চকুলো* (১৯৮৮) উপন্যাসখন ৰচনা কৰে। যুদ্ধ বিষয়ক উপন্যাস হিচাপে অসমীয়া সাহিত্যত উপন্যাসখনৰ এটি বিশেষ মাত্ৰা আছে। অথচ উপন্যাস কলা হিচাপে *উৰ্মিলাৰ চকুলো* উপন্যাসৰ বিশ্লেষণ অদ্যাৱধি পৰিলক্ষিত হোৱা নাই। সেয়ে বিষয়টোৰ অধ্যয়নৰ যথেষ্ট প্ৰাসঙ্গিকতা দেখা যায়।

০.০২ অধ্যয়নৰ উদ্দেশ্য

আমাৰ গৱেষণাৰ প্ৰধান উদ্দেশ্য হৈছে—

❍ *উৰ্মিলাৰ চকুলো* উপন্যাসত প্ৰয়োগ হোৱা কলা-কৌশলসমূহ বিশ্লেষণ কৰি উপন্যাসখনৰ শৈল্পিক মূল্য নিৰ্ধাৰণ কৰা।

০.০৩ অধ্যয়নৰ পদ্ধতি আৰু সমল সংগ্ৰহ

গৱেষণা কৰ্মত বিশ্লেষণাত্মক পদ্ধতি প্ৰয়োগ কৰা হৈছে। গৱেষণা-কৰ্মত মুখ্য আৰু গৌণ দুয়ো প্ৰকাৰৰ সমল ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। এইক্ষেত্ৰত কাঞ্চন বৰুৱাৰ *উৰ্মিলাৰ চকুলো* (নৱম প্ৰকাশ, গুৱাহাটী ঃ জ্যোতি প্ৰকাশন, ২০১৬) উপন্যাস সমলৰ মুখ্য উৎস হিচাপে ব্যৱহৃত হৈছে। আকৌ গৌণ সমল হিচাপে উপন্যাসতত্ত্ব সম্পৰ্কীয় অসমীয়া গ্ৰন্থ কিছুমান লোৱা হৈছে।

১.০০ *উৰ্মিলাৰ চকুলো* উপন্যাসৰ কলা-কৌশল

ঔপন্যাসিক কাঞ্চন বৰুৱাই 'উৰ্মিলাৰ চকুলো' উপন্যাসখনৰ কাহিনী তৃতীয় পুৰুষত বৰ্ণনা কৰিছে। মূল কাহিনী বৰ্ণনামূলক হ'লেও লেখকে সংলাপৰ যোগেদিও ঘটনা আগবঢ়াই নিয়াত উপস্থাপনৰ আকৰ্ষণীয় গুণ বৃদ্ধি পাইছে। উদাহৰণস্বৰূপে, যুদ্ধক্ষেত্ৰত কৰ্তব্যৰত সৈনিক ৰজত আৰু ৰতনৰ কথোপকথনধৰ্মী সংলাপলৈ মন কৰিব পাৰি ঃ

"আহ্! ৰজত তই?'

'হুঁ, মই। কিন্তু কি হ'ল তোৰ? এনেকৈ থিয়ৈ থিয়ৈ চকু-কাণ মুদি কিহৰ সপোন দেখিছ?' ৰতনে সামান্য হাঁহি পৰম গাম্ভীৰ্যৰে উত্তৰ দিলে—

'সপোন নহয় অ'... শুনিছোঁ!'

'শুনিছ? কি শুনিছ? মৰ্টাৰ, মেশ্যিন্গানৰ শব্দ?'

'ওঁহো, মেশ্যিন্গান নহয়— শুনিছো গীত— দীঘলীয়া বিহুগীত...! (৮২)

চুটি চুটি অথচ চৰিত্ৰজ্ঞাপক সংলাপে কাহিনীৰ লগতে চৰিত্ৰকো তুলি ধৰিছে আৰু সংলাপৰ স্বাভাৱিকতা তথা নাট্যগুণধৰ্মিতা গুণ বৃদ্ধি কৰিছে। অৱশ্যে বহু ঠাইত সংলাপ বক্তৃতাধৰ্মী তথা দীঘল হোৱা বাবে ৰসভ! হৈছে আৰু স্বাভাৱিকতাও হেৰুৱাইছে। উদাহৰণস্বৰূপে আমি তলৰ সংলাপটোলৈ মন কৰিব পাৰোঁ ঃ

আজি অসমৰ দুৰ্দিন দেখি, আমাক এৰি সিহঁত গুচি গৈছে, কিন্তু যিদিনা আমাৰ সুদিন হ'ব— অসমৰ সুদিন হ'ব, সেইদিনা আকৌ সকলো এজন এজনকৈ ঘূৰি আহিব— ঘূৰি আহিব তাৰ ডাঙৰ ডাঙৰ বিষয়া, নতুন নতুন অফিচাৰ, নতুন নতুন ইঞ্জিনীয়াৰ।... ৰে'ল ষ্টেচনৰ মাষ্টৰ, পোষ্ট মাষ্টৰ, অফিচ, কাছাৰী, বেংকৰ কেৰাণীৰ পৰা জাহাজঘাটৰ কুলীটোলৈকে সকলো আকৌ ঘূৰি আহিব। সমগ্ৰ ভাৰতৰ সকলো ৰাজ্যৰপৰা, প্ৰতিটো চুকৰপৰা এটি এটিকৈ সিহঁত আকৌ ঘূৰি আহিব অসমলৈ। অসমক যে সিহঁতে ভাল পায়— অসমীয়াক যে সিহঁতে খু-উ-ব ভাল পায়। (৯৬)

অনা-অসমীয়া বহিৰাগতৰ কাৰ্যক সমালোচনা কৰি প্ৰায়বোৰ চৰিত্ৰই বহুবাৰ একেখিনি কথাই পুনৰাবৃত্তি কৰিছে। ফলস্বৰূপে, কলা হিচাপে এনে পৌনঃপৌণিক বৰ্ণনা শিল্পসন্মত হোৱা নাই। পাঠকক একেখিনি ভাবে বিৰক্ত কৰাৰ উপৰি নতুনত্বৰ অভাৱে ৰসভঙ্গ কৰে।

ঔপন্যাসিকে পৰিৱেশ-পৰিস্থিতিৰ বৰ্ণনাত প্ৰয়োজন অনুসৰি কাব্যিকতা আৰোপ কৰি ৰসঘন কৰি তুলিছে। তেনে বৰ্ণনাই প্ৰকৃতিৰ সৌন্দৰ্যক দাঙি ধৰাৰ লগতে

পৰিস্থিতিক তাৎপৰ্যপূৰ্ণ কৰি তুলি ধৰিছে। উদাহৰণস্বৰূপে, আমি নিম্নোক্ত বৰ্ণনালৈ মন কৰিব পাৰোঁ— "দূৰদিগন্তৰ অন্তহীন শুভ্ৰ বৰফৰ টিংবোৰৰ ওপৰত লাহে লাহে নামি অহা সন্ধিয়াৰ প্ৰথমচমকা ৰাঙলী পোহৰ পৰি চিক্‌মিক্ কৰি উঠিছে, ভাৰত সীমান্তৰ চিৰ মৌন আদিম প্ৰহৰী বিশাল হিমগিৰি...! ... তাৰ নামনিত বিৰাজ কৰিছে অৰুণাচলৰ সংখ্যাহীন সুপ্ত পৰ্বতমালা। তাৰ মাজতো অলেখ পৰ্বতচূড়াৰ টিঙে টিঙে জিলিকি উঠিছে বৰফৰ ৰাঙলী মুকুট। ... তাৰ বুকুত ওপঙি ফুৰিছে অসংখ্য সৰু সৰু একোচপৰা সেন্দূৰৰ আবিৰ সনা শুভ্ৰ ডাৱৰ... (১)।"

ঔপন্যাসিকে প্ৰতীকৰ ব্যৱহাৰেৰে সজোৱা কাব্যিক ব্যঞ্জনাময় ভাষাই পৰিস্থিতিক আকৰ্ষণীয়কৈ শিল্পসন্মতভাৱে দাঙি ধৰিবলৈ চেষ্টা কৰিছে। ভাৰতৰ কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ ৰাজনৈতিক নেতাৰ শোষণত সৰ্বস্ব হেৰুওৱা জনতাক 'বোবা শিল'ৰ প্ৰতীকেৰে দাঙি ধৰিছে— "এই চহৰৰ, সমগ্ৰ অসমৰ প্ৰাণহীন, উদ্যমহীন বোবা হৈ যোৱা শিলবোৰ কাটি কাটি, ধুনীয়া ধুনীয়া প্ৰতিমা গঢ়ি তুলিম, ... কিন্তু একো এটাই নহ'ল। একো এটাই কৰিব নোৱাৰিলোঁ। আৰম্ভ কৰাৰ কোনো সুযোগ-সুবিধাই নাপালোঁ। হাতৰ হাতুৰি, বটালি— সকলো আহিলাই স্পৰ্শৰ বাহিৰতে থাকি গ'ল— দেশজোৰা পাষাণী বোবা শিলবোৰ আজিও বোবা হৈয়ে ৰ'ল... (৯৪)।"

কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ অসমৰ প্ৰতি শোষণমূলক ঔপনিৱেশিক দৃষ্টি, ৰাজনৈতিক নেতা, বিষয়াৰ দুৰ্নীতি, অনৈতিক কাৰ্যত সমাজৰ নিম্নস্তৰলৈ সম্প্ৰসাৰিত হোৱা স্বাৰ্থপৰতাৰ কথা উপলব্ধি কৰি সমাজত মানৱীয় গুণৰ অভাৱ হোৱাৰ দিশটো প্ৰতীকাত্মকভাৱে লেখকে দাঙি ধৰিছে ঃ

অনন্ত ঃ "...চহৰৰ মাজত প্ৰকৃততে কি দেখিছ তই?"

মহিম ঃ সকলোতো আছে— গাড়ী, ঘোঁৰা, মটৰ, মানুহ।' (১৪)

অনন্ত ঃ '... সি মানুহ দেখিলে? হাৱে, ইডিয়ট, সেইবোৰ পাৰ্টছ-পাৰ্টছ।" পি ডব্লিউ ডি অফিচৰ আগত পৰি থকা সেই 'ষ্টোন-ক্ৰাচাৰ' মেশ্যিনটোৰ পাৰ্টছ সেইবোৰ, ... দেখাত মানুহৰ দৰে, কিন্তু মানুহ কোনো নহয়, তয়ো নহ'ৰ।" (১৫)

'ষ্টোন-ক্ৰাচাৰ'ত গুড়ি হ'বলৈ বাচি থকা বোবা শিলস্বৰূপ জনতাৰ ছবিৰে লেখকে শোষণৰ ছবিখন চিত্ৰধৰ্মিতাৰে শিল্পসন্মতভাৱে কম পৰিসৰত উপস্থাপন কৰিছে।

ঔপন্যাসিকে 'মেগ্‌নলীয়া' গছৰ চিত্ৰকল্পৰে উপন্যাসখনত কাহিনীৰ তাৎপৰ্য বঢ়োৱাৰ লগতে কলাত্মক গুণ বৃদ্ধি কৰিছে। কেবাবাৰো 'মেগ্‌নলীয়া' গছৰ চিত্ৰকল্প কাহিনীত ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে। 'মেগ্‌নলীয়া গ্ৰেণ্ডিফ্লোৰা' এবিধ ডাঠ, অতি উজ্বল প্ৰায় চিৰসেউজীয়া গছ। শিখাইঁতৰ ঘৰৰ চোতালত মাধৰী দেৰীয়ে এদিন শান্তি, চিৰসেউজ পৰিৱেশ বিচাৰি মেগনলীয়া গছডাল ৰুইছে। কিন্তু সদায় ছাঁ দিয়া সেই চিৰসেউজ গছডালতো পাত হালধীয়া হৈ ক্ৰমাৎ মৰহি অহা পাতৰ বৰ্ণনা দি ঔপন্যাসিকে শান্তিৰে থকা শিখাইঁতৰ ঘৰখন আৰু ভাৰতবৰ্ষলৈ দুৰ্যোগ তথা যুদ্ধৰ ভয়াৱহতা নামি অহা কথাৰ ইংগিত দাঙি ধৰিছে। চিৰসেউজ পৰিৱেশ বিচাৰি 'মেগ্‌নলীয়া' ৰুৱা মাধৰীৰ অকাল মৃত্যু আৰু শিখাই কেন্সাৰৰ দৰে ভয়াৱহ ৰোগত আক্ৰান্ত হোৱাত ঘৰখনলৈ অশান্তিৰ ঢল নামি আহিছে। ঠিক তেনেদৰে শান্তিত বসবাস কৰা শিখাইঁতৰ দৰে চহৰৰ বহু পৰিয়াললৈ যুদ্ধই ভয়াৱহ পৰিস্থিতি নমাই আনিছে। শান্তিত বসবাস কৰা সীমান্তৰ অধিবাসীয়ে চীনা আক্ৰমণৰ বাবে জীয়াতু ভুগি নামনিলৈ পলাই আহিবলগীয়া হৈছে। সেয়ে উপন্যাসখনত মেগ্‌নলীয়া গছৰ চিত্ৰকল্পই তাৎপৰ্যপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিছে।

শিখাই কেন্সাৰত ভোগা কথাই চৰিত্ৰটোৰ শাৰীৰিক ব্যাধিক বুজালেও সেই ৰোগৰ উল্লেখে উপন্যাসখনত অন্য এক গভীৰ তাৎপৰ্যও বহন কৰিছে। দুৰ্নীতি-ভ্ৰষ্টাচাৰত লিপ্ত হৈ যুদ্ধৰ সময়তো টকাৰ মোহত অন্ধ হোৱা মহিম, চৰ্জু প্ৰসাদৰ দৰে ভাৰতীয়ক কেন্সাৰ ৰোগীৰ দৰে ব্যাধিগ্ৰস্ত হিচাপে দাঙি ধৰি ভাৰতবৰ্ষক সেই ৰোগে বিপদৰ মুখলৈ ঠেলি দিয়াৰ কথা লেখকে দাঙি ধৰিছে — "কেন্সাৰ? কেন্সাৰ শিখাৰ নহয়— কেন্সাৰ হৈছে তোমাৰ— কেন্সাৰ হৈছে চৰ্জু প্ৰসাদৰ— কেন্সাৰ হৈছে তোমালোকৰ নিচিনা লক্ষ লক্ষ নৰাধম কালসাপক বুকুৰ গাখীৰ খুৱাই প্ৰতিপালন কৰা সমগ্ৰ ভাৰতবৰ্ষৰ... (৫১)।" দুৰ্নীতিত নিমজ্জিত ভাৰতবৰ্ষৰ অৱস্থা কেন্সাৰৰ দৰে বেমাৰৰ উল্লেখেৰে কৌশলগতভাৱে দাঙি ধৰি লেখকে চিত্ৰধৰ্মিতা গুণ আৰোপ কৰিছে।

লেখকে কেন্সাৰ ৰোগীৰ যন্ত্ৰণাময়, মৃত্যুমুখী ৰূপেৰে দুৰ্নীতিগ্ৰস্ত ভাৰতৰ ভৱিষ্যৎ মৰ্মস্পৰ্শীভাৱে অংকণ কৰিছে।

তেনেদৰে 'হুইল চেয়াৰ'ৰ প্ৰসঙ্গইও কাহিনীত আন এটি তাৎপৰ্য প্ৰদান কৰিছে। ৰোগগ্ৰস্তা শিখাই 'হুইল চেয়াৰ'ত বহি চহৰত যুদ্ধৰ প্ৰতিক্ৰিয়া চাই আৰু শুনি থকাৰ বাহিৰে মনত সমাজ-সেৱাৰ গভীৰ ইচ্ছা থকা স্বত্বেও একো কৰিব পৰা নাই। অসহায় হৈ সীমান্তৰ পিনে চাই চাই গভীৰ নিৰাশাৰে কেৱল অপেক্ষা কৰিছে। 'হুইল চেয়াৰ'ত বহি শিখা নিষ্ক্ৰিয় (inactive) হৈ থকাৰ দৰে ব'মডিলাৰ পতনৰ পাছত ভাৰত চৰকাৰেও একপ্ৰকাৰ অসহায় হৈ অসমৰ অনিশ্চিত ভৱিষ্যতলৈ চাই থাকে। জৱাহৰলাল নেহৰুৰ অসহায় উক্তি— '... my heart goes out for the people of Assam' -এ সেই কথা প্ৰকট কৰি তুলিছে। উপন্যাসখনত ভাৰত চৰকাৰৰ ঔপনিৱেশিক দৃষ্টিভংগী আৰু অসমৰ প্ৰতি দায়িত্বহীন মনোভাবক তীব্ৰভাৱে সমালোচনা কৰা হৈছে আৰু 'হুইল চেয়াৰ'ৰ প্ৰসঙ্গই ভাৰত চৰকাৰৰ নিষ্ক্ৰিয়তাক তাৎপৰ্যপূৰ্ণভাৱে দাঙি ধৰিছে। ৰোগগ্ৰস্ত শিখাৰ দৰে ভাৰত মাতৃও দুৰ্নীতিগ্ৰস্ত নেতা-বিষয়াৰ বাবে ব্যাধিগ্ৰস্ত। তেনে ব্যাধিগ্ৰস্ত মানুহে অসহায় হৈ চাই থকাৰ বাহিৰে সক্ৰিয়তাৰে সহায়-সাহায্য আগবঢ়াব নোৱাৰে। শিখা আৰু ভাৰত-মাতাৰ অসহায়বোধক 'হুইল চেয়াৰে' কলাত্মকভাৱে তুলি ধৰিছে আৰু উপন্যাসৰ শিল্পগুণ ই বঢ়াই আকৰ্ষণীয় কৰি তুলিছে।

উপন্যাসখনৰ ঘাই বিষয় চীনা যুদ্ধৰ সময়তো ভাৰতবৰ্ষৰ কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰ আৰু বহিৰাগত অনা-অসমীয়াৰ অসমৰ প্ৰতি উদাসীন, ঔপনিবেশিক দৃষ্টিভংগীক লেখকে প্ৰতীকাত্মক শিৰোনামেৰে মৰ্মস্পৰ্শীভাৱে মহাকাব্যৰ চৰিত্ৰ উৰ্মিলাৰে দাঙি ধৰিছে। ঔপন্যাসিকে 'মোৰ কথা' শিতানত সেই দিশটোৰ সম্পৰ্কত কৈছে— "মহাকাব্য ৰামায়ণৰ উপেক্ষিতা কৰুণ চৰিত্ৰ উৰ্মিলাৰ পৰিৱৰ্তে এই উপন্যাসত স্থান লৈছে আন এগৰাকী উৰ্মিলাইহে। কাহিনীৰ উপেক্ষিতা উৰ্মিলা পাঠকৰ বোধগম্য হ'লেই আমাৰ শ্ৰম সাৰ্থক হ'ব (পৃষ্ঠা অনুল্লেখিত)।" মহাকাব্য ৰামায়ণত লক্ষ্মণৰ দ্বাৰা অৱহেলিতা, উপেক্ষিতা নাৰী উৰ্মিলাৰ দুখ, বেদনাৰ প্ৰতীকেৰে উপন্যাসখনত উপেক্ষিত, অৱহেলিত অসমক কলাত্মকভাৱে দাঙি ধৰিছে। উপন্যাসৰ কাহিনীৰ উপেক্ষিত উৰ্মিলা অসম বুলি চৰিত্ৰৰ সংলাপে স্পষ্টভাৱে তুলি ধৰিছে— "... এবাৰ নাভাবিলে, এবাৰ অনুভৱ নকৰিলে এই অৱহেলিত, অভিশপ্ত, সকলো ক্ষেত্ৰতে সদায় পিছপৰি থকা অসমৰ অন্তৰৰ নীৰৱ মৰ্মবেদনাৰ কথা (২৯)।"

যুদ্ধই সমাজ-জীৱনলৈ নমাই অনা ধ্বংসাত্মক দিশক কলাত্মকভাৱে ঔপন্যাসিকে দাঙি ধৰিবলৈ বহুবাৰ সন্ধিয়া, ডুবা বেলি, ৰাঙলী পোহৰ আদিৰ প্ৰসঙ্গ উত্থাপন কৰিছে। উপন্যাসখনৰ আৰম্ভণিয়েই হৈছে চিৰদিন ভাৰতৰ উত্তৰ সীমান্ত ৰক্ষা কৰি থকা হিমালয় আৰু তাৰ শান্তিপূৰ্ণ পৰিৱেশলৈ নামি অহা যুদ্ধৰ ভয়াৱহতাৰ ইংগিতধৰ্মী বৰ্ণনাৰে— "দূৰদিগন্তৰ অন্তহীন শুভ্ৰ বৰফৰ টিংবোৰৰ ওপৰত লাহে লাহে নামি অহা সন্ধিয়াৰ প্ৰথমচমকা ৰাঙলী পোহৰ পৰি চিক্‌মিক্ কৰি উঠিছে, ভাৰত সীমান্তৰ চিৰ মৌন আদিম প্ৰহৰী বিশাল হিমগিৰি...।" ... বৰফৰ ৰাঙলী মুকুট... সেন্দূৰৰ আবিৰ সনা শুভ্ৰ ডাৰৰ... (১)।"

নামি অহা সন্ধিয়াৰ এন্ধাৰত ঘৰ-দুৱাৰ, পথাৰ— সকলো অস্পষ্ট হৈ যোৱাৰ দৰে চীনা যুদ্ধৰ বাবে ব্যক্তি আৰু সমাজ জীৱনলৈ অহা এন্ধাৰৰূপী দুখক ই গভীৰ কৰি তুলিছে। উপন্যাসখনত প্ৰথম অধ্যায়, দ্বিতীয় অধ্যায়ৰ ২য় খণ্ড, ষষ্ঠ অধ্যায়ৰ ১ম খণ্ড, চতুৰ্থ খণ্ড, সপ্তম অধ্যায় আৰু সামৰণি সন্ধিয়াৰ বৰ্ণনা, ডুবন্ত ৰঙা বেলি, ৰাঙলী আকাশেৰে দাঙি ধৰা হৈছে। উদাহৰণস্বৰূপে, দুটামান বৰ্ণনালৈ আমি মন কৰিব পাৰোঁ ঃ

(১) "বুঢ়া লুইতৰ বুকুত ডুবি যাব খোজা অস্তমিত সূৰুযৰ পোহৰত চৌদিশ ৰাঙলী হৈ উঠিছে (৩৭) (প্ৰথম অধ্যায়)।"

(২) "গধূলিৰ পাতল অস্পষ্ট আন্ধাৰবোৰ সময় যোৱাৰ লগে লগে চৌদিশ ডাঠ আৱৰণৰ মাজত ঢাক খাই যায় (৯১) (ষষ্ঠ অধ্যায়, ১ম খণ্ড)।"

(৩) "পশ্চিমৰ আকাশখনত বিয়পি থকা পাতল ডাৰৰৰ বুকুত, লাহে লাহে ডুবি যায় বেলিটো। অদ্ভুতভাৱে সি ৰঙা হৈ উঠে। তাৰ লগতে ৰঙা হৈ উঠে চাৰিওফালৰ ঘৰ-দুৱাৰ, গছ-গছনি সকলো।" (১০২) (ষষ্ঠ অধ্যায়, ৪র্থ খণ্ড)

চৰিত্ৰৰ মানসিক অৱস্থাক তুলি ধৰিবলৈও লেখকে বতৰৰ বৰ্ণনাৰ সহায় লৈছে। শিখাৰ মনলৈ নামি অহা গভীৰ হতাশা-নিৰাশাক সন্ধিয়াৰ ডুবন্ত বেলি আৰু আন্ধাৰে গ্ৰাস কৰা পথাৰ, ঘৰ-দুৱাৰৰ ছবিৰে ইংগিতেৰে কলাত্মকভাৱে ফুটাই তোলা হৈছে— "বেলি মাৰ যায়। চোতালৰ 'মেগনলীয়া' গছজোপাৰ আগত পৰি থকা

ৰাঙলী পোহৰবোৰ লাহে লাহে নাইকিয়া হৈ আহিল। পাতল ক'লা কাপোৰ এখনেৰে ঢাকি দিয়াৰ দৰেই, নামি অহা আন্ধাৰবোৰৰ মাজত, অলপ অলপকৈ ঢাক খাই যায় সন্মুখৰ পথাৰখন, ওচৰৰ ঘৰ-বাৰীবোৰ, তাৰ পাছত গোটেই চহৰখন। মাথোঁ খন্তেকলৈ বেলিটোৰ শেষৰ চমক ৰঙা পোহৰ স্থিৰ হৈ ৰয়গৈ সীমান্তৰ শিখৰত।" (১০৩) (সপ্তম অধ্যায়) ঠিক তেনেদৰে শিখাৰ মনৰ প্ৰসন্ন অৱস্থাক মুকলি নীলা আকাশৰ ছবিৰে দাঙি ধৰিছে। ডাৱৰহীন মুক্ত নীলা আকাশ, পু�ৰাৰ ৰ'দত চৌদিশ উজ্বল হৈ উঠাৰ বৰ্ণনাৰে চতুৰ্থ অধ্যায়ৰ তয় খণ্ড আৰম্ভ হৈছে। ইয়াত ভায়েক মণিৰ সৈতে শিখাৰ সান্নিধ্যৰ মধুৰ আনন্দ দাঙি ধৰি মনৰ প্ৰফুল্ল অৱস্থাক তুলি ধৰা হৈছে। তেনেদৰে ষষ্ঠ অধ্যায়ৰ ২য় খণ্ডতো মুকলি আকাশৰ চিত্ৰৰে চৰিত্ৰৰ মানসিক অৱস্থাক তুলি ধৰা হৈছে।

উপন্যাসখনত ইংগিতধৰ্মী আৰু ব্যঙ্গাত্মক ভাষাৰ প্ৰয়োগ হোৱাত কলাত্মক গুণ বৃদ্ধি পাইছে। কেন্সাৰত আক্ৰান্ত শিখাৰ ক্ৰমাৎ মৃত্যুমুখী গতি আৰু যুদ্ধৰ তাণ্ডৱত দীপাহঁতৰ মন ভাৰাক্ৰান্ত হোৱা অৱস্থা, পৰিস্থিতিক ইংগিতপূৰ্ণ ভাষাৰে লেখকে দাঙি ধৰিছে— "উপায়হীন হৈ মণিয়ে অকলেই শিখাৰ ওচৰত বিদায় ল'বলৈ ঘৰৰ ভিতৰলৈ লাহেকৈ সোমাই যায়। দীপা এবাৰ সেইফালে চাই এখোজ-দুখোজ কৰি চোতালৰ মাজত আহি ৰ'লহি। তাৰ পাছত এবাৰ গছজোপাৰ ওপৰত ক্ৰমাৎ মৰহি অহা ডাঙৰ 'মেগ্‌নলীয়া' পাহলৈ একেথৰে খন্তেক চাই থাকে। লাহে লাহে তাই চকু ঘূৰাই আনে। ... দীপাৰ চকুৰ দৃষ্টি স্থিৰ হৈ ৰৈ যায় দূৰ সীমান্তৰ অস্পষ্ট হাবিৰ বুকুত...।" (৭৪)

ভাৰত চৰকাৰ আৰু বহিৰাগত অনা-অসমীয়াৰ সমালোচনাত ঔপন্যাসিকে ব্যঙ্গাত্মক ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিছেঃ

"... সেইবোৰ এৰোপ্লেন্ চীনাৰ নহয় অ'...।

'আমাৰ, আমাৰ! এই মহান ভাৰতবৰ্ষৰ।

... ভাৰতৰ তৈলক্ষেত্ৰ ডিগবৈ, দুলীয়াজান, মৰাণত কাম কৰিবলৈ অহা অসমৰ বাহিৰৰ সু-সন্তানসকলক ... কঢ়িয়াই নিছে... (৯৯)।"

ভাৰতৰ ৰাজধানীৰ অতি আধুনিকা ৰাইফল ক্লাবৰ ভদ্ৰ মহিলাৰ কাৰ্যকলাপক 'চাৰ্কাছ' শব্দৰে দাঙি ধৰি বিজতৰীয়া সংস্কৃতিত মোহগ্ৰস্ত ভাৰতীয় আধুনিকা মহিলাক ব্যঙ্গাত্মকভাৱে তুলি ধৰা হৈছে— "তেৰাসবৰতো দৈনন্দিন ৰুটিনখনেই সম্পূৰ্ণ বেলেগ ধৰণৰ... (৬৮)।"

ঊৰ্মিলাৰ চকুলো উপন্যাসত ৰাজনৈতিক বক্তব্য প্ৰকাশত মাজে মাজে বক্তব্য অস্পষ্ট কৰি ইংগিতেৰে দাঙি ধৰাত বক্তব্য বিষয় পৰিষ্কাৰকৈ ফুটি উঠা নাই। সেই কথাই উপন্যাসখনৰ কলাত্মক সৌন্দৰ্য লাঘৱ কৰিছে। উদাহৰণস্বৰূপে, কামাঠৰ বক্তব্যলৈ মন কৰিব পাৰোঁ— "মই জানো দোষী কোন? মই জানো আমাৰ আজিৰ এই বিপৰ্যয়ৰ কাৰণে প্ৰকৃত দোষী কোন? ... ভাৰতৰ ন-জোৱানৰ কিহৰ অভাৱ আছিল? সাহস, ত্যাগ, কষ্টসহিষ্ণুতা, বুদ্ধি কি নাছিল আমাৰ? তথাপি কিয় ...? কিয় (৮৭-৮৮)?" কামাঠে চীন-ভাৰতৰ যুদ্ধত ভাৰতৰ বিপৰ্যয়ৰ বাবে ভাৰতীয় সৈনিকক দোষাৰোপ নকৰি ইংগিতেৰে ভাৰতীয় ৰাজনীতিবিদ আৰু সামৰিক বিষয়াক দোষী সাব্যস্ত কৰিছে। সেই কথা শান্তনুৱেও ইংগিতেৰে আভাস দিছে— "কাৰ দোষত কি হ'ল, কোন অকৰ্মণ্যৰ মূল্যহীন ব্যৰ্থ যুদ্ধ নীতিৰ ফলত সমূহীয়াভাৱে আমাৰ এই গতি হ'ল তাক পাহৰি যোৱা কামাঠ (৮৮)।" কিন্তু এনেধৰণৰ অস্পষ্টতাই উপন্যাসখনৰ শিল্পসন্মত মান লাঘৱ কৰিছে।

ঔপন্যাসিকৰ বৰ্ণনাৰ দুই-এঠাইত তথ্যৰ বিভ্ৰান্তি ফুটি উঠাত সেয়া ৰসভংগৰ কাৰণ হৈ উঠিছে। শিখা আৰু শান্তনুৰ বিবাহ ব'হাগত ঠিক হোৱা বুলি কৈ পাছত এঠাইত আকৌ মাঘ মাহত নিৰ্ধাৰিত হোৱাৰ বৰ্ণনাই পাঠকক আমনি কৰে ঃ

'... ব'হাগলৈনো আৰু কেইটা দিন আছে? '

'ব'হাগলৈ?'

'... তই সোনকালে ভাল হৈ নুঠিলে শান্তনু ককাইদেউৰ লগত তোৰ বিয়াত যে আমি আনন্দই কৰিব নোৱাৰিম।' (৬৬)

'... কথা কৈ কৈ শান্তনু অন্যমনস্ক হৈ যায়। পাহৰিব খুজিও পাহৰিব নোৱাৰে শিখাৰ লগত নিজৰ সংসাৰখনৰ পাতনি মেলাৰ দিনটোও যে এই মাঘতেই আছিল!" (৮৫-৮৬)

চীন-ভাৰতৰ যুদ্ধত ভাৰত চৰকাৰ আৰু অনা-অসমীয়া বহিৰাগতৰ অসমৰ প্ৰতি উদাসীন আৰু পলায়নবাদী মনোভাৱৰ কথা মৰ্মে মৰ্মে অনুভৱ কৰা শিখাৰ মানসিক অৱস্থাৰ চিত্ৰণত ঔপন্যাসিকে সপোনৰ সহায় লৈছে। সেই সপোনে শিখাৰ অৱচেতন মনত গভীৰভাৱে প্ৰভাৱ

পেলোৱা উপৰিউক্ত ঘটনাৰ আভাস দাঙি ধৰাৰ লগতে বহিৰাগত অনা-অসমীয়া তথা অসমীয়াৰ জাতীয় চৰিত্রক কলাত্মকভাৱে তুলি ধৰিছে। অসমীয়া জাতিৰ সৰলতা, অতিথিপৰায়ণতাৰ বিপৰীতে অনা-অসমীয়াৰ ঔপনিৱেশিক চৰিত্রক শিল্পসন্মতভাৱে দাঙি ধৰাত উপন্যাসৰ কলাত্মক গুণ বৃদ্ধি পাইছে ঃ

দেখিছিলোঁ, আমাৰ এই অতি আপোন লুইতৰ পাৰৰ কোমল মাটিৰে গঢ়া এটি জীৱন্ত শিশুক ! অকলে অকলেই নৈৰ পাৰে পাৰে মনৰ আনন্দত ওমলি ফুৰিছিল। এবাৰ সি হঠাতেই দেখিলে, লাহে লাহে বহু দূৰৈৰপৰা এটা - দুটাকৈ উৰি আহিছে ৰং-বিৰঙৰ অলেখ পখিলা, অলেখ ধুনীয়া ধুনীয়া ৰঙা, নীলা, হালধীয়া চৰাইৰ জাক। সিহঁতৰ কল কাকলিত নতুন ঠাইৰ নতুন জীৱনৰ মাদকতা— নতুন আশাৰ গীত ! সেই শিশুটোৱে হঠাৎ নতুন নতুন সঙ্গী পাই আনন্দত হাঁহি উঠে। অন্তৰৰ নিঃস্বার্থ মৰম-চেনেহ যাচে। বিধে বিধে বহুত বহুত বস্তু খাবলৈ দিয়ে...। ... সেইবোৰ কৰিয়েই আনন্দত বিভোৰ হৈ থকা শিশুটিয়ে কিন্তু কোনোবা এটা অশুভ মুহূর্তত হঠাৎ উপলব্ধি কৰে, অলপ অলপকৈ সেই ৰং-বিৰঙৰ চৰাই, পখিলাবোৰ ক্রমাৎ ৰূপান্তৰিত হৈ গৈছে কিছুমান ক'লা ক'লা ধূর্ত কাউৰী-শগুণলৈ। তাকে দেখি শিশুটোৱে ভয় খাই আতংকত চিঞৰি উঠাৰ লগে লগে ময়ো সাৰ পাই গ'লোঁ...। (৫৪)

ঔপন্যাসিকে পৰিস্থিতি বা পৰিৱেশৰ বর্ণনাত স্বাভাৱিকতা ফুটাই তুলিবলৈ চেষ্টা কৰিছে যদিও দুই-এঠাইত অলৌকিক পৰিৱেশৰ বর্ণনাই পৰিস্থিতিৰ স্বাভাৱিকতা নোহোৱা কৰিছে। সিয়ে কাহিনীৰ কলাত্মক গুণ হ্রাস কৰিছে। উদাহৰণস্বৰূপে, শিখাৰ মৃত্যুৰ সময়ত কোঠাত জ্বলোৱা ধূপ-ধুনা আৰু শিখাক নতুনকৈ সজাই দিয়াৰ বর্ণনা পোৱা যায়। শিখাৰ মৃত্যুৰ পাছত ধূপ-ধুনা আৰু নতুন সাজোন-কাচোনেৰে শিখাৰ আত্মাই যুদ্ধক্ষেত্রত মুমূর্ষু অৱস্থাত পৰি থকা শান্তনুৰ ওচৰত উপস্থিত হোৱাৰ উল্লেখ পোৱা যায়। তেনে অলৌকিক বর্ণনাই সচেতন পাঠকৰ ৰসভঙ্গ কৰে— "শিখাক বিছনাত শুৱাই ফুলৰ পাপৰি সিঁচি দি, কোঠাটোৰ চাৰিওফালে আমোল-মোলাই থকাকৈ পৰিত্র ধূপ-ধুনা জ্বলাই থৈ আহিয়েই ... তাৰ মাজতেই আকস্মিকভাৱে কোনোবা এটা বিশেষ মুহূর্তত হঠাতে যেন শান্তনুৱে অনুভৱ কৰে, কোনোবা ফালৰপৰা ভাহি অহা ধূপ-ধুনাৰ সুমধুৰ গোন্ধত গোটেই ঠাইডোখৰ আমোল-মোলাই উঠিছে। তাৰ লগে লগেই শান্তনুৱে আৰু অনুভৱ কৰে গাৰ নিচেই ওচৰতে যেন কোনোবা আহি উপস্থিত হৈছেহি (১১৪-১১৫)।"

উপন্যাসখনৰ চৰিত্রসমূহ ফ্লেট বা স্থিতিশীল। শিখা, দীপা, মহিম, অজিত, শান্তনু, চর্জু প্রসাদ, ডাক্তৰ পৰেশ, মাধৱী, বৈকুণ্ঠ— সকলোবোৰ চৰিত্রৰে বহির্জীৱনৰ ছবি ঔপন্যাসিকে দাঙি ধৰিছে। চৰিত্রৰ অন্তর্জীৱনৰ ছবি দাঙি ধৰাৰ যথেষ্ট সুবিধা থকা সত্বেও লেখকে সেই দিশৰ প্রতি গুৰুত্ব প্রদান কৰা নাই। উদাহৰণস্বৰূপে, যুদ্ধক্ষেত্রত বাল্যবন্ধু অজিতে শান্তনুৰ নির্দেশত মুমূর্ষু অৱস্থাত তাক এৰি থৈ পলাই আহিবলগীয়া হোৱা অৱস্থাত আত্মদ্বন্দ্বত জর্জৰিত হোৱা অজিতৰ মানসিক অৱস্থাৰ আনুভূতিক জগতখন তুলি ধৰাত লেখক সফল হোৱা নাই। কেৱল কার্য আৰু বক্তব্যৰে চৰিত্রৰ বহির্জীৱনটোহে দাঙি ধৰিবলৈ চেষ্টা কৰাত কলাত্মক গুণ আৰু আৱেদন হ্রাস পাইছে।

চৰিত্রক স্বাভাৱিকভাৱে ফুটাই তুলিবলৈ লেখকে চৰিত্র অনুযায়ী ভাষা প্রয়োগ কৰিছে। ইয়ে চৰিত্রক বাস্তৱসন্মত আৰু আকর্ষণীয় কৰি তুলিছে। উদাহৰণস্বৰূপে, দুটামান সংলাপলৈ আমি মন কৰিব পাৰোঁ। উত্তৰ প্রদেশৰ চর্জু প্রসাদৰ মুখত হিন্দী আৰু অসমীয়াৰ সংমিশ্রিত ৰূপ প্রদান কৰিছে— "... মই ভি অফিচত নাছিলোঁ, বাহাৰ গৈছিলোঁ। হেই কাৰণেই ভেট নহ'ল। আজি কপালটো বৰ ভাল। ৰাস্তাৰপৰাই মই আপ্নাক ইয়াত সোমোৱা দেখি ইয়াতেই ভেট্ কৰিব আহিলোঁ। ... এইটোতো বৈকুণ্ঠ বাবুৰ ঘৰ ! মোৰ খুব জান্-পচান আছে (৪৫-৪৬)।" তেনেদৰে ডাক্তৰ পৰেশ বেনার্জীৰ মুখত ডাক্তৰী বিদ্যাত ব্যৱহৃত বহু ইংৰাজী শব্দ দিছে। উদাহৰণস্বৰূপে, পেচেণ্ট, টেম্পাৰেচাৰ, নৰমেল, ট্রলী, থার্মোমিটাৰ, পাল্ছ, প্রেচক্রিপচ্যন, পেড, ফার্মাচী ইত্যাদি। ভাৰতৰ ৰাজধানী দিল্লীৰ অতি আধুনিকা ভদ্র মহিলাৰ মুখত হিন্দী-ইংৰাজী ভাষাৰ ৰূপ দিয়া হৈছে— "আয়া ! বেবী কহা হেই (৬৯)?" ঠিক তেনেদৰে উচ্চ পর্যায়ৰ সৈনিকৰ মুখত অসমীয়া, ইংৰাজী ভাষাৰ শব্দ আৰু তলৰ স্তৰৰ সৈনিকৰ মুখত হিন্দী ভাষাৰ ব্যৱহাৰ কৰাত সৈনিকৰ জীৱন আৰু বাস্তৱতা স্বাভাৱিক আকর্ষণেৰে ফুটি উঠিছে ঃ

চিপাহী "কমাণ্ডাৰ চাহাবনে ভেজা, আৰ্জেণ্ট...।"...

মণি 'আচ্ছা, ঠিক হেই...।'

চিপাহী 'হাম যা চকটা?'

মণি 'হুঁ! ঠিক সাত বজামে গাড়ী লিয়ানা।' (৭১)

ঔপন্যাসিকে জতুৱা ঠাঁচ, খণ্ডবাক্য, প্রবচন আদি ব্যৱহাৰ কৰি ভাষাৰ সাহিত্যিক মান আৰু সৌন্দর্য বৃদ্ধি কৰিছে। যেনে—

- উধাতু খাই (২২)
- হাবাথুৰি খাই ফুৰা (২৮)
- হাড়ে-হিমজুৰে (৩০)
- গুৰি ধৰা (৪১)
- টাকুৰী ঘূৰা দি ঘূৰ (৪৬)
- টহল দি (৮১)
- আকাশ-কুসুম (৮৫)
- খাই পাত ফলা (৯২)
- শোকে খুন্দা মাৰি ধৰ (১১৯)
- বাট কুৰি বাই (১১৭)
- চকু-কাণ মুদি (১১৮)
- চব শিয়ালৰ এক ৰাও (৯২)
- ধুমুহাত বৰ বৰ গছ উভাল খায়

কিন্তু বন-বিৰিণাৰ মৰণ নাই (৪১)

তেনেদৰ উপমা, ৰূপক আদি অলংকাৰ প্রয়োগ কৰি উপন্যাসৰ ভাষা সাহিত্যিক গুণসম্পন্ন আৰু কলাত্মক কৰি তুলিছে।

ৰূপক ঃ "... মাফ্লাৰ গুঁঠিবলৈ এৰি মনৰ শলাৰে স্বপ্ন গুঁঠিছ (৭)?"

ৰূপক ঃ "সৰগৰপৰা উৰি অহা সেই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র 'বৰফ' পখিলাৰ পাখিৰ আঁৰত লাহে লাহে ঢাক খাই একেবাৰে হেৰাই যায় শান্তনু...(১২২)।"

উপমা ঃ "বহিৰাগত অনা-অসমীয়া সুবিধাবাদীৰ দলে, বলিৰ পশুৰ দৰে ইয়াতেই পেলাই থৈ যোৱা, শত-শত আমাৰেই ভাই-ভনী... (৪৯-৫০)।"

উপমা ঃ "মাধৱীৰ বুকুৰ মাজৰ কোনোবা এডোখৰ ঠাই বৰফৰ দৰে চেঁচা হৈ যায়... (৬০)।"

"... বৰফৰ কণিকাবোৰ, লক্ষ কোটি ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বগা বগা পখিলাৰ দৰেই উৰি আহি শান্তনুৰ গাত পৰেহি...(১২২)।"

নির্দশনা ঃ "ঢিমিক্-ঢামাককৈ নুমাই যাব খোজা বস্তিৰ শেষ মুহূর্ত, ভমক্কৈ এবাৰ জ্বলি উঠাৰ দৰেই, শান্তনুৰো মনটোৰ সেই অকল্পনীয় হাবিয়াস।" (১২২)

২.০০ সামৰণি

ইতিমধ্যে কৰা আলোচনাৰ পৰা দেখা যায় *উর্মিলাৰ চকুলো* উপন্যাসত ইংগিতধর্মী ভাষা, সামাজিক স্তৰ আৰু বৃত্তি অনুযায়ী চৰিত্রৰ মুখত ভাষাৰ প্রয়োগ, ব্যঞ্জনাধর্মী তথা চৰিত্রৰ ভাৱ-অনুভূতি প্রকাশক আবেদনধর্মী ভাষাৰ ব্যৱহাৰ, প্রতীক-চিত্রকল্পৰ প্রয়োগ, আলংকাৰিক ভাষাৰ প্রয়োগ ইত্যাদি দিশসমূহত শৈল্পিক সৌন্দর্য পৰিস্ফুট হৈছে। তৎসত্বেও বিষয়বস্তুৰ বৈচিত্র সৃষ্টি, উপন্যাসৰ গুৰুত্বপূর্ণ উপাদান চৰিত্র চিত্রণত অন্তর্দ্বন্দ্বৰ উপস্থাপনত সার্থকতাৰ অভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। সেয়েহে, সামগ্রিক বিচাৰত উপন্যাসখন সার্থক কলা বুলি ক'ব নোৱাৰি যদিও মোটামুটিভাৱে পাঠকৰ মনত এটি সুকীয়া আবেদন সৃষ্টি কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। ❑

উল্লিখিত গ্রন্থ ঃ

বৰুৱা, কাঞ্চন। *উর্মিলাৰ চকুলো*। নৱম প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ জ্যোতি প্রকাশন, ২০১৬। মুদ্রিত।

ভৰালী, শৈলেন। *উপন্যাস ঃ বিচাৰ আৰু বিশ্লেষণ*। দ্বিতীয় প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ চন্দ্র প্রকাশ, ১৯৯৩। মুদ্রিত।

গ্রন্থপঞ্জী

বৰুৱা, কাঞ্চন। *উর্মিলাৰ চকুলো*। নৱম প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ জ্যোতি প্রকাশন, ২০১৬। মুদ্রিত।

বৰকটকী, বীৰেন। সাহিত্যৰ পটভূমি। ষষ্ঠ প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ অসম বুক ডিপো, ২০০৫। মুদ্রিত।

বৰা, যতীন। *সাহিত্য সমালোচনা পৰিচয়*। প্রথম প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ বাণী প্রকাশ প্রাইভেট লিমিটেড, ১৯৯৩। মুদ্রিত।

ভৰালী, শৈলেন। *উপন্যাস ঃ বিচাৰ আৰু বিশ্লেষণ*। দ্বিতীয় প্রকাশ, গুৱাহাটী ঃ চন্দ্র প্রকাশ, ১৯৯৩। মুদ্রিত।

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

ভাষিক আৰু সামাজিক-সাংস্কৃতিক প্ৰেক্ষাপটত মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা প্ৰয়োগত সৃষ্ট প্ৰতিবন্ধকতা

ইন্দেশ্বৰ পেগু

গৱেষক, অসমীয়া বিভাগ
গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়
জালুকবাৰী, পিন - ৭৮১০১৪
ম'বাইল ঃ ৬০০২১৩৬৪৪১
ই-মেইলঃ peguindeswar99@gmail.com

ড° ভাস্কৰজ্যোতি শর্মা

সহযোগী অধ্যাপক, ভাষা আৰু ভাষাবিজ্ঞান
আনন্দৰাম বৰুৱা ভাষা, কলা-সংস্কৃতি
সংস্থা, অসম, ম'বাইল ঃ ৯৮৫৪৫১৪৫০৭
ই-মেইল ঃ bhasdu08@gmail.com

সাৰাংশ ঃ

ভাষা একোটাক স্পষ্ট আৰু সলসলীয়াকৈ ব্যৱহাৰ কৰিব পৰা কার্যৰ সৈতে বিভিন্ন কাৰক জৰিত হৈ থাকে। কিন্তু এই ক্ষেত্ৰত সাধাৰণতে ভাষাৰ গঠনগত দিশটোকহে গুৰুত্ব প্ৰদান কৰা দেখা যায়। আনহাতে কোনো এটা ভাষিক গোষ্ঠী বা জনগোষ্ঠীয়ে দ্বিতীয় ভাষা একোটা আহৰণ কৰাৰ সময়ত প্ৰথম ভাষাৰ স্পষ্ট প্ৰভাৱ পৰা দেখা যায় আৰু এই প্ৰভাৱে সেই সেই ভাষিক গোষ্ঠী বা জনগোষ্ঠীটোৰ মুখত দ্বিতীয় ভাষাৰ গঠনগত প্ৰকৃতিৰ সলনি ঘটাই একোটা নতুন ঔপভাষিক ৰূপৰ সৃষ্টি কৰে। এইখিনিতে উল্লেখযোগ্য কথাটো হ'ল যে, এই ঔপভাষিক ৰূপটোৰ প্ৰভাৱ সেই গোষ্ঠী বা জনগোষ্ঠীটোৰ সামাজিক তথা সাংস্কৃতিক পৰিচয়ৰ ক্ষেত্ৰতো গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰে। যাৰ ফলত অসমৰ দৰে বহুভাষিক পৰিৱেশত এনে প্ৰভাৱে বিভিন্ন ভাষিক গোষ্ঠীৰ মাজত বিভিন্ন ক্ৰিয়া-প্ৰতিক্ৰিয়াৰ সৃষ্টি কৰাৰ লগতে বহু ক্ষেত্ৰত এই ক্ৰিয়া প্ৰতিক্ৰিয়াই সামাজিক সমস্যাৰো সৃষ্টি কৰা দেখা যায়। এনে সামাজিক সমস্যাবোৰৰ সমাধানৰ বাবে এই ভাষিক জনগোষ্ঠীসমূহৰ দ্বিতীয় ভাষা আহৰণ প্ৰক্ৰিয়া আৰু ইয়াৰ ভাষাবৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণ অতি প্ৰয়োজন। আমাৰ এই অধ্যয়নত অসমৰ দ্বিতীয় বৃহৎ ভাষিক জনগোষ্ঠী মিচিংসকলৰ অসমীয়া ভাষা আহৰণ, ইয়াৰ প্ৰকৃতিৰ ভাষাবৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণ আৰু তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা প্ৰয়োগত উদ্ভৱ হোৱা সামাজিক-সাংস্কৃতিক সমস্যাৰ দিশবোৰ সামৰা হ'ব।

বীজ শব্দ ঃ ভাষা, প্ৰথম ভাষা, দ্বিতীয় ভাষা, মিচিং ভাষা।

আৰম্ভণি ঃ

দ্বিতীয় ভাষা শিকন আৰু আহৰণৰ ক্ষেত্ৰত বহু ভাষাবিজ্ঞানীয়ে কিছুমান তত্ত্ব ব্যখ্যা আগবঢ়াইছে। এই তত্ত্বসমূহে সাধাৰণভাৱে দ্বিতীয় ভাষা আহৰণ আৰু শিকনৰ দিশসমূহ বিশ্লেষণ কৰি দেখুৱাইছে (দ্ৰষ্টব্যঃ Donato, 1994; Ohta, 2000; Swain, 1995; Lantolf, 2000)ভাষাতাত্ত্বিক'Vygotsky (1962)'এ দ্বিতীয় ভাষা আহৰণৰ ক্ষেত্ৰত বক্তাৰ সামাজিক-সাংস্কৃতিক প্ৰভাৱৰ উপৰিও মনোবৈজ্ঞানিক কাৰকেও বিশেষভাৱে ক্ৰিয়া কৰে বুলি উল্লেখ কৰিছে।

সেইদৰে দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীয়ে যিটো ভাষা দ্বিতীয় ভাষা হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰে সেই ভাষাক প্ৰথম ভাষা হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰা লোকসকলে দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ প্ৰতি বিভিন্ন মন্তব্য আগবঢ়ায়। উদাহৰণ স্বৰূপে এগৰাকী মিচিং ভাষি লোকে যেতিয়া অসমীয়া ভাষা সামাজিক পৰিৱেশত প্ৰয়োগ কৰে তেতিয়া অসমীয়া ভাষী লোকৰ পৰা সততে কিছুমান মন্তব্য লাভ কৰা দেখা যায়। এনে মন্তব্যবোৰেও সামাজিক আৰু সাংস্কৃতিক ক্ষেত্ৰখনত কেতিয়াবা নেতিবাচক প্ৰভাৱো পেলায় (Sato & Lyster, 2012)। অসমৰ দৰে বহুভাষিক পৰিৱেশত, বিশেষকৈ জনগোষ্ঠীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰী লোকসকলৰ বাবে দ্বিতীয় ভাষা হিচাপে অসমীয়া ভাষাৰ আহৰণ অতি গুৰুত্বপূৰ্ণ আৰু ই এক স্বাভাৱিক প্ৰক্ৰিয়া। শিক্ষা-দীক্ষা, জীৱিকা আৰু দৈনন্দিন তথা সামাজিক ক্ষেত্ৰত ইয়াৰ যথেষ্ট গুৰুত্ব প্ৰকাশ আছে। পূৰ্বতে, বিশেষকৈ গ্ৰাম্য আৰু বহির্জগতৰ সৈতে বিশেষ সম্পৰ্কহীন পিছপৰা স্থানৰ ক্ষেত্ৰত আৰু জনগোষ্ঠীসমূহৰ স্বয়ংসম্পূৰ্ণ জীৱন শৈলীৰ বাবে এই প্ৰয়োজনীয়তা কিছু পৰিমানে কম আছিল যদিও বৰ্তমান সময়ত আৰ্থ-সামাজিক আৰু সাংস্কৃতিক প্ৰয়োজনীয়তাৰ বাবেই অসমীয়া ভাষা সংযোগী ভাষা হিচাপে অত্যাৱশ্যকীয় হৈ পৰিছে। এইখিনিতে উল্লেখযোগ্য যে, প্ৰত্যেক ভাষাৰে নিজস্ব ভাষাগত বিশেষত্ব থকাৰ হেতুকে এনে ভাষিক জনগোষ্ঠীসমূহৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰত প্ৰথম ভাষাৰ প্ৰভাৱ পৰি অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰকাশভংগী সুকীয়া ৰূপত প্ৰকাশ লাভ কৰাতো ভাষাবৈজ্ঞানিক দৃষ্টিকোণৰ পৰাই স্বাভাৱিক বুলিব পাৰি। কিন্তু ভাষাগত সাদৃশ্য আৰু বৈশাদৃশ্যৰ উপৰিও ইয়াৰ অন্তৰালত কিছুমান সামাজিক-সংস্কৃতিক কাৰকেও বিশেষভাৱে ক্ৰিয়া কৰে। এই আলোচনাত অসমৰ এটা অন্যতম জনগোষ্ঠী মিচিংসকলৰ আলমত বিষয়টো পৰ্যবেক্ষক কৰি চালে দেখা পাওঁ যে, মিচিং আৰু অসমীয়া ভাষাৰ মাজত বহুপৰিমানে সাদৃশ্য আৰু বৈশাদৃশ্য বিৰাজমান। এই সাদৃশ্য আৰু বৈশাদৃশ্যই তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰত প্ৰতিবন্ধকতা সৃষ্টি কৰাৰ অন্যতম প্ৰধান কাৰক। এই ভাষিক দিশসমূহৰ সমান্তৰালকৈ সামাজিক-সাংস্কৃতিক দিশবোৰেও এনে প্ৰতিবন্ধকতা সৃষ্টিৰ ক্ষেত্ৰত ক্ৰিয়া কৰি আছে। এই কাৰকসমূহৰ ভিতৰত ভাষিক পৰিৱেশ, ব্যক্তিবিশেষৰ মনোভংগী, উৎসাহ বা প্ৰেৰণা ইত্যাদি বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য। ভাষাবৈজ্ঞানিক বৈশিষ্ট্যৰ উপৰিও এই কাৰকসমূহৰ বিশ্লেষণে মিচিং ভাষীসকলৰ লগতে অন্যান্য ভাষিক জনগোষ্ঠীৰ সৈতে অসমৰ বিভিন্ন সামাজিক সংশ্লেষণৰ দিশবোৰো প্ৰতিফলিত কৰিব।

অধ্যয়নৰ উদ্দেশ্য ঃ

ভাষা ব্যক্তিমনৰ চিন্তা-অনুভূতিৰ প্ৰকাশৰ মাধ্যম হ'লেও ইয়াৰ সৈতে সামাজিক-সাংস্কৃতিক কাৰক ওতঃপ্ৰোতভাৱে জড়িত হৈ থাকে। কাৰণ ভাষিক প্ৰকাশভংগীৰ মাজত ব্যক্তি-সংস্কৃতিৰ লগতে সামাজিক সংস্কৃতিৰো প্ৰকাশ ঘটে আৰু বহুভাষিক সমাজত ভাষাই সেঁতু বন্ধনৰ কাৰ্য সম্পাদন কৰে। কিন্তু কেতিয়াবা প্ৰভাৱশালী ভাষা এটাক দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত দেখা দিয়া ভাষিক বৈশিষ্ট্যই একোটা জনগোষ্ঠীৰ প্ৰতি প্ৰভাৱশালী ভাষা-ভাষী লোকৰ মনত হেয় ভাবৰ সৃষ্টি হোৱাও দেখা যায়। এনে মনোভাৱে সামাজিক সমন্বয়ত বাধাৰ সৃষ্টি কৰাৰ বাবে বিভিন্ন সামাজিক সমস্যাৰ উদ্ভৱ হয়। সেইবাবেই অসমৰ জনগোষ্ঠীয় ভাষিক পৰিস্থিতি বিষয়টো বিশেষ গুৰুত্বপূৰ্ণ বুলি বিবেচিত হৈ আহিছে। এনে ধৰণৰ ভাষিক কাৰকে সৃষ্টি কৰা সামাজিক সমস্যাৰ সমাধানসূত্ৰৰ বাবে ভাষাবৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণৰ অতি প্ৰয়োজন। এই উদ্দেশ্য আগত ৰাখিয়েই বৰ্তমানৰ গৱেষণা কৰ্ম আগবঢ়াই লৈ যাবলৈ প্ৰয়াস কৰা হৈছে।

অধ্যয়নৰ পৰিসৰ ঃ

অসম এখন বহুভাষিক ৰাজ্য। ইয়াত বিশ্বৰ চাৰিটা বৃহৎ ভাষা পৰিয়াল, যেনে- ইণ্ডো-ইউৰোপীয়, চীন-তিব্বতীয়, অষ্ট্ৰিক আৰু দ্ৰাবিড় ভাষা পৰিয়ালৰ ভাষা-ভাষী লোকৰ বসতি দেখা যায়। কিন্তু এই ভূখণ্ডৰ প্ৰধান ভাষিক গোষ্ঠী বুলিলে ইণ্ডো-ইউৰোপীয় আৰু চীন-তিব্বতীয় (ইয়াৰে তিব্বত-বৰ্মী শাখাৰ ভাষিক জনগোষ্ঠীয়েই অধিক) ভাষা পৰিয়াকে বুজা যায়। উল্লেখযোগ্য কথাটো হ'ল চীন-তীব্বতীয় বা ইয়াৰ অন্তৰ্গত তিব্বত-বৰ্মী ভাষা পৰিয়ালৰ ভাষাসমূহ (যেনে-বড়ো, মিচিং, দেউৰী, তিৱা, ৰাভা, গাৰো, আদি আৰু টাইমূলীয়- খামতি, ফাকে, আইটন আদি) আৰু ইণ্ডো-ইউৰোপীয় ভাষা পৰিয়ালৰ পৰা সৃষ্টি হোৱা অসমীয়া, বাংলা, নেপালী আদি পৰস্পৰ বিসমগোত্ৰীয় ভাষা। এনে পৰিস্থিতিত এই অধ্যয়নৰ পৰিসৰ হিচাপে অসমীয়া আৰু মিচিং- এই দুটা বিসমগোত্ৰীয় ভাষাকে

অধ্যয়নৰ পৰিসৰ হিচাপে গ্ৰহণ কৰা হৈছে, যাতে ইয়াৰ আধাৰত অন্য বিসমগোত্ৰীয় ভাষাসমূহৰ প্ৰয়োগক্ষেত্ৰৰ বিষয়েও কিছু ধাৰণা কৰিব পৰা যায়।

অধ্যয়নৰ পদ্ধতি ঃ

এই অধ্যয়নত যিহেতু ভাষাৰ সৈতে সমাজ আৰু সংস্কৃতিৰ দিশসমূহো আলোচনাৰ মাজলৈ অনা হৈছে, সেই হেতুকে ইয়াত প্ৰধানকৈ বৰ্ণনাত্মক পদ্ধতিতত্ত্ব (Descriptive Methodology) গ্ৰহণ কৰা হৈছে আৰু তথ্যসমূহ বিশ্লেষণাত্মক পদ্ধতি (Analytical Method) আৰু কিছু ক্ষেত্ৰত সম্পৰীক্ষামূলক (Empirical)পদ্ধতিৰ আধাৰত বিচাৰ কৰাৰ প্ৰয়াস কৰা হৈছে।

তথ্য আৰু তথ্য সংগ্ৰহৰ আৰ্হি ঃ

এই আলোচনাৰ বাবে বিশ্বনাথ জিলাৰ তিনিখন গাঁৱৰ পৰা বাচনি কৰা তথ্যদাতাৰ পৰা প্ৰয়োজনীয় তথ্য সংগ্ৰহ কৰা হৈছে আৰু তথ্যদাতাসকলক বয়স, পুৰুষ-মহিলা আৰু শিক্ষাগত অৰ্হতা অনুসৰি ভাগ কৰি লোৱা হৈছে।

জিলা ঃ বিশ্বনাথ

গাঁও ঃ আঠাইশঘৰীয়া, ৰঙাজান, ৰজাবাৰী

পুৰুষ আৰু মহিলা ঃ

(১০ ৰ পৰা ২৫ বছৰ বয়সলৈ) ৩ গৰাকীকৈ মুঠ- ৬ গৰাকী

(৪০ ৰপৰা ৬০ বছৰ বয়সলৈকে) ৩ গৰাকীকৈ মুঠ- ৬ গৰাকী

(৬০ৰ পৰা ৭৫ বছৰ বয়সলৈ) ৩ গৰাকীকৈ মুঠ- ৬ গৰাকী

শিক্ষাগত অৰ্হতা ঃ

(পুৰুষ+মহিলা) প্ৰাথমিক আৰু তাতকৈ তলৰ ৩ গৰাকীকৈ, মুঠ- ৬ গৰাকী

উচ্চতৰ মাধ্যমিক আৰু তাৰ ওপৰৰ ৩ গৰাকীকৈ, মুঠ- ৬ গৰাকী

মুঠ তথ্যদাতাৰ সংখ্যা- (৩০x৩) = ৯০

বিষয়বস্তুৰ আলোচনা ঃ

মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰত সৃষ্টি হোৱা প্ৰতিবন্ধকতাৰ কাৰকবোৰক মূলত তিনিটা দিশৰ পৰা আলোচনা কৰা হৈছে। তলত চিত্ৰৰ সহায়ত সমগ্ৰ বিষয়টো উপস্থাপন কৰি দেখুৱা হৈছে।

২.০১ ভাষিক কাৰক

শিশুয়ে যিটো ভাষা তিনি বছৰৰ ভিতৰত আহৰণ কৰে সেই ভাষাটোকেই সাধাৰণতে প্ৰথম ভাষা বোলা হয় (সিন্‌হা, বেনার্জী, সিন্‌হা আৰু শাস্ত্ৰী-২০০৯)। এই সময়ত শিশুৱে প্ৰথম ভাষাৰ কেৱল ধ্বনিতাত্ত্বিক বৈশিষ্ট্যসমূহহে আহৰণ কৰে আৰু সেইবাবেই কোৱা হয় যে, ভাষা কোৱা বা কথিত ৰূপৰ দক্ষতাই ভাষা আহৰণৰ প্ৰাথমিক দিশ। ইয়াৰ পৰৱৰ্তী কালত যেতিয়া সেই শিশুৱে সামাজিক পৰিৱেশত অন্য এটা ভাষা আহৰণ কৰিবলগীয়া হয়, তেতিয়া প্ৰথম ভাষাৰ এই ধ্বনিগত বৈশিষ্ট্যই একধৰণৰ চুম্বকীয় আকৰ্ষণৰ সৃষ্টি কৰে, যাক ভাষাবিজ্ঞানত প্ৰথম ভাষাৰ চুম্বকীয় শক্তি (Native Language Magnet) অথবা 'মাতৃভাষাৰ হস্তক্ষেপ (Mother Tongue Interferance)বোলা হয় । গতিকে, এই ক্ষেত্ৰত ধ্বনিতাত্ত্বিক দিশটোৱে আহৰণ কৰা দ্বিতীয় ভাষাটোৰ দক্ষতাৰ ওপৰত আটাইতকৈ প্ৰভাৱশালী কাৰক বোলা হয়।

প্ৰত্যেকটো ভাষাৰে একোটা সুকীয়া সুকীয়া উচ্চাৰণ শৈলী থাকে। এই উচ্চাৰণ শৈলীয়ে দ্বিতীয় ভাষাৰ ব্যৱহাৰ অথবা উচ্চাৰণ কাৰ্যত প্ৰভাৱ পেলায়। এই ক্ষেত্ৰত প্ৰথম ভাষাৰ ভাষিক পৰিৱেশ একোটাত থাকি দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ যাওঁতে প্ৰথম ভাষাৰ হস্তক্ষেপ এক স্বাভাৱিক কাৰক হৈ পৰে। আনহাতে প্ৰথম ভাষাৰ ভাষিক পৰিৱেশতে থাকি দ্বিতীয় ভাষাৰ আহৰণ প্ৰক্ৰিয়াত কিছু জটিলতাৰ সন্মুখীন হ'বলগীয়া হয়। কাৰণ প্ৰথম ভাষাৰ ভাষিক পৰিৱেশলৈ অহাৰ লগে লগে ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীয়ে প্ৰথম ভাষাৰে কথা-বতৰা পাতিবলগীয়া হয়। এনে পৰিস্থিতিত তেওঁৰ বাকযন্ত্ৰৰ সঞ্চালনে প্ৰথম ভাষাৰ উচ্চাৰণ প্ৰক্ৰিয়াক অধিক সক্ৰিয় কৰি তোলে। ইয়াৰ ফলত দ্বিতীয় ভাষাৰ উচ্চাৰণ কাৰ্যত প্ৰথম ভাষাৰ চুম্বকীয় প্ৰভাৱ সৃষ্টি হ'য়। অৱশ্যে প্ৰথম ভাষাৰ ভাষিক পৰিৱেশত থাকিলেও ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ঘৰুৱা পৰিৱেশত যদি দ্বিতীয় ভাষাৰে কথা-বতৰা হয় তেতিয়াও প্ৰথম ভাষাৰ প্ৰভাৱ তেওঁৰ কথা-বতৰাত কমকৈ পৰিব।

গ্ৰামাঞ্চলৰ মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত দেখা যায় যে, যদিও তেওঁলোকে (দ্বিতীয় ভাষা)

অসমীয়া ভাষাৰ ভাষিক পৰিৱেশৰ মাজতে বসবাস কৰি আছে, কিন্তু তেওঁলোকৰ দৈনন্দিন জীৱনত প্ৰথম ভাষাৰেই কথা-বতৰা বেছিকৈ হয়। তদুপৰি ঘৰুৱা পৰিৱেশত অসমীয়া ভাষাটোৰ ব্যৱহাৰ একেবাৰে নহয় বুলিবই পাৰি। এনে পৰিস্থিতিত তেওঁলোকে মাজে সময়ে অসমীয়া ভাষাটো ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ সুবিধা লাভ কৰিলেও তেওঁলোকৰ অসমীয়া উচ্চাৰণত প্ৰথম ভাষাৰ প্ৰভাৱ ৰৈ যায়। ভাষা যিহেতু চৰ্চাৰ আধাৰতহে সম্ভৱ, সেয়েহে যিমানেই ভাষাটো চৰ্চা হ'ব সিমানেই ভাষিক দক্ষতা বৃদ্ধি পায়। এই ক্ষেত্ৰত অৱশ্যে ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ব্যক্তিগত প্ৰচেষ্টাইও বিশেষ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰে। গতিকে ভাষিক পৰিৱেশে তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰতিবন্ধকতাৰ এক অন্যতম কাৰক হিচাপে বিবেচনা কৰিব পাৰি। এই প্ৰতিবন্ধকতাৰ ফলশ্ৰুতিত হোৱা উচ্চাৰণগত বৈশিষ্ট্য কিছুমান বিশ্লেষণ কৰি দেখুৱালে বিষয়টো অধিক স্পষ্ট হৈ পৰিব।

অসমীয়া ভাষাত থকা মহাপ্ৰাণ বৰ্ণ (ফ,ভ,থ,ধ,খ,ঘ) মিচিং ভাষাত পোৱা নাযায় বাবে মিচিংভাষী লোকে মহাপ্ৰাণ বৰ্ণ থকা অসমীয়া ভাষাৰ শব্দবোৰ উচ্চাৰণ কৰোতে ই অল্পপ্ৰাণ বৰ্ণলৈ পৰিৱৰ্তন ঘটে। যেনে-

ফাল > পাল, থাল > তাল, ধাল > দাল ইত্যাদি।

সমাজৰ বেলেগ বেলেগ স্তৰৰ তথ্যদাতাৰ দ্বাৰা কৰা উচ্চাৰণগত পৰীক্ষণত তলত উল্লেখ কৰা ফলাফল লাভ কৰা গৈছে-

(১) ১০ ৰ পৰা ২৫ বছৰ বয়সৰ আৰু প্ৰাথমিক আৰু তাতকৈ তলৰ ল'ৰা-ছোৱালীৰ ক্ষেত্ৰত ১০০% মহাপ্ৰাণ বৰ্ণ অল্পপ্ৰাণ ৰূপে উচ্চাৰণ হৈছে।

(২) ৪০ ৰপৰা ৬০ বছৰ বয়সৰ আৰু প্ৰাথমিক আৰু তাতকৈ তলৰ পুৰুষ ৮০% মহাপ্ৰাণ বৰ্ণ অল্পপ্ৰাণ ৰূপে উচ্চাৰণ হৈছে।

(৩) ৪০ ৰপৰা ৬০ বছৰ বয়সলৈকে আৰু উচ্চতৰ মাধ্যমিক আৰু তাৰ ওপৰৰ ৬০% মহাপ্ৰাণ বৰ্ণ অল্পপ্ৰাণ ৰূপে উচ্চাৰণ হৈছে।

ওপৰৰ অধ্যয়নৰ পৰা দেখা যায় যে, অধিক বয়সৰ নিম্ন শিক্ষাপ্ৰাপ্তকৈ কম বয়সৰ অধিক শিক্ষাপ্ৰাপ্ত লোকৰ দ্বিতীয় ভাষা আহৰণত উচ্চাৰণগত শুদ্ধতাৰ মাত্ৰা অধিক।

(খ) ভাষিক মৰ্যাদা ঃ

সমাজভাষাবিজ্ঞানী Wardhaugh (2006)এ এই বুলি মন্তব্য কৰিছিল যে, সামাজিক গঠনে ভাষিক আচৰণ প্ৰক্ৰিয়াৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পেলায়। সেইদৰে উইলিয়াম লেব'ভে 'ৰ' ধ্বনিৰ উচ্চাৰণৰ প্ৰসংগত এই বুলি উল্লেখ কৰিছে যে, ব্যক্তিৰ সামাজিক মৰ্যাদাই ধ্বনিৰ উচ্চাৰণ আৰু শব্দ প্ৰয়োগত বিশেষভাৱে প্ৰভাৱ পেলায় (Labov, 2006)। গতিকে, এই ভাষিক প্ৰক্ৰিয়াৰ অন্তৰ্গত সামাজিক বিষয় হিচাপে ভাষিক মৰ্যাদায়ো এক কাৰক হিচাপে ক্ৰিয়া কৰে। ইয়াৰ উপৰিও সমাজত যদি এগৰাকী ব্যক্তিৰ উচ্চ স্থান আছে অথবা সমাজখনৰ শ্ৰদ্ধাশীল ব্যক্তি তেতিয়হ'লে তেওঁৰ ভাষা ব্যৱহাৰৰ দিশতো এক বিশেষ মানসিকতাৰ গড় লয়। এই ক্ষেত্ৰত তেওঁৰ ভাষা নিৰ্বাচনৰ দিশটো সচেতনতা প্ৰদৰ্শন কৰি সচৰাচৰ ব্যৱহাৰ কৰা ভাষাতকৈ (মিচিং ভাষীয়ে অসমীয়া) অইন এটা ভাষা ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ লয়। অৱশ্যে এনে পৰিস্থিতিত সম্মুখৰ ব্যক্তিজনৰ সামাজিক মৰ্যাদাও এক লক্ষণীয় কথা। তেতিয়াহে তেওঁৰ দ্বিতীয় ভাষাৰ কথা-বতৰা অধিক স্পষ্ট আৰু আৰু সলসলীয়াকৈ প্ৰকাশৰ বাবে প্ৰয়াস কৰে।

আনহাতে মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত দেখা যায় যে সামাজিক পৰিৱেশত ভাষা ব্যৱহাৰৰ প্ৰয়োজনীয়তাহে অধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ কাৰক হিচাপে দেখা দিয়ে। বিশেষকৈ গ্ৰামাঞ্চলৰ মিচিংসকলৰ ক্ষেত্ৰত এই কথাটো প্ৰযোজ্য হোৱা দেখা নাযায়। ইয়াৰ প্ৰধান কাৰণ হ'ল- এনে লোকৰ সৈতে অন্য ভাষিক সমাজৰ সংযোগ কম পৰিমাণেহে হয়। তেওঁলোকৰ বাবে অসমীয়া ভাষাটো অনা মিচিং ব্যক্তিৰ সৈতে মত বিনিময়ৰ প্ৰয়োজন বা তাগিদা পূৰণ কৰাটোৱেই তেওঁলোকৰ বাবে প্ৰধান বিষয় হৈ পৰে। ভাষাৰ শুদ্ধ ব্যৱহাৰ অথবা উচ্চাৰণৰ দিশটোৰ প্ৰতি তেওঁলোক একেবাৰে অজ্ঞ আৰু সচেতন নহয়। এনে পৰিৱেশত অসমীয়া ভাষাটো সঠিক উচ্চাৰণেৰে ব্যৱহাৰৰ দিশতো উপেক্ষিত হোৱাতো তেনেই স্বাভাৰিক কথা। গতিকে গ্ৰামাঞ্চলৰ মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীসকলৰ ক্ষেত্ৰত ভাষা একোটাক মৰ্যাদা প্ৰকাশৰ মাধ্যম হিচাপে লোৱাৰ পৰিৱেশ গড় লৈ নুঠাৰ ফলত এনে প্ৰতিবন্ধকতাৰ সৃষ্টি হোৱা দেখা যায়।

(গ) শিক্ষাগত অৰ্হতা ঃ

শিক্ষাগত অৰ্হতা দ্বিতীয় ভাষা আহৰণৰ সৈতে

সম্পর্কিত এক অপৰিহার্য কাৰক। এই কাৰকে ৰাষ্ট্ৰীয়, সামাজিক, ৰাজনৈতিক, অর্থনৈতিক বিকাশতো অৰিহনা যোগায়। যদিহে দেশৰ ইতিবাচক শৈক্ষিক নীতি আৰু পৰিকল্পনাৰ ৰূপায়ণে এক ভাল শৈক্ষিক পৰিৱেশ সৃষ্টি কৰে অথবা গড় দিয়ে তেতিয়া ভাষা শিকন, আহৰণ অথবা ব্যৱহাৰৰ বাবে সুবিধাজনক আৰু আকর্শনীয় হয়। ভাল শৈক্ষিক পৰিস্থিতিয়ে দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰ তথা ভাষা সম্প্রদায়টোৰ লগত যোগাযোগ স্থাপনত যথেষ্ট সুবিধা প্রদান কৰে। শৈক্ষিক পৰিৱেশ একোটাৰ মাজত যদি দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰী এজন থাকে তেতিয়াহ'লে এগৰাকী মিচিং ভাষী লোকেও দ্বিতীয় ভাষাটো ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ আগ্রহ প্রকাশ কৰে অথবা বাধ্য হৈ দ্বিতীয় ভাষাটো ব্যৱহাৰ কৰিবলগীয়া হয়। তদুপৰি শিক্ষকৰ অনুপ্রেৰণামূলক পাঠদান আৰু উপদেশৰ বাবেও তেওঁ দ্বিতীয় ভাষাটো ব্যৱহাৰৰ প্রতি অধিক মনোনিৱেশ কৰে। ইয়াৰ উপৰিও আনুষ্ঠানিক শিক্ষাৰ পৰিৱেশত থাকিলে বিভিন্ন ভাষা-ভাষীৰ ছাত্র-ছাত্রীৰ সৈতে কথা-বতৰা পাতোতে যোগাযোগ বা বার্তালাপৰ মাধ্যম হিচাপে দ্বিতীয় ভাষাটো ব্যৱহাৰ কৰিবলগীয়া হয়। সেয়েহে তেওঁৰ দ্বিতীয় ভাষাৰ কথা-বতৰাক উন্নত কৰাৰ সুবিধা লাভ কৰে।

আনুষ্ঠানিক শিক্ষাক্ষেত্রত শিক্ষকে যদি স্পষ্ট আৰু শুদ্ধ উচ্চাৰণ শৈলীৰে ছাত্র-ছাত্রীক পাঠদান কৰাৰ যত্নইও দ্বিতীয় ভাষাৰ উচ্চাৰণ সম্পর্কীয় জ্ঞান ছাত্র-ছাত্রীয়ে আয়ত্ত কৰিবলৈ সুবিধা প্রদান কৰে। উচ্চ শিক্ষাই এই ক্ষেত্রত আৰু অধিক অৰিহনা যোগায়। আনহাতে গ্রাম্যাঞ্চলৰ মিচিং ভাষী লোকসকলৰ অধিকাংশই কেৱল প্রাথমিক আৰু মাধ্যমিক শিক্ষালৈকেহে শিক্ষাগ্রহণ কৰিছে। উচ্চ শিক্ষিতৰ হাৰ তেওঁলোকৰ মাজত অতি কম। এনে কাৰণবশত তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰৰ পৰিৱেশ নিজে সৃষ্টি কৰিব নোৱাৰাৰ ফলত তেওঁলোকৰ অসমীয়া কথা-বতৰাত প্রথম ভাষাৰ চুম্বকীয় প্রভাৱ আহি পৰে।

২.০২ আভ্যন্তৰীণ উপাদান ঃ

(ক) বয়স ঃ

দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ক্ষেত্রত বয়স বহুলভাৱে সমাদৃত বা স্বীকৃতিপ্রাপ্ত এক বিষয়। দ্বিতীয় ভাষা শিকন তথা আহৰণ সম্পর্কীয় বিভিন্ন গৱেষণাই ইতিমধ্যে এই কথা প্রতিষ্ঠা কৰিছে যে নতুন ভাষা একোটা আহৰণৰ কাৰণে বয়স যিমানেই কম হয় তিমানেই দক্ষতা প্রদর্শন কৰিব। ১৯৬৭ চনত লেনেবার্গে 'ক্রিটিকেল পিৰিয়ড হাইপ'থেছিচ' (CHP)ত প্রকাশ কৰিছিল যে ভাষা শিকাৰ বাবে ১৩ বছৰ বয়সলৈ উপযোগী সময়। এই সময়ত ভাষাৰ গ্রহণক্ষমতা (Perceptibility) সাধাৰণতে অধিক হয়। ইয়াৰ অর্থ এইটোৱে যে সৰুৱে পৰাই দ্বিতীয় ভাষাৰ ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে দ্বিতীয় ভাষাৰ উচ্চাৰণত প্রথম ভাষাৰ প্রভাৱ কমকৈ পৰিব অথবা প্রথম ভাষাৰ প্রভাৱ নপৰিব। আনহাতে প্রাপ্তবয়স্ক দ্বিতীয় ভাষা একোটা ব্যৱহাৰ কৰিবলৈ যাওঁতে প্রথম ভাষাৰ যথেষ্ট প্রভাৱ আহি পৰে। গতিকে দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্রত প্রথম ভাষাৰ প্রভাৱ পৰাৰ অন্যতম এক কাৰক হিচাপে বয়সৰ বিশেষ ভূমিকা আছে। বয়সৰ লগতে কিন্তু ভাষা আহৰণৰ সামাজিক পৰিৱেশৰ দিশটোৱেও এক গুৰুত্বপূর্ণ কাৰক হিচাপে কাম কৰে।

(খ) শ্রৱণ শক্তি ঃ

দ্বিতীয় ভাষা একোটা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্রত শ্রৱণ শক্তিৰ বিশেষ ভূমিকা আছে। শ্রৱণ কার্যৰ ক্ষেত্রত প্রধানকৈ চাৰিটা কাৰকে বিশেষভাৱে ক্রিয়া কৰে (Yagang,1994)। এইকেইটা কাৰক হ'ল- বক্তব্য বা বার্তা (the message), বক্তা (the speaker), শুনোতা (the listener) আৰু শুনোতাৰ দৈহিক সক্ষমতা (physical setting)। দ্বিতীয় ভাষা আহৰণত সাধাৰণতে শ্রৱণ শক্তিক বহুক্ষেত্রত উপেক্ষা কৰা দেখা যায় অথবা কমকৈ গুৰুত্ব প্রদান কৰা হয়। প্রত্যেক মানুহৰে শ্রৱণ শক্তি বোলগ বেলেগ অথবা শ্রৱণ দক্ষতা ভিন্নধৰণৰ। কিছুমান মানুহৰ শ্রৱণ শক্তি অতি ক্ষিপ্র আৰু কিছুমান মানুহৰ দুর্বল। যাৰ শ্রৱণ শক্তি ক্ষিপ্রতৰ তেওঁ অতি কম সময়তে দুটা ধ্বনিৰ পার্থক্য নির্ধাৰণ কৰি দ্বিতীয় ভাষাটো শুদ্ধ ৰূপত উচ্চাৰণ কৰিবলৈ সক্ষম হোৱাৰ লগতে দ্বিতীয় ভাষাটো অনুকৰণ কৰিবলৈ সম্ভৱ হয়। ইয়াৰ ফলত তেওঁৰ দ্বিতীয় ভাষাৰ উচ্চাৰণ প্রথম ভাষাৰ দৰে হৈ উঠে।

অৱশ্যে এই কথাটো ক'ব লাগিব যে শ্রৱণ শক্তিৰ সৈতে বয়সৰ অংগাংগী সম্পর্ক আছে। বয়স বঢ়াৰ লগে লগে মানুহৰ শ্রৱণ শক্তি দুর্বল হৈ পৰে। সেয়েহে বয়সস্থ লোকৰ ক্ষেত্রত দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰত প্রথম ভাষাৰ বেছিকৈ প্রভাৱ পৰা পৰিলক্ষিত হয়। তদুপৰি তেওঁলোকে দ্বিতীয় ভাষাৰ শব্দবোৰ সঠিক উচ্চাৰণেৰে প্রকাশৰ ক্ষেত্রত

দক্ষতা প্রদর্শনৰ ক্ষেত্রত অসুবিধা আহি পৰে। আমাৰ এই অধ্যয়নত পৰীক্ষামূলকভাৱে বিশ্লেষণ কৰা তথ্যসমূহ এনে ধৰণৰ-

১০ৰ পৰা ২৫ বছৰৰ উচ্চতৰ মাধ্যমিক শাখা ল'ৰা-ছোৱালী ৩ গৰাকীকৈ, তিনিখন গাঁৱৰ মুঠ - ১৮ গৰাকী

৬০ৰ পৰা ৭৫ বয়সৰ নিম্ন শিক্ষাগত অৰ্হতাৰ পুৰুষ-মহিলা ৩ গৰাকীকৈ, তিনিখন গাঁৱৰ মুঠ - ১৮ গৰাকী

এই তথ্যদাতাসকলক অসমীয়া মহাপ্রাণ বর্ণ যুক্ত ওঠৰটা শব্দৰ মহাপ্রাণ বর্ণসমূহ চিনাক্তকৰণ আৰু পুনৰউৎপাদন কৰিবলৈ দিয়া হৈছিল। এই পৰীক্ষাত তলত উল্লেখ কৰা ধৰণে ফলাফল লাভ কৰা হৈছিল।

পৰীক্ষিত শব্দসমূহ ঃ (আদিস্থান) ফাল, ভাল, থাল, ঢাল, খাল, ঘাট

(মধ্যস্থান) আফাল, উভত, পথাৰ, আধাৰ, আখৰ, আঘাত

(অন্ত্যস্থান) লাফ, লাভ, উঠ, সাধ, ৰাখ, মাঘ

এই শব্দসমূহৰ উচ্চাৰণ কৰি উল্লিখিত তথ্যদাতাসকলক পোনতে চিনাক্ত কৰিবলৈ দিয়া হৈছিল। চিনাক্তকৰণৰ ক্ষেত্রত এবাৰ একেটা স্থানৰ মহাপ্রাণ ধ্বনিৰ সৈতে অল্পপ্রাণ ধ্বনিটোও উচ্চাৰণ কৰি তাৰ পৰা মহাপ্রাণ ধ্বনিটো চিনাক্ত কৰবিলৈ দিয়া হৈছিল। ইয়াৰ ফলাফল তলত দিয়া ধৰণে পোৱা গৈছে-

১০ৰ পৰা ২৫ বছৰৰ উচ্চতৰ মাধ্যমিক শাখা ল'ৰা-ছোৱালী- চিনাক্তকৰণ **১০০%**
উচ্চাৰণ **৬০%**

৬০ৰ পৰা ৭৫ বয়সৰ নিম্ন শিক্ষাগত অৰ্হতাৰ পুৰুষ-মহিলা- চিনাক্তকৰণ **৫%**
উচ্চাৰণ **০%**

ওপৰত উল্লেখ কৰা পৰীক্ষাটোত **১০ৰ পৰা ২৫** বছৰৰ যিসকল তথ্যদাতাক লৈ পৰীক্ষা কৰা হৈছিল সেইসকলে বিদ্যালয় অথবা সামাজিক স্তৰত অধিক ৰূপত অসমীয়া ভাষীৰ সংস্পর্শলৈ আহিছিল আৰু সেইবাবেই তেওঁলোকৰ শ্রৱণ-অভিজ্ঞতাই অসমীয়া ভাষাৰ আহৰণত বিশেষ ভূমিকা গ্রহণ কৰিছে। সেইদৰে, **৬০ৰ পৰা ৭৫** বয়সৰ নিম্ন শিক্ষাগত অৰ্হতাৰ তথ্যদাতাসকলৰ ক্ষেত্রত দেখা যায় যে তেওঁলোক সামাজিক সম্পর্ক আৰু সচেতনতা তুলনামূলকভাৱে কম হোৱা বাবেই শ্রৱণ-ক্ষমতাই ভাষাৰ গ্রহণযোগ্যতা আৰু প্রকাশত বিশেষ অৰিহণা যোগাব পৰা নাই। গতিকে দেখা যায় যে, ভাষা আহৰণত সামাজিক সম্পর্ক আৰু সচেতনতাই বিশেষভাৱে ক্রিয়া কৰে।

(গ) দক্ষতা ঃ

দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰী অথবা শিকাৰুৰ ক্ষেত্রত ভাষিক দক্ষতাৰ কথা আওকান কৰিব নোৱাৰি। কিছুমান দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰী অথবা শিকাৰুৱে ভাষা শিকণৰ বাবে বিশেষ দক্ষতা প্রদর্শন কৰি অন্য শিকাৰুতকৈ অধিক শুদ্ধকৈ দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰত বা উচ্চাৰণত সফলতা অর্জন কৰা দেখা যায়। কেৰল (1962, 1981)ৰ মতে ভাষিক দক্ষতা ব্যক্তিবিশেষে চাৰিধৰণৰ- ধ্বনিগত ক'ডিং দক্ষতা, ব্যাকৰণগত সংবেদনশীলতা, আনভূতিক ভাষা শিকন ক্ষমতা আৰু স্মৃতি শক্তি।

প্রথম দক্ষতা অনুসৰি দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীয়ে প্রথম ভাষা আৰু দ্বিতীয় ভাষাৰ ধ্বনিগত বৈষম্য নিৰূপন কৰি সেইবোৰ পুনৰ মনত পেলোৱা কার্যৰ ওপৰত নির্ভৰশীল।

দ্বিতীয় দক্ষতা মতে, ভাষাটো বিশ্লেষণ কৰি ভাষিক নিয়ম নির্ণয় কৰিব পৰা ক্ষমতা বা যোগ্যতাই হ'ল ব্যাকৰণগত সংবেদনশীলতা।

তৃতীয়তে, আনুভূতিক ভাষা শিকন ক্ষমতাই ভাষাটো তুলি লৈ বা উঠাই লৈ প্রকাশ কৰা দক্ষতাক সূচায়।

চতুর্থতে, আভ্যন্তৰীণ কার্যকলাপৰ জৰিয়তে নুবুজাকৈয়ে পুনৰাবৃত্তি কৰা কার্যকলাপৰ ক্ষেত্রত স্মৰণশক্তি বা স্মৃতিশক্তিৰ প্রয়োজনীয়তাৰ কথাক গুৰুত্ব প্রদান কৰে। (পৃ. ১৭)

দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ক্ষেত্রত যোগ্যতা বা দক্ষতাই সঁচাকৈয়ে গুৰুপূর্ণ ভূমিকা পালন কৰে। যদিও ভাষাৰ দক্ষতা বহুতৰে ক্ষেত্রত দেখিবলৈ পোৱা যায়, ই কিন্তু পৰিৱর্তনশীল। কিছুমান মানুহৰ ভাষা আহৰণৰ ক্ষমতা অধিক আৰু কিছুমানৰ কম। অৱশ্যে ইয়াৰ অর্থ এইটো নহয় যে যিসকলৰ ভাষিক দক্ষতা বেছি তেওঁলোকেহে দ্বিতীয় ভাষাৰ শুদ্ধ উচ্চাৰণ অথবা ব্যৱহাৰত সফল হ'ব আৰু কম ভাষিক দক্ষতা থকাসকলে সফল নহ'ব। চেলচে-মুর্চিয়া, ব্রিংটন আৰু গুডউইনে (১৯৯৬) আঙুলিয়াই দিছে

যে, কিছুমান ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ক্ষেত্ৰত প্ৰকৃততে এই চাৰিটা ভাষিক দক্ষতাৰ বৈশিষ্ট্যত মোটামুটি ভাৰসাম্যতা প্ৰদৰ্শন কৰা পৰিলক্ষিত হয়। কোৱা বাহুল্য যে এই চাৰিটা ভাষিক দক্ষতাৰ ভিতৰত ধ্বনিগত ক'ডি দক্ষতাকে আটাইতকৈ জটিল আৰু প্ৰয়োজনীয় হিচাপে বিবেচনা কৰা হয়। এই দক্ষতা অৰিহনে দ্বিতীয় ভাষা একোটাৰ শুদ্ধ উচ্চাৰণ কৰিবলৈ সক্ষম নহয়। মিচিং ভাষিৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰকাৰীৰ ক্ষেত্ৰত উক্ত দিশবোৰৰ প্ৰতিফলন ঘটা দেখা যায়। সেয়েহে তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰত প্ৰথম ভাষাৰ প্ৰভাৱ আহি পৰে।

উপসংহাৰ ঃ

প্ৰতিটো ভাষাৰে নিজা নিজা বিশেষত্ব থকাৰ হেতুকে দ্বিতীয় ভাষা ব্যৱহাৰ কৰোঁতে কম বেছি পৰিমাণে প্ৰথম ভাষাৰ প্ৰভাৱ পৰাতো তেনেই স্বাভাৱিক। ভাষা যিহেতু চৰ্চাৰ আধাৰতহে বিকাশ লাভ কৰে, সেয়েহে যিমানেই চৰ্চা হ'ব তিমানেই পৰিপক্ক হ'ব।

মিচিং ভাষীৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰটো অসমীয়া ভাষাটোৰ চৰ্চা এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয় হিচাপে চিহ্নিত কৰিব পাৰি। তদুপৰি ভাষাটোৰ চৰ্চাৰ অন্তৰালত সমাজ-সাংস্কৃতিক আৰু আনুষংগিক কাৰকবোৰে তেওঁলোকৰ অসমীয়া ভাষা ব্যৱহাৰত প্ৰতিবন্ধকতাৰ অন্যতম কাৰক হিচাপে বিবেচিত হৈছে। উপৰোক্ত দিশবোৰৰ ওপৰত গুৰুত্ব প্ৰদান কৰি ভাষাটোৰ ব্যৱহাৰত আগবাঢ়িলে এনে প্ৰতিবন্ধকতাৰ পৰা মুক্ত হৈ অসমীয়া ভাষাক সুষম যোগাযোগৰ মাধ্যম হিচাপে ব্যৱহাৰৰ ক্ষেত্ৰত যথেষ্ট সহায় কৰিব। ❑

সহায়ক গ্ৰন্থপঞ্জীঃ

অসমীয়াঃ

গোস্বামী, উপেন্দ্ৰনাথ। ভাষা-বিজ্ঞান। গুৱাহাটীঃ মণি-মাণিক প্ৰকাশ, ২০০৯। মুদ্ৰিত।

দলে, বসন্ত কুমাৰ। সম্পা.। অসমৰ জনগোষ্ঠীঃ এটি পৰিচয়। গুৱাহাটীঃ অসম সাহিত্য সভা, ২০০৯। মুদ্ৰিত।

পাদুন, নাহেন্দ্ৰ। মিচিং ভাষাৰ আভাস। ডিব্ৰুগঞ্জঃ কৌস্তুভ প্ৰকাশন, ২০০৫। মুদ্ৰিত।

বৰ্মন, শিৱনাথ। অসমৰ জনজাতি সমস্যা। গুৱাহাটীঃ বনলতা, ২০১৩। মুদ্ৰিত।

বৰুৱা, ভীমকান্ত। অসমৰ ভাষা। গুৱাহাটীঃ বনলতা, ২০১০। মুদ্ৰিত।

ৱাভা হাকাচাম, উপেন। অসমীয়া আৰু অসমৰ তিব্বত-বর্মীয় ভাষা। গোৱালপাৰাঃশ্ৰীমতী মঞ্জুলা, ৱাভা হাকাচাম, ২০১৩। মুদ্ৰিত।

হুছেইন, ইছমাইল। মিচিং সমাজ-ইতিহাস আৰু সংস্কৃতিৰ ঐতিহ্য। গুৱাহাটীঃ জ্যোতি প্ৰকাশন, ২০১৫। মুদ্ৰিত।

ইংৰাজী ঃ

Carroll, J.B. *The prediction of success in intensive foreign language training*. InR. Glaser (Ed.) Training, research, and education (pp. 87-136). Pittsburgh: University of Pittsburgh Press, 1962. Print.

Celce-Murcia, N., Brinton, M.D., & Googwin, J.M. *Teaching Pronounciation: A Reference for teacher of English to speakers of other Languages*.Camdridge, New York: Cambridge University Press, 1996. Print.

Donato, R. *Collective scaffolding in second language learning*. In J. P. Lantolf, & G.Appel (Eds), Vygotskian Approaches to Second Language Research (pp. 33-56). NJ:Ablex. 1994. Print.

Gardner, R.C. & Lambert, W.E. *Attitudes and Motivation in Second Language Learning*. Rowley, M.A: Newbury House, 1972. Print.

Kuhl, P. K., Conboy, B. T., Coffey-Corina, S., Padden, D., Rivera-Gaxiola,M., Nelson, T. (2008) *Phonetic learning as a pathway to language:New data and Native language Magnet theory expanded (NLMe)Philosophic Transaction of the Royal Society B*, 369, 979-1000.

Labov, W. *The social stratification of (r) in New York city department stores. The Social Stratification of English in New York City* (pp. 40-56). Cambridge university press. 2006. Print.

Lantolf, J. P. *Sociocultural theory and second language learning* / edited by James P.Lantolf. Oxford [Eng.]. New York : Oxford University Press, 2000. Print.

Lado, Robert. *Language Teaching: A Scientific Approach*. London: MacGrawHill, 1964. Print.

Ohta, A.*Applying Sociocultural Theory to an Analysis of Learner Discourse: LearnerLearner Collaborative Interaction in the Zone of Proximal Development*. Issues In Applied Linguistics, 6(2), 93. 1995. Print.

Sato, M., & Lyster, R. *Peer Interaction and Corrective Feedback for Accuracy and Fluency Development: Monitoring, Practice, and Proceduralization*. Studies in Second Language Acquisition, 34(4), 591-626. 2012. Print.

Swain, M. *Three functions of output in second language learning. In G. Cook and B. Seidelhofer (Eds), Principles and practice in applied linguistics: Studies in honor of H.G. Widdowson* (pp. 125-144). Oxford: Oxford University Press,1995. Print.

Sinha, Avanika, Banerjee, Niroj, Sinha, Ambalika and Shastri, Rajesh Kumar.

Interference of first language in the acquisition of second language.

Journal of Psychology and Counselling Vol.1(7), pp. 117-122, Sep. 2009. Print.

Taid, Tabu Ram, *An Introduction to Mising Phonology and Grammar*.

Rajaduar, Guwahati: Anundoram Borooah Institute of language Art & Culture,(ABILAC) Assam, 2016. Print.

Troike, Muriel Saville (Ed.). *Introducing Second Language Acquisition*. U.K.Cambridge university Press, 2012. Print.

Vygotsky, L. S, *Thought and language*. Cambridge MA: MIT Press.1962. Print.

Yuri, Kumagai, *The Effects of Culture on Language Learning and Ways of*

Communication: The Japanese Case. University of Massachusetts Amherst:Center for International Education, 1994. Print.

Wardhaugh, R, *Introduction. An Introduction to sociolinguistics* (pp. 1-22). Cornwall: Blackwell publishing. 2006. Print

Yagang, F., *Listening: Problems and solutions. In T. Kral (ed.) Teacher*

Development: Making the Right Moves. Washington, DC: English Language Programs Divisions, USIA, 1994. Print.

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

মাজুলী সংস্কৃতিত থলুৱা লোকসকলৰ বাবে বাণিজ্যিক সম্ভাৱনা ঃ নমুনাভিত্তিক এক চমু অধ্যয়ন

সবিতা ভাগৱতী

গৱেষিকা, বাণিজ্য বিভাগ
ৰাজীৱ গান্ধী কেন্দ্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়
অৰুণাচল প্রদেশ – ৭৯১১১২
ম'বাইল ঃ ৮৬৩৮০১৮১২৮
ই-মেইল ঃ sabitabhagabati064@gmail.com

মাম্পি দাস

গৱেষিকা, বাণিজ্য বিভাগ, কৃষ্ণ কান্ত সন্দিকৈ মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়, গুৱাহাটী
অসম - ৭৮১০১৭
ম'বাইল ঃ ৬০০১১৯৯৪৫৩
ই-মেইল ঃ mampi020993@gmail.com

সাৰাংশ (Abstract) ঃ

মাজুলী হৈছে বিশ্বৰ সর্ববৃহৎ জনবসতিপূর্ণ নদী দ্বীপ। ইয়াৰ কেইবাখনো সত্র - আউনীআটী সত্র, দক্ষিণ পাট সত্র, গড়মূৰ সত্র, উত্তৰ কমলাবাৰী সত্র, বেঙেনা আটী সত্র, চামগুৰি সত্র, ভোগপুৰ সত্র, বৈষ্ণৱী মঠ ইত্যাদি ষোড়শ শতিকাৰ, অসমীয়া সংস্কৃতিৰ পিতৃ শংকৰদেৱে প্রতিষ্ঠা কৰা অসমৰ বৈষ্ণৱ ধর্মৰ অনন্য বৈশিষ্ট্য। সত্রসমূহ কেৱল মঠ নহয়, পৰম্পৰাগত পৰিবেশন কলাৰ কেন্দ্র। পঞ্চদশ শতিকাত মাজুলীত প্রথম সত্র প্রতিষ্ঠা কৰা হৈছিল। নৈতিকতা আৰু সামাজিক-সাংস্কৃতিক আদর্শৰ প্রচাৰৰ বাবে তেতিয়াৰ পৰাই পঁয়ষষ্ঠিখন সত্র প্রতিষ্ঠা কৰা হৈছে। অৱশ্যে বর্তমান মাজুলীত মাত্র বাইশখন সত্রহে আছে। বানপানী আৰু গৰা খহনীয়াৰ ধ্বংসলীলাৰ বাবে বাকীকেইটা নিৰাপদ স্থানলৈ স্থানান্তৰিত কৰিবলগীয়া হৈছে। পৰিবেশানুকুল পর্যটন অর্থাৎ ইক' টুৰিজিম (Eco tourism) হৈছে বহনক্ষম জীৱিকা উপার্জনৰ আৰু একে সময়তে ঠাইখনৰ পাৰিবেশিক বৈচিত্র্য সংৰক্ষণৰ এক উপায়। অসমৰ সাংস্কৃতিক আৰু প্রাকৃতিক ঐতিহ্য মাজুলীও পৰিৱেশ পর্যটনৰ বাবে আদর্শ গন্তব্যস্থান হ'বলৈ প্রয়োজনীয়তাৰ সৈতে খাপ খাই পৰে। যদি মাজুলীক পৰিৱেশানুকুল পর্যটনকেন্দ্র (Eco tourism hub) লৈ ৰূপান্তৰিক কৰিব পৰা যায়, তেন্তে ভূমিৰ খিলঞ্জীয়াই অর্থনৈতিক উন্নয়নৰ উৎস বিচাৰি পাব। এই প্রক্রিয়াত চহকী জলজ উদ্ভিদ, প্রাণী, ভূ-প্রকৃতি, সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যও সংৰক্ষণ কৰিব পৰা যায়। লেখিকাদ্বয়ে এই প্রবন্ধটোত মাজুলী ভ্রমণ কৰি ইয়াৰ সাংস্কৃতিক বাণিজ্যিকীকৰণৰ সম্ভাৱনাৰ সম্বন্ধে এক নমুনা ভিত্তিক চমু অধ্যয়ন আগবঢ়াইছে।

সূচক শব্দ ঃ সংস্কৃতি, পৰিৱেশানুকুল পর্যটন (Eco tourism) মুখ্য শিল্প, বাণিজ্যিকীকৰণ।

আৰম্ভণি (Introduction) ঃ

ক্ষেত্রফল অনুসৰি মাজুলী বিশ্বৰ ১৭ নং বৃহত্তম নদী দ্বীপ আৰু বিশ্বৰ ৯ নং সর্বাধিক জনবহুল নদী দ্বীপ। মাজুলীত চাৰিমাত্রিক পর্যটকৰ আকর্ষণ আছে। প্রথমে ইমান দিনে ই বিশ্বৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ জনবসতিপূর্ণ নদী

দ্বীপৰ মৰ্যাদা লাভ কৰি আহিছে। দ্বিতীয়তে ইয়াৰ আকৰ্ষণ হ'ল উদ্ভিদ আৰু প্ৰাণীৰ ক্ষেত্ৰত চহকী বন্যপ্ৰাণী (চৌধুৰী, ২০০০)। তৃতীয় মাত্ৰাটো হ'ল ধৰ্মীয় গুৰুত্ব। মাজুলী ধৰ্মভিত্তিক সাংস্কৃতিকত কলাত্মক আৰু আচাৰ-ব্যৱহাৰেৰে গঠিত এক পবিত্ৰ দ্বীপ। ইয়াৰ চতুৰ্থ মাত্ৰা হ'ল মাজুলীৰ চহকী জনজাতীয় জনসংখ্যাই ইয়াত এক ৰঙীন চিত্ৰময় প্ৰতিচ্ছবি যোগ কৰে। মাজুলীৰ বাসিন্দাসকলৰ অধিকাংশই দশম শতিকাৰ আগতে ইয়ালৈ প্ৰব্ৰজন কৰা অৰুণাচল প্ৰদেশৰ মিছিং জনজাতি।

প্ৰাণৰন্ত বহুৰঙী সংস্কৃতিৰে সমৃদ্ধ মাজুলী। মনোৰঞ্জনৰ জৰিয়তে ৰাইজৰ মাজত ধৰ্মীয় আৰু সাংস্কতিক বাৰ্তা প্ৰেৰণ কৰিবলৈ শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱে ভাওনাৰ ৰূপ প্ৰৱৰ্তন কৰিছিল। মাজুলীত এতিয়াও প্ৰচলিত পৰম্পৰাগত শিল্পকৰ্মসমূহৰ ভিতৰত অন্যতম বিখ্যাত পৰম্পৰাগত শিল্পকৰ্ম পাণ্ডুলিপি। ধৰ্মীয় শাস্ত্ৰ পূজা কৰাৰ প্ৰথাৰ ফলত পাণ্ডুলিপিত চিত্ৰকলাৰ অৱিৰ্ভাৱ ঘটিছিল। অংকীয়া গীত আৰু বৰগীত হৈছে শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱৰ সময়ৰ পৰাই ৰচনা কৰা বিভিন্ন ধৰণৰ সংগীত।

মুখা শিল্প হৈছে মাজুলীৰ অন্য এক অন্যতম সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য। মুখা বা মুখা হৈছে মহাকাব্যৰ পৌৰাণিক চৰিত্ৰ মহাভাৰত আৰু ৰামায়ণৰ প্ৰকাশ। অসমত মুখা নিৰ্মাণ কলাৰ ধাৰণা মধ্যযুগীয় যুগৰ নৱ বৈষ্ণৱ সাধু শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱে ৰচনা কৰিছিল। 'মহাপুৰুষ' জনা আছিল সাহিত্যৰ লগতে অঞ্চলটোৰ সামাজিক-সাংস্কৃতিক জীৱনতো বৈপ্লৱিক পৰিৱৰ্তন অনাৰ পথ প্ৰদৰ্শক। তেওঁ ভক্তি আন্দোলনৰ জৰিয়তে সাধাৰণ মানুহক শিক্ষিত কৰাৰ এক নতুন যুগ প্ৰতিষ্ঠা কৰিছিল। তেওঁ ৰামায়ণ আৰু মহাভাৰতৰ মহান মহাকাব্যৰ আধাৰত নাটকৰ সৃষ্টি, গীত, কবিতা আৰু চিত্ৰকলাৰ ৰচনা কৰিছিল। শংকৰদেৱে ৰচনা কৰা অংকীয়া ভাওনা নামৰ নাটক সমূহ ৰামায়ণ আৰু মহাভাৰতৰ মহাকাব্যৰ আধাৰত নিৰ্মিত আছিল।

প্ৰাচীন কালৰ পৰাই মুখা নিৰ্মাণৰ পৰম্পৰা পৰম্পৰাগতভাৱে বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰতিষ্ঠানিক কেন্দ্ৰ সত্ৰসমূহে চলাই আহিছে। মুখাৰ ৰূপ আৰু ৰং সমূহ সাধাৰণতে বেলেগ হোৱা দেখা যায় যাৰ ফলত ভাওনাৰ ভিন্ন চৰিত্ৰসমূহ সহজে লক্ষ্য কৰিব পৰা যায়। শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱৰ দ্বাৰা আৰম্ভ কৰা সত্ৰসমূহ ধৰ্ম, সংস্কৃতি আৰু জীৱনশৈলীৰ শিক্ষাৰ জনপ্ৰিয় কেন্দ্ৰ আৰু বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ সকলো শ্ৰেণীৰ মানুহৰ মাজত এক বৈপ্লৱিক ৰূপৰ কেন্দ্ৰ হিচাপে গঢ় লৈ উঠিছে। বৰ্তমান মুখা নিৰ্মাণৰ লগত মাত্ৰ কেইখনমান সত্ৰহে জড়িত - চামুগুৰি সত্ৰ আৰু কমলাবাৰী সত্ৰ। চামগুৰি সত্ৰ, মুখা শিল্পৰূপত সৃষ্টিশীলতাৰ বাবে বিখ্যাত। ১৬৬৩ চনত শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱৰ নাতি শ্ৰীশ্ৰীচক্ৰপাণীয়ে চামুগুৰিসত্ৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰিছিল। এই শিল্প প্ৰজন্ম সত্ৰীয়া ভকত (পুৰোহিত)ৰ মাজেৰে প্ৰজন্ম ধৰি চলি আহিছে। এই অনন্য শিল্পকৰ্মটোৱে লাখ লাখ লোকৰ আগ্ৰহ আকৰ্ষণ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে আৰু শেহতীয়াকৈ ব্ৰিটিছ সংগ্ৰহালয়লৈও খোজ পেলাইছে। মাজুলীৰ মুখা শিল্প এতিয়া ৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়ৰ লগতে আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়তো পৰিচিত এক পৰম্পৰাগত কলা। চামগুৰি সত্ৰৰ ড০ হেমচন্দ্ৰ গোস্বামীয়ে নিৰ্মাণ কৰা মুখা এতিয়া ব্ৰিটিছ সংগ্ৰহালয়ত প্ৰদৰ্শন কৰা হৈছে। ডাঃ গোস্বামীয়ে মুখা সমূহ এনেদৰে সংশোধন কৰিছে যাতে দৰ্শকৰ বাবে অধিক পাৰস্পৰিক ক্ৰিয়া-কলাপ সম্পন্ন হয়। তেওঁ মুখাৰ কঠিন ৰূপটোক নতুনকৈ সজালে যাতে নাটকত ভাষণ দিয়াৰ সময়ত চোলা লৰচৰ কৰিব পৰা যায়। ব্যৱসায়িক উদ্দেশ্যত বিভিন্ন আকাৰৰ মুখা তৈয়াৰ কৰিবলৈ তেওঁ মাজুলীত বিভিন্ন শিল্পীক প্ৰশিক্ষণ দি আহিছে।

ব্ৰহ্মপুত্ৰ উপত্যকাত বসবাস কৰা এটা জনগোষ্ঠীয় আৰু খিলঞ্জীয়া সম্প্ৰদায়, মিছিং জনজাতি অসম আৰু অৰুণাচল প্ৰদেশৰ কিছু অংশত পোৱা অন্যতম বৃহৎ জনজাতি আৰু প্ৰাথমিক বসতিপ্ৰধান লোক হিচাপে জনা যায়।

পূৰ্ব সাহিত্যৰ পৰ্যালোচনা (Literature Review) ঃ

অসমৰ ভূ-সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য মাজুলী বহুৰৰ পিছত বছৰ ধৰি নদীৰ পাৰৰ খহনীয়া আৰু বানপানীৰ দ্বৈত বিপৰ্যয়ৰ সন্মুখীন হৈ অহাৰ লগতে আগন্তুক দশকবোৰত দ্বীপটোৰ অস্তিত্বৰ প্ৰতি ভয়াৱহ ভাবুকি আহি পৰিছে (নিখিল ৰয় আৰু লেখকসকল, ২০২০; Sankhua, Sharma, Garg, & Pandey, 2005) । যদিও, এই সমস্যাসমূহ মোকাবিলা কৰিবলৈ বহু প্ৰচেষ্টা চলোৱা হৈছে, কিন্তু খহনীয়াৰ সমস্যা এতিয়াও বৃহৎ ৰূপত দেখা গৈছে। অধ্যয়নৰ পৰা স্পষ্ট যে দ্বীপটোৰ অঞ্চলটো ধাৰাবাহিকভাৱে হ্ৰাস পাইছে। বেছিভাগ ঠাইতে বানপানীৰ পিছত খহনীয়াৰ সমস্যা অধিক তীব্ৰ। ইয়াৰ মূল কাৰণ হৈছে বানপানীৰ সময়ত অধিক

পৰিমাণৰ পলস নিক্ষেপ হোৱাৰ বাবে পাৰৰ ঠাইসমূহ অতিমাত্রা ঠেক হোৱা।

মাজুলীৰ সত্রসমূহত পাণ্ডুলিপি সংৰক্ষণ কৰাটো এক অতি বিশাল অধ্যয়নৰ ক্ষেত্র কাৰণ এতিয়াও বৃহৎ সংখ্যক বিৰল পাণ্ডুলিপি বিভিন্ন ধর্মীয় সংগঠনৰ আন্ধাৰ কোঠাত আৰু ব্যক্তিগত তত্ত্বাৱধানত মজুত হৈ আছে। মাজুলী সত্রত পাণ্ডুলিপি সংৰক্ষণ এতিয়াও এক স্পর্শকাতৰ বিষয়, বিশেষকৈ ধর্মীয় অনুষ্ঠানত; সেয়েহে, কিছুমান ভঁৰাল এই অধ্যয়নৰ পৰা বাদ দিয়া হৈছে। এই অধ্যয়নটোৰেই এনে প্রয়োগৰ আৰম্ভণি আৰু ইয়াক জনসংখ্যাৰ আকাৰ অর্থাৎ পাণ্ডুলিপি আৰু ভঁৰালৰ সংখ্যাৰ ওপৰত নির্ভৰ কৰি বৃহৎ পৰিসৰত ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰি। তথ্য প্রযুক্তি, আন্তঃগাঁথনি আৰু নূন্যতম প্রযুক্তিগত দক্ষতাৰ সৈতে সমগ্র বিশ্বতে অনলাইনত অনুসন্ধানযোগ্য, উদ্ধাৰযোগ্য আৰু সুলভ কৰি তুলিবলৈ সত্রসমূহৰ পাণ্ডুলিপিসমূহ সংৰক্ষণ কৰাটো নিতান্তই প্রয়োজনীয়। সত্রৰ পাণ্ডুলপিসমূহে বিভিন্ন ভাষা আৰু লিপিত লিখা এই বিৰল জ্ঞান সংকলসমূহৰ ব্যৱহাৰ আৰু প্রসাৰ কৰিব (চন্দ্র কান্ত বৰা, ২০১৭)।

মাজুলী বিশ্বৰ সর্ববৃহৎ নদী হোৱাৰ উপৰিও আৰু অসমৰ সত্রীয়া সংস্কৃতিৰ কেন্দ্রবিন্দু। ই সদায় পর্যটকৰ আকাংক্ষিত গন্তব্যস্থান হৈ আহিছে। স্থানটোৰে প্রায়ে পর্যটকৰ দৃষ্টি আকর্ষণ কৰাৰ কাৰণ হ'ল ইয়াত সৃষ্টিশীল শিল্পৰ সংমিশ্রণেৰে ভগৱান শ্রীকৃষ্ণৰ জীৱন আৰু পৰিঘটনাক মুখা শিল্প আৰু ভাওনাৰ জৰিয়তে প্রণয়ন কৰা হয় (ৰিমি ৰেখা ফুকন আৰু লেখক সকল, ২০২০)।

পৰিৱেশানুকুল পর্যটন, সাংস্কৃতিক পর্যটন, কৃষি-পর্যটন আৰু ধর্মীয় পর্যটনৰ দৰে পর্যটনৰ বিভিন্ন ক্রমবর্ধমান খণ্ডৰ বাবে মাজুলীৰ যথেষ্ট সম্ভাৱনা আছে। যদিও চৰকাৰে গ্রাম্য জীৱিকাৰ সুৰক্ষা প্রদানৰ বাবে বিভিন্ন গ্রাম্য উন্নয়ন আৰু মজুৰি নিয়োগ আঁচনি আৰম্ভ কৰি আহিছে, কিন্তু কিছু দোষৰ বাবে ই আশাবঞ্চক ফলাফল দেখুৱাব পৰা নাই (বিকাশ হাজৰিকা, ২০১৬)।

অধ্যয়নৰ উদ্দেশ্য (Objectives of the study) ঃ

দেখা গৈছে যে প্রবল ব্রহ্মপুত্র নদীৰ ওপৰেৰে যোৰহাট-মাজুলী দলং নির্মাণৰ কাম চলি আছে। মাজুলী অঞ্চলৰ স্থানীয় ৰাইজৰ মতে, এই দলংখন মাজুলী আৰু অসমৰ অন্যান্য অংশৰ সংযোগী স্থল। যাৰ ফলত মাজুলীৰ সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যৰ উন্নয়নৰ লগতে কিছু ক্ষতিৰ সম্ভাৱনা ও দেখা যায়। এই প্রবন্ধটো লিখাৰ উদ্দেশ্য হৈছে মাজুলী সংস্কৃতিত থলুৱা লোকসকলৰ বাবে বাণিজ্যিক সম্ভাৱনাৰ বিষয়ে নমুনাভিত্তিক অধ্যয়নৰ ভিত্তিত আগবঢ়োৱা আলোচনা।

গৱেষণা পদ্ধতি (Research Methodology) ঃ

লেখিকাদ্বয়ে এই প্রবন্ধটোত মাজুলী ভ্রমণ কৰি ইয়াৰ সংস্কৃতিত বাণিজ্যিকীকৰণৰ প্রভাৱ সম্বন্ধে এক নমুনা ভিত্তিক চমু অধ্যয়ন আগবঢ়াইছে। ইয়াত সন্নিৱিষ্ট বিষয়সমূহ পূর্বৰ লিখনি প্রকাশ (Secondary data) লগতে গৱেষণাৰ ক্ষেত্রস্থল (Primary Data) গৈ অনা স্বীকৃত তথ্যৰ পৰা যুগুত কৰা হৈছে।

ক্ষেত্র অধ্যয়নৰ ওপৰত আলোচনা (Discussion on Field Study) ঃ

অসমৰ ব্রহ্মপুত্র নদীৰ মাজত থকা নদী দ্বীপ মাজুলী, ২০ শতিকাৰ আৰম্ভণিতে আয়তনত ১২৫৫ বর্গ কিলোমিটাৰ আছিল, কিন্তু ক্রমান্বয়ে চলি থকা খহনীয়াৰ ফলত যথেষ্ট ক্ষতিগ্রস্ত হোৱাৰ বাবে বর্তমান ই মাত্র ৩৫২ বর্গ কিলোমিটাৰহে সামৰি আছে। মাজুলীক আগুৰি থকা নদীখন বাঢ়ি অহাৰ লগে লগে সংকুচিত হৈছে। যোৰহাট চহৰৰ পৰা ফেৰীৰে এই দ্বীপলৈ বর্তমান যোৱাৰ ব্যৱস্থা আছে। মাজুলী অসমীয়া নৱবৈষ্ণৱী সংস্কৃতিৰ বাসস্থান। এই স্থানটোত ২২ খন বৈষ্ণৱ সত্র আছে যিবোৰ ১৫ শতিকাৰ ভিতৰত প্রতিষ্ঠা হৈছিল। প্রতি বছৰে বহু ভ্রমণকাৰীয়ে এই সত্রসমূহ ভ্রমণ কৰে আৰু এই সত্রসমূহ অঞ্চলটোৰ আটাইতকৈ বিখ্যাত পর্যটনস্থলীও। ইয়াৰ কেইখনমান গুৰুত্বপূর্ণ সত্র হ'ল - দক্ষিণপাট সত্র, কমলাবাৰী সত্র, আৰু গড়মূৰ সত্রই বিশেষকৈ অসমীয়া মানুহৰ বাবে সাংস্কৃতিক পর্যটনস্থলীৰ বাবে বাট সৃষ্টি কৰিছে। ৰাস পূর্ণিমা এনেকুৱা এটা গুৰুত্বপূর্ণ অনুষ্ঠান যিটো ইয়াত মানুহে বৈচিত্রময় ৰূপত উদযাপন কৰে। ভগৱান শ্রীকৃষ্ণৰ জীৱনৰ আধাৰত ৰাস পূর্ণিমান দিনা আয়োজন কৰা নৃত্য প্রদর্শন চাবলৈ বৰ ভাল লাগে।

ক্ষেত্র ভ্রমণত গৱেষকসকলে দেখিলে যে মূলতঃ কমলাবাৰী সত্র আৰ গড়মূড় সত্রত কুটিৰৰ সুবিধাসমূহ অতি আকর্ষণীয় বুলি পোৱা যায়। দেশী, বিদেশী অথবা থলুৱা লোকসকল পর্যটনৰ সময়ত থকা-মেলা ব্যৱস্থা

কৰা বাবে এই ঠাই টুকুৰাত পৰম্পৰাগত মিছিং জনগোষ্ঠীৰ চাং ঘৰ আৰ্হিত বিভিন্ন কুটিৰ (Cottage Model) দেখিবলৈ পোৱা যায়। সকলো বিদেশী পৰ্যটক আৰু ভাৰতীয়ই সেই চাং ঘৰবোৰক বেছি পছন্দ কৰে, এনেকুৱা বিশেষ আৰ্হিত নিৰ্মাণ কৰা কুটীৰবোৰেই হ'ল পৰ্যটক আকৰ্ষণৰ কৌশল। অসমৰ পৰ্যটকৰ মানচিত্ৰত মাজুলী সঁচাকৈয়ে জনপ্ৰিয় হৈ পৰাৰ ফলত ৰাস পূৰ্ণিমাৰ ঋতুত আৰু অন্যান্য ভ্ৰমণৰ বতৰত সেই কুটিৰ বুকিং কৰাটো প্ৰয়োজনীয় হৈ পৰে। এনেকুৱা কুটিৰ বোৰত অসমৰ থলুৱা খাদ্য সামগ্ৰীৰ যোগান ব্যৱস্থা ও আছে। একাষৰীয়া এই নিস্তব্ধ স্থানটোত বিলাসী কুটীৰবোৰ অলপ খৰচী হ'লেও অতি আকৰ্ষণীয় আৰু জনপ্ৰিয়।

মাজুলীৰ শ্ৰীশ্ৰী চামগুৰি সত্ৰ সত্ৰীয় মুখা বা মুখা নিৰ্মাণ কাৰ্য্য (মুখা শিল্প)ৰ বাবে বিশ্বজুৰি বিখ্যাত যিয়ে পৰিবেশনৰ জৰিয়তে পাৰস্পৰিক ক্ৰিয়াৰ এক কলাত্মক মাধ্যম প্ৰতিফলিত কৰে। মহাপুৰুষ শ্ৰীশ্ৰী শংকৰদেৱে ভাওনাৰ নাট্য পৰিবেশনত মুখ (মুখা) ব্যৱহাৰৰ প্ৰৱৰ্তন কৰি পৰিবেশনৰ জৰিয়তে পাৰস্পৰিক ক্ৰিয়াৰ এক কলাত্মক মাধ্যম প্ৰতিফলিত কৰা পৌৰাণিক চৰিত্ৰৰ বিভিন্ন প্ৰকাশক চিত্ৰিত কৰিছিল। সেই মুখাবোৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ প্ৰক্ৰিয়াটোত বহুত ধৈর্য্যৰ প্ৰয়োজন আৰু ইয়াৰ তিনি প্ৰকাৰৰ প্ৰস্তুত হ'ল - মুখখন ঢাকিবলৈ 'মুখ মুখা', প্ৰায় গোটেই শৰীৰটো ঢাকিবলৈ 'বৰ মুখা' আৰু 'লুটকাই মুখা' খন তুলনামূলকভাৱে বৰ মুখাতকৈ সৰু। মাজুলীৰ পৰম্পৰাগত মুখা নিৰ্মাণ সংস্কৃতি এটা প্ৰজন্মৰ পৰা আন এটা প্ৰজন্মলৈ বিয়পি আহিছে। বৰ্তমান সময়ত মুখাৰ ব্যৱহাৰ সত্ৰ আৰু নামঘৰৰ সাংস্কৃতিক স্থানৰ বহু ওপৰলৈ গৈছে যদিও কিন্তু ইয়াৰ প্ৰস্তুতি প্ৰক্ৰিয়া এতিয়াও একেই আছে। পৰিৱেশানুকুল পৰ্যটনৰ বাবে ঠাই সৃষ্টি কৰা, পৰম্পৰাগত নাট্য প্ৰদৰ্শনৰ উপৰিও এই মুখাসমূহ এতিয়া বিভিন্ন উদ্দেশ্যতো ব্যৱহাৰ কৰা হয় - আধুনিক নাটক, ঘৰুৱা সজ্জা আৰু সংগ্ৰহালয়ৰ প্ৰদৰ্শনীত বিশ্বজুৰি মাজুলীৰ মুখা শিল্পীই সুকীয়া স্থান লাভ কৰিছে।

মাজুলীত দেখা পোৱা অন্য এক বৈচিত্ৰ্য হ'ল মাজুলীৰ মিছিং সম্প্ৰদায়ৰ মহিলাসকলৰ কৃষি আৰু কৃষি কাৰ্য্য আৰু পৰম্পৰাগত মিছিং মহিলাসকলে পৰিধান কৰা সাজ-পোছাক প্ৰস্তুত কৰা কাৰ্য। এই জনগোষ্ঠীৰ মানুহৰ পৰম্পৰাগত সাজ-পোছাক হ'ল 'গনৰো উগন' (ধুতি), 'মিবু গালুক' (চাৰ্ট), 'ডুমেৰ' (গামুচা) ইত্যাদি। পোছাক প্ৰস্তুত কৰাৰ কেঁচামাল অসমৰ ভিতৰত আৰু বাহিৰৰ মানুহৰ দাবী পূৰণৰ বাবে যোৰহাট আৰু গুৱাহাটীৰ পৰা আমদানি কৰা হয়। আনকি মাজুলী ভ্ৰমণৰ বিদেশীসকলো সেই ৰঙীন সাজ-পোছাকবোৰৰ প্ৰতি অতিশয় আকৰ্ষিত হয়। কিন্তু যদি পোছাকবোৰৰ বিপণন / বজাৰীকৰণ সঠিকভাৱে কৰা হয় তেন্তে মহিলাসকলক অধিক উপাৰ্জন কৰি বহনক্ষম জীৱিকাৰ পথ আগবঢ়াবলৈ সহায় কৰিব পাৰে।

মাজুলীবাসীৰ মাজত পৰ্যবেক্ষণ কৰা আন এক পৰম্পৰাগত অৰ্থনৈতিক কাম-কাজ হ'ল আচবাব, মাছ ধৰা ফান্দ, ফেন, ট্ৰে, ধনু-কাঁড়, চাবিৰ আঙুঠি, ঢাৰী, পাটি, খৰাহি, টুপী ইত্যাদি তৈয়াৰ কৰিবলৈ বাঁহ আৰু বেতৰ ব্যৱহাৰ। কিন্তু দেখা যায় যে এই উৎপাদিত সামগ্ৰীসমূহত অতি নূন্যতম উপাৰ্জনৰ সম্ভাৱনাৰ সৈতে বিশাল সময় আৰু শক্তিৰ প্ৰয়োজন হয়।

জনগোষ্ঠীয় মিছিং, গাঁও, গ্ৰাম্য খেতিপথাৰ, ধাননি পথাৰ আদিৰ মাজেৰে এই দ্বীপটোত বাস কৰা লোকসকলৰ জীৱন আৰু সংস্কৃতি অনুভৱ কৰাৰ অন্যতম উত্তম উপায় আৰু এই ধৰণৰ পৰিৱেশ বন্ধুত্বপূৰ্ণ সংস্কৃতি শিক্ষণ ভ্ৰমণ স্থলী হিচাপে গঢ় দিব পৰাকৈ হিচাপে বিপুল সম্ভাৱনা আছে। ইয়াৰ সন্দৰ্ভত ইতিমধ্যে কিছুমান বেচৰকাৰী সংস্থাই অসম পৰ্যটন উন্নয়ন নিগমৰ সহযোগত পদক্ষেপ আৰম্ভ কৰিছে।

চামগুৰি সত্ৰত গৱেষকদ্বয়ে সত্ৰাধিকাৰ শ্ৰীধীৰেন গোস্বামীক লগ পাইছিল। তেওঁৰ পৰাই গম পোৱা গ'ল যে তেওঁলোকে তাত পুৰুষাণুক্ৰমে বাস কৰি আছে। এতিয়া তেওঁলোকে মুখা শিল্প ব্যৱসায়ত নিয়োজিত হৈছে কাৰণ ইয়াৰ সমগ্ৰ বিশ্বতে বিপুল চাহিদা আছে। তাত তেওঁলোকে মুখা নিৰ্মাণৰ বাবে প্ৰশিক্ষণ দি আহিছে। কৰ্মচাৰীসকলক তেওঁলোকৰ মজুৰি হিচাপে দৈনিক ১০০০-২০০০ টকা দিয়া হয়। স্থানীয় যুৱক-যুৱতীসকলে নিজৰ কামত সন্তুষ্ট কাৰণ তেওঁলোকে মুখা শিল্প কাম-কাজৰ পৰা ভাল ধন উপাৰ্জন কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে। অসমৰ অন্যান্য ৰাজ্যই আৰু আনকি বিদেশৰ পৰাও তেওঁলোকক মুখাভিনয় আৰু ভাওনা প্ৰদৰ্শনৰ বাবে আমন্ত্ৰণ জনাইছে। এনে ক্ষেত্ৰত স্থানীয় পৰ্যটকৰ বাবে মাজুলী শিক্ষামূলক ভ্ৰমণৰ স্থানো হ'ব পাৰে।

উপসংহাৰ (Conclusion) ঃ

ওপৰত উল্লেখিত আলোচনাৰ পৰা আমি ক'ব পাৰো যে পৰম্পৰাগত সংস্কৃতিৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি ঠাইখনত

বিভিন্ন অর্থনৈতিক সম্ভাৱনা উপলব্ধ। কিন্তু জনসাধাৰণৰ বাণিজ্যিক ইচ্ছাৰ অভাৱৰ বাবে মাজুলী এতিয়াও ‘পৰিৱেশানুকুল পর্যটন স্থান’ (Eco-Tourism Spot) হিচাপে গঢ় লৈ উঠা নাই। এই দ্বীপটোৰ বাবে আটাইতকৈ ডাঙৰ সমস্যাটো হ’ল গঢ়া খহনীয়া, যাৰ বাবে ই দ্রুতগতিত নিজৰ এলেকা হেৰুৱাই পেলোৱাৰ উপক্রম হৈ আহিছে। বিশাল ব্রহ্মপুত্রই সঘনাই গতিপথ সলনি কৰি জনসাধাৰণৰ জীয়াই থকাটো আৰু অধিক কঠিন কৰি তোলে। পৰিৱেশানুকুল পর্যটনৰ বাবে মাজুলীক আকর্ষণস্থলী হিচাপে গঢ়ি তুলিবলৈ কর্তৃপক্ষৰ আন্তৰিক পৰিকল্পনাৰ অতিকৈ প্রয়োজন। প্রত্যাহ্বানটো হ’ল বৃহৎ পৰিসৰত পর্যটন সম্ভাৱপৰ কৰি তোলা আৰু একে সময়তে প্রকৃতিৰ ভাৰসাম্যক হেৰুৱায় নেপেলোৱাকৈ আৰু নিজৰ ধৰণেৰে বসবাস কৰা বাসিন্দাসকলক বিচলিত নকৰা অথবা পৰিবেশৰ পৰিস্থিতি তন্ত্রৰ সুৰক্ষা দি ৰাখি ইয়াক আকর্ষণস্থলী কৰি তোলা। ❑

সংহায়ক গ্রন্থপুঞ্জী আৰু প্রসংগটীকা ঃ

১। চৌধুৰী, এ. অসমৰ চৰাই । (২০০০), গিবন বুক, গুৱাহাটী

২। বৰা, চন্দ্র কান্ত । “সত্রত পাণ্ডুলিপি সংৰক্ষণ আৰু সংৰক্ষণ ঃ মাজুলী সত্রৰ বিশেষ উল্লেখেৰে” (২০১৭)।

৩। আচার্য, সুধাশ্রী। “দ্য থিটোৰিকেল ইউজ অৱ মাস্কঃ এ কম্পাৰেটিভ ষ্টাডি অৱ গ্রীক থিয়েটাৰ এণ্ড চাউ ডান্স অৱ বেংগল।”, (২০২১), The Golden line - ইংৰাজী সাহিত্যৰ এখন আলোচনী।

৪। শর্মা, জে এন, ফুকন, এম কে, “ভাৰতৰ অসমত ব্রহ্মপুত্র নদীৰ মাজুলী দ্বীপৰ উৎপত্তি আৰু কিছু ভূ-ৰূপতাত্ত্বিক পৰিৱর্তন।” ভূ-ৰূপবিজ্ঞান, (২০০৪), সংখ্যাঃ ৬০, পৃষ্ঠাঃ ১-১৯।

৫। বৰাছা, পি, আৰু এ গায়েন। “ভাৰতৰ অসমৰ মাজুলী দ্বীপৰ ভাবুকিৰ সম্মুখীন হোৱা জলভূ সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য ৰক্ষা কৰাঃ নমুনা ভিত্তিক এক চমু অধ্যয়ন” আই অ’ পি সম্মিলন শৃংখলা পৃথিৱী আৰু পৰিৱেশ বিজ্ঞান। (২০২০), সংখ্যা ঃ ৫৯৭ নংঃ ১, আই অ’ পি পাব্লিছিং।

৬। ফুকন, ৰিমি ৰেখা, দাস, পাপুল আৰু বৰা, গোলাপ। “অসমৰ পর্যটন উদ্যোগৰ সম্ভাৱনা আৰু বাধা।” ইঞ্জিনিয়াৰিং এণ্ড টেকন’লজিৰ উন্নত গৱেষণাৰ আন্তর্জাতিক জার্নেল (Ijaret) (২০২০), খণ্ড ১১, সংখ্যা ১২।

৭। শর্মা, জে এন, আৰু এম কে ফুকন। “ভাৰতৰ অসমত ব্রহ্মপুত্র নদীৰ মাজুলী দ্বীপৰ উৎপত্তি আৰু কিছু ভূ-ৰূপতাত্ত্বিক পৰিৱর্তন।” ভূ-ৰূপবিজ্ঞান, (২০০৪), সংখ্যাঃ ৬০, নং ঃ ১-২, পৃষ্ঠা ১ ১৯০।

৮। হাজৰিকা, বিকাশ। “গ্রাম্য পর্যটন আৰু বহনক্ষম জীৰিকা অসমৰ মাজুলী দ্বীপৰ এক কেছ ষ্টাডি।” আন্তর্জাতিক বৈজ্ঞানিক আৰু গৱেষণা প্রকাশন, (২০১৬), জার্নেল নম্বৰ ৬ নং, পৃষ্ঠা ৩৪৩-৩৪৫।

৯। ৰয়, নিখিল, বিন্ধী ৰাছিনী পাণ্ডে, আৰু উষা ৰাণী, ‘ভাৰতৰ বিলুপ্ত হৈ থকা ভূ-সাংস্কৃতিক ঐতিহ্যক সুৰক্ষা দিয়াঃ অসমৰ মাজুলী দ্বীপৰ নমুনা ভিত্তিক এক চমু অধ্যয়ন”, জি অ’ হেৰিটেজ এণ্ড পার্কছৰ আন্তর্জাতিক জার্নেল, (২০২০), সংখ্যাঃ ৮(১), পৃষ্ঠা ১৮-৩০।

১০। Bharasa, P. and A. Gayen. “Safeguarding the thereatened hydrogeo-cultural heritage of Majuli Island in Assam, India : A case study” IOP Conference Series : Earth and Environmental Science. Vol. 597. No. 1 IOP Publishing, (2020).

১১। Borah, Chandra Kanta, ‘Preservation and conservation of manuscripts in Satras : with special reference to Majuli Satras’, (2017)

১২। Chutia, Lakhimi Jogendranath, “Crafts of Assam and its commercialization : a study with special reference to artefacts and artisans.” (2017).

১৩। Acharya, Sudhashree. “The Theatrical Use of Masks : A comparative Study of Greek Theatre and Chhau Dance of Bengal.” The Golden line - A magazine of English literature (2021).

১৪। Sarma, J.N. and Phukan, M.K. “Origin and some geomorphological changes of Majuli Island of th Brahmaputra River in Assam, India.” Geomorphology 60.1-2 (2004): 1-19.

১৫। Hazarika, Bikash, “Rural Tourism and Sustainable Livelihoods A case study of Majuli Island of Assam,” International Journal of Scientific and Research Publications, (2016), Volume : 6, Issue : 6, Page. 343-345.

১৬। Sankhua, Sharma, R.N. Garg, N. & Pandey, A.D. Use of remote sensing an ANN in assessment of erosion activities in Majuli, the world’s largest rivr island. International Journal of Remote Sensing, (2016), Vol- 26, Pp. 4445-4454

ISSN 2321-4945
UGC CARE Listed Journal
RNI NO. ASSBIL/2009/31008

প্রবন্ধ

গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্ৰতি নিম্ন-প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ ওপৰত এক অধ্যয়ন

মুকেশ শর্মা

গৱেষক
ইন্দিৰা মিৰি স্কুল অৱ এডুকেশ্বন,
কৃষ্ণকান্ত সন্দিকৈ ৰাজ্যিক মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়, গুৱাহাটী
ম'বাইল ঃ ৮৮৭৬৪৩০৩৫৭
ই মেইল ঃ bkmukeshsharma@gmail.com

ড° প্ৰণৱ শইকীয়া

সঞ্চালক (ভাৰপ্ৰাপ্ত), সহযোগী অধ্যাপক
ইন্দিৰা মিৰি স্কুল অৱ এডুকেশ্বন,
কৃষ্ণকান্ত সন্দিকৈ ৰাজ্যিক মুক্ত বিশ্ববিদ্যালয়, গুৱাহাটী

সাৰাংশ ঃ

গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ গণিত শিকনৰ ওপৰত অতি গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰে। বিভিন্ন গৱেষণাত এই কথাটো প্ৰতীয়মান হৈছে যে এজন শিক্ষার্থীয়ে গণিত বিষয়টো শিকনৰ ক্ষেত্ৰত থাকিবলগীয়া আন্তৰিকতা, আগ্ৰহ, প্ৰচেষ্টা আৰু সফলতা বহু পৰিমাণে শিক্ষকৰ গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্ৰতি থকা মনোভাৱে নিৰ্ণয় কৰে। সেয়েহে এই অধ্যয়নৰ যোগেদি কামৰূপ (মহানগৰ) জিলাৰ অসমীয়া মাধ্যমৰ নিম্ন প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকসকলৰ মনোভাৱৰ বিষয়ে সমীক্ষা কৰা হৈছে। এই অধ্যয়নটো সম্পূৰ্ণ কৰিবলৈ বৰ্ণনাত্মক জৰীপ পদ্ধতিৰ জৰিয়তে গুৱাহাটী আৰু ডিমৰীয়া শিক্ষাখণ্ডৰ পৰা ৯১ জন শিক্ষক যাদৃচ্চিকভাৱে বাছনি কৰি তেওঁলোকৰ ওপৰত গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্ৰতি থকা মনোভাৱৰ মাপকাঠিৰে পৰিমাপণ কৰা হয় আৰু এই পৰিমাপণৰ যোগেদি গৃহীত তথ্যসমূহ বিভিন্ন পৰিসাংখ্যিক পদ্ধতি যেনে- গড়, প্ৰামাণিক বিচ্যুতি আৰু t-মান আদিৰ যোগেদি বিশ্লেষণ কৰা হয়। এই গৱেষণাত দেখা গ'ল যে শিক্ষকৰ মনোভাৱ গণিত শিক্ষণৰ প্ৰতি অনুকূল যদিও তেওঁলোকৰ মাজত লিংগগত আৰু শিক্ষাখণ্ডগত পার্থক্য আছে।

প্ৰাধান্যমূলক শব্দ ঃ

মনোভাৱ, নিম্ন প্ৰাথমিক পর্যায়, গণিতৰ পাঠদান।

১.০ প্ৰস্তাৱনা ঃ

গণিত শিক্ষাত পাঠদান আৰু গণিত শিক্ষণৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ এক সম্পৰ্কিত বিষয়। গণিত শিক্ষণৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ দ্বাৰা ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ গণিত শিকনত আন্তৰিকতা, প্ৰেৰণা আৰু শৈক্ষিক সফলতা বহু পৰিমাণে প্ৰভাৱিত হ'ব পাৰে। গণিত শিক্ষণৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱে তেওঁলোকৰ পাঠদানৰ ধৰণতো প্ৰভাৱ পেলায়, যিয়ে পাছলৈ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ গণিতত দেখুওৱা ফলাফলৰ

ওপৰত প্ৰভাৱ পেলাব পাৰে। বেছিভাগ অধ্যয়ন আৰু মনোবৈজ্ঞানিক নীতিয়ে নিম্ন প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত খেল-ধেমালিৰ জৰিয়তে শিক্ষা (Playway) পদ্ধতি, দলগত ক্ৰিয়া-কলাপ, শিকন-শিক্ষণ সামগ্ৰীৰ ব্যৱহাৰ আদিৰ ওপৰত গুৰুত্ব আৰোপ কৰিছে যদিও বিদ্যালয়ত উপযুক্ত ছাত্ৰ-শিক্ষকৰ অনুপাত, পৰ্যাপ্ত আন্তঃগাঁথনিৰ উপলব্ধতা আদিৰ দৰে সমস্যা থকাৰ বাবে কিছু ক্ষেত্ৰত এই পদ্ধতিসমূহৰ ৰূপায়ণত সমস্যাৰ সন্মুখীন হোৱা দেখা যায়। গতিকে শ্ৰেণীকোঠাৰ বিভিন্ন পৰিস্থিতিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰি শিক্ষকসকলৰ গণিত শিকনৰ প্ৰতি মনোভাৱ বেলেগ বেলেগ হোৱাৰ সম্ভাৱনাৰ অৱকাশ আছে। গণিত এটা মূল বিষয় হোৱাৰ বাবে গণিত শিক্ষণৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মাজত যুক্তিসংগত ক্ষমতা, কৌতুহল, সৃষ্টিশীলতা, সিদ্ধান্ত লোৱা ক্ষমতা আৰু সমস্যা সমাধানৰ দক্ষতা বিকাশত তাৎপৰ্যপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰে, যিবোৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ শৈক্ষিক সফলতাৰ বাবে প্ৰয়োজনীয়। গতিকে গণিত পাঠদানৰ সন্দৰ্ভত শিক্ষকসকলৰ মনোভাৱৰ বিষয়ে বুজাটো তাৎপৰ্যপূৰ্ণ হৈ পৰে। এই অধ্যয়নৰ জৰিয়তে গণিত পাঠদানৰ সন্দৰ্ভত শিক্ষকসকলৰ মনোভাৱৰ বিষয়ে বুজিবলৈ চেষ্টা কৰা হৈছে।

১.১ আনুসংগিক গৱেষণা-লেখনী পৰ্যালোচনা ঃ

জৈনে (১৯৮২) এক গবেষণাৰ জৰিয়তে পাইছিল যে কম বয়সীয়া শিক্ষকসকলে তেওঁলোকৰ পুৰণি সমকক্ষসকলৰ তুলনাত বৃত্তিটোৰ প্ৰতি অধিক অনুকূল মনোভাৱ প্ৰদৰ্শন কৰে। তদুপৰি, তেখেতৰ গৱেষণাই সূচায় যে লিংগ সাপেক্ষে শিক্ষকতাৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ মনোভাৱৰ কোনো গুৰুত্বপূৰ্ণ পাৰ্থক্য নাই। অৱশ্যে, তেখেতৰ গৱেষণাত শ্ৰেণীকোঠাৰ শিক্ষাদানৰ প্ৰতি থকা মনোভাৱৰ সৈতে শিক্ষাদানৰ অভিজ্ঞতাৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অথচ নেতিবাচক সম্পৰ্ক থকা দেখা গৈছে।

প্ৰধানে (২০০৯) মাধ্যমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকসকলৰ মাজত কৰা অধ্যয়ন এটাত পুৰুষ আৰু মহিলা শিক্ষকসকলৰ মাজত মনোভাৱৰ কোনো গুৰুত্বপূৰ্ণ পাৰ্থক্য পোৱা নাছিল। সিং আৰ্ পালে (২০০৪) পাইছিল যে মহিলা শিক্ষকসকলে সাধাৰণতে তেওঁলোকৰ পুৰুষ সহকৰ্মীৰ তুলনাত শিক্ষকতা বৃত্তিৰ প্ৰতি অনুকূল মনোভাৱ ৰাখে। ইয়াৰ উপৰিও, তেখেতে পোৱা ফলাফল অনুসৰি শৈক্ষিক বৃত্তিৰ প্ৰতি নগৰীয়া আৰু পিছপৰা অঞ্চলৰ শিক্ষকসকলৰ মাজত থকা মনোভাৱ বেলেগ হোৱা দেখা নাযায়।

ঘোষ আৰু বৈৰাগ্যই (২০১০) শিক্ষাদানৰ মনোভাৱৰ ক্ষেত্ৰত লিংগৰ ভিত্তিত আৰু অভিজ্ঞতাৰ ভিত্তিত গুৰুত্বপূৰ্ণ পাৰ্থক্য পাইছিল।

শেহতীয়াকৈ, ৰমেশে (২০২১) প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকসকলৰ ওপৰত এটা অধ্যয়ন কৰিছিল আৰু শিক্ষকতা বৃত্তিৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ মনোভাৱৰ তাৰতম্য বিচাৰি পাইছিল। তেওঁ পাইছিল যে প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকসকলৰ মনোভাৱত লিংগই গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰভাৱ নেপেলায়। আনহাতে স্থানীয়তা, বয়স আৰু বছৰৰ অভিজ্ঞতাৰ দৰে কাৰকবোৰে মনোভাৱৰ ওপৰত গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰভাৱ পেলোৱা দেখা গৈছিল।

শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ ওপৰত বিদ্যমান গৱেষণা-লিখনি থকা স্বত্বেও, ফলাফলবোৰত বিশেষকৈ লিংগ, অৱস্থান আৰু শিক্ষাদানৰ অভিজ্ঞতাৰ প্ৰভাৱ সম্পৰ্কে সাদৃশ্যতা দেখা নাযায়। তদুপৰি লিখনিসমূহ প্ৰায়ভাগেই অসমৰ বাহিৰৰ তথা প্ৰায়ভাগেই মাধ্যমিক বা উচ্চমাধ্যমিক স্তৰৰ। তেনেক্ষেত্ৰত নিম্ন প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত গণিতৰ পাঠদানৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ বিষয়ে অধ্যয়ন কৰাৰ অৱকাশ থাকে। সেয়েহে, অসমৰ কামৰূপ (মহানগৰ) জিলাৰ নিম্ন প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত শিক্ষকসকলৰ গণিতৰ পাঠদানৰ প্ৰতি মনোভাৱ অনুসন্ধান কৰাৰ উদ্দেশ্যে এই অধ্যয়নটো কৰা হৈছে।

১.২ সমস্যাৰ বিবৃত্তি ঃ

"অসমৰ কামৰূপ (মহানগৰ) জিলাৰ অসমীয়া মাধ্যমৰ চৰকাৰী আৰু স্বীকৃতিপ্ৰাপ্ত নিম্ন প্ৰাথমিক বিদ্যালয়ত গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ ওপৰত এক অধ্যয়ন।"

১.৩ অধ্যয়নৰ উদ্দেশ্য ঃ

নিম্ন-প্ৰাথমিক পৰ্যায়ত গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ ওপৰত তেওঁলোকৰ লিংগ, শৈক্ষিক খণ্ড, শৈক্ষিক অৰ্হতা আৰু অভিজ্ঞতাৰ দিশৰ পৰা অধ্যয়ন কৰা।

১.৪ ব্যৱহৃত শব্দ বা ধাৰণাৰ কার্যকৰী সংজ্ঞা ঃ

(ক) মনোভাৱ ঃ

গর্ডন অলপর্ট (১৯৩৫)ৰ মতে, "মনোভাৱ হৈছে অভিজ্ঞতাৰ জৰিয়তে সংগঠিত হোৱা এক মানসিক আৰু স্নায়ুৰ প্ৰস্তুতিৰ অৱস্থা, যিয়ে ব্যক্তিৰ সকলো বস্তু আৰু পৰিস্থিতিৰ প্ৰতি নির্দেশনামূলক আৰু গতিশীল প্ৰভাৱ পেলায়।"।

থ্ৰষ্টনে মনোভাৱক কিছুমান মানসিক বস্তুৰ সৈতে জড়িত ইতিবাচক আৰু নেতিবাচক প্ৰভাৱৰ মাত্ৰা বুলি সংজ্ঞায়িত কৰিছিল।

জন ডিউই(১৯৩৩)ৰ মতে, "মনোভাৱ হ'ল এটা নির্দিষ্ট ধৰণে কাম কৰাৰ প্ৰৱণতা।"

ইভান পাভলভ(১৯২৭)ৰ মতে, "মনোভাৱ হৈছে কোনো এটা উদ্দীপকৰ প্ৰতিক্ৰিয়াত বিশেষ ধৰণে আচৰণ কৰাৰ এক আয়ত্ব কৰা স্বভাৱ।"

এই অধ্যয়নত মনোভাৱ বুলি কওঁতে ব্যক্তিৰ গণিত শিকোৱা আৰু শিক্ষণৰ প্ৰতি ইতিবাচক বা নেতিবাচক প্ৰৱণতাক বুজোৱা হৈছে। ইয়াৰ ভিতৰত বিষয়বস্তুৰ প্ৰতি মনোভাৱ, পাঠদান পদ্ধতি,শিকন-শিক্ষণ সামগ্ৰীৰ ব্যৱহাৰ, শিকন-শিক্ষণ প্ৰক্ৰিয়াত তথ্য আৰু যোগাযোগ প্ৰযুক্তিৰ সংহতিকৰণ আদি অন্তর্ভুক্ত। অধ্যয়নত মনোভাৱ তুলনা কৰিবলৈ মনোভাৱৰ মাপকাঠি ব্যৱহাৰ কৰি পোৱা মুঠ নম্বৰবোৰ লোৱা হৈছে।

(খ) **নিম্ন-প্ৰাথমিক পর্যায় ঃ** প্ৰথম শ্ৰেণীৰ পৰা পঞ্চম শ্ৰেণীলৈ

(গ) **শিক্ষাগত অর্হতাৰ স্তৰ ঃ** নিম্ন-প্ৰাথমিক পর্যায়ৰ শিক্ষকসকলৰ সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতা বুজোৱা হৈছে। অধ্যয়নটোত সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতাৰ স্তৰ দুটা হৈছে (ক) উচ্চতৰ মাধ্যমিক, (খ) স্নাতক।

(ঘ) **শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতাৰ স্তৰ ঃ** অধ্যয়নটোত শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতাৰ স্তৰ দুটা হৈছে (ক) ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষক/শিক্ষয়িত্ৰী (খ) ২০ বছৰতকৈ বেছি অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষক/শিক্ষয়িত্ৰী।

১.৫ গৱেষণাৰ আনুমানিক সিদ্ধান্তসমূহ ঃ

১) গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি পুৰুষ আৰু মহিলা শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ গড়ৰ মাজত কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

২) গুৱাহাটী আৰু ডিমৰীয়া শৈক্ষিক খণ্ড দুটাত কর্মৰত শিক্ষকৰ মাজত গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি মনোভাৱৰ গড়ৰ মাজত কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

৩) উচ্চতৰ মাধ্যমিক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষক আৰু স্নাতক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষকৰ মাজত মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

৪) ২০ বা ২০ বছৰতকৈ কম শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষক আৰু ২০ বছৰতকৈ অধিক শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ মাজত মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

১.৬ পদ্ধতি ঃ

এই অধ্যয়নটোত বর্ণনাত্মক জৰীপ পদ্ধতি ব্যৱহাৰ কৰা হৈছে কাৰণ এই পদ্ধতিয়ে জনসংখ্যাৰ বিষয়ে ভালদৰে বুজিবলৈ তথা জনসংখ্যাৰ বৈশিষ্ট্য বর্ণনা কৰাত সহায় কৰে।

(ক) অধ্যয়নৰ জনসংখ্যা ঃ

এই অধ্যয়নৰ জনসংখ্যাৰ বাবে অসমীয়া মাধ্যমৰ প্ৰাথমিক পর্যায়ত পাঠদান কৰা অসমৰ কামৰূপ (মহানগৰ) জিলাৰ গুৱাহাটী আৰু ডিমৰীয়া শৈক্ষিক খণ্ডৰ চৰকাৰী আৰু স্বীকৃতিপ্ৰাপ্ত বিদ্যালয়সমূহৰ শিক্ষকসকলক লোৱা হৈছিল।

(খ) নমুনা ঃ

গুৱাহাটী আৰু ডিমৰীয়া শিক্ষাখণ্ডৰ পৰা ৯১ গৰাকী শিক্ষকক যাদৃচ্ছিকভাৱে বাছনি কৰা হৈছিল। ইয়াৰে ২৩ গৰাকী পুৰুষ আৰু ৬৮ গৰাকী মহিলা শিক্ষক।

(গ) তথ্য সংগ্ৰহৰ সঁজুলি ঃ

অধ্যয়নৰ বাবে নির্বাচিত শিক্ষকৰ ওপৰত গণিত শিকন-শিক্ষণৰ প্ৰতি মনোভাৱ পৰিমাপনৰ বাবে এক মনোভাৱৰ মাপকাঠি প্ৰস্তুত কৰা হৈছিল। এই মনোভাৱৰ মাপকাঠীটো গৱেষকে নিজেই প্ৰস্তুত কৰিছিল। ইয়াত ছল্লিছটা বিবৃত্তি আছে যিবোৰ গণিত বিষয়টোৰ শিকন-শিক্ষণৰ লগত জড়িত। এই মনোভাৱৰ মাপকাঠীটো বিবৃত্তিৰ বিশ্লেষণ, সম্পাদনা কৰি তাৰ নির্ভৰযোগ্যতা আৰু বৈধতা নির্ণয় কৰি ইয়াৰ প্ৰতিমানীকৃতকৰণ কৰা হৈছিল।

নির্বাচিত বিবৃত্তিসমূহত ২১টা ইতিবাচক বিবৃত্তি আৰু ১৯টা নেতিবাচক বিবৃতি লাইকার্ট স্কেলত (Likert Scale)

আছিল যাৰ সঁহাৰি হৈছে দৃঢ়ভাৱে সন্মত, সন্মত, অনির্ণিত, অসন্মত আৰু দৃঢ়ভাৱে অসন্মত। মাপৰ নমুনা তলত দিয়া ধৰণৰ-

বিবৃত্তিৰ প্রকাৰ	দৃঢ়ভাৱে সন্মত	সন্মত	অনির্ণিত	অসন্মত	দৃঢ়ভাৱে অসন্মত
ইতিবাচক বিবৃত্তি	৫	৪	৩	২	১
নেতিবাচক বিবৃত্তি	১	২	৩	৪	৫

পৰীক্ষাৰ নির্ভৰযোগ্যতা স্প্লিট্-হাফ পদ্ধতি (Spilt-Half Method) আৰু কর্ণবেক্-আলফা পৰীক্ষাৰ (Cornbach's Alpha) ব্যৱহাৰ কৰি কৰা হৈছিল। পদ্ধতি দুটা ব্যৱহাৰ কৰি নির্ভৰযোগ্যতাৰ সহ-দক্ষতা ক্রমে ০.৮৪ আৰু ০.৯০৬ পোৱা গৈছিল আৰু সেয়েহে গ্রহণ কৰা হৈছিল। আনহাতে, এই মনোভাৱৰ মাপকাঠীডালৰ আপাতঃ বৈধতা নিশ্চিত কৰিবলৈ খচৰা বিবৃতিসমূহ বিশেষজ্ঞৰ দ্বাৰা পর্যালোচনা কৰা হৈছিল। বিশেষজ্ঞসকলে মূল্যৱান মতামত আৰু পৰামর্শ আগবঢ়াইছিল, আৰু সেইমতে সংশোধিত কৰা হৈছিল।

(ঘ) **তথ্য সংগ্রহৰ কৌশল ঃ** তথ্য সংগ্রহৰ বাবে গুগল ফর্মৰ ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল ।

(ঙ) **তথ্য বিশ্লেষণৰ কৌশল ঃ** অধ্যয়নত মূলতঃ ব্যৱহাৰ কৰা পৰিসংখ্যা কৌশল সমূহ আছিল গাণিতিক গড় (Mean), প্রামাণিক বিচ্যুতি (Standard Deviation), স্বতন্ত্রতাৰ মাত্রা (degree of freedom বা df) আৰু পৰিসাংখ্যিক পৰীক্ষা- টি-টেষ্ট (t-test)। সমাজ বিজ্ঞানৰ বাবে পৰিসংখ্যাগত পেকেজ্ (SPSS) এই অধ্যয়নটোত ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল।

১.৬ তথ্য বিশ্লেষণ আৰু ব্যাখ্যাকৰণ

উদ্দেশ্য ১: নিম্ন-প্রাথমিক পর্যায়ত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ তেওঁলোকৰ লিংগৰ ভিত্তিত অধ্যয়ন কৰা।

উদ্দেশ্য ১ পূৰণ কৰিবলৈ নিম্নোক্ত আনুমানিক সিদ্ধান্ত -১ৰ প্রণয়ন কৰা হৈছিল আৰু t-মান গণনা কৰি পোৱা ফলাফল তালিকা-১ ত দিয়া হৈছে।

আনুমানিক সিদ্ধান্ত -১ : গণিত পাঠদানৰ প্রতি পুৰুষ আৰু মহিলা শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

তালিকা-১: গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ লিংগভিত্তিক গড়, প্রামাণিক বিচ্যুতি আৰু t-মান

লিংগ	গড়	প্রামাণিক বিচ্যুতি	মুঠ শিক্ষক	t-মান	মন্তব্য
পুৰুষ	153.70	11.46	23	1.78	NS
মহিলা	160.00	15.52	68		

NS: তাৎপর্যপূর্ণ নহয়

তালিকা -১ৰ পৰা দেখা যায় যে লিংগৰ বাবে t-মান ১.৭৮ যিটো তাৎপর্যপূর্ণ নহয়। সেয়েহে আনুমানিক সিদ্ধান্ত ১ নাকচ কৰা নহ'ল। ইয়াৰ পৰা বুজা যায় যে পুৰুষ আৰু মহিলা শিক্ষকৰ মাজত গণিত পাঠদানৰ প্রতি মনোভাৱৰ গড়ৰ বিশেষ পার্থক্য নাই। ফলাফলৰ সামঞ্জস্যতা ঘোষ আৰু বৈৰাগ্য (২০১০), কৰণ পি বি (২০১৭) আৰু কুমাৰ আৰু ৰাজেন্দ্রনে (২০১৮) কৰা অধ্যয়নৰ ফলাফলৰ সৈতে একে পোৱা গ'ল।

উদ্দেশ্য ২ ঃ প্রাথমিক পর্যায়ত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ শৈক্ষিক খণ্ড দুটাৰ ক্ষেত্রত অধ্যয়ন কৰা।

উদ্দেশ্য ২ পূৰণ কৰিবলৈ নিম্নোক্ত আনুমানিক সিদ্ধান্ত - ২ৰ প্রণয়ন কৰা হৈছিল আৰু t-মান গণনা কৰি পোৱা ফলাফল তালিকা -২ ত দিয়া হৈছে।

আনুমানিক সিদ্ধান্ত - ২ ঃ শৈক্ষিক খণ্ড দুটাৰ মাজত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

তালিকা ২ ঃ গণিতত ছাত্র-ছাত্রীৰ কৃতিত্বৰ শৈক্ষিক খণ্ডভিত্তিক গড়, প্রামাণিক বিচ্যুতি আৰু t-মান

শৈক্ষিত খণ্ড	গড়	প্রামাণিক বিচ্যুতি	মুঠ শিক্ষক	t-মান	মন্তব্য
ডিমৰীয়া	200.66	32.917	32	4.88**	P<0.01
গুৱাহাটী	228.83	21.967	59		

** ০.০১ স্তৰত তাৎপর্যপূর্ণ

তালিকা ২ৰ পৰা দেখা যায় যে শৈক্ষিক খণ্ড দুটাৰ বাবে t-মান ২.৪২ যিটো df = ৮৯ ৰ বাবে ০.০১ স্তৰত তাৎপর্যপূর্ণ। সেয়েহে আনুমানিক সিদ্ধান্ত ২ নাকচ কৰা হৈছে। ইয়াৰ পৰা বুজা যায় যে ডিমৰীয়া আৰু গুৱাহাটী শৈক্ষিক খণ্ডত অৱস্থিত অসমীয়া মাধ্যমৰ নিম্ন বিদ্যালয়সমূহত শিক্ষকৰ গণিত শিক্ষাদানৰ মনোভাৱৰ গড়ৰ মাজত যথেষ্ট পার্থক্য আছে। এই ফলাফলটোৰ সৈতে ঘোষ আৰু বৈৰাগ্য (২০১০), হর্ষৎ আৰু শর্মা এচ্ (২০১৭), পুষ্পম্ এ্ এল্ এম্ (১৯৯৭) এ পোৱা ফলাফলৰ অমিল দেখা গ'ল। তদুপৰি গণিত পাঠদানৰ প্রতি মনোভাৱৰ গড়ৰ পৰা ক'ব পাৰি যে গুৱাহাটী শৈক্ষিক খণ্ডত কর্মৰত শিক্ষকৰ গণিত পাঠদানৰ প্রতি মনোভাৱ ডিমৰীয়া শৈক্ষিক খণ্ডত কর্মৰত শিক্ষকৰ তুলনাতকৈ যথেষ্ট বেছি অনুকূল।

উদ্দেশ্য ৩ ঃ সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতাৰ ক্ষেত্রত প্রাথমিক পর্যায়ত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ অধ্যয়ন কৰা।

উদ্দেশ্য ৩ পূৰণ কৰিবলৈ শিক্ষকৰ সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতাৰ স্তৰ উচ্চতৰ মাধ্যমিক আৰু স্নাতক হিচাপে লোৱা হৈছিল। নিম্নোক্ত আনুমানিক সিদ্ধান্ত - ৩ৰ প্রণয়ন কৰা হৈছিল আৰু t-মান গণনা কৰি পোৱা ফলাফল তালিকা -৩ ত দিয়া হৈছে।

আনুমানিক সিদ্ধান্ত - ৩ : উচ্চতৰ মাধ্যমিক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষক আৰু স্নাতক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষকৰ মাজত মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

তালিকা ৩: সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতাৰ ক্ষেত্রত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতাভিত্তিক গড়, প্রামাণিক বিচ্যুতি আৰু t-মান

সর্বোচ্চ শিক্ষাগত অর্হতা	গড়	প্রামাণিক বিচ্যুতি	মুঠ শিক্ষক	t-মান	মন্তব্য
উচ্চতৰ মাধ্যমিক	155.22	13.77	32	0.36	NS
স্নাতক বা তাৰ উর্ধ্বতৰ ডিগ্রী	156.37	13.37	41		

NS: তাৎপর্যপূর্ণ নহয়

৩ নং তালিকাৰ পৰা দেখা যায় যে t-মান ০.৩৬ যিটো তাৎপর্যপূর্ণ নহয়। এইদৰে আনুমানিক সিদ্ধান্ত -৩ নাকচ কৰা নহয় আৰু সেয়েহে ক'ব পৰা যায় যে উচ্চতৰ মাধ্যমিক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষক আৰু স্নাতক হিচাপে সর্বোচ্চ শৈক্ষিক অর্হতা থকা শিক্ষকৰ মাজত মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই। ফলাফলৰ সামঞ্জস্যতা ঘোষ আৰু বৈৰাগ্য (২০১০), হর্ষৎ আৰু শর্মা এচ্ (২০১৭) আৰু কৌশিক এ. (২০১৮)এ কৰা অধ্যয়নৰ ফলাফলৰ সৈতে একে পোৱা গ'ল।

উদ্দেশ্য ৪ ঃ পাঠদান অভিজ্ঞতাৰ ক্ষেত্রত প্রাথমিক পর্যায়ত গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱ অধ্যয়ন কৰা।

উদ্দেশ্য ৪ পূৰণ কৰিবলৈ অভিজ্ঞতা সাপেক্ষে শিক্ষকসকলক দুটা গোটত ভগোৱা হৈছিল- (i) ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম আৰু (ii) ২০ বছৰতকৈ অধিক অভিজ্ঞতাসম্পন্ন শিক্ষক। নিম্নোক্ত আনুমানিক সিদ্ধান্ত ৪প্রণয়ন কৰা হৈছিল আৰু t-মান গণনা কৰি পোৱা ফলাফল তালিকা- ৪ ত দিয়া হৈছে।

আনুমানিক সিদ্ধান্ত - ৪ : ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষক আৰু ২০ বছৰতকৈ অধিক শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ মাজত মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো বিশেষ পার্থক্য নাই।

তালিকা ৪ ঃ শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা সাপেক্ষে গণিত পাঠদানৰ প্রতি শিক্ষকৰ মনোভাৱৰ গড়, প্রামাণিক বিচ্যুতি আৰু t-মান

শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা	গড়	প্রামাণিক বিচ্যুতি	মুঠ শিক্ষক	t-মান	মন্তব্য
১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম	162.81	15.55	37	2.61**	P<0.01
২০ বছৰতকৈ অধিক	154.46	13.64	46		

** ০.০১ স্তৰত তাৎপর্যপূর্ণ

৪ নং তালিকাৰ পৰা দেখা যায় যে t-মান ২.৬১ যিটো df = ৮১ ৰ বাবে ০.০১ স্তৰত তাৎপর্যপূর্ণ। সেয়েহে আনুমানিক সিদ্ধান্ত ৪ নাকচ কৰা হ'ল। ইয়াৰ পৰা বুজা যায় যে শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম

থকা শিক্ষক আৰু শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা ২০ বছৰতকৈ অধিক থকা শিক্ষকৰ মাজত গণিতৰ পাঠদানৰ প্ৰতি থকা মনোভাৱৰ গড়ৰ পার্থক্য আছে। তদুপৰি এওঁলোকৰ গড়ৰ পৰা ক'ব পাৰি যে ২০ বছৰতকৈ অধিক শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ তুলনাত ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ মনোভাৱ যথেষ্ট বেছি অনুকূল। এই পার্থক্যৰ কাৰণ বেছি অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকসকলে শিক্ষকতাৰ বৃত্তিটো একঘেয়ামী আৰু বিৰক্তিকৰ অনুভৱ কৰিব পাৰে (জৈন, ১৯৮২) বুলি অনুমান কৰা হৈছে।

১.৭ ফলাফলৰ সাৰাংশ আৰু মতামত ঃ

অসমৰ কামৰূপ(মহানগৰ) জিলাৰ নিম্ন প্ৰাথমিক পৰ্যায়ৰ অসমীয়া মাধ্যমৰ বিদ্যালয়সমূহত গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি শিক্ষকসকলৰ মনোভাৱ জনাৰ উদ্দেশ্যে এই অধ্যয়নটো কৰা হৈছিল। অধ্যয়নটোৰ ফলাফলে ইংগিত দিয়ে যে পুৰুষ আৰু মহিলা শিক্ষক উভয়ৰে গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি অনুকূল মনোভাৱ আছে। ডিমৰীয়া শৈক্ষিক খণ্ডত কৰ্মৰত শিক্ষকৰ তুলনাত গুৱাহাটী শৈক্ষিক খণ্ডত কৰ্মৰত শিক্ষকৰ গণিত পাঠদানৰ প্ৰতি মনোভাৱ যথেষ্ট বেছি অনুকূল হোৱা দেখা গৈছে। ইয়াৰ কাৰণ বৃত্তি-সন্তুষ্টি, প্ৰতিযোগিতামূলক পৰিৱেশ ইত্যাদি বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। আনহাতে সৰ্বোচ্চ শিক্ষাগত অৰ্হতা উচ্চতৰ মাধ্যমিক থকা শিক্ষক আৰু সৰ্বোচ্চ শিক্ষাগত অৰ্হতা স্নাতক থকা শিক্ষকৰ মাজত গণিতৰ পাঠদানৰ প্ৰতি থকা মনোভাৱৰ গড়ৰ কোনো পার্থক্য পোৱা নগ'ল। আনহাতে ২০ বছৰতকৈ অধিক শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ তুলনাত ১০ বা ১০ বছৰতকৈ কম শিক্ষকতাৰ অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকৰ মনোভাৱ যথেষ্ট বেছি অনুকুল পোৱা গ'ল। ইয়াৰ এটা কাৰণ বেছি অভিজ্ঞতা থকা শিক্ষকসকলে শিক্ষকতাৰ বৃত্তিটো একঘেয়ামী আৰু বিৰক্তিকৰ অনুভৱ কৰিব পাৰে বুলি অনুমান কৰা হৈছে। যিহেতু শিক্ষকৰ মনোভাৱে ছাত্ৰ-ছাত্ৰী সকলৰ গণিত শিকাত প্ৰভাৱ পেলায়, শিক্ষকৰ গণিতৰ প্ৰতি ইতিবাচক মনোভাৱে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ কৌতুহল আৰু সৃষ্টিশীলতা বৃদ্ধিত সহায় কৰে, গতিকে, শিক্ষকতাৰ প্ৰতি মনোভাৱ ইতিবাচক হোৱাটো প্ৰয়োজনীয়। গতিকে, শৈক্ষিক মহলে শিক্ষক সকলৰ গণিতৰ পাঠদানৰ প্ৰতি মনোভাৱ উন্নীতকৰণৰ প্ৰদক্ষেপ লোৱাটো অতিকৈ জৰুৰী। ❑

तथ्य सूत्र

Aiken, L. R. (1972). Attitudes towards mathematics. *Review of Educational Research,* 42(2), 293-310. doi: 10.3102/00346543042002293

Allport, G. W. (1935). Attitudes. In C. Murchison (Ed.), *Handbook of social psychology* (Vol. 2, pp. 798-844). Worcester, MA: Clark University Press.

Dewey, J. (1933). *How we think: A restatement of the relation of reflective thinking to the educative process*. Boston, MA: D.C. Heath and Company.

Durkheim, E. (1893). *The division of labor in society.* New York, NY: The Free Press.

Festinger, L. (1957). *A theory of cognitive dissonance.* Stanford, CA: Stanford University Press.

Ghosh S. & Bairagya S.S. Dr. (2010) .'Attitude of Secondary School teachers Towards Teaching Profession in Relation to Some Demographic Variables'**, Edusearch,** Journal of Educational Research, Volume I, April – 2010 retrived from https://www.researchgate.net/publication/352662213_ Attitude_of_Secondary_School_teachers_Towards_Teaching_Profession_in_Relation_to_Some_Demographic_Variables**.**

Hasrat J. & Sharma S. Dr. (2017). 'A study of attitude of teachers towards teaching profession', Shodhaytan- AISECT University Journal Vol IV Issue VII June 2017, from http://aujournals.ipublisher.in/DATA/File_Vault/89987_25156477.pdf

Karan B. V.(2017) 'A Study of a attitude of secondary school teachers of sainik schools towards teaching profession in relation to their gender location qualification and teaching experience' retrieved from http://hdl.handle.net/10603/206986

Kaushik, A. (2018) Teaching effectiveness of senior secondary School teachers in relation to their attitude towards teaching and organisation climate, retrived from http://hdl.handle.net/10603/301865

Kumar A. C., Rajendran Dr. K. K. (2018) 'Attitude Of Secondary Education Teachers Towards Teaching In Relation To Their Professional Competencies' Volume 6, Issue 2 April 2018 retrived from https://ijcrt.org/papers/IJCRT1812126.pdf

Mead, G. H. (1934). Mind, self, and society. Chicago, IL: University of Chicago Press. Pavlov, I. P. (1927). Conditioned reflexes: An investigation of the physiological activity of the cerebral cortex. London, UK: Oxford University Press.

Pradhan, N (2009) "A study of secondary school teachers' attitude towards some selected aspects of teaching-learning process: The effect of sex and management of school" Teacher Education, B.N.Panda; A.D.Tewari, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi.

Pushpam. A.M.L.(1997). Attitude Towards Teaching Profession And Job Satisfaction Of Women Teachers In Coimbatore. Unpublished. Ph.D., Education. Bharathiar University, Ghaziabad retrived from https://osre.ncert.gov.in/abstract/Mary_Lily_Pushpam_A/1552

Ramesh Ch.(2021) 'A study of mathematical pedagogical competency of primary school teachers in relation to their aptitude and attitude towards teaching profession' retrieved 2023 from http://hdl.handle.net 10603/379931

एमुठि कविता

निर्मलप्रभा बरदलै

(20 जून, 1933 – 1 जून, 2004)

1 बन्दुकर शब्दत राति पुवायने ?
ओहो, पुवाय सेइ चराइटोर मातत,
यिटो चराये कुटि खाय
रातिर एन्धारबोर
लाहे-लाहे।

2 आहिनर पथारर गोन्ध
कोनबाके नाकत आहि लागिले
मइ हेरा पाओं मोर देउताक,
दोकानर जाप-भङा गामोछार सुवासत
हेरा पाओं मोर आइक।
मइ मोक मोर सन्तानर कारणे
क'त थोई जाम ?
क'त ?

3 आटाइबोर आयनाते
मइ तोमार मुख देखों।
क'तो एखन आयना
बिचारि नेपालो,
ज'त देखा पाओं
मोर मुख खन
एबारलोई।

4 चकुर पानी मोर
माटित सरि सरि पाथर होइसे
इ धूलि तियाब नोवारे हँचा,
किन्तु अस्त्र साजिब पारिब।

'संचयन'र परा

(नोट : कविता का लिप्यंतरण उच्चारण को ध्यान में रखकर किया गया है।)

POSTAL REGISTRATION NO. GH/127/2022-24 ❖ Date of Publication : 31st May, 2023 ❖ RNI No. ASSBIL/2009/31008

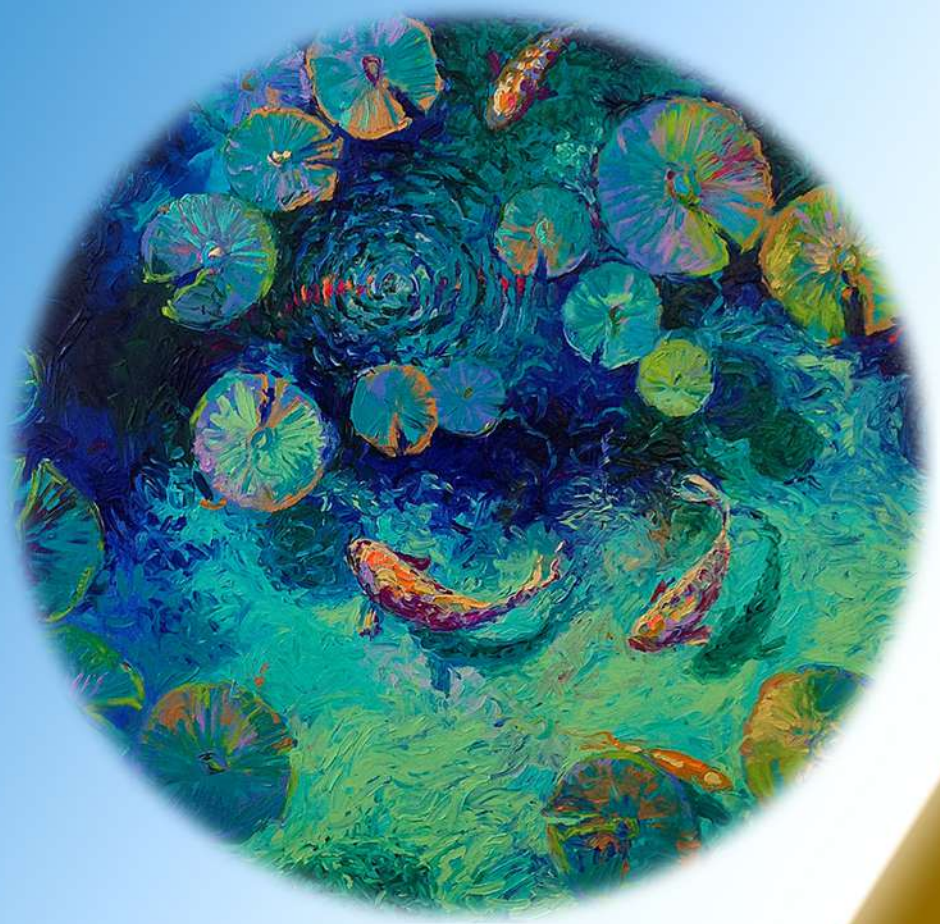

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

संपादकीय कार्यालय :

प्रधान संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, सेवा मंदिर पथ, रूपनगर, गुवाहाटी-781032

मो. 9101541395 / 9101541380, ई-मेल : rastrasewak51@gmail.com